CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2·2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बउधायन-बोध-दीपक

दंडीस्वामी विमलानन्द सरस्वती

भोजपुरी प्रकाशन मण्डल
बी० ३/१७५ राजगुरुमठ; शिवालाघाट;
वाराणसी–२२१००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मूल्य ११·०० मात्र

प्रथम संस्करण

एजूकेशनल प्रिंटर्स, गोला दीनानाथ, वाराणसी द्वारा मुद्रित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

:: समरपन ::

भोजपुरी धरती का,
लाल निराला,
कुलदीपक जुगजोति,
विद्या-विनय-बोध का मूरति,
निपुन महापंडित जनसेवक,
राहुल सांकृत्यायन का;
शुभ इयादगारी में,
भिरगू आ दरदरमुनिवाला,
पुन्निधाम बलिया का;
सरोसती-मंदिर का,
सवतुक-साधक भगत-पुजारी;
भोजपुरी छेतर का,
दइवी विभो सपूत सुरेमन,
भासा-विग्यानी विदमान;
तीनि गुनन से परे 'तिवारी,'
डा० उदयनरायन जी का,
जसी कमलहाथन में,
'बउधायन' कऽ,
बोध-करावेवाला दीपक,
प्रेम-भाव से जोरि दशोनहँ,
हम सँकोच से वटुरल,
करत समरपित बानीं।

—दंडीस्वामी विमलानंद सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

परम्परानुसार ग्रंथ की भूमिका होती है परन्तु भूमिका की भूमिका तो अत्यन्त असामान्य विषय है। मुझे जब दण्डिस्वामी श्रीविमलानन्द सरस्वती के विशाल भोजपुरी महाकाव्य की स्वयं कवि द्वारा लिखित भूमिका 'बउधायन-ब्रोध-दीपक' की भूमिका लिखने के लिए आदेश हुआ है तो मैं बहुत चक्कर में पड़ गया हूँ। सोचता हूँ, यह सब असाधारण व्यापार-चक्र है। 'बउधायन' निश्चित रूप से एक असाधारण महाकाव्य है और उसकी भूमिका भी उसी के अनुरूप आश्चर्यचकितकारी है। ग्रंथ में लगभग चालीस हजार पंक्तियाँ हैं तो भूमिका में लगभग इसके सवा गुना शब्दों का प्रयोग हुआ है। अति विस्तृत भूमिकाओं में आचार्य शुक्ल की 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका का नाम लिया जाता है पर इस महाकाव्य में स्वामीजी का लेखन-धैर्य उससे भी बढ़ गया है। अपना ही काव्य-ग्रंथ होने के कारण भूमिका में उसके साहित्यिक वैशिष्ट्य पर वे कैसे क्या लिखते ? बहुत सुचिन्तित रूप में उन्होंने महात्मा गौतम बुद्ध के युग, जीवन और धर्म-दर्शन के विश्लेषण में कहाकाव्य के सृजन से बची अपनी सारी शक्ति झोंक दी है तथा भूमिका ही भूमिका में एक महान कार्य कर दिया है। हिन्दी और संस्कृत की सैकड़ों पुस्तकों की सामग्री को एकत्र कर जिस सहज शैली में विश्लेषित किया है वह अद्वितीय तथा अपूर्व है। स्वामीजी के भाषा-प्रयोग पर मतभेद हो सकता है क्योंकि उन्होंने एक विशेष प्रकार की टकसाली, भोजपुरी का प्रयोग किया है जिसमें आध्यात्मिक का रूप 'अधियातमिक' और शक्ति का रूप 'शकती' हो जाता है। किन्तु ऐसी 'विशालकाय' भूमिका में आदि से अन्त तक जिस रूप में भोजपुरी गद्य प्रयोग की एकरूपता के सधे हुए ठोस रूप का दर्शन होता है वह निश्चित रूप से उसके समूचे गद्य साहित्य को प्रभावित करनेवाला सिद्ध हो सकता है। टीका, टिप्पणी, अन्वेषण, समीक्षा, बहस, तुलना और संश्लेषण-विश्लेषण की गद्यशैली का भोजपुरी गद्य में निखरा और परिनिष्ठित रूप अभी स्थिर नहीं हुआ है। भोजपुरी गद्य के ऊपर आज भी उसकी काव्य-भाषा छायी हुई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसे विचार-चिन्तन की वैज्ञानिक भाषा का रूप देने की दिशा में महाकाव्य की यह विशाल भूमिका एक मानक प्रकाशस्तम्भ का कार्य करेगी। इस भूमिका को पढ़कर ऐसे प्रश्नों का उत्तर मिल जायगा कि मूलग्रन्थ और भूमिका का यदि एक ही विषय है तो क्या कुछ ऐसा भी है जो मूल काव्य ग्रंथ में कहने के लिए शेष रह गया है और अनिवार्य होने के कारण उसके लिए इतने श्रम से भूमिका का सृजन करना पड़ा ? सहृदय और विचारवान पाठकों के मन को छूने वाली इस भूमिका से जुड़े मूलग्रंथ के बारे में यहाँ कुछ विचार प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है।

भारतीय स्वाधीनता और लोकतन्त्र के उदय के साथ भोजपुरी हिंदी में जो सृजनात्मक साहित्य की प्रवृति का जोरदार उभार आया उसमें छुटपुट सामान्य सृजन के बीच से एक ऐंसे असामान्य और महान कृतित्व का प्रादुर्भाव जिसे उक्त कालावधि की समग्र रचनाधर्मिता की महत्तम उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है तथा जिसे लेकर अब सहज ही यह भाषा अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली और मैथिलो के सामने सगर्व खड़ी हो सकेगी। भोजपुरी के पास बोलने वालों की संख्या भाषा वैज्ञानिक सामर्थ्य और अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता का जो बल रहा है अब इस प्रातिभ और बौद्धिक सृजन से निस्सन्देह चमक उठेगा। लगभग चालीस हजार पंक्तियों के इस विस्मयजनक महाकाव्य का नाम 'बउधायन' है जिसके रचनाकार दण्डिस्वामी श्रीविमलानन्द सरस्वती हैं। स्वामीजी को भोजपुरी साहित्य के इतिहास में प्रथम कहानी-लेखक के रूप में स्मरण किया गया है। उनकी 'जेहल कऽ सनद' सन् १९४८ में प्रकाशित हुई। तबसे भोजपुरी साहित्य की समृद्धि के लिए सतत् प्रयत्नशील विमलानन्दजी ने अपनी मौन साधना के बीच से भोजपुरी काव्य के सर्वोच्च जगमगाते शिखर को 'बउधायन' के रूप में विश्व-साहित्य के सामने उपस्थित किया है। कहते हैं, अनवरत रूप से दस घण्टे रोज सृजन-समर्पित हो स्वामीजी ने इस महाकाव्य को दस वर्षों में पूर्ण किया है।

पहले-पहल जून सन् १९७३ में इस महाकाव्य की पाण्डुलिपि हमने देखा था और डेढ़ हजार पृष्ठों की सुसज्जित पाण्डुलिपि के अन्तरंग में प्रवेश कर कुछ ही समय में जान लिया था कि महात्मा गौतम बुद्ध के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अछूते पवित्र चरित्र पर आधारित यह महाकाव्य सही अर्थों में भोजपुरी का पहला परिनिष्ठित और शास्त्रीय महाकाव्य होगा। उसके पूर्व 'अंजोर' और 'भोजपुरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में इसके अंश प्रकाशित और लाखों पाठकों द्वारा प्रशंसित भी हो चुके थे। तब से बीतते समय के साथ स्वामीजी ने उसे नये-नये अनुभवों के प्रकाश में काफी परिमार्जित और परिवर्धित किया है। सन् १९८० में इस विशालकाय महाकाव्य की पाण्डुलिपि भोजपुरी अकादमी (पटना) के कार्यालय में देखकर एकदम चकित रह जाना पड़ा। ऐसा नहीं लगता है कि किसी ऐसे साधु-व्यक्तित्व का यह सृजन है जिसका समूचा बोध प्राचीन और मध्यकालीन है। स्वामीजी के कवि ने बहुत कुशलता से समकालीन बोध और आधुनिक संवेदनाओं को पकड़ा है। अपने समस्त वस्तुतत्त्व के साथ यह महाकाव्य बौद्धधर्म का विश्वकोश तो है ही, अपनी भाव-सम्पदा के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय महाकाव्य की सीमा में प्रवेश करता है। रसात्मकता और दर्शन की समगतिक समन्वय वृत्ति में चीन, जापान, लंका, बर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया और तिब्बत की विचार भूमियों को ही नहीं ठोस जीवनभूमियों को स्पर्श करनेवाला यह महाकाव्य निस्सन्देह भोजपुरी भाषा के गौरव को बढ़ानेवाला है।

बुद्ध भगवान के धर्मचक्रप्रवर्त्तन के साथ और उसी की भाँति भोजपुरी के साहित्य-चक्र-प्रवर्त्तन का यह ध्यानाकर्षक काव्य अपने भीतर इतिहास, दर्शन और काव्य को ही नहीं रस, छन्द, अलंकार, लक्षणा-व्यंजना, व्यंग्य-वक्रोक्ति, प्रतीक-बिम्ब, संकेत और मिथक आदि सूक्ष्म शिल्प-प्रयोगों को भी बहुत सफाई से समेटकर आगे बढ़ता है। रूपवादी शिल्प और पूर्ण कलात्मक सज्जा की प्रवृत्ति स्वामी जी में बहुत प्रगाढ़ है परन्तु सहजता की युगीन माँग पर बारम्बार ऐसा लगता है कि उन्हें अपने को रोकना पड़ता है। चित्र, ध्वनि और बिम्ब की नयी काव्य भाषा और नाटकीय संवाद भंगिमा मुक्त छन्द में इस प्रकार योजित होता है कि सहज प्रवाह इस महाकाव्य का विशेष गुण बन जाता है। स्वयं संन्यासी होने के कारण जहाँ गृहत्यागी गौतम के साथ तादात्म्य के अनेक अन्तरंग आयाम कवि में सहज संभव थे वहीं यह देखकर सन्तोष होता है कि मानवजीवन की अनेक गूढ़ और व्यावहारिक स्थितियाँ स्वामी जी में साक्षात्कृत होकर अभिव्यक्त हुई हैं। प्रकृति-वर्णन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में ध्वनि और रंगों के चित्रबिम्बों को उन्होंने पकड़ा है। लोक-जीवन के तलवर्त्ती मुहावरों का प्रयोग पंक्तियों को जीवन्त बनाता है। एक-एक पंक्ति में कहीं-कहीं दोहरे-तेहरे मुहावरे टँके मिलते हैं। 'भेंड़ि बनाइ मूड़ि लोगन के' जैसे प्रयोगों की कमी नहीं दृष्टिगोचर होती है। खुनखुने और खनहन छन्दों के ताल पर वर्णन के अनुरूप शब्द-अर्थ कहीं नाच उठते हैं तो कहीं अंतरंग ऐंठन छन्दों में आकार ग्रहण कर पाठकों के मानस में मरोड़ बन जाती है। वास्तव में 'बउधायन' का पाठ भोजपुरी की नयी काव्य-भाषा के साथ एक सर्वथा नये भावों और नयी संवेदनाओं के बीच से सुखद यात्रा है।

क्या कारण है कि अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली में महात्मा गौतम बुद्ध के उदात्त चरित्र पर महाकाव्य नहीं लिखे गये और स्वातं-त्र्योत्तर काल में जाकर भोजपुरी में उसका सृजन हुआ है? ले-देकर अंग्रेजी में 'लाइट ऑफ एशिया' और संस्कृत में अश्वघोष का 'बुद्धचरित्र' जैसे कुछ काव्य ही गौतम बुद्ध पर उपलब्ध हैं तथा नये गांधीवादी प्रभाव में गुप्त ने उस चरित्र को छुआ भी तो 'यशोधरा' के कोण से। उस समग्र चरित्र से मध्यकालीन साहित्य को परहेज़ क्यों? बौद्ध धर्म को देश से बाहर करने की प्रक्रिया के अवशिष्ट अंतरंग संस्कार तो नहीं प्रभावी रहे? जो हो, समाजशास्त्रियों को इसपर विचार करना चाहिए। इस दृष्टि से विमलानन्द जी के, जो स्वयं स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानी रहे हैं, इस कृतित्व को लोकतांत्रिक प्रभाव के प्रतिफल के रूप में रेखांकित किया जाना उचित होगा। विदेशों में धर्म-प्रचार और भारतीय गौरव को जिस उत्साह के साथ महाकाव्य में चित्रांकित किया गया है उसे देखते कवि के राष्ट्रीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का यह महाकाव्य समूचे भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है। डा० उदय नारायण तिवारी इसे भोजपुरी का 'इलियड' कहते हैं पर मेरी दृष्टि में तो यह अप्रतिम है बेजोड़ है।

ऐसे बेजोड़ महाकाव्य की भूमिका भी यदि बेजोड़ है तो क्या आश्चर्य? जिन मूल पाँच ग्रंथों के आधार पर यह भूमिका तैयार हुई है वे हैं महावस्तु, ललितविस्तर, अभिनिसकरमणसुत्त, जातकट्ठकथा और बुद्धचरित्त। इनके अतिरिक्त पूरब-पश्चिम के अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों का भी सहारा लिया गया है। मूलतः इस भूमिका को स्वामी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने विश्लेषण परक बनाया है। युग-समीक्षा के भीतर उन्होंने तत्कालीन छह धर्म-प्रचारकों की विस्तारपूर्वक चर्चा की है जिनकी पृष्ठभूमि बुद्ध धर्म के प्रादुर्भाव में महत्त्वपूर्ण है। भोजपुरी भाषा-भाषियों को अजितकेश कंबल (जड़वादी), संजय बेलट्ठिपुत्त (अनिश्चिततावादी), पकुध कच्चायन (अन्योन्यवादी), पूरणकस्सप (अक्रियावादी) और मक्खलि गोशाल (नियतिवादी) जैसे नास्तिक दार्शनिकों और निग्गंठ नाथपुत्त जैसे चार संयमों के प्रवर्त्तक दार्शनिक के दर्शन पहली बार होंगे। बौद्ध दर्शन, तत्त्वज्ञान, शून्यवाद, कारणवाद और अन्य क्लिष्ट दार्शनिक बहसों को सरलता से समझाने के साथ लेखक ने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को सीधे ढंग से उठाकर व्याख्यायित किया है, जैसे 'ईश्वर के बारे में बुद्ध के विचार', 'बौद्धधर्म और हिन्दू धर्म दर्शन'। इनके अतिरिक्त अन्त में तत्कालीन चित्त, मूर्ति, स्तूप आदि कलाओं के साथ चीन और भारत के बीच दूतों, यात्रियों और बौद्ध भिक्षुओं के आने-जाने का विवरण प्रस्तुत कर विषय को पूर्णता तक पहुँचा दिया है। इस भूमिका को देखकर पाठक सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि इसकी स्वतंत्र महत्ता भी निर्विवाद है। मूल महाकाव्य से जैसे भोजपुरी काव्य-गौरवान्वित हुआ है उसी प्रकार उसकी भूमिका से इस विकासशील भाषा की गद्य-शैली को एक प्रौढ़ लेखनी का प्रभावशाली प्रसाद प्राप्त हुआ है। दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के इस पावन प्रसाद को प्राप्त कर भोजपुरी साहित्य के दोनों क्षितिजों के इस नव्य-भव्य उद्घाटन के संदर्भ में सिद्ध रचनाकार का हार्दिक अभिनन्दन है।

वड़ी बाग, गाजीपुर, उ० प्र०
२४-११-८०

विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन-बोध-दीपक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन-बोध-दीपक

मुखबंध

बउधदेव जी पूरा अरथ में सभे समय आ सभ देश कऽ असाधारन पुरुष रहलन। केहू इतिहासिक महापुरुष कऽ तुलना पुराणकथा का देवी-देवतन से कइल ठीक नइँखे, बाकी जो पुराणन का भासा कऽ वेवहार करीं तऽ, हम कहि सकीला कि बउधदेव सोरह-कला पूरन पुरुस रहलन। हमरा देश का बड़े-बड़े महान् पुरुसन के जनम देवे कऽ उत्तम भागि मिलल बा। बाकी बउधदेव के जइसन पूरन, सुलच्छन्, महान् देखल जाता ओइसन विरले होइँहन। महापुरुसन में केहू दिमाग में बहुत बड़ मिलिहन, केहू बहुत विलच्छन असाधारन बुद्धिबलवाला, जिनकर सूझ-समुझ निराला बा, बाकी हिरदय का कोमलता-मधुरता में ऊ ओतना बड़ ना मिलिहन। केहू हिरदय कऽ महाधनी होलन तऽ दिमागी बल में हल्लुक पहेलन। बउधदेव हिरदय आ दिमाग दूनों में महान् रहलन। ऊ भारत कऽ सबले महान् सपूत कहल जा सकेलन। उनकर जादूभरल उपदेश धरती का एगो बहुत बड़ भाग के दूइ हजार बरिसन ले शांति सवतुक सनेश दिहलसि। उनका वेकतिगत गुन, सरूप, लच्छन आ निराला तेयागमय जीवन के, अढ़ाई हजार बरिसन कऽ परम्परा अउरी अपना आ पराया लोगन का सरधा का फूलन कऽ ढेरि, एतना ढाँकि देले बा कि ऊ जंगल में बिलकुले तोपइला नियर मालुम होताड़न। बाकी तबो तऽ थोरे धियान दिहला पर ऊ गरदा लागल चमकत कोहनूर हीरा नियर जगमग-जगमग करे लागत बाड़न !

पच्छिमी देशन कऽ विदमान् जब पहिले पहिल बउधदेव का बारे में सुनलन आ जनलन, तऽ केतना उनके हिन्दू सनातन धरमी अवतारन नियर एगो दिमागी रचना समुझलन। बाकी, अन्त में ठोस इतिहासिक सचाई का सामने माथ नवावे के परल, आ बउधदेव का इतिहासिकता के माने के परल। जब बउधदेव सुगति का थोरहीं दिन बाद पिपरहवा में आ दूइ अढ़ाई सइ बरखी बाद अउरी जगहन में पुरान अच्छरन में टाँकल डिबियन में राखल उनकर पवित्तर धातु (हड्डी) हमरा सामने आइल, तऽ जनुक बउधदेव खुदे अढ़ाई हजार बरिस बाद हमन का सामने आके बोले लगलन—'हम हईं, जेके शरमण गउतम कहल जात रहे, जे कि उत्तरी भारत का जंगली हरियरी से मनशायन संथाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परगना जिला से थानेसर तक आ विन्हाचल से हिमालय का तराई तक पैंतालिस बरिसन तक बिचरत रहलीं।'

परम्परा का मोताबिक बउधदेव के जनम ५०५. वि० पू० का वैशाखी पूरनवाँसी के लुंबिनी (आज का रुम्मिन देई) का मनमोहक बाग में भइल रहे। ओनतिस बरिस का पोढ़ नयी उमिरि में ऊ घर छोड़लन। ग्यान का पियासि से बेकल छव बरिस ले साधु-संतन का तपोवन-कुटिन में टहरि-घूमि सतसंग कइला का बाद जब उनका संतोख ना भइल, बोध-शांति ना मिललि तऽ आखिर में उरुवेला का बीहड़ वन में नीलाजना नदी (फलगू) का तीर पर गूढ़ गोग-गुनावन, तप-धियान में जाइ बइठलन। सचाई आ लगन-सरधा से कठिन साधना कइला का बाद पैंतिस बरिस का उमिरि में अपने जतन से ओह अनमोल गूढ़ तत्तु-ग्यान के पावे में उनके सफलता मिललि।

बउधदेव का जीवने में उनकर सुजस अपना विचरे का छेतर ले बहरी जा पहुँचल रहे। सूना परांत गुजरात का समुंदर किनार कऽ सेठ आक उनकर चेला भइल, तच्छशिला कऽ राजा कसफिफण उनका चरनन में आइल। अपना समय के बड़ से बड़ बुद्धिमान तेयागी तपसी विचारक जे समाज कऽ नमूना रहलन पहुँचि के बउधदेव का चरनन में माँथ नववलन। सारिपुत्त, मोगलान, महाकास्सप का रूप में ओह समय मगधदेश का सबले परतापी सुरेमन बाभन-पंडितन के बउधदेव का सहज उपदेश से शांति मिललि। उज्जैन का राजा चंड परदोत कऽ उपरोहित महाकातियायन बउधदेवजी का चरनन में झुकि के साबित कइदिहलन कि जम्मूदीप में एगो बेजोड़ सूरुज उगल बाड़न। गिरहस्तो बाभन पंडित-समाज में बउधदेव का भगतन कऽ जमाति भारी रहे। तेज-परताप आ आचार-विचार दूनों में ऊ एतना मोहि लेबे वाला रहलन कि उनका सनमुख अइला पर लोग बरबस भगत हो जात रहे।

भारत कऽ ई परमपवित्तर पुन्निमय देश हरदम ले परकिरती कऽ विचरे लायक मनभावन रंगभूमि रहल बा। परकिरती भगवती अपना कोमल सुघर हाथन म एके सजा के शोभा कऽ भंडार बनवले बाड़ी। भारत कऽ बाहरी रूप बेहद सुघर बा। एहिजा सभ्यता आ आचार-विचारन कऽ कलपबिरिछ ऊगल। धरम आ दरशन कऽ जनम भइल, बेदरूपी ग्यान का मानसरोवर से अनेकन विचारधारा निकलली जे भारते के ना, बलुक संसार का केतना देशन के कवनो ना कवनो रूप में आजुवो तिरपित करत बाड़ीं।

बउध-धरम संसार का पूजा आदर जोग महान् धरमन में सबसे बड़ आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परधान ठहरल। भगवान बउधदेव एही भारत-भूमि में देंहि धइ के परगट भइल रहलन। ऊ संसार कऽ एगो विलच्छन दइवी विभो रहलन। ऊ समय का मोताबिक जवना धरम-चक्का के घुमवलन, ऊ एतना परानमय, तेजवान् आ वेवहारिक, साथेसाथ मङ्गलमय रहे कि आज अढ़ाई हजार बरिसन का बादो ओकर असर कम नइँखे भइल। एशिया का बस एगो छोट पच्छिमी भाग के छोड़ि के एह लमहर-चाकर धरती का भारी खंड पर एकर हुकूमति-बड़ाई, बेजोड़ आ अपार बा। बउध-धरम करोड़ों परानिन कऽ हित कइलसि अ। आजो ऊ उनका जथारथ कयलान का साधना में लागल बा। दुनियाँ का विचारवान लोगन पर एह धरम भा विचारधारा कऽ उत्तम असर पहिले का समय में परल बा आ आजो परि रहल बा।

ई खियाल करे का समय केहू आदिमी का जरूरे अचरज होई जब ओकरा ई मालुम होई कि विकरम संवत् ले करीब पाँच सइ बरिस पहिले भारत में एगो अइसन विचित्तर राजकुवँर कऽ जनम भइल रहे जे उत्तम राजकुल, राजसी ठाट-बाट आ भागिभोग कऽ सुखमय जीवन छोड़ि संसार का दुखी जीवन का कयलान खातिर बीहड़ जंगल आ गुफा-कंदरन, वन-कुटियन कऽ चक्कर काटि, अझुराहटि के सझुरावे का विचार से दर-दर कऽ ठोकर खइलसि।

जेकर धरम-संबंधी तेयाग, नमूनावाला अनमोल विचार, जीवन कऽ विनयशील आ मानुस-समाज खातिर मधुर प्रेम, अपना पहिले भा बाद का सुजन-सुधरमी लोगन में निराला बिना पटतर बेजोड़ कऽ रहे। एह संसार का सुख-दुख कऽ गूढ़ भेद, के कइसे समुझे आ कइसे कवना भासा में लोगन के समुझावे बतावे? गोसाईं तुलसीदासजी अपना रामचरितमानस का एगो चउपाई में ठीक इहे भाव झलकवले बाड़न—"सुनहु तात यह अकथ कहानी; समुझत बनै न जाय बखानी।" बउधदेव का आतमा पर सुख-दुख से भरल संसार का गूढ़ भेद कऽ भारी असर परल। एह गूढ़ भेद कऽ बोझ, जीवन कऽ छनभंगुरता आ अनिहचितता उनका आतमा में खलबली मचा दिहलसि आ उनका एह बाति कऽ मजे में ग्यान हो गइल कि लाखन आदिमी अग्यानरूपी भकसावन अन्हार में भटकत-अन्हुवात दुख-शोग का भारी खंधक में गिरि के पापमय जीवन बितावत महानाश के जा पहुँचत बाड़न। ऊ चारों घटना जिनके गउ-तम कपिलवस्तु का डहरि पर देखलन-जनलन-मतलब कि एगो पाकल बूढ़, दूसर रोगी, तीसर मरल आदिमी क लास़िजे के लोग रोवत-कलपत ले जात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे, चउथा वन घूमे का बेर संन्यासी से भेंट आ बातचीत—बतावति बाड़ी कि संसार कऽ दुखमय रूप गउतम का कोमल दयालु मन में भारी पीरा आ बेचैनी पैदा कइ देले रहै। दुख कऽ ई बहुरंगी तसवीरि उनका भीतर ओह बोझ का बारे में चेत जगावे-चउकस करे खातिर काफी रहली, जे कि अनंत समय ले अग्यानिन के दबावत रहल बा, एह हद तक कि आदिमी कऽ उत्तम ले उत्तम जतनो-जुगुति ओपर काबू ना कइ सकल आ जे मानुस जाति का नाश कऽ कारन बनल रहे। दुख कऽ निजी परतोख बउधदेव खातिर एगो सर्वसे दुनियाँ कऽ सवाल बनि गइलन। उनकर आतमा चंचल हो उठलि, उनका डेरवावन जनाये लागल। इनिरिन का पहुँचवाला पदारथन कऽ पोल उनका ऊपर अइसन असर डललसि कि ऊ नित्य में धियान लगावे आ अपना साथी मानुस-समाज के जीवन का हीनता आ बिसयन का लालसा-लटका मोह-ममता रूपी भरम से छुट्टी दियवावे वाला साधन खोजि निकाले का विचार से सभ किसिम के आराम, बल, अधिकार, राजमहल कऽ धन-संपदा, जोड़ू-जांता, भाईबंधु के छोड़ि विरागी बनि निकलि पड़लन।

ओह जुग में सचाई के खोजेवाला, दिमागी अशांति से बारंबार पीरा पवला से बेकल हो घुमक्कड़ बनि जासु। अँजोर करेवाली जोति का खोजवइयन का आपन खोज शुरू करे का पहिले, सुख-सिंगार आराम-भोग पहुँचावेवाला रुचि-गर संसारी पदारथन के छोड़ल जरूरी होला। एह पुरानि रीति-रेवाज आ परंपरा का मोताबिक बउधदेव घरबार छोड़ि दिहलन आ एगो तपसी कऽ जीवन मंजूर कइलन। ऊ अपना ठाट-बाट के उतारि फेंकलन आ गेरुवा बहतर धारन कइके जोति आ शांति का खोज में गाँव-गाँव आ बड़-बड़ नगरन में, तीरथधामन में चक्कर लगावे शुरू कइ दिहलन। ऊ संत तपसिन का खोज में जंगल पहाड़न, तपोवनन में ठोकर खात फिरलन, कुटी-गूफा-कंदरन कऽ खाक छनलन। एतना कठिन तेयाग ऊ ओनतिस बरिस का उमिरि में कइलन। ऊ गूढ़ विचारन का जरिये अधियातमिक विसवास के पावे खातिर जतन कइलन।

अधियातम कऽ मतलब कि सर्वसे सिरिहिटी का भीतरी भावन के जब मानुसदेंहि का जरिये अरथिया के समुझावल जाय त ओही भाव-अरथ के अधियातमिक अरथ समुझीं। एह किसिम से ऊ कुछ समय तक विचारन का अनजान समुंदर में बूड़त-उतिरात, पवँरत दिमागी जातरा कइलन, बाकी वेशी सफलता ना मिललि। मेंही तरक-दलेलि आ काट-छांट दिमागी अशांति कऽ उचित दवाई ना ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरि डहरि दँहि कऽ तप साधन कऽ रहल। बोध-शांति कऽ खोजी गउतम जब महामुनि अराड़ आ जोगिराज उदरक रामपुत्त का आसरमन में बहुत दिन रहिके उनका ग्यान उपदेश के सुनलन-समुझलन, समाधि लगवलन; धियान कइलन तबो उनकर चित्त शांत ना भइल, मन के बोध ना मिलल। अब एकरा बाद ऊ जोग का कठिन डहरि से चलि के तत्तुग्यान तक पहुँचे खातिर आगे बढ़लन आ उरुवेला का घोर जंगल में नीलाजना (फलगू) का एकांत तीर पर पहुँचि के तप में लीन हो गइलन।

सचाई आ दूसरा का दुख से दुखी होखेवाला मन कऽ वेग, जे कि मानुस का सुभाव में रमल बा, हमके पेरत ललकारत बा कि हम मिताई से पूरन संसार में सुतंतर बेकति का रूप में जी सकीं। अगर हम सच्चा देशभगत बानीं, तऽ हमार लगाव थानी, जातीय भा देशी न होके मानुस-समाजीय होखे के चाही।

सभ्यता, आदमिन का जरिये अपना आस-पास का हालति का साथ कठिन संबंधन में तालमेल बइठावे कऽ फल होली। बदलेवाली हालति समाज खातिर एगो ललकार का रूप में सामने आवेली आ उनकर मोकाबिला खातिर जवन-तवन उतजोग कइल जाला, उनहूँ से सभ्यता कऽ जनम आ फइलाव होला। जीवन, परानिन कऽ अपना आपके हालति का माफिक ढारे का लगातार जतन क नावँ हऽ। सभ्यता एगो जीवन डहरि हऽ, मानुस का आतमा कऽ एगो हलचल। एकर तत्तु कवनो जाति का परानी-साहतरीय एकता भा राजनेतिक आ संपतिसंबंधी परबंधन में नइँखे, बलुक ओह मोलन में बा, जे कि ओह परबंधन के रचत बाड़ी आ बनवले राखताड़ी।

असल में राजनेति आ संपतिसंबंधी रचना ऊ ढाँचा हऽ, जे लोगन का जरिये जीवन का ओह कलपना आ मोलन खातिर जोश-भरल भगती-विसवास परगट करे का नेति से खड़ा कइल बा, जे के लोग मानत बा। हरेक सभ्यता कवनो ना कवनो धरम कऽ परगट रूप होले, काहें से कि धरम परम मोलन में विसवास आ ओह मोलन के पावे खातिर जीवन का एगो राह कऽ निशान भा मूरति हऽ। जो हमन का ई विसवास न होखे कि ऊ मोल, जे कवनो सभ्यता में थापि के राखल बाड़न, सबले बढ़ि-चढ़ि के बाड़न, तऽ ओह सभ्यता के नेम निरजीव अच्छरि बनि जइहन, आ उनकर समाज-मंडल बिनसि जाई। धारमिक विसवास हमनीं में कवनो जीवन-डहरि पर डँटल रहे खातिर जोश भरेला, अउरी जो ओह विसवास कऽ छय होखे लागे ला, तऽ हुकुम मानल घटि के आदति भर रहि जाला, आ धीरे-धीरे ऊ आदतो अपने आप बिनसि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाले। कवनो सभ्यता कऽ सरूप एह सहारा पर टिकल होला कि मानुस का सुभाव आ ओकरा रहतब (भवितव्यता, अस्तित्व) का विसय में ओकर सूझ-समझ का बा।

धरम कऽ मूल सहारा बेकती का असल मोल आ गौरव कऽ परगट रूप; साथेसाथ जथारथता का ऊँच संसार का साथ बेकती कऽ संबंध हऽ। पूजा मानुस कऽ अलौकिक गूढ़ बरम्ह तक पहुँचे कऽ कोशिश हऽ। धरम ऊ हुकुम-शासन आ शिच्छा हऽ जे हिरदय-बीन का तारन के छूवत बा, आतमा कऽ अरस-परस करत बा आ हमन के बुराई अउरी नीचता से लड़े में मदति देला; काम-किरोध आ लालच से हमार रइछा करेला, नेति आ आचरन संबंधी बल का बान्हन के खोलेला, संसार के बचावे का महान कारज खातिर साहस देला।

मन का ऊपर हुकूमति का रूप में एकरा में (धरम) ओह बुराई का मोकाबिला करे कऽ कुंजी अउरी असल साधन मौजूद बाड़न, जे सभ्य संसार का दम खातिर खतरा बनलि बा। एकरा में हमरा विचार आ आचरन के आतमा का धरमन का अधीन बनावे कऽ बाति बाड़ी सऽ। बीतल जुगन में धरम जादू-टोना, नीमहकीमी आ अंधविसवास का साथ मिलल रहल हऽ। राजकुवँर गउतम का जुग में बहुत कुछ अइसने हालति रहल। आजुवो ओह तरह कऽ दशा हमन का सामने बा।

ओह धरम-विचारन के, जे कवनो समय दइवी जीवन का ओर ले जाये वाला रहलन, बाकी आज रोकावट बनल बाड़न, मानुस आ परमातमा का बीच में रोड़ा-अड़क बनि के खड़ा ना होखे देवे के चाही; आ अधियातमिक जीवन का असली सहज भाव के नाश ना करे देबे के चाही। गउतम सिद्धारथ का सामने इहे कुल अझुराहटि राह कऽ उढ़ुक बनि के ठाढ़ रहलीं। धरम, जइसन कि एकरा नावँ से परगट होता, एगो अइसन मेल करावेवाली, एक दूसरा के बान्हे जुटावेवाली शकती होखे के चाही, जे मानुस-समाज का मजबूती के अउरी पोढ़ करति हो, भले ओकरा इतिहासिक रूपन में अनेकन परगट कमी रहलि होखसु। अपना तत्तुरूप में धरम अधियातमिक-धावा खातिर पुकार हऽ। ई धरम, धरम विग्यान (science of religion) ना हऽ, बलुक धरम कऽ बेवहार आ हुकुम-शासन हऽ। आतमा का दुख-दरद कऽ, जे कि अपना आपके नित्य सनातन से अलगा कइ लेले बा, इहे एगो ओखधि बा। जब मानुस-आतमा एकरा असल सोतन आ एकरा शरतन के ठोकर'वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ अनादर करेले, तब ऊ मतवाली आ आतमघाती बनि जाले। मानुस (बेकती) आ नित्य (शाश्वत) का बीच लोप भइल नाता के फेह थापित कइल धरम कऽ असल निशाना हऽ।

धरम कऽ सार ओह धरम-विचारन में, आ धरम-मतन में, रीनि रेवाज आ सिच्छा सुधारन में नइँखे, जिनका से कि हमन में ले अधिका लोगन का अरुचि-उदासी होले, बलुक जुगन का गंभीर ले गंभीर बुद्धिमानी में, लगातार तत्तुग्यान में, सनातनधरम में बा, जे आज का बूझविचार का—भवँचक्कापन आ अउँजापथारि में हमार बस एके डहरि देखावेवाला बाटे। अनेकन दूसर-दूसर धरम सचाई कऽ सवतुक सरूप छाया ना झलकावसु, बलके सचाई–असल जथारथ का, ओह; दूसर अनेक अंगन आ समुझ-मरजादन कऽ तसवीरि देखा-वेलन, जिनका में कि लोग विसवास करत रहल ह। ऊ ओह एक ही साच जथारथ कऽ तरह-तरह के इतिहासिक झलक हउँवनि, जे कि अपना माने जोग मरजादा का विचार से सवँसे जगत कऽ आ सभ जुगन कऽ ठहरल।

एह सिरजना वाली परसव-पीरा का समय में, अपना कलेश सहे का गंभीरतो का कारन, भारत के ई विशेसाधिकार मिलल बा कि ऊ दुनियाँ खातिर जोति बनि सके, सभदेशीय महिमा का एगो सनेश कऽ धावन बनि सके। भारत जातीय-बूँदबिशेख कऽ मूरति ना हऽ, काहें से कि जातीय होनी (भवितव्यता) बनावटी ठहरलि। सभ जगहा आदमिन में जातिन कऽ गुन-विशेखता मिललजुलल मिलेली, एहिजा तक कि एके पलिवार का लोगनों में एके जाति कऽ विशेख गुन-लच्छन शांयदे कहीं मिले। भारतीय आचार-विचार-धारा (संस्कृति) जातीय नजरि से एकदेशीय ना हऽ, वलके ई सभ जाति का लोगन पर आपन असर डलले बा। बोध आ इहिट का विचार से ई सरबदेशीय ठहरलि। भारत का निशानरूप धरम हिन्दुवाई में इहे भावना मौजूद बा; ऊ भावना, जेकरा में एतना असाधारन जीवनी-शकती बा कि ऊ भारी राजनीतिक आ सामाजिक उलटफेरन का बादो बाँचलि बा। जब ले इतिहास कऽ लिखित कागजी सबूत पावल जाता, तबे ले ऊ आतमा का पवित्तर लौ कऽ गवाही देता; ऊ लौ हरदम, तबहूँ जब कि राजवंश विनसत होखसु, राजशासन टूटि के खँड़हर बनत होखसु, कायम रही। बस अकेल इहे पवित्तर लौ हमन का सभ्यता के आतमा आ नर-नारिन के जीवन कऽ एगो ठोस विचार दे सकेले।

मानुष में, एगो ना खाली जिये कऽ बलुक गौरव का साथ जीये कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असली मूल इच्छा कायम बा। जब हमन का एह गौरव से पूरन जीवन का बेग के बरहमांड कऽ समरथन मिलि जाला तब हमन का भीतर एगो उत्तम किसिम कऽ सवतुक धारमिक उतसाह भरि उठे ला। अइसन केहू आदमी नइँखे, जेकरा मन में कबहीं न कवहीं ई मूल सवाल न उठल होखसु—हम के हइं? हमार मूल कहवाँ बा? हमार होनी का बा? एकरा अलावे हमन का भीतर एह संसार का गूढ़ भेद पर अचरज कऽ बोध होता, एकरा सिजिल सुबहित नेम-कायदा में विसवास होता। हमन का अनंत समय ले चलि आवे-वाली गूढ़ बुझौवलनि का उत्तरन कऽ अंतहीन खोज बा आ वस्तुन का सचाई के खोजि निकाले कऽ अधीरता से भरलि लालसा बा; ओह सचाई के, जे एह अरथ में सभ संसार कऽ आ सभले महान् बा कि ऊ सभ आदमिन खातिर, सभ देशन, सभ समयन खातिर माने जोग बा। धरम कऽ जरि एक किसिम का अचरज का बोध में आ जीवन खुद जीवन का सनातन गूढ़ भेद में, एकरा सुघराई आ बल में, जब हम कवनो तिरपित करेवाली बतुस पाईला, तब होखेवाला भारी आनंद का अनुभव में बा, अउरी इनका अभाव में मानुस मुरदा का समान बा। जब तक सवले ऊँचा (परमेसर) आ महान् कऽ झलक ना मिले, तब ले जीवन अधूरा बा। आतमो कऽ ठीक ओइसने आँखि बाड़ि स, जइसे एह देंहि कऽ बाड़ी। ओह आँखिन से ऊ परम सचाई कऽ ग्यान पावेले आ सबले महान पूरन से, जे परमातमा हऽ, प्रेम करे सीखेले। जइसे आँखि आकाश के देखेले, ओइसहीं साधक लोग परमातमा का सब ले ऊँच निवास-ठावँ के देखेलन।[1] धारमिक बोध विचार ओतने पुरान हउँवनि, जेतना मुसकाइल आ रोवल प्यार-दुलार कइल आ छमा कइल। विचारन कऽ कवनों गंभीर साधना, विसवासन कऽ कवनो खोज, शुभ गुनन का बानि कऽ जतन, ई कुल्हि ओही सोतन से पैदा होलन जिनकर नावँ धरम हऽ। मन का जरिये सुघराई, शिवता (शिवत्व) आ सचाई कऽ खोज परमातमें कऽ खोज हऽ। मँहतारी कऽ दूध पीयत बच्चा, अनगिनित तारन का ओर निहारत वेपढ़ल-लिखल जंगली, अपना परयोगशाला में सूच्छम मेंहीं पदारथन के लउकावे वाला खुरदवीन का नीचे जीवन का बारे में गौर गुनावन करत विग्यानिक महापंडित, एकांत में संसार का सुघराई आ करुना (दया) का बारे में चिंतवन करत कवि, तारा से जगमग आसमान का, ऊँच हिमालय भा शांत समुंदर का सनमुख, भा एह सभन ले बढ़िके चमतकार एगो अइसन मानुस

१. 'सदा पश्यन्ति सूरयः तद्विष्णोः परमं पदं दिवीव चक्षुराततम्'—ऋग्वेद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का सनमुख जे महानो बा आ अच्छो बा, सरधा का साथ ठाढ़ भइल एगो साधारन आदिमी; एह सभन में एगो गूढ़ नित्य सनातन कऽ धुँधुराह भावना आ सरग खातिर बोध (संवेदना) विराजमान बा ।

साच माने में धारमिक आदिमी कऽ धरम बिल्कुल सीधा-सादा होला, जेकरा में धरम-विसवासन, धरम-विचारन का मनोभावन भा दइवी तत्तुन कऽ वेड़ी ना होखसु । नेयाव का साथ सभ वेवहार कइल, सुघराई का साथ प्रेम कइल आ सत्य (सचाई) का विचार का साथ विनयी बनिके, नइके चलल सबले ऊँच धरम हऽ ।

जेकरा मन कऽ विरती सब ले ऊँच आतमा में, बुद्धि आ आनंद का अपार समुंदर में लीन हो गइलि, ओकरा के जनमा के माई सफल मनोरथ हो जाले, परिवार पवित्तर हो जाला ओकरा से सवँसे धरती धरममयी हो उठे ले ।[1]

सवँसे सिरिहिटी कऽ मंशा मानुसजीवन कऽ वढंती कइल वा, मानुस कऽ नया सिरा से सुधार । मानुस-सुभाव के बदलला बिना हम मानुस-समाज के बदलि पावे कऽ आशा ना कइ सकीं ।

भारत का गूढ़ भावन से भरल धरम कऽ कहनाम बा कि अधियातमिक बतुस बेकतिगत होली आ हमन का उनके अपना जीवन में उतारे के चाही, एकरा खातिर जरूरी बा कि असल तत्तु के पावे खातिर हम सांसारिक बिसयन से विमुख हो जाइँ आ नईं शकती नया संकलप का साथ इतिहास का दुनियाँ का ओर लवट पड़ीं ।

गउतम कऽ तेयाग महान् आ गंभीर भावन से भरल रहे । सामाजिक-संगठन कऽ असल मंशा बेकति का आतमा संबंधी सुतंतरता, मानुसी-सिरजना-भाव के बढ़ावल ह, अउरी दुखकलेश देवेवाला कनून आ परथा का जरिये बिना रोकथाम्ह के मनचाही रीति से सोचे, बोध आ उपासना करे में मदति दिहल ह । अइसन अवसर आ सकेला, जब हमसे कहल जाय कि नेयाव का मोताबिक उचित संपति संबंधी सुपास खातिर अपना अधिकार आ जगहि-जायदाति क बलिदान कऽ दीं । दुनियाँ का अउरी देशन का सुख-सुबहिता-परबंध खातिर हमरा अपना देश का सुतंतरतो कऽ बलिदान करे के परि सकेला, बाकी आतमावाली सुतंतरता सबले ऊँच आ उत्तम बतुस ठहरलि आ एकर तेयाग

---

१. 'कुलंपवित्रं जननी कृतार्था, वसुंधरा पुण्यवती च तेन ।······अपार संवित् सुखसागरे-स्मिन् ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाली अपना आतमा के गवाँइये के कइल जा सकत बा। महाभारत में कहल बा[२]— "आतमा का हित खातिर सवँसे संसार कऽ तेयाग करे के परे त कइ देबे के चाही; 'आत्मार्थं पृथ्वीं त्यजेत्'।" अगर आदिमी आतमा के गवाँ दे आ सारी दुनियाँ के पा ले तऽ लाभ का? सुकरात का रूप में हमनीं का सामने एगो अइसन आदिमी कऽ सब ले ऊँच परतोख विराजमान बा, जे आतमा का सुतंतरता कऽ समरथक रहल आ ओके रतन आ सोना ले बेशकीमती समझत रहल। पोढ़ विशवास आ भावना से काँपत शबदन में सुकरात कहत बा—"जो रउरा सभ एह बदान पर हमके फाँसी का तकथा पर ले उतारे के कहीं कि हम आपन सचाई कऽ खोज बंद कइ दीं तऽ हम कहबि कि—"हे एथेंसनिवासी लोग! रउरा सभ के धन्निवाद; बाकी हम राउर हुकुम मनला का बदले परमातमा कऽ हुकुम मानबि, जे कि हमरा के एह काम में लगवले बाड़न। जब ले हमरा देंहि में साँसि आ बल रही, हम अपना तत्तुग्यान का धंधा के ना छोड़बि। हम अपना एह बेवहार के जारी राखबि कि जे केहू मिली ओके रोकि के कहीं: का तोहरा एह बाति पर लाज नइँखे लागत कि तूँ आपन कुल्हि धियान संपति आ सनमान पर लगवले बाड़ऽ; बाकी तोहरा ग्यान आ सचाई कऽ, अपना आतमा के अउरी अच्छा बनावे कऽ तनिको परवाह नइँखे? हमरा पता नइँखे कि मउवति का हऽ; हो सकेला कि ऊ नीमन चीज होखे, आ हमरा ओकर डर नइँखे। बाकी हम ई जानत बानीं कि अपना अपना करतब का जगहा के जोड़ि के भागल जबून वा; अउरी जवन चीज हो सकेला कि अच्छा हो (मउवति) आ जवना कऽ हमरा पता बा कि ऊ खराब बा (भागल), एह दूसों में ले हम पहिली के पसंद करत बानीं।"

जीवन बेकती में परगट होला। संसार कऽ नाभबिन्दु बेकतिये हऽ। सचाई कऽ ग्यान बेकतिये का होला। ऊ सीखे ला आ कलेश सहे ला; ऊ आनन्द आ शोग, छमा आ बैर कऽ ग्यान हासिल करे ला। संसार का सभ उन्नति कऽ बधाई ओही लोगन के दिया सकत बा जे कि चैन से ना रहलन। ई देखल राज कऽ काम हऽ कि मानुस का आँखिन में मानुस के पहचाने कऽ जोति धुँधुराह न होखे पावे। हरेक मानुस आतमा का गौरव आ शकती पावे कऽ जतन करहीं के चाही आ ओकरा सहज ऊँच विचारन से भरल उतसाह, बड़ अभिलाख आ दुख का समय में दूसरा कऽ कोमल प्रेममय प्यार पावे कऽ मोका मिलल चाही।

---

२. 'त्यजेदेकं कुलस्यार्थे;············आत्मार्थं पृथ्वीं त्यजेद्।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब तक लोगन का बेकतिगत आ सामाजिक जीवन में दखल ना दिहल जात रहे; जब तक कलाकारन; विचारकन आ ग्यानी विदमानन के सचाई कऽ खोज करे कऽ छूट रहे, आ सभे साधारन लोग देंहि, मन आ आतमा का सुभाविक गुनन कऽ उन्नति करत रहि सकल रहें, घरेलू नेम रीति-रेवाज कऽ पालन कइ सकत रहे, सहज सनेह, सरधा-भगती के निबाहि सकत रहे, तब तक उनका नजरन में एह बाति कऽ कवनों वेशी कीमति ना रहे कि राज हुकूमति केकरा हाथन में बा।

जीवन में धनसंपति-संबंधी मोल-मान का अलावहूँ बहुत कुछ बा। हमन का आदिमी हइं, खाली उपराजे आ भोग लगावे वाला नाहीं, मजूर आ गाँहके नाहीं। जो ई संसार दूध आ मधु से भरल धरती कऽ सरग हो जाय आ सहता मोटर कार, रेडिओ आ जीवन कऽ अउरी सभे लालसावाली बतुस लोगन सहज सुलभ हो जाय तबो हमन का मन के साचो कऽ शांति आ संतोख हरख ना भेंटाई। अइसनो नरनारी बाड़न जिनके सभ संसारी सुख-सुबहिता मिललि बा जे धन-दउलति से मिलि सकत होखे, तबो ऊ अपना के निराश नियर समुझत बाड़न, जइसे कि उनकर कुछ ठगि लिहल होखे।

मानुस खाली एही जीवन का आराम खातिर नइँखन जीयत, बलुक आतमिक सुख का जीवन खातिर जीयत बाड़न। आपसतंब रिखी कहले बाड़न कि आतमा के पवला ले बढ़ि के अउरी कुछ नइँखे। अधियातमिक सुतंतरता का खँड़हरन पर खड़ा कइल कवनो समाज-परबंध अनेति वाला मानल जाई धनसंपति का खिलाफ पाप के, समाज का खिलाफ पाप के छमा कइल जा सकत बा, बाकी पवित्तर आतमा का खिलाफ पाप के छमा नइँखे कइल जा सकत।

मानुस जाति कऽ इतिहास मानुस का ना जितायेवाली आतमा कऽ जीवन हऽ। एह जीवन में किसिम-किसिम कऽ रूप आ निखार बाड़न, ई कुल्हि ऊ दूसर-दूसर ढंग हउँवनि, जिनका जरिये मानुस-सुभाव अपना आपके अपना चाह आ धावा-उतजोगन के, अपना ऊँच अभिलाख आ सफलता के, अपना चढ़ा-उपरी रगड़ आ असफलता के परगट करे कऽ जतन करत रहल हऽ; एह सभ का बीच में होके मानुस कऽ सिरजनहार आतमा आशा करति रहलि हऽ, कठिन कोशिश करति चललि हऽ, असफलता होति रहलि हऽ, तबहूँ कुल्हि मिला के ओके विजय मिलति रहलि हऽ, ऊ आगे रहलि हऽ, कबहीं पाछे ना हटि के आगे बढ़े खातिर सजग भाव से करम जोग में लागलि रहलि हऽ; ई सुतंतर आतमा मानुस-इतिहास कऽ हिरदय (प्रान) हऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर जो सभ्यता के जीयत राखे के बा, त हमन का ई माने के परी कि एकर असली शकती जश, बल-संपति आ मरजादा में नइँखे, बलुक मानुस-मन का सुतंतर बेवहार, नेति-संबंधी गुणन का तरक्की, सुरुचि का बढंती आ जीये का ढंग में निपुनाई हासिल कइला में बा।

हमन का समाज में कारजलीन रहत बानीं; बाकी त हमनी एकांतसेवियो हईं, गौर गुनावन करवइया, जे रहतब का (अस्तित्व) बेवहारिक धंधारूपी कड़ा बोखार से निकलि के बारबार आतम-मिलन का शांति में डूबि जाईं ला। जब हमन का आपन नजरि भीतर का ओर फेरि लेईं ला, त बाहरी घटना आ जीवन का बढ़ावा का मोकाबिला हमन का भीतरी जीवन का भेदन में बेशी आनन्द लेवे लागी ला।

सबँसे सिरिहिटी का भीतरी भावन के मानुस देंहि का जरिये समुझे कऽ जवन अधियातमिक बोधनयन बा ओकरा ओर ले जायेवाला भीतरी धियाने ठहरल। जीवन कऽ मंशा धरती पर नमूना कऽ लोक उतारले ना हऽ, बलुक एगो ऊँच आ तेज चेतना पावल हऽ। शिव, बउधदेव आ अउरी दूसर सयकड़न संतन कऽ तसवीरि पलेटो, अरस्तू तक अपनवलन, इहे एह सचाई कऽ सबूत बा कि मानुस कऽ सबले ऊँच निशाना—गौर गुनावन, सुतंतरता आ बुद्धि कऽ शाँति हऽ। विचार करम कऽ शरीर हऽ। शुरू में खाली शबदे रहल आ शब्द से हाड़ मांस बनल। दरशन-बोध-ग्यान-तत्तु-विचार—इतिहास बनि जाला आ आचार विचार कऽ सुधार (संस्कृति) सभ्यता, भलमनसाहत।

जीवन सुघर नमूनन का शासन में रहेला आ सभ क्रांतिकारी आंदोलन का पाछा विचारधारे (दर्शन) काम करत रहे ली। हमन का जे कुछ सोची ला, ओही कऽ फल हईं हमन का। विचारक लोग अगाही होनी कऽ सिरजन-हार ठहरलन। विचार-बोध (दर्शन) कऽ काम खाली जीवन कऽ छान बीन आ कथने कइल ना हऽ, बलुक ओके आँखि दीहल आ डहरि देखावलो हऽ।

धरम आतमा का रोगन कऽ, अफीमि-फेटल शांति करे वाली दवाई ना हऽ। ई त समाज का बढंती खातिर गति-बल देवे वाली तागति हऽ। सभ महान् सफलता कलेश सहले का बलिदान कइले से पैदा होली। जो हम संसार का पँचड़ा में फँसल रहबि, त हमरा में कवनो असलियत ना पनफी, हम समाज के कवनो नया साँचा में ना ढारि सकीं, हम अनजान में खोज-जातरा ना कइ सकीं। संत-आतमा मानुस का दुख-कलेशन पर विचार कइ के पिघिले ले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा के आपन दुख मानि के हटावे कऽ जतन करे ले। ऊ जीवन का बोझ के अपने बोझ नियर समुझे ले।

धारमिक जीवन का बढंती खातिरई जरूरी बा कि मानुस बेवहारिक धंधन से अलग रहे, जे से बुद्धि संबंधी भा भावन का गौर-गुनावन में चित्त अहथिर हो सके। एकांत कऽ गतिविधि दूइ रूप धारन करे ले—बुद्धि संबंधी जे दरशन-विग्यान का ओर ले जाले; अउरी कोमल भावना वाली जे कला आ रहस-मरम कऽ गूढ़ सरूप बनि जाले। एकान्त में जवन दइवी नयन जोति भेंटाले, ऊहे तूफानो बवंडर में जीवन के डहरि देखावे ले। दइवी नयन जोति के पावेवाला आदिमी अपना सपनन के जथारथ सरूप देलन। उन-कर रुख अपना दम (अस्तित्व) पर विजय पावे कऽ होला, ओकरा से भागि खड़ा होखे कऽ नाहीं। एह संसार कऽ, जे कि मतभेदन भा झगड़न क छेतर हऽ; मुकती (उद्धार) खाली दइवी नयन-जोति से होला।

धरम कऽ मंशा गौर गुनावन भा भाव-समाधि ना हऽ, बलुक जीवन का धारा का साथ एक आतमभाव थापित कइल आ एह खातिर सिरजना वाली बढंती में भागि लिहल हऽ। धरम-परायन आदिमी ओकरा पर ओकरा संसारी परकिरती भा सामाजिक हालतन का ओर ले थोपल मरजादन से ऊपर उठि जाला आ सिरिजना वाली मंशा के सुघर आ मशहूर बनावेला। धरम एगो गतिवाली जुगुती हऽ, सिरजनहार तेज मन का वेग कऽ नयी कोशिश, जे कि असाधारन जीवन (व्यक्तियों) का जरिये कारज करे ला आ मानुस जाति के एगो नया दरजा तक उठावे खातिर उतजोग में लागल बा।

जवना विचारन कऽ हमन का अपना रोजरोज का जीवन में आ सामाजिक नाता-संबंधन में पालन करे के बा, ऊ ओह चीज का जरिये ठीक कइल बाड़न, जे के धरम कहल जाला। ई सचाई कऽ जीवन में ठोस रूप हऽ, आ हमन का परकिरती के नया रूप में ढारे कऽ शक्ती।

कवनो जीयत समाज में हरदम बनल रहे कऽ बल आ बदले कऽ तागति दूनो होखे के चाही। कवनो गवाँर-समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक शायदे कवनो बढंती हो सकति होखे। ओहिजा फेरबदल के शक-सुबहा का नजरन से देखल जाला आ सवँसे मानुसी बलपुरुसारथ हालति के पहिले नियर बनवले राखे खातिर लागल रहे ला। बाकी कवनो भला समाज में बढंती आ फेरबदल ओकरा चालि-पैंतरा नेतिनेम कऽ जान होलन। समाज खातिर दूसर कवनो चीज एतना हानि पहुँचावे वाली ना होखे जेतना कि घिसल-पिटल रीति-नेम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ पुरान परलि आदतनि से चपटल रहल; जवन कि खाली जढता का करते बांचलि चलि आवे ली। हिंदू विचारधारा में बहुत जरूरी फेरबदलन खातिर जगहि राखल बा। ई ठीक बा कि आतमा कऽ सचाई सनातन ठहरलि, बाकी नेम जुग-जुग में बदलत रहेलन। धरम एगो लचकीला धागा हऽ जे बढ़ल देहि के बहतर नियर ढांके ला। जो ई बहुत कसल होखे, त फाटि जाई आ फल अन्हेर हलचल आ उलटफेर होखी। जो ई बहुत ढील होखे, त अझुरा के गिरा देई आ हमन का चले में रोकावट डाली। ई धरम समुझदार लोकमत से न तऽ बहुत पाछहीं रहल चाहीं न बहुत आगहीं।

राजकुवँर गउतम महा तेयाग कइके जवना सचाई आ बोधविचार तक पहुँचलन ओकर कथा अमिट अच्छरन में समय-संगमरमर का सुघर पटरिन पर टाँकलि बा। पच्छिम-उत्तर में बफटीरिया-पारथिया-एपीरस-मेसीडोन, रोम-तुरकी, बलख-बोखारा, कूचा-काशगार, चीनी तुरकिस्तान, मङ्गोलिया; आ पुरुब में बरमा-चीन, कम्बोडिया, श्याम, चम्पा, जवदीप (जावा), सुबरनदीप (सुमात्रा) बाली-बोरनियो जापान; दक्खिन में लङ्का तक जेकर मधुर धरम-उपदेश पहुँचि के करोड़ों कुँचाइल-रउँदाइल लोगन के उठवलसि-जगवलसि, उनका में नयी जीवनी, दया पुरुसारथ कऽ भाव पैदा कइलसि—जेकरा अचरज में डाले वाला तेयाग-तप, भाईचारा, प्रेमभाव कला-कारीगरी से आधी दुनियाँ हजारन बरिस तक सरग बनलि रहलि आ अबहियों केतना देशन में ओह महापुरुस का हजारन संत-संन्यासी भिक्खु चेलन आ महापंडितन कऽ जश गवाता—उनकर गाड़ल धरम-पताका फहराता, ओकरा बारे में ओही का जनम धरती देवभूमि भारत में केहू का पुरहर जानकारी न होखे ई केतना दुख कऽ बाति बा। जहाँ तिब्बती, चीनी, जापानी-रूसी, फ्रेंच, अँगरेजी भा नयी-पुरानी केतने विदेशी भासन में भगवान बउधदेव का जीवन-कथा आ उपदेशन का बारे में चाहे बउध-आचारविचार (संस्कृति), बोध-ग्यान, गौर गुनावन का अनमोल बरनन में लाखन पन्ना विदमान लोग रँगि घलले बा, ओहिजा हमन का भारतीय भासन में कहीं कुछ लउकत नइखे। कहीं-कहीं पच्छिमी विदमानन कऽ पोछि पकड़ि के अब कुछ डेग उठे लगलन हँ सऽ जिनके खनले बियरि में फेरु खोदल मानल जाई। सिल्यान लेवी, शेरवात्सकी, ओल्डेनबर्ग, मनियर-विलियम्स रिज डेविड्स, कनिंघम, मारशल वोगयरह कऽ देखादेखी कुछ भारतीय विदमान, तिरिपिटक का अनेकन पोथिन आ बउध-आचार विचारन अउरी भिक्खुन का कठिन उतजोग पुरुसारथ पर कलमि चला रहल बाड़न बाकी अबहीं बहुत कमी बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभले खटकेवाली जवन बाति वा, ऊ ई कि अनेकन सइ बरखी (सदी) पहिले महाकवि अस्सुघोस सँसकीरित भासा में महापुरुस भगवान बउधदेव कऽ चरित-कथा लिखलन—उनकर 'बुद्धचरितम्' (बउधचरितम) तयार भइल।

बउध-धरम की बढंती का सोनहुला जुग में तिब्बती आ चीनी भासा में भारतीय विदमान् लोग ओकर उलथा कइके भगवान का ओह कथा के देश ले बहरी पहुँचावल। संसार का केतने देशन कऽ लोग क्रांतिकारी महापुरुस का जीवनी आ उपदेश कऽ जानकारी कइल। पच्छिमी देश का खोजी पंडितन का मन में भगवान का बिचित्तर कथा के जाने कऽ लालसा जागल तऽ ऊ लोग तिब्बती (भोट) आ चीनी पढ़ल, पाली आ सिंहली सीखल, सँसकीरित के जानकारी हासिल कइ के बहुत कुछ खोजल पता लगावल। लेकॉक, इसटाइन (Stien) वोगयरह का मद्धि एशिया का खोज कऽ साहसी-धावा हमरा मन में केतना जोश उमङ्ग जगावत बा ई कहा नइँखे सकत। एडविन आरनल्ड का 'लाईट आफ-एशिया' (Light of Asia) के हम कइसे भुलाइ सकीला ?

आक्सफोर्ड विसविद्दालय के सँसकीरित विदमान डा० जानसटन का लगन, उतहास आ मेहनति कऽ जेतना बड़ाई कइल जाय ऊ थोरहीं होई। सँसकीरित भासा में लिखल अस्सुघोस कऽ उत्तम महाकाव्य, जेकर मूल चउदहे सरग पावल गइल—आ ओकरा में बोध्र-ग्यान मिलले तक कऽ कथा भेटाइलि तऽ खोजी विदमान् भोट (तिब्बती) आ चीनी भासा में उलथा कइल एह एह महाकाव्य के खोजि के ऊपर कइलन आ ओकर जस कऽ तस अँगरेजी उलथा तइयार कइके पच्छिमी संसार का विद्याप्रेमी लोग का सनमुख पेश कइलन कुछ दिन का बाद पुरनियाँ जिला कऽ चउधुरी सुरुजनरायन जी ओह अँगरेजी उलथा के सामने राखि ओकर हिन्दी गद्य में दूसर रूप तइयार कइलन। चउधुरी जी अस्सुघोस का मूल सँसकीरितवाला चउदह सरगन कऽ त अलग शलोक सहित अरथ कइलन आ बाकी ना मिलें वाला चउदह सरगन का अँगरेजी उलथा कऽ हिन्दी गद्य तइयार कइके हमन का सामने रखलन। एने आके जब्बलपुर के महंथ रामचन्दर दास जी बाकी चउदह सरगन के सँसकीरित पद्य में बदलि के अस्सुघोस का अधूरा महाकाव्य के जोरि जुटा के पूरा करे कऽ जतन कइले बाड़न। महन्थ जी कऽ ई कारज सराहे लायक वा। कम से कम एगो भारी कमी त पूरा भइलि। बाकी असल सवाल ई बा कि जहाँ महा-भारत आ पुराणन का कथाखण्डन के लेके अनेकन खण्ड-काव्य, महाकाव्य लिखइलन, महापुरुस भगवान बउधदेव जी का विलच्छन चमतकार पुरुसारथ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर उपदेश आ मङ्गलमय आचारविचारन के, त्याग तप सेवा के लेके, कहीं कुछ ना लिखाइल। एकरा के कवि विदमानन कऽ उदासी, लापरवाही आ पच्छपात मानल जाय कि भूलि? हँऽ कुछ निपुन लेखक, उपनेयास, कथा-कहनी जरूर लिखलन, बाकी ऊहो दबहुर बनल कमजोर कलमि से।

हमरा मन में ई जानि-समुझि के बड़ा भारी कलेश भइल कि जेकरा उपदेश-वचन के जानि के विनय-पोथिन के खोजे, भगवान का जनमधरती कऽ पुन्नि-दरशन करे, हजारन बरिस पहिले फाहियान—हजारन कोस के डेरवावन गोबी आ तकलामकान का मरुभूमिन के पार कइके कूचा-काशगर गंधार होत महा-नद सिंधु के लँघलसि आ भारत का धरती पर पहुँचल। एहिजा पनरह बरिस रहिके ऊ तच्छशिला से मथुरा-अजोधा-काशी-नालंदा सगरे पहुँचल आ महा-पंडितन, साधु-संतन का सतसंग में सँसकीरित सीखि विनय पोथिन के पढ़लसि।

एह् ले बहुत पहिले हमरी फाहियान आ हुवेनसांग रहलन जिनकर जातरा कम साहस आ पुरुसारथ वाली ना रहे। चीन में विकरम का दूसरी सइवरखी से बाद तक जायेवाला विदमानन में धुरंधर साहसी महापंडित भिक्खु कस्सप मातंग धरमफल, संघवरमा, धरमरच्छ, धरमरतन, गुणवरमा, कुमारजीव परमारथ, बोधिरुचि, नरेन्दरजश आ कठिन हिमालय के लांघि तिब्बत का धरती पर तथागत का धरमसनेश के पहुँचावेवाला शांतिरच्छित, दीपंकर, कमलशील कऽ पुरुसारथ-कथा पढ़ि के हम चुप्पी सधले बानीं कि कइसे ई विदमान ओह कठिन जुग में हजारन कोस जंगल-पहाड़, नदी-मरुभूमि लाँघत दूर देश में गइलन। ओहिजा जाके ओह देश कऽ भाषा-बोली सिखलन, उनका से नेह नाता लगवलन आ अपना आचार-विचारन (संस्कृति) में उनके पूरा-पूरा रँगि दिहलन।

आज हमनीं अपना ओह तेयागी-तपसी संत-महापंडितन का जशकथा के जानहूँ आ उनकर नावों इयाद करे कऽ जतन नइँखीं करत। ई केतना दुख कऽ बाति बा। विदेशन में बउध महापंडितन-साधु संतन का हाथन से फहरावल भारतीय-आचारविचारन का पताका के लहरात देखि चाहे बीतल जुगन में शांतिमय धरमविजय कइके झंडा लहरवला कऽ रोवाँ ठाढ़ करेवाली कथा पढ़ि के हमार मन ललकि उठल कि हम अपना सहज मधुर देशी भासा में भगवान का पवित्तर जीवन-कथा के सरस पद्यन में लिखि के काव्य कऽ रूप देईं। अपना परोपकारी साधुसंतन, वीर साहसी विदमानन का जश के टूटल-फूटल शबदन में गाईं, गा के अपना भाईबंधु, हीत-मीत, सुजनसंगी सभके सुनाईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लालसा जागलि तऽ ठीक, बाकी ई कारज एतना कठिन आ भारी रहल कि कबे-कबे सोचिविचार के थरहा डोलि जाय। बाकी गुरुभगवान आ महा-पुरुस मुनि बउधदेव के इयाद कइके हम एह काम में हाथ लगवलीं।

भोजपुरी भासा में बउधदेव जी कऽ कथा पद्य में लिखाये लागल। पहिले तऽ सबँसे कथा थोरे में मामूली ढंग से एकसइ पचहत्तर पन्नन में लिखाइलि। पहिला रूप बिना सरगन का बँटवारा कऽ मोटा-मोटी खास-खास बातन के साधारन तसवीरि का रूप में तइयार भइल। एकरा बाद हम अस्सुघोस का 'बुद्धचरितम्' कऽ परायन कइलीं। चउधुरी सुरुजनारायन जी आ महंथ रामचन्दर दास जी का साजल-सवाँरल पोथिन के देखलीं। 'ललितविस्तर', 'बउधचरिया' आ देशी-विदेशी विदमानन का बउधचरित संबंधी रचनन के अपना सूझ-समुझ का मोताबिक पढ़लीं। एतने नाहीं, 'बउध-दरशन' का अनेकन खोज भरल पोथिन के देखि के विचार कइलीं। बउधविचारधारा, ओकरा निकास-सोत, बढंती आ पुरुबी-पच्छिमी देशन में ओकरा फइलाव-कथा के पचासन गरंथन में पढ़लीं-टोवलीं। एकरा में असल मंशा रहल कि बउधदेव का तेयाग तप आ असल विचारन के सही रूप में देखि जानि सकीं—ओके समझि के लोगन के सुना-बता सकीं।

जीवन-कथा—गउतम बउधदेव लगभग ६२० वि०पू० में शाकिय राज-धानी कपिलवस्तु का नियरा लुंबिनीवन में जनम लिहलन। ई जगहि आज का नेपालराज का भीतर आ भारत का सिवान ले आजकाल पाँच मइल दूर कायमि बा। एहिजा अशोक कऽ एगो टाँकल लेख सहित पत्थल खंभ १८९५ ई० में पावल गइल जेकरा में लिखल बा—"हिद बुधे जाते ति।" तिरिपिटक में शाकिय लोगन के अभिमानी आ शुद्ध जाति के छतिरी बतावल गइल बा। उनके बाभनन कऽ गउतम गोतर दीहल बा। सनातन हिंदू सासतरन का मोताबिक उत्तम कुल वाला छतिरी लोग के उनका बाभन गुरू कऽ गोतर दियात रहे। तब छतिरिन कऽ अलगा सुतंतर गोतर कऽ असली विचार बाभन कुल परंपरा में रहे। अस्सुघोस का महाकाव्य 'सौन्दरनंद' से एकर परमान मिलत बा।

हिमालय का तराई में बसल शाकिय-जनपद कोशलराज का अधीन एगो गणराज रहे जे कि विड्डुभ का धावा तक लगभग सुतंतर रहे। गण कऽ राज-काज बिधि-बेवहार छोटन-बड़न का एगो सभा का जरिये होत रहे, जेकर बटोरि कपिलवस्तु का सभा-भवन में होत रहे। अइसन मालुम होता कि गण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ एगो चुनल परमुख होखे जेके राजा कहल जाय। बउधदेव का सुजन संबंधिन का बारे में बाद कऽ धरम-गरंथ किसिम-किसिम कऽ, एक दुसरा का उलटा, असमंजस में डालेवाली खबरि देत बाड़न, जिनसे असल सचाई कऽ निरलय करे में 'विनय' वोगयरह पोथिन से वेशी सहायता नइंखे मिलत। महावग्ग से मालुम होता कि बउधदेव का पिता कऽ नावँ शुद्धोदन रहे। एक जगहा पर उनका महँतारी कऽ नावँ माया दीहल बा।

ई इयाद करे जोग बा कि गउतम बउधदेव अपना जीवन समय में महापुरुस आ तिरथंकर मानल जात रहलन, ना कि एगो दइवी अवतार भा तत्व, जइसन कि बाद कऽ भगति-भाव से नवल बउधलोग उनके समुझल! बाद कऽ भगत लोग उनका जीवनी के अपना सरधा आ विचारधारा का मोताबिक गढ़ि-सजा के तइयार कइल। एकर फल बाटे कि बउधदेव का जीवन का बारे में पुरान आ इतिहासिक बाति बहुत कम बा। उनका जीवन विरतांत के जाने खातिर पाँच गरंथ सहारा का रूप में सामने बाड़न—(१) महावस्तु (२) ललितविस्तर (३) अभिनिसक्करमणसुत्त (४) जातकठ्ठ कथा (५) बुद्धचरित।

१. महावस्तु—महासांघिक लोग का लोकोत्तरवादी दल कऽ 'विनयपिटक' हऽ। महासांघिक-मत (निकाय) नंदिवरधन का समय में वैशाली में होखवाली दूसरी सगीति का अवसर पर थेरवादिन का विरोध में कायम भइल रहे। महावस्तु खिचड़ी सँसकीरित भासा कऽ गरंथ हऽ। एकरा में भगवान बउधदेव कऽ जीवनचरित उनका पहिला जनम का कहनिन का सहारा पर लिखल बा। जीवन-चरित का घटनन में एक-दूसरा से कवनो मेल नइंखे। बरनन कऽ ढंग बहुत पुरान बा। महावस्तु में लिखल चरित तीन खंडन में बा जवना में से पहिला में बउधदेव का पहिल जनम का पुरुसारथन कऽ चरचा बा जवन उनका जथारथ जीवन धारन करे ले पहिले करे के परल। दूसरा में बउधदेव का असली जीवनचरित क बरनन बा। तीसरा में महाकास्सप, सारिपुत्त, महामोग्गलान, शुद्धोदन, महापरजावति गौतमी, जशोधरा, राहुल, आनंद, उपालि सहित अउरी शाकिय नवजवानन कऽ शिच्छा-कथा बा। गरंथ का अंत में बिंबीसार का चेला भइला कऽ कथा दीहल बा। गरंथ पढ़ला से मालुम होता कि समय-समय पर घटना आ कथा-विसय जइसे-तइसे जोरि के गरंथ कऽ कलेवर बढ़ावल बा।

२. ललितविस्तर—ई पूरा साजल सरियावल सुघर तरीका से लिखल जीवनचरित विसय कऽ रोचक गरंथ हऽ। एकरा में गद्य-पद्य कऽ गंगा-जमुना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चहावलि बाड़ी, आ ऊहो सँसकीरित भासा में। गरंथ का बरनन कऽ सरस सुबोध ढंग भगवान बउधदेव का चरित कथा के पढ़े खातिर पढ़वइयन के बरबस खींचत बा।

३. अभिनिसकरमण-सुत्त—एह पोथी कऽ लिखवइया धरमगुपुत हउँवनि। मूल पोथी त मिलत नइँखे, एह से ओकरा बारे में विशेस कुछ टीपनी कइल उचित नइँखे। आचारज नरेन्दरदेव का अनुसार डा० बिल जे ओकर संछेप अँगरेजी उलथा तइयार कइले बाड़न ओकरा से पता चलत बा कि ई गरंथ ललितविस्तर का सहारा पर रचल बा। बाकी एकर शुरू साइति 'महावस्तु' का अलम्म पर होके अंत 'ललितविस्तर' का सहारे भइल बा।

४. जातकट्ठ-कथा—एकर आपन एगो अलगे ढंग बा। एकरा में चारि बउधदेवन का सभ घटनन कऽ विस्तार का साथे बरनन बा, जिनका जिनिगिये का समय में बोधिसत्व दूसर-दूसर रूप धारन कइके बोधि-ग्यान पावे कऽ जोगिता हासिल कइ ले ले रहलन। ई पोथी जातक कथन कऽ भूमिका हऽ आ पाली भासा में लिखलि बा। ई बुद्धघोस कऽ रचना मानलि बा। बाकी केहू-केहू एके सिंघली विदमान कऽ रचना मनले बा। एकरा में बरनन कइल चरित के बहुत बढ़ाचढ़ा के लिखल बा। कलपना कऽ रंग बहुत गाढ़ बा—देवतापन का भावन से कथा भरलिपूरलि बा।

५. 'बुद्धचरित'—ई जीवनचरित संबंधी सँसकीरित भासा कऽ काव्य-गरंथ हऽ। ई महाकवि अस्सुघोस कऽ रचना हऽ। ई पोथी ऊपर लिखल सभे गरंथन ले ठोस, सवतुक, आ सजल सवाँरल ढंग से लिखलि बा। एकरा में बउधदेव का जीवनचरित का अलावे दूसरि कवनो कथा नइँखे घुसारलि। एकरा बरनन में बउधदेव एगो साधारन मानुस का दरजा ले उठि के देवता कऽ पद पा ले ताड़न, जे कि पढ़वइयन के जथारथता का ओर बड़ा रोचक ढंग से खींचि लेता। एहसे बुद्धि आ हिरदय का भीतर सहजे समाये लायक बा। एकरा रचना-रीति में रामायण, महाभारत आ कालिदास का रचनन कऽ छाप बा।

ऊपर का पाँचो पोथिन का अलावे, भगवान बउधदेव का जीवन से संबंध राखेवाली घटनन कऽ वहुत कुछ समगिरिही में हमन के 'विनय' आ 'निकायन' से मिलति बा। अइसना समगिरिही में 'महावदान-सुत्त', 'अरिय परियेसन-सुत्त' आ 'महापरिनिरवान-सुत्त' मुखपात बाड़न। 'बोधिराजकुमार-सुत्तन्त' में भी कुछ मशाला मिलत बा। एकरा बाद बउध-जीवनचरित संबंधी कुछ घटना 'सुत्तनिपात' आ 'महावंशो' से मिलति बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पालि तिरिपिटक में बउधदेव कऽ जीवनी सभ अंगन से पूरन कहीं नईंखे मिलति। 'महावग्ग' में बोध-ग्यान का कुछ बाद कऽ बरनन मिलत बा। 'महापरिनिरबान-सुत्तन्त' में निरवान आ ओकरा कुछ पहिले कऽ चरचा बा। 'महावदान सुत्त' में बउधदेव का जीवनी के एगो नमूना अंश में कसल बा। निदान कथा बहुत बाद कऽ हऽ। ओहू ले बाद कऽ जिनचरित आ मालालंकार-बत्थु। अबहीं कुछ दिन पहिले 'महापरिनिरवानसुत्त' आ 'महावदान' सुत्तन कऽ कुछ सँसकीरित अंश मद्धि एशिया में मिलल बाड़न।

तिब्बती परंपरा वाली बउधदेव का जीवनी से संबंध राखेवाली कुछ बातन कऽ राॅकहिल 'दी लाइफ आफ बुद्ध (कैगनपाल) में अँगरेजी में उलथा कइले बाड़न। मूल 'विनय' में बउधदेव का जीवन-कथा आ विनय का नेमन कऽ कुछ चरचा एगो सुत्त में शामिल रहे। एह 'विनय' कऽ साज-सवाँर दूसरी संगीति (धारमिक-महासभा) का बेर भइल रहे। पाछे ले विनय का दूसर-दूसर रूपन में कम-वेश कइके बउधदेव का जीवनी का हालि के विनय से अलगिया के दूसरा संग्रहन में डालि दिहल गइल। परतोख खातिर,—पालि विनय में असकंधक का शुरू कऽ बउधदेव कऽ चरित-संबंधी कुछ अंश मौजूद बा। पालि तिरिपिटक ओके ओहिजा ले निकालि के दीघनिकाय में डालि देले बा। महासांघिक आ मूल सरवास्तिवादी विनयन में महापरिनिरवानसुत्त के संगीतियन का बरनन का शुरू में देखल जा सकत बा। मूल सरवास्तिवादी विनय में संघभेद वस्तु आ छुदरक-वस्तु से बउधदेव का जीवनी कऽ कई अंश जोरल जुटावल बाड़न। बाद का समय में तिरिपिटक का बउधचरित वाला अंशन के जुटा के निदानकथा, ललितविस्तर, महावस्तु वोगयरह कऽ रचना भइल। एहू पोथिन में बउधदेव कऽ चरित-कथा अधकपटे रूप में मिलति बा।

बउधदेव का जनम समइया का अचरजवाली धरम-कथन के पुरान ना मानल जा सके। असित का भवीखत-बानी के साच माने में अड़चन बा। बउधदेव का लरिकाईं आ पढ़ाई-लिखाई का बारे में कवनो परतीति वाली परमानिक समगिरिही नईंखे मिलति न उनका धरमसंगिनिये का बारे में कुछ पता कऽ बेवरा भेंटाता। सभ का बाद एहिजा काव्य-चरचा कऽ मोका समुझि हम महाकवि अस्सुघोस का सँसकीरित महाकाव्य 'बुद्ध चरितम्' के मोटा-मोटी आपन सहारा बना के करीब-करीब सभे चरचा कइले बानीं।

तेयाग—ओनतिस बरिस का उमिरि में जिनिगी का चमकत मधुरपहरा में बउधदेव सिद्धारथ गउतम का रूप में, सुख-संपति, भोग आनंद आ ठाटबाट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का राजसी जीवन के अपना मन का पेरना से छोड़ि के रमतासंत का कठिन घुमक्कड़ जीवन के अपना लिहलन। बाद का विसवास का मोताबिक ई घटना अचके में भइलि। गउतम के शुद्धोदन का हुकुम से एगो बनावटी दुनियाँ में घेरि-बझा के राखल रहे। दइवी दूतन का बहकावा आ जोर से बुढ़ापा, रोग, मउवति, का दरदभरलि तसवीरन के देखला से आ वन में संन्यासी महातमा का भेंट-दरशन से एक-ब-एक उनका चित्त में बेकलता पैदा भइलि आ ऊ संसार का पँचड़ा के छोड़ि के गेरुवा वहतर धारन कइलन।

अधियातमिक-वयराग, अचके में एह तरे जागि उठल अंते खातिर अनजान नइँखे, बाकी जवना किसिम से बउधदेव जी का बारे कथा कहलि बा, ओकरा पर सोलह आना विश्वास करे में आज का लोगन का शंका हो सके ला। ई मानल कठिन वा कि ओनतिस बरिस का पोढ़ उमिरि तक उनका बुढ़ापा, रोग आ मउवति का बारे में कुछ जानकारी ना रहे। फेरु दूसर बाति कि 'सुत्त' आ 'विनय' में एह कथा कऽ जिकिर ना रहल, एह फेरु संदेह के अउरी बढ़ा देता। पुरानी पोथिन के देखला से मालूम होता कि बुढ़ापा, रोग, मउवति वोगयरह पर सोच-विचार कइले से बोधिसत्व जी—जे कि बोधिग्यान कऽ उत्तम अधिकारी रहलन—संसार का दुखदायी रूप के हिरदय में धारन कइलन आ कयलान करे वाला शांति-पद—जेकरा में कवनो दूइमत नइँखे—खोजे कऽ निहचय कइलन। उनका संसार-तेयाग का चालू रोचक कथा के पैंतरा का ढंग से जोरि जुटावल गइल। बहुत दिन का बाद जब गणराज आ शाकिय लोगन का साधा-रन गवँई जीवन कऽ इयाद भुला गइल रहे, ई मानल कि बउधदेव एगो पर-तापी राजा कऽ पूत रहलन आ भारी धनसंपति, सुख-आराम में पालल-पोसल रहलन।

लुंबिनी में जनम-समइया पर जोतिसी लोग ओह समय का गरहदशा के देखि के बतवले रहे कि अइसन लच्छनवाला घरबारी रहे तऽ चकरवरती राजा होई, आ तेयागी हो जाय तऽ परमग्यानी दुनियाँ कऽ सुरेमन महातमा—महापुरुस होई।

जोतिसी लोग कऽ भवखितवानी सुनि के शुद्धोदन कुछ सजग जरूर रहलन आ सुख-सुबहिता, भोग-आनंद, रागरंग कऽ पुरहर परबंध कइके सिद्धारथ के ओकरा में बझवले रहे का कोशिश में रहलन, बाकी सिद्धारथ कऽ मन भोग में ना बाझल। ऊ हरदम मानुस का दुख-कलेश का बारे में गुनत-मँथत रहसु। एक दिन संजोगन टहरे घूमे का बेर ऊ जरजर बूढ़ देखलन, एही तरे दूसरा बेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारी रोगी आ तीसरा बेर मुरदा। बाद में बन में विचरे का बेर कबहीं केहू संन्यासी महातमा कऽ दरशन भइल। नतीजा भइल कि सुभावन उनका मन में ई भाव उपजल—जे आदिमी जनम लेता, बूढ़ आ रोगी बनि के फजिहति सहत बा अउरी दुख में बिलखत मरि जाता। एकरा ले नीमन तऽ ई संन्यासिये बाड़न, जेकरा कवनो चिन्ता नइँखे, ई संसार का दुखपरपंच से छुट्टी पाके सुतंतर आनंद में विचरत बाड़न।

बाकी बाति असल ई जनाति बा कि कपिलवस्तु में भरड़ुकालाम नावँ कऽ संन्यासीसन्त आसरम बना के रहत रहलन, जिनका सतसंगे से सिद्धारथ का मन में वयराग कऽ डिम्भी अँखुआइलि आ पनिफि के लतागाँछ बनलि।

बउधदेव आ उनकर जुग—आरजलोग का निवासभूमि भारतवरस में वेदने का जुग जमाना ले जाति-पाँति कऽ बाति-बेवहार कऽ परमान मिलत बा। चारों जातिन में बाभने उत्तम मानल बतावल बाड़न। महाभारत में शिरीकिशुन जी अरजुन से कहत बाड़न—वाक् पैदा होते ओह देव-देव से पहिले बाभन, आ तब ओह बाभन से बाकिये जाति (छतिरी-वैश-शूद्र) पैदा भइलीं।

"वाक्य संयम काले हि तस्य देव देवस्य ब्राह्मणा: प्रथमं प्रादुर्भूता:।
ब्राह्मणेभ्य: शेषा: वर्णा: प्रादुर्भूता:॥" (शान्ति०, अध्या० ३४२, पद २१)

हरिवंशो पुरान[1] में कुछ अइसने चरचा बा। कहल बा कि "अच्छर से बाभन, छर से छतिरी, विकार से वैश आ धुवाँ-विकार से शूद्र भइलन। रिग्वेद में चारो जातिन कऽ साफ चरचा बा। एह किसिम से दूसरो पुरानि धरम-पोथिन में अउरी-अउरी सबूत अनेक जगहा मिलत बाड़न। बहुत पुराना रिग्वेद का 'पुरुससुक्त' में 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्य: कृत:' वोगयरह रिचा मिलति बाड़ी सऽ, जेह सभई का मोताबिक बाभन के चारो बरनन में उत्तम कहल बा। रिग्वेद में चारो जातिन कऽ साफ जिकिर बा अउरी जिनका में बाभन क नावँ पहिले लिहल बा। एह सभसे पता चलत बा कि जातिन में बाभन सेसर बाड़न। भगवान बउधदेव का बहुत पहिले एह बाभन दल कऽ, अपना ग्यान-विग्यान का कारन समाज पर दबदबा रहे, आ जेकरा हाथ में समाज का आचार-विचार कऽ (सांस्कृतिक) बगडोरि रहे।

देश का आचार विचार वाला छेतर में जहाँ समाज कऽ लगामि बाभनन

---

१. 'अक्षराद् ब्राह्मणा: क्षरात् क्षत्रिय वान्धवा:।
वैश्या विकारातश्चैव शूद्रा धूमविकारत:॥"—हरि० भवि० २१०-११८-१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का हाथ में रहे, ओहिजे समाज कऽ राजनेतिक बगडोरि छतिरिन का हाथ में रहे। ऊ छतिरियो लोग अपना ऊँच कुल का गौरव कऽ शान राखत रहे। आ अपना दानी दयालु चरित अउरी समाज का रइछा कऽ बोझ सम्हारे वाला होखला से समाज में बलवान रहे। एह किसिम से हम देखत बानीं कि समाज में एक ओर जहाँ बाभन सतोगुन का बल से पूरन रहलन, ओहिजे छतिरियो दल पूरा रजोगुनी बल से भरलपूरल रहल। रजोगुनी बल कऽ फइलाव सतोगुन-तमोगुन दूनो ओर हो सकत रहे, एह से ग्यान कऽ पसार भइला पर छतिरी लोग अपना के सतोगुन का ओर मोरे कऽ कोशिश कइल आ आचार-विचार का छेतर में आपन धाक जमावल चाहल। वस एही बाति के लेके बाभन आ छतिरिन में एक दूसरा से सेसर बने कऽ चढ़ाऊपरी नधा गइलि। समय पाके एही कारन से दूनो जातिन में बहुत रगरा-झगरा आ लड़ाई भइलि। बाति एतना तक पहुँचि गइलि कि जब रइछा कऽ बोझ ढोवेवाला बल कऽ पुजारी छतिरी सतोगुनी विरती के बढ़ा के आचार-विचारन का छेतर में आपन महिमा थापित कइल चहलन तब सतोगुनी आचारन के धनी बाभनो लोग बल का छेतर में अपना बरम्ह-बल आ बाहुबल के अजमावे कऽ ठानल। नतीजा भइल कि चढ़ा-ऊपरी आ इरिखा-जलन, सरधा आ शांति का आसन के छीनि लिहली अउरी बाभन-छतिरी के कलह का लहकलि भट्ठी में डालि दिहली।

हमरा एह कहला कऽ केतने सबूत पुरान-जुग का इतिहासिक घटनन में मिलत बाडन—पुरानन में बशीठ-विशवामीतर का लड़ाई कऽ चरचा एही चढ़ा-ऊपरी कऽ निशानी हऽ। एकर पूरा बरनन 'बराह-पुरान' में मिलत बा। एही बड़प्पन का चढ़ा-ऊपरी का कारन से परशुराम आ छतिरिन का घोर लड़ाई भइलि, जेकर कथा हमरा पुरान पोथिन में मिलति बा। जदपि कि एह बड़प्पन का चढ़ा-ऊपरी कऽ लड़ाई बहुत दिनन तक बहुत बड़हन रूप में चलल, तवो समाज में मरजादा का सेसरता कऽ बगडोरि बाभनन का हाथ ले छतिरी छीनि ना सकलन, अइसन साफ सिद्ध होत बा। छतिरिन का मालूम हो गइल कि जवना छेतर में आ जहाँ का समाज में बाभनन का बड़प्पन कऽ धाक कायम बा, ओहिजा आ ओह समाज में हमन का बड़प्पन कऽ सिक्का नइँखे जमि सकत। एह से छतिरी अइसन परदेश आ अइसन समाज का खोज में लगलन, जहाँ बाभनन कऽ दबदबा कायम ना हो सकल रहे। ओह समय अइसन परदेश आ समाज देश कऽ पुरुबिये भाग रहे जहाँ बाभन धारमिक झुकाव का कमी का कारन जाइल आ रहल पसन्द ना करत रहलन। बलुक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह भागन के घिरिना जोग बता बता के दूसरो लोगन के ओहिजा जाये से रोकत रहलन। देश कऽ पुरुबी भाग कुछ तऽ दलदल रहे आ कुछ जंगल-झार कऽ भाग रहे। अइसन पुरुबी इलाका आचार-विचारन का खियाल से बहुत पछड़ल आ गरीबी का खंधक में गिरल रहे। अइसन पुरुबी भाग आज कऽ बिहार, बंगाल, आसाम आ उड़ीसा रहल जहाँ छतिरी आपन अड्डा कायम कइलन।

हम देखत बानीं कि पुरुबी भाग में राजरिखी जनक भइलन, जे छतिरी रहलन आ जिनका राजसभा में सभापंडित का रूप में जागबलिक जी नियर 'तत्तुग्यानी' बाभन रहत रहलन। विशवामीतर जी— जे कि बाद में राजरिखी ले बरम्हरिखी हो गइलन—अपना बड़प्पन का धाक खातिर एही पुरुबी छेतर के चुनि के जग्य आ धरम-करम कऽ मरजादा कायम कइलन।

बाकी तऽ अइसना छेतर में तत्तुग्यानी छतिरी; बाभनन कऽ चलावल बहुत खरचा वाला धरम-नेम आ करमकांडन के छोड़ले उचित समुझलन। ऊ लोग तप-तेयाग आ ग्यान-धियान का साधन से सुगति पावे कऽ एगो नया कदम उठावल। आतम-ग्यान आ बोध-शांति पावे कऽ ई डहरि एह आदिवासी छेतर का पछड़ल गरीब जनता के करांतिकारी आ मन का माफिक, सुबहिता लायक साबित भइलि। एह से हमनीं देखत बानीं कि बाभनलोग जवना जग्य-हवन पूजा-पाठ कऽ सिंधु का तराई में नेंव डालल, बढंती कइल, बहुत जोर मरलो पर—ऊ रीति-नेम करम-कांड भारत का पुरुबी छेतर में जरि ना जमा सकल, न बाभनवाद कऽ झंडा एह भाग में फहराये पावल।

एकरा उलटा देश कऽ बाभन मगध, अंग वोगयरह परदेशन के खराब समझि के बराबर अनादर करत रहलन। सुभावन छतिरिन के आपना नयी राह का पसार बढंती खातिर जथाजोर धरतीं मिली गइलि। धीरे-धीरे छतिरी समाज कऽ तरक्की अइसना इलाकन में बढ़ते गइलि आ जग्य-उपनेति का उलटा तप अउरी ग्यान-राह का फूले-फरे कऽ दिनदशा बिहार का पुरुबी भाग में पोढ़ होत गइल।

ऊपर का जथारथ बातन क सही तसवीरि हमरा 'उपनिषद'-जुग में देखे के मिलति बा। एह समय में अइसन अनेकन छतिरी राजा भइलन, जे कि अपना कठिन-साधना से ग्यानबल के जगा के बाभन बिरती पा लिहलन। अइसना छतिरिन में काशिराज अजातशतुरू, जनकविदेह, अस्सुपति केकय, परवाहन जैबलि वोगयरह परमुख रहलन। एकरा बादे हमरा ऊहो कथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलति बा, जेकरा में लिखल बा कि औपमन्नव, सत्तजग्य, पौलुखि-इन्दर-दुमन, भाल्लपेय, जन-शाकराच्छ आ बुडिल आशुतराशिव नियर महाशरोतरी बाभन गिरहस्तो अस्सुपति केकय से बरम्हविद्या सीखि के रिखी पद पवले रहलन। बाकी अइसन बरम्हग्यानी अस्सुपति केकयो, बाभन रिखिन के अपना किहें नेवता देके भोजन करावे आ दान देवे के तरसत रहसु। एक बेर जब ऊ ऊपर लिखल रिखिन के बहुत धन दीहल चहलन तऽ ऊ लोग साफ नामंजूर कइल। एकरा पर केकय किरिया खात कहलन कि—"हमरा सवँसे राज में एकहू चोर, एकहू मनमानी करेवाला पुरुष, एकहू गिरल चालि-चलन वाली मेहरारू, एकहू झूठ बोले वाला, एकहू कादर, एकहू शरावी आ एकहू बे पढ़ल-लिखल आदिमी नइँखे तब काहें रउरा सभ हमार धन नामंजूर करत बानीं?" हम देखत बानीं कि पच्छिमी भाग में बाभनन कऽ एतना दवदबा रहे कि बरम्ह ग्यानी राजा के ओह लोग के नेवता पर बोलावे में किरिया खाये के परत रहे तबो ऊ लोग नामंजूर कइ देत रहे। एह सभ बातन से साफ साबित होता कि छतिरी-समाज से बाभन समाज बड़ रहे; जवना बड़प्पन के पावे खातिर छतिरी दिनराति लालायित रहलन।

देश का अइसने पुरुबी-उत्तरी भाग में बड़प्पन कऽ दावा करेवाला ओही तरह का छतिरी कुल में सिद्धारथ कऽ जनम भइल रहे। उनकर रहन-सहन पढ़ाई-लिखाई बड़प्पन का गौरव से पूरन वायुमंडल में भइल रहे। शाकिय-छतिरी अपना गौरव खातिर देश भर में मशहूर रहलन आ अइसन मशहूर रहलन कि सिद्धारथ जब बउधदेव आ सभ अभिमान से रहित हो गइलन तबो समय-समय पर उनकर खनदानी अभिमान ना छूटि सकल रहे।[१] ई बड़प्पनवाली बाति भगवान बउधदेव का समय तक पहुँचत-पहुँचत अइसन परचंड आ बिगारू हो गइलि कि छतिरी एह समय में करम से ना, जनमे से अपना के बड़ माने लगलन आ जेके खुद बउधदेवो मानत रहलन। अइसन अनेकन परमान हमके बउधदेव-वचन का रूप में कई जगहन में मिलत बाड़न।[२] दीघनिकाय का अम्बट्ठसुत्त से पता चलत बा कि सवँसे शाकिय-कुल अपना बड़प्पन का अभिमान का कारन बाभनन कऽ आदर-मान न करत रहे। अम्बट्ठ बाभन बउधदेव से भेंट भइला पर इहे दोस लगवले बाड़न—"चण्डा

१. दीघनिकाय (अगञ्ञ सुत्त)—३।४
२. दीघनिकाय (अम्बठ सुत्त)—१।३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भो गोतम शक्य जाति·········इब्भा समाना न ब्राह्मणे संग करोन्ति न ब्राह्मणे मानन्ति—" आदि।

भगवान बउधदेव जहाँ-जहाँ जातिन कऽ नावँ गनवले बाड़न, ऊ सगरे बाभन ले पहिले छतिरी कऽ नावँ लेत बाड़न। एतने ना, तीरथंकर महावीर आ भगवान बउधदेव छतिरिन का बढंती खातिर जेतना बड़ काम कइलन, ओतना उपनिषद् जुग कऽ सभे बंरम्हग्यानी छतिरी राजा मिलियो के ना कइ सकलन। एह छतिरी समाज का बढंती कऽ फूलल फरल रूपे, एने का पुरुबी भाग में जैन-धरम आ बउद्ध-धरम का जरिये देखे में आइल। साच पूछल जाय त ई दूनो धरम बाभन-छतिरी जुद्धि में छतिरिन का विजय-पताका कऽ निशानी हउँवनि—जे बिहार राज में उड़लि रहे।

एह सभई कारनन का चलते हम देखत बानीं कि बरन-आसरम कऽ निहचित रीति-नेम आ बाभन-धरम कऽ पसार जवना रूप में, काशी ले पच्छिवँ का भाग में लउकत बा, ओह रूप-मातरा में काशी का पुरुब भाग में नइँखे लउकत। अब रउरा मजे में समुझि गइल होइबि कि बउधदेव का छतिरी-जातीय मरजादा वाला सुभाव आ उनका ओह समइया का पढ़ाई-लिखाई आ शिच्छा-सतसंग से रसल विचारन कऽ जइसन (मान-मरजादा) आदर-सतकार बिहार का धरती पर हो सकत रहे, ओइसन न हिमालय का देशभूमि में न सात-सिंधु आ गंगा-तराइये में।

देश का एह पुरुबी छेतर कऽ निवासी आ राजवंश, बाभन-गरंथन में 'व्रात्य' ('पतित' आ अनारज) नावँ से पुकारल बाड़न। 'व्रात्य' कऽ शबदी माने होला वरत के मानेवाला आ वरत के धारन करेवाला। बाकी वैदिक आ बाभन-गरंथन में 'व्रात्य' शबद बहुत खराब माने में बेवहार में आइल बा। ओहिजा एकर माने-मतलब—अनारज, वैदिक करमकांड-विरोधी, आ दोगला बा।

महाभारत का उद्योग-परब[१] में 'व्रात्य' लोग के पापी कहल बा। एकरा मोताबिक आगि लगावे वाला, जहर देवे वाला, शराब वेचे वाला, सूदिखोर मती से दगा करेवाला, गरभ गिरावेवाला, वेविचारी (व्यभिचारी)—गिरल चालिचलन वाला, 'व्रात्य' वोगयरह बरम्हघाती कहल जालन। वेद

१. "अगारदाही गरदः कुण्डाशी सोमविक्रयी। पर्वकारश्च सूची च, मित्र ध्रुकपारिदारिकः भ्रूणहा, गुरुतल्पी च, यश्च स्यातपानपो द्विजः। स्रुवप्रग्रहणो व्रात्यः कीनाशश्चात्मवानपि।—महा० उद्योग० ३५, ४६-४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ नामी अरथ लिखवइया सायणाचारज जी 'व्रात्य' कऽ माने पतित बतवले बाड़न। 'व्रात्य' लोगन कऽ उपरोहित मंतर-तंतर आ जादू-टोना का पेशा से जियका चलावसु। ई तप में लीन बरिसन खड़ा रहि जासु। इनका में बहुत लोग भारी हठजोगी होत रहे। एकर ईहो कारन रहे कि जजमान 'व्रात्य'-समाज जादू-टोना भूत-डाइनि बरम्ह-राछछ में बिसवास करे।

जब हम विचार करत बानीं कि ऊपर लिखलि सभ्यता कऽ परदेश कवन हो सकत बा, तब हमरा सामने साफ रूप से बिहार परदेश झलकि जाता। एह सभ बातन से इहो पता चलत बा कि बाभन धरम-गरंथ एह पुरूबी छेतर के कवना नजरि से देखत आ एके केतना नीच बतावत रहलन। बाकी एकरा से इहो साफ जना जाता कि एहिजा सुतंतर विचारक, ग्यानी आ बड़े-बड़े तपसी मौजूद रहलन। अशोक का असमारकन में पगरी-साफा, फाँश वोगयरह कऽ जवन चिह्न मिलत बाड़न, उनसे पता चलत बा कि ऊ व्रात्य-सभ्यता कऽ निशानी हउँवनि। बउध-जुग का तप का रीति-रेवाज कऽ जवन-चरचा बउध-गरंथन में मिलत बा ओकरा में व्रात्य-तप कऽ साफ झलक बा। तंतर-मंतर कऽ क्रिया तऽ बहुत पुरान हइये हऽ, जेकरा से बउधो लोग ना बाँचि सकल।

भगवान बउधदेव का चरितसंबंधी बउध-गरंथ 'ललित-विस्तर' मे जवना आठ राजवंशन कऽ चरचा बा, ओह राजवंशन में मगध-कुल का बारे में लिखल बा "ई कुल महँतारी-बाप दूनो मूलन से शुद्ध नइँखे। ई चंचल सुभाव वाला हऽ आ पुरहर पुन्नि से सींचल पवित्तर नइँखे। एकर रजधानी जंगली लोगन का बसे लायक बा।"

ऊपर का कहनाम से बाभन-गरंथन कऽ बाति साबित होति बा। अथरव वेद कऽ एगो रिचा देखीं—

"गंधारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः।
प्रैष्यन् जनमिव शेवधि तक्मानं परिदद्मसि॥"

—अथर्व० कां० ५, सू० २२, रि० १४

अथरव वेद कऽ रिखी कहत बाड़न, "जइसे आदिमी आ जरूरति कऽ सामान एक जगहा ले दूसर जगहा भेजल जालन; ओही तरे हम बोखार (ज्वर) के गंधार, मूँजवान्, अंग आ मगह-देश में भेजि देत बानीं।" एसे साबित होता कि आरज लोग अंग आ मगह देश के अनारजन (पिछड़ल हीन जातिन) कऽ धरती मानत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार परदेश कऽ रिखी, ग्यानी आ तपसी जग्यन् में हाखेवाली पशुन का बलि कऽ पूरा विरोधी रहलन। ई लोग ग्यान-धेयान तप वरत-उपास तेयाग वोगयरह के उत्तम मानत रहे। जग्यन का बदला ई लोग संजम-नेम तप आ आतम-शुद्धि पर जोर देसु। एह तरह कऽ तप बउधदेव आ उनका कुछ समय बादो तक चालू रहे।[1]

ईशा का जनम ले पहिले, दशवीं सइ वरखी में होखे वाला काशी वासी पारसनाथ एही तरह का तप के मानेवाला रहलन। ई जैन धरम कऽ तेइसवाँ तीरंथंकर रहलन। वैशाली कऽ राज-परिवार इनहीं का मत के मानत रहे। तीस बरिस का उमिरि में ई संन्यासी होके तप करत रहलन आ चउरासी दिनन का तप में इनके जीवन-मुकुत सन्त (अरहत) कऽ पद मिलि गइल। ईहे कारन रहे कि वैशाली का पांजर वाला गावँ कुण्ड का राजा 'सिद्धारथ' कऽ पूत 'वरधमान' चउबिसवाँ तीरथंकर भइलन आ जे पाछे चलि के महावीर का नावँ से देश-दुनियाँ में जानल गइलन। ई महावीर बउधदेव का समय में रहलन। बउध-धरम-पोथिन में इनके निगंठनाथपुत्त कहल बा।

सिद्धारथ गउतम का संन्यास लेके जश पावे कऽ बहुत कुछ पेरना एही महावीर तीरथंकर से मिले कऽ लच्छन मालुम होता। महावीर कऽ जनम वैशाली का छतिरी कुल में होखल रहे, जेह कुल से शाकिय-छतिरि लोग कऽ गाढ़ नाता रहे। महावीर साबित कइ दिहलन कि ग्यान आ त्याग-बल कऽ मरजादा राजबल से अधिका बा। एह तरे जब वैशाली कऽ एगो राजकुवँर एतना आदर-मान पाके लिच्छवी कुल कऽ मरजादा बढ़ा दिहलसि तऽ सुभाविक बा कि शाकिय-कुल कऽ सिद्धारथ गउतम—जे कुल परम्परा में लिच्छविन ले उत्तम रहलन—अपना ग्यानबल आ तेयाग से शाकिय कुल के उत्तम सिद्ध करे खातिर तत्पर भइलन तऽ कवनो अचरज कऽ बाति नईखे।

कपिलवस्तु के छोड़ि के निकलला का बाद सिद्धारथ गउतम पहिले पहिल भिरगू मुनि का तपोवन में पहुँचलन, जे कि आज का बलिया में गंगा-सरजू संगम पर रहे।[2] भिरगू मुनि का आसरम में बहुत थोरे दिन रहिके गउतम

---

१. महावग्ग-१, चुल्लवग्ग-६

२. पुराना समय में गंगा-सरजू संगम आज से बहुत पच्छिवँ 'कारो' का पास रहे। मुनि भिरगु का आश्रम कऽ पुरान जगहा कुछ तऽ अब गंगा का गरभ में बा आ कुछ भोजपुर जिला का सेमरी थाना में 'तिलकराय का हाता' गावँ का उत्तर 'भिरगु-रासन' वेचिरागी मउजा का रूप में जानल जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे बढ़लन। उनका कपिलवस्तु में रहेवाला संन्यासी भरण्डुकालाम से महापंडित आराद कालाम—जे कि ओह युग कऽ ग्यानी संन्यासी सन्त रहलन—का वारे में जरूर जानकारी होई। आराद-कालाम आ उदरक रामपुत्त का धरम-सम्बन्धी विचारधारा कऽ परचार एही बिहार में रहल। गउतम जब संन्यास लिहलन तऽ पहिले पहिल एही विदमान सन्तन का धरम-मत में शामिल होके ऊ सांखिय दरशन आ जोग समाधि कऽ सिच्छा पवलन। भरण्डुकालाम, जे कपिलवस्तु में रहत रहलन, ऊ एही आरादकालाम का मत कऽ संन्यासी रहलन। भरण्डुकालाम का कपिलवस्तु वाला संन्यासी आसरमें से गउतमं के समाधि कऽ पहिली सिच्छा मिललि आ संन्यासी डहरि का ओर उनकर झुकाव भइल। सिद्धारथ जब कवे अपना खेती गिरहस्ती भा अउरी कामन से फुरसति पाके निकलसु तऽ एही भरण्डु का आसरम में बइठि के सतसंग करसु आ भरण्डु से समाधि क शिच्छा लेसु। आरादकालाम का धरम-विचारन कऽ थोरे बहुत ग्यान उनका एहिजे भइल रहे।

आराद कऽ परधान आसरम, असली मूल बिहारे परदेश में रहे। भगवान बउधदेव का जीवन-चरित का मशहूर गरंथ 'ललित-विस्तर' का मोताबिक आरादकालाम आ उदरक रामपुत्त कऽ आसरम वैशाली का पास रहे। बउध-साहित्त कऽ मशहूर विदमान् महापण्डित राहुल सांकृत्यायन अपना 'बउध-चरिया' नावँ का पोथी में एह लोग का आसरम के बोधगया आ राजगिरिह का बीच में बतवले बाड़न। धरमानन्द कोशंबी एह लोग का आसरम के कोशलराज में सिद्ध कर ताड़न। 'अंगुत्तर-निकाय' में कालाम नावँ का छतिरिन का नगर कऽ नावँ 'केशपुत्त-निगम' लिखल वा। धरमानन्दजी आराद का आसरम के केशपुत्ते में बतावत बाड़न, जे के ऊ कोशल राज में मानत बाड़न। अगर जो आराद कऽ आसरम केशपुत्त में रहे (जेकर उमेदि वेशी बा), त ई केशपुत्त कोशल में ना रहे, वलुक बिहार-राज का शाहाबाद (आरा) जिला में रहे, जेकर नावँ आज केशठ बा (शाहाबाद के अब भोजपुर आ रोहितास दू नया जिलन कऽ रूप दिहल जा चुकल बा)। असल में केसठ गाँवें केशपुत्त निगम हऽ, काहें से कि आजुवो एहिजा पुरान छतिरि कुल का उत्तम शाखा कऽ बास बा। एहिजा कऽ बहुत पुराना डीह; नदी किनार कऽ भारी बर बरिछि आ ओकरा नियरा एगो पुरान मंदिर के देखला से एकरा पुरान आ गौरव कऽ जगहा भइल सुभाविक ढंग से सावित हो जाता। ई गावँ डुमरावँ नगर से दक्खिन करीब आठ मील बा। कुछ दिन पहिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजा का पुराना पोखरा में माटी खनत खानि, नीचे ले बउधदेव कऽ एगो-दूगो छोट मूरति मिललि रहलीं, जे पत्थल कऽ रहलीं। मालुम होता कि घरमानन्द जी पुरानि बउध-पोथिन के देखि के केसपुत्त के कोशल में लिखत बाड़न। ओकर कारन ई हो सकेला कि बउधदेव का पहिले ई परदेश काशी राज में रहे, जेकरा के जीति के कोशल कऽ राजा कोशलराज में मिला लेले रहलन। एही से मशहूर विदमान् 'होई' आरा नगर का नावँ के 'आराद' कहले बाड़न आ 'आराद कालाक' का आसरम के 'आरा' में बतवले बाड़न।

'आरकियोलॉजिकल सरवे आफ इण्डिया' (भारत कऽ पुरा तात्विक सरवे) नावँ का पोथि (भाग ३, पन्ना ७०) में अइसन चरचा बा कि एगो जैन-लेख में आरा कऽ पुरान नावँ 'आराम' मिलल बा। ईहो बाति बिचारे लायकि बा कि आराद कऽ आसरम जो वैशाली का पास होइत, तऽ सिद्धारथ कपिलवस्तु से चलि से चम्पारन होत वैशाली अइतन। दूसर बाति कि जो आराद कऽ आसरम वैशाली का पास रहित तऽ गउतम वैशालियो जरूर गइल रहितन आ ओकर चरचा जरूरे रहित। वैशाली नियर महानगरी का नियरा जाके ओके ऊ कइसे ठोकरिया सकत रहलन। बाकी तऽ हम पढ़त बानीं कि सिद्धारथ छन्दक का साथ कंथक पर सवार होके अनामा (अचिरावती) नदी के पार कइलन तब पहिले ऊ कोशल परदेश में गइलन। ओहिजा ले भिरगू मुनि का आसरम में घूमत, सीधे आरादकालाम आ उदरक रामपुत्त का आसरमन से होत राजगिरिह पहुँचलन।

एह से निहचित होता कि कोशलराज का—बलिया भिरगू मुनि का आसरम से ऊ शाहाबाद का भूमि में गंगा पार कइलन आ आरादकालाम अउरी उदरक का आसरमन से होत राजगिरिह पहुँचलन। एह विसय में महापंडित राहुलो जी कऽ मत ठीक नइखे जनात। काहें से कि एह दूनो सन्तन का आसरम से होके गउतम राजगिरिह गइल रहलन। वैशाली तऽ ऊ बोध-ग्यान पवला का बाद तीसरा बरिस गइलन।

बिहार-परदेश सिद्धारथ गउतम का पहिले धारन कइल विचारधारा कऽ गुरू तऽ रहबे कइल, एकरा अलावें मगह का सुधर मनमोहक वन आ पहाड़ी भागन में अनेकन रिखी-तपसी, संन्यासी-शरमण, अगिनि-होतरी अउरी गूढ़तत्तुन के जाने वाला विचारक रहत रहलन, जिनका मत के जाने माने वाला लोग सवँसे मद्धि देश में फइलल रहे। राजगिरिह नगर खुदे पाँच हरियरी भरलि पहाड़िन का पंजा में बसल रहे, जेकरा चारों ओर मगधराज का छाहें में साधु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्तन कऽ दल बिना बिघिन-बाधा के तप में लीन रहत रहे। इनका में छव धरम-गुरुवन (शास्ता) कऽ चरचा बउध पोथिन में मिलति बा। 'मज्झिम निकाय' का 'चूलसारोपम सुतन्त' में ऊपर का छव गुरुवन कऽ चरचा देखे के मिलति बा। उनकर नावँ बा—(१) अजित केश कम्बल (२) संजय वेलट्ठि-पुत्त (३) पकुधकच्चायन (४) पूरनकस्सप (५) मक्खलि गोशाल (६) निगंठ नाथपुत्त।

एकरा में अन्तिम निगंठनाथपुत्ते जैन धरम कऽ चउबिसवाँ तीरथंकर महावीर हउँवनि। जैन-धरम तऽ बउधे-धरम नियर फूलन-फरल आ आजुवो देश में लाखन लोग एह धरम के मानेवाला बाड़न। बाकी पाँच मतन कऽ कहीं पता नइँखे।

सिद्धारथ गउतम का तेयाग तप आ धारमिक-विचारधारा कऽ वेशी चरचा करे ले पहिले ओह समय का चालू मतन कऽ चरचा कइल जरूरी बा, एहीं से हम छवो धरम-परचारक संतन का विसय में संक्षेप में चरचा करत बानीं।

(१) अजितकेश कम्बल—नाशवाद आ जड़वाद कऽ उपासक रहलन। इनके व्रात्यलोग कऽ अगुवा मानल बा। ई तप में लीन होके वरिसन खड़े रहि जासु। इनका विचार में दान, जग्य, तप, हूम झूठा पाखण्डिन के काम हउँ-वनि। ई लोक, परलोक, नरक-सरग, देवी-देवता वोगयरह ढोंगिन कऽ रचल पँचड़ा ठहरलन। एह संसार में अच्छा-बुरा करमो कुछ ना हउँवनि। केहू ग्यानी, शरमण, मुनि भा बाभन अइसन नइँखे जे एह लोक आ परलोक का बारे में परतछ समझबूझि के कुछ कहि सके। एह से दान आ धरम कऽ बक-बास जाल, धूरुत-मतलबी लोग फइलवले बा। मउवति का बाद देहि कऽ चारि तत्तु चारि महाभूतन (पिरथी, जल, तेज, वायु) में मिलि जालन। देहि कऽ इनिरिया पँचवाँ तत्तु आकाश में मिलि जाली। जे लोग आतमा के सत् आ देंहि ले दूसर माने ला ऊ झूठा आ परपञ्ची हऽ। मउवति का बाद कवनो अइ-सन चीज नइँखे, जे वँचल रहे। सभे तत्तु विनशि जालन।

एह मत के मानेवाला धरमी लोग अगिनि-होतर, वेद-तिरदण्ड आ तप कऽ विरोधी रहल। ई लोग वड़ी कड़ाई से सवतुक चालिचलन कऽ पालन करे। एह से समाज में एह मत का सन्तन कऽ बड़ा आदर-सतकार रहे। वत्स देश कऽ राजा उदयन एही मत के मानेवाला रहलन।[1] एह धरम-मत कऽ उपासना

१. ललितविस्तर—अध्याय-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करेवाला लोग आतमवाद—आतमा वा एह विचारधारा कऽ विरोधी ना रहल। इनकर विचार रहे कि पाँचो महाभूतन का मिलला से आतमा पैदा होले आमडलति का बाद सभ तत्तु लोप हो जालन, तऽ आतमा कऽ खुदे नाश हो जाला।

(२) संजय बेलट्ठिपुत्त—इनका मत के 'अनिहचिततावाद' कहल जा सके ला। 'विछेपवाद' का मोताबिक बा आ नइँखे कवनो विचारधारा कऽ समरथन ना होत रहे। परलोक कहीं लउकत नइँखे, एह से ऊ नइँखे, अइसन ई लोग ना कहे। परलोक कवनो चीज ह, इहो एह सभ क कहनाम ना रहे। काहें से कि ऊ कइसहूँ परतछ नइँखे। एही तरे अच्छा-बुरा करमन कऽ फल होला कि नाहीं, मउवति का बाद आतमा रहे ले कि नाहीं, एह सभे बातन में इनकर कवनो निहचित विचार ना रहे। इनकर विछेपवाद जैनमत का 'सेयाद वाद' (स्यादस्ति स्यान्नास्ति) का पाछे चले ला। एही संजय का चेलन में सारिपुत्त आ मोगलान रहलन, जे पाछे चलि के भगवान बउधदेव का परधान चेलन में अगहर मानल गइलन।

(३) पकुध कच्चायन—इनके 'अन्योन्यवादी' कहल वा। इनके 'अन्योन्यवादी' एह से कहात रहे कि कवनो एगो पदारथ में ऊ न तऽ शकती मानत रहलन आ न ओके ई सुख-दुख कऽ करता मानसु। केहू एगो के न त ई दोसी मानसु न पुन्निवान। इनका बिसय में एतने मालुम बा कि ई बउधदेव ले जेठ, ओह जुग कऽ मशहूर आ मानिद तीरथंकर रहलन। पिरिथिवी, जल, (अगिनि) तेज, वायु, सुख-दुख आ जीवन के ई सात पदारथ मनले बाड़न। पकुध कच्चायन कऽ विचारधारा वैशेषिक, सांख्य आ वेदान्त का अझुराहटि भरलि गाँठि कऽ पहिल कँटइला रूप हऽ। ऊपर का छव धरम-मतन में ई सबसे कमजोर रहे आ बउधदेवे का समय में करीब-करीब एकर लोप हो चलल रहे।

(४) पूरन कस्सप—अकिरियावादी विचारक रहलन। उनका बारे में एह ले वेशी कुछ नइँखे कि बउधदेव का समय में ऊ एगो मशहूर तीरथङ्कर रहलन। ऊ आतमा के बिना कवनो कारज-वेवपारवाला आ करम के निसफल मानत रहलन। ऊ कहत रहलन कि गङ्गा का दक्खिनी किनारे हतिया करे आ डाका डाले तबो कवनो पाप ना होई, अउरी किनारे जग्य करे आ दान दे तबहुँ कवनो किसिम कऽ पुन्नि ना मिली। उनका विचार का मोताबिक छेदे-काटे, पकावे-पकवावे, शोग करे-करावे, परान हरन करे-करावे, सेन्हि मारे-मरवावे, गाँव लूटे-लुटवावे वोगयरहमे कवनो पाप ना लागे। झूठ बोले अऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरा का मेहरारू का साथ बेबिचारी काम कइले कवनो पाप ना लागे। एही तरे इनकर कहनाम रहे कि दान, संजम, नेम आ साच आचार-बेवहार से कवनो पुन्नि ना मिले। बाकी तऽ वरत आ तप में इनकरो बहुत सरधा रहे।

(५) **मक्खलि गोशाल**—पूरा नियतिवादी रहलन। इनका विचारधारा का मोताबिक जीव कऽ पवित्तर आ अपवित्तर होखल बिना कारन कऽ जाने के चाही। एही तरे कवनो गंदगी कऽ शुद्धि कारन से ना होखे। अपना आ दूसरा का समरथाइ से कुछ ना होखे, न तऽ पुरुसारथे कुछ करे ला। पुरुस में त न बल बा, न बीज, न दूसरे कवनो तागति। सभे परानी आ जीव बिना बल पवरुख कऽ बाड़न। जीव सुभावन सुख-दुख भोगे ला। जइसे सूत कऽ गोला फेंकला पर जब ले पूरा खुलि ना जाय, तब ले बढ़त चलि जाला, ओही तरे बुद्धिमानन आ गवाँरन कऽ दुख एह जीव का चउरासी लाख छियासठि सइ जोनिन में चक्कर काटि लिहले पर विनशे ला। इनका धरम-मत कऽ नावँ 'आजीवक' रहे। वेदांती लोग का एकदेव नियर इनकर 'नियति' भा दइबे सम समरथवान ठहरल।

बउधदेव का समय में मगह में आजीवकन कऽ बहुत बड़ अड्डा रहे आ साधारन जनता में इनकर बहुत इज्जति रहे। इनकर एगो भारी दल राजगिरिह का जेतवन का पाछें का भाग में रहत रहे। ई लोग बहुत कठिन तप करे। आचारज नरेन्दरदेव का लेख का मोताबिक ई लोग पंच-अगिनि तापे, ठेहुनासन करे आ हवा में झूलत रहे। एह आजीवक सन्तन खातिर अशोक कऽ नाती दशरथ गया का पास वाली बराबर पहाड़ी में अनेकन गूफा बनवाके इनके दान दे देले रहलन। भगवान बउधदेव इनके सभ मत वालन ले हीन मानसु।

(६) **निग्गंठनाथपुत्त**—चारि संजमन के मानसु। तेइसवाँ तीरथंकर पारसनाथ अहिंसा, सचाई, चोरी ना कइल, दान ना लीहल चाहे जरूरत ले वेशी धन कऽ तेयाग—के चारि याम कहले बाड़न। चउबिसवाँ तीरथङ्कर निगंठनाथपुत्त (महावीर) एकरा में बरम्हचरज के जोरि दिहलन। एही तरे पारस कऽ चेला लँगटे रहसु आ अचेलक कहासु, बाकी महाबीर कऽ चेला कपड़ा पहिरसु। एह छवो धरमगुरुवन का विचारधारा के मानेवाला सन्त तपसी मगह में सगरे जहाँ तहाँ जमल रहलन। ऊ लोग बाभन-धरम का जग्यविधिन का उलटा वरत; अगिनिहोतर आ तेयाग-तप कऽ पहिला नेंव पुश्ता तइयार कइले रहलन। बिहार में जे बाभन-विरोधी बउध-धरम जल्दी जोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पकड़ि लिहलसि, ओकर असल कारन रहे कि ऊपर वाला धरम विचारक आ उनकर भगत-चेला वैदिक-विधि करमकाण्ड का विरोध में जनमत तइयार कइले रहलन। एह लोगन का विचार बहुत पहिले से चलि आवत रहे। आ उतरी भारत में सगरे फइलल रहे। भारतीय जनता का हिरदय में इनकर केतना गाढ़ छाप लागल रहे, एकर पता एही से चलत बा कि साकल कऽ राजा मिलिंद तक, जे शुङ्गराजकाल में रहलन (वि० सं० से २०७ बरिस पहिले) एह मत वालन से मिलि के बाति-विचार काट-छाँट कइले रहलन। एकर चरचा 'मिलिन्दपन्हो' पोथी में बा। जे कुछ हो, एतना तऽ निहचित बा कि ई सभे धरम-परचारक सुतन्तर विचारक आ बाभन-धरम विरोधी रहलन। ओह समय मगह में जे थोरे बाभन सोणदंड, कूटदन्त वोगयरह— जहाँ तहाँ जग्यहूम करमकाण्ड-विधिन में ततपर रहलन, आ उनकर जोर बढ़त रहे, ऊ खाली बिंबीसार नियर राजा का छतरछाहँ में उनका दयालू सुभाव आ सभ धरमन में प्रेम भाव का करते। बहुमत रूप में असर तऽ ऊपरे वाला सन्तन का मत कऽ रहे, जे बउध-धरम खातिर रोखिगर हवा तइयार कइले रहलन। बाकी उनकर धरम-मत न तऽ जथारथ रहलन, न ठोसे, एह से ताश का पत्ता नियर विलगि के छितिरा जाये वाला रहलन।

निग्गंठनाथपुत्त के छोड़ि के सभे नासतिक रहलन। वैदिक करमकांड कऽ तऽ कुल्हिये विरोधी रहलन। बाकी, इनका में आजीवक मत वाला अगिनि-होतर करसु। जग्य विरोधी आ नासतिक रहलो पर समाज में उनकर भारी असर रहे। एकर अन्दाज़ एही से लागि सकत बा कि राजगिरिह का नियरा पाछे का ओर आजीवकन कऽ एगो भारी संघ रहे। ओही राजगिरिह में विछेपवादी लोग कऽ पाठशाला रहलि, जवना में विदारथी पढ़सु-लिखसु। एही विदारथिन में सारिपुत्त आ मोगलानो रहलन। गयाशीस पर कस्सपभाइन कऽ जवन अगिनिहोतर-कारज चलत रहे, ओकरा में सवँसे मगह आ अङ्ग कऽ धर्मा मानी लोग अनघा सामान का साथ पैदल पहुँचि के शामिल होखसु। एकरा जरि में बाति ई रहलि कि सभ सुखभोगन से विमुख होके ई लोग तप में, कठिन साधना में लीन रहे। ई लोग अइसन कठिन तप करे कि हवा, पानी, घाम, अगिनि में आपन देंहि गला दे। कवनो किसिम कऽ सवख इनके छू ना सकल रहे—सांसारिक जरूरति इनका खातिर नाहीं का बराबर रहली। इनकर साज-समाज कइसन रहे, ई धियान देवे जोग बा। केहू सन कऽ कपड़ा पहिरे, केहू कुश कऽ चटाई धारन करे। कुछ लोग आदिमी का बार कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमरा बनाके आपन देंहि ढाँकसु। केहू उरुवा पंछी का पाँखिन के गूहि के बहतर बना ले आ करिहाँई में लपेटले रहे। बहुत तऽ काँटन कऽ बिछवना बनाके ओकरा पर सूतसु। एह लोग कऽ अइसन बिसवास रहे कि देंहि के जेतने दुख दियाई, ओतने अपना के विसय-वासनन से अलगा राखल जा सकत बा आ ओतने जल्दी सिद्धि मिलि सकति बा। देंहि का सुख कऽ लालच न करे एसे ई अपन माँथ कऽ बार नोंचत रहसु। ई लोग समाज का भलाई कऽ हरदम नई-नई डहरि जोहत रहे आ जनता कऽ अगुवाई करे। ई सभ राजा बाबुअन से धन दऊलति कऽ मदति लीहल आ उनका बल पर अपना धरम कऽ बढंती कइल पाप मानत रहे। एतने नाहीं, राजनेंति का दावपेंच आ कल-छल से दूर रहि ई सभ धरम का सेवा में हरदम तइयार रहे।

राजनैतिक दशा—'अंगुत्तरनिकाय' आ 'ललितविस्तर' का तीसरा अध्याय में जवना सोरह महाजनपदन कऽ चरचा मिलति बा, उनका में मगध तऽ अंग में आइये चुकल रहे। काशी, कोशल आ मगध में बँटा के लोप हो गइल रहे। मल्ल-गणतंतर (गणराज) कऽ कवनो बड़ दबदबा ना रहि गइल रहे। वत्स में उदयन आ अवंती में चंडपरदोत सभे शासन-अधिकार अपना हाथन में लेके बइठल रहलन। कुरु देश कऽ हालति बिलकुले नाहीं का बराबर रहे। बउध-गरंथन से एतने पता चलत बा कि केहू कौरब्ब नावँ कऽ शासनकरता ओहिजा रहे, जेकर बल बहुत घट गइल रहे। चेदि राज बांदा जिला में रहल। एकरो दशा कवनो बढ़ियाँ ना रहलि। सूरसेन (मथुरा) अवंती का आधीन हो गइल रहे। पंचाल कऽ रजधानी कांपिल्ल रहे; मत्स देश कऽ रजधानी कहाँ रहे, एकर कहीं चरचो नइँखे। गंधार कऽ रजधानी तच्छशिला रहे। बाकी गंधार आ कंबोज बिहार ले बहुत दूर पच्छिवँ में रहलन। असम क-परदेश निचाट दक्खिन भारत में रहे; यानी बउधदेव का समय में मगध, वैशाली, कोशल, वत्स आ अवंती इहे राज अइसन रहलन जे बलवान आ कपिलवस्तु का कुछ नियरा रहलन। इनहूँ में परजा-अधिकार का विचार से वैशालिये सेसर रहे आ एकाधिकार वाला राजन में मगधे कऽ अगाही उजियार लउकत रहे।

पहिले एकर जिकिरि कइल बा कि सिद्धारथ गउतम का समय में बिहार-परदेश में परधानरूप से दूइये राज रहलन। इनका में एगो कऽ नावँ बज्जि-संघ रहे, जेकर रजधानी वैशाली रहे, आ दूसर कऽ नावँ मगध, जेकर रज-धानी राजगिरिह में रहे। एहिजा कुछ अउरी छोट-छोट राज रहलन जिनकर कवनो मोल बड़ाई ना रहे। ऊपर लिखल दूनो राजन में दूइ किसिम कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शासन रहे। एगो परजा-पंच का मत वाला, दूसर एक-अधिकारी राजहुकूमति वाला। वैशाली-मगध एकर नमूना रहलन। वैशाली का सटले पच्छिवँ पावा आ कुशीनारा नावँ कऽ दूइ गो अउरी परजा-शासन वाला राज रहलन; जवन कि एक्क होखलो पर ओह घरी दूइ खंडन में बँटल रहलन। बाकी, वैशालिये ओह घरी इनका में पूरा बली आ सभ तरह का तागति-समरथ से भरल-पूरल रहे। परजा-मत का शासन वाला राजन का बारे में एतना जानल जरूरी बा कि इनका पूरब-उत्तर में हिमालय पहाड़ खड़ा रहे आ पूरब-दक्खिन में मगध, आ पच्छिवँ-उत्तर में कोशल नियर एकहुकुमी शासनवाला राज बड़ा बलवान हो गइल रहलन। एकरा अलावे अवंती आ वत्सराज रहलन जिनका में ऊहे एकहुकुमी राज अपना परचंड रूप में दमदमात रहल। बाकी एह सभन का बीच में वैशाली, आसमान में जगमग शुकवा तारा नियर टहाटह चमकति रहे—एकरा शान आ मरजादा में तनिको धक्का ना लागल रहे।

वैशाली कऽ इतिहास बहुत पुरान हऽ। वालमीकि रामायन में अइसन चरचा आइल बा कि जब महरिखी विशवामीतर जी राम का साथ जनकपुर जात रहलन तऽ राह में उनके 'वैशाली' नगरी मिललि रहे; जेकर नावँ ओह समय में 'विशाला' रहे। पुराना भारतीय इतिहास में अजोधिया का राजा इच्छवाकू कऽ नावँ बहुत मशहूर बा। उनकरे वंश में तिरिनबिंदु भइलन। उनकी रानी कऽ नावँ अलंबुसा रहे। तिरिनबिंदु का अलंबुसा से जनमल पूत कऽ नावँ 'विशाल' मशहूर भइल। 'विशाल' के विस्नु-पुरान में इच्छवाकू कऽ पूत नइँखे मानल। एह पुरान का मोताबिक इच्छवाकुवे-वंश का राजा दिहिट (दिष्ट) कऽ पूत नाभाग रहलन, जे वैश हो गइल रहलन।[1] एही नाभाग का २६वीं पीढ़ी में 'तिरिनविंदु' राजा भइलन। राजा विशाल एही 'तिरिनविंदु' कऽ पूत रहलन। ई ओह जुग का मानुस-समाज में सिंह नियर तेजवान आ बहुत धरमातमा रहलन। इहे विशाला नगरी के बसवलन। आजुवो वैशाली में—राजा विशाल कऽ गढ़ नावँ—कऽ डील अपना नेंव डालेवाला के इयाद करावत बा।

विशाल कऽ पूत हेमचंदर बहुत परतापी आ बली रहलन। हेमचंदर का बाद सुचंदर मशहूर भइलन। सुचंदर का धुमरासु आ उनकर पूत सिरिंजय जशी परतापी भइलन। सिरिंजय कऽ पूत सहदेव; सहदेव कऽ पूत कुशासु वा कुशासु

१. नाभाग का वैश हो जाये कऽ बरनन—'मारकंडेय-पुरान' का ११३-११५ अधियायन में देखीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ सोमदत्त भइलन। सोमदत्त कऽ काकुसत्थ आ उनकर संतान सुमति भइ-लन। सुमति महातेजवान, देवता का समान आ बड़ी कठिनाई से जितायेवाला परतापी पुरुस रहलन। सुमति अजोधिया का राजा दशरथ कऽ समधी रहलन।

इच्छवाकू का पुन्नि-परताप से वैशाली कऽ सभे राजा लमहरि अरदुवाइ वाला, बहुत बली आ सुधरमी सुजन रहलन। विदेघमाठव विदेह में आरज-सभ्यता कऽ नेंव जँतले रहलन। सुमति का बाद का राजन कऽ इतिहास अन्हार में तोपाइल बा।

वैशाली-छेतर का कुंड गावँ में जनम लेवे वाला वरधमान (महावीर) कऽ नावँ 'वैशालिक' भी रहे। वरधमान का मँहतारी कऽ नावँ तिरिसला रहे। मद्धि जुग का जैन टीकाकारन कऽ कहनाम बा कि महावीर का मँहतारी कऽ नावँ 'विशाला' रहे; एही से ई वैशालिक कहल गइलन। तिरिसला का पिता कऽ नावँ चेटक रहे। चेटक कऽ दूसरी बेटी यानी तिरिसला कऽ छोटी बहिनि मगध का राजा बिंबीसार से बियाहलि रहे, जेसे अजातशतुरू कऽ जनम भइल रहे, एही से अजातशतुरू 'वैदेहीपूत' भी कहात रहलन। एह नाता से ऊ वरधमान महावीर कऽ मौसेरा भाई रहलन। मगध में महावीर का धरम के सहारा मिले कऽ, महावीर आ बिंबीसार कऽ अइसन संबंधो होखल एगो कारन, कुछ लोग बतावत बा। कुछ पोथिन का अनुसार अजातशतुरू कऽ मँहतारी कोशल का राजा परसेनजीत कऽ बहिनि रहली आ अजातशतुरू परसेनजीत कऽ भगिना रहलन। बाकी अइसक बाति ना हऽ। परसेनजीत का कोशलवाली घरनी से जे पूत रहलन उनकर नावँ जयसेन रहे। एह वैशाली का छतरछाँह कऽ बहुत कुछ सहारा सिद्धारथ गउतम का शाकिय कुल के मिलल रहे। जदपि कि गउतम का समय में 'कपिलवस्तु' कोशल का अधीन जनपद (जिला का तरह कऽ छोट राज-एकाई) रहे, तबो पुरान समय में वैशाली से ओकर नज-दीकी संबंध रहे। सिद्धारथ गउतम का समय में वैशाली अपना धन-संपत्ति, शासनरीति, एकता आ ग्यानी-मानी चाहें शूरवीरन से भरलि पूरलि रहे। विनय-गरंथन से पता चलत बा कि ओह समय वैशाली तीनि भागन में बँटलि रहे। पहिला भाग में सात हजार महल अइसन रहलन, जिनकर गुंबज सोना मढ़ल रहे। दूसरा भाग में चउदह हजार अइसन महल रहलन, जिनकर गुंबज चानी से मढ़ल रहे। तीसरा भाग में एकइस हजार अइसन महल रहलन, जिन-कर गुंबज तामा से मढ़ल रहे। तीनों भागन में सिलसिला का मोताबिक ऊँच,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मद्धिम आ साधारन कुल कऽ लोग रहत रहे। एह किसिम से वैशाली में बयालिस हजार परिवार बसत रहे। भद्दसालजातक से पता चलत बा कि वैशाली में एगो अइसन तलइया रहे, जेकर जल खाली राजतिलक का समय काम में ले आवल जात रहे। तलइया कऽ जल पंछिन तक के दुरलभ रहे। चारो ओर सीढ़ी आ घाटि पत्थल कऽ बनल रहली। तलइया का चारो ओर पक्की छरदेवाली रहे आ तलइया लोहा-तारन का जाली से ढाँपलि रहे, कि चिरई तक चोंच ना मारि सकसु। जल का रइछा खातिर सेना कऽ पहरा रहे। बाकी, कोशल राजा कऽ सेनापति बंधुल एक बेर अपना धरमसंगिनी के एह जल में नहववले रहलन, जवना खातिर भारी मारकाट मँचल रहे। बंधुल शायद बलिया भा गोरखपुर कऽ रहलन। ऊ अइसन वीर रहलन कि तरुवारि का एगो वार से लोहा का खंभा के काटि देसु।

वैशाली कऽ सभे सभापंच राजा होत रहलन। एकर मरजादा एही से जानल जाता कि भगवान बउधदेव अपना जीवन का अंतिम बरिस में, वैशाली गइलन, तऽ वज्जि-संघ कऽ सभे सभापंच उनसे भेंट करे आइल रहलन। बज्जि लोग के आवत देखि के भगवान बउधदेवजी अपना चेलन से कहलन—'भिक्खु लोग जे (तावत तिरिंशद) तवले तैंतिस देवता न देखले होखे ऊ वज्जिन के देखि ले।'[१] बिहार का एह राज खातिर बउधदेव का पूरा ममता रहे। अजातशतुरू वज्जिसंघ पर चढ़ाई करे खातिर बउधदेव कऽ राइ लेवे का विचार से अपना मंतिरी 'वरसकार' के उनका पास भेजले रहलन; बाकी लिच्छविन का पच्छ में बउधदेव के जानि के ऊ चढ़ाई कऽ विचार छोड़ि दिहलन। ओह मोका पर वउधदेव जी 'वरसकार' से कहले रहलन कि—"जवले वज्जि-राजकाज चलावे खातिर एक साथ बइठि के विचार करत रहिहन, चइतन कऽ पूजा आ बड़-जेठ कऽ आदर मान करत रहिहन, तवले उनके केहू हरा ना सके।" ओह घरी वैशाली में बड़े-बड़े वीर लड़ाका, धरमाचारज, तपेसरी आ भारी विदमान् रहत रहलन, जिनका में महालि, महानाम, सिंह सेनापति, गोशिरिंगी, भद्देकर आ सच्चक नियर महान् पुरुस रहलन। जैन लोग कऽ चउबिसवाँ तीरथंकर महावीर एहिजे का कुल कऽ सपूत रहलन। 'महावन' आ 'शालवन' नावँ का आसरमन के गोशिरिंगिये बनववले रहलन। शालवने में कूटागारशाला रहे, जवन दूमंजिला रहे आ भगवान बउधदेव वैशाली अइला पर एहिजे ठहरसु।

मगह कऽ चरचा वेदनो में मिले ले। मगह का साथहीं एके कीकट कहल

---

१. दीघनिकाय—(परिनिब्बानसुत्त—२, ३, १६)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जात रहे। इतिहास रचवइयन कऽ तऽ कहनाम बा कि पुराना समय में मगध का इतिहास के सवँसे भारत कऽ इतिहास कहल जाय तऽ एके कवनो बाति वढ़ावल ना कहाई। एह मगधराज कऽ रजधानी राजगिरिह रहल, जेकरा के गिरिव्रज भी कहल जात रहे। गिरिव्रज कऽ इतिहास बहुत पुरान हऽ।

वालमीकि रामायन में लिखल बा कि एकरा के राजा वसु बसवले रहलन, एही से एकर नावँ वसुमती नगरी भी हऽ। 'गिरिव्रज' पाँच पहाड़न का बीच बसलि बहुत सोहति बा। एहिजा सुमागधी नावँ कऽ नदी बहे ले, जेसे कि एहिजा कऽ वासी मागध कहालन। ई पाँच पहाड़न का बीच में सुघर माला नियर सोहे ले।

"चक्रे पुर वरं राजा वसुर्नाम गिरिव्रजम्।
एषा वसुमती नाम वसोस्तस्य महात्मनः।
एते शैलवराः पञ्च प्रकाशन्ते समन्ततः॥
सुमागधी नदी रम्या मागधान् विश्रुताऽऽ ययौ।
पञ्चानां शैल मुख्यानां मध्ये मालेव शोभते॥
सैषा हि मागधी राम! वसोस्तस्य महात्मनः।
पूर्वाभिचरिता राम! सुक्षेत्रा शस्यमालिनी॥"

—(वाल्मीकीय रामायण, वा० कां०, अ० ३२, श्लो० ७–१५)

महाभारत-जुग में राजगिरिह कऽ राजा विरहदरथ रहे, जे एही वसु का वंश कऽ रहे। महाभारत का सभा परब में राजगिरिह कऽ सुघर बरनन मिलत बा। एकरा मोताबिक 'जरासंध' एही विरहदरथ कऽ पूत[१] रहलन। जरासंध भारी बली आ परतापी राजा भइल जे 'कृष्ण' के हराके मथुरा ले दुआरिका भागे खातिर लाचार कइ दिहलसि। एकरा राज कऽ सिवाना मथुरा तक रहे। मथुरा कऽ राजा कंस जरासंध कऽ दमाद रहल। चेदिराज शिशुपाल जरासंध कऽ सेनापति बनल मंजूर कइले रहल।[२] करुष देश कऽ राजा 'दंतवक्र' तऽ एकर अधीनता मानिये ले ले रहलनि। महाभारत में राजगिरिह क बरनन, जवन कृष्ण कहले वाड़न ऊ बहुत मोहक आ पढ़े जोग बा। महाभारत सभा

१. कृतका दुपरिचरो वसुः। वृहद्रथ प्रत्यग्र कुशाम्ब चेलमात्स्य वसोः पुत्राः सप्त जायन्ते। वृहद्रथाच्चान्यश्शकलद् वयजन्मा जरया संहितो 'जरासन्ध नामा'।
—(विष्णु पुराण ४।१९।८१ आ ८३)

२. राजन् सेनापति जीतः शिशुपालः प्रतापवान।—महाभारत सभा पर्व, अध्याय० १४, श्लोक ११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परव का एकइसवाँ अध्याय में शलोक १ से १० तक ई बरनन पढ़ल जा सके ला।

पुरानन का अनुसार ईसा ले करीब ७०० बरिस पहिले राजगिरिह में 'शिशुनाग' नावँ कऽ राजा भइलन जिनका नावँ पर शिशुनागवंश कऽ नेंव परलि। एही शिशुनागवंश का पाँचवीं पीढ़ी में बिंबीसार नावँ कऽ बहुत परतापी राजा भइलन, जे भगवान बउधदेव जी कऽ समयी रहलन। पच्छिवँ में काशी तक कऽ परदेश इनका अधिकार में रहे। पूरुब में अंग आ अंगुत्तरापपरदेशो इनहीं का छतरछाँह में रहलन। कोशल कऽ राजा महाकोशल आ वैशाली कऽ चेटक अपना-अपना बेटिन कऽ बियाह इनका से कइ के मिताई कइ लेले रहलन।

बिंबीसार बहुत दयालु, सुजन-सुधरमी रहलन आ सभ धरमन खातिर आदर भाव राखसु। इनका राज में जइसन जग्य वोगयरह करमकांडन खातिर सरधा रहे, ओही तरे शरमण, मुनि, संन्यासी आ अउरी तरह का साधु-संतन खातिर पावल जाय।

सिद्धारथ गउतम जब उरूवेला का ओर जात राजगिरिह में राजा से मिलल रहलन तऽ राजा उनके अपना सेना में भारी पद दिहल चहले रहलन। एकरा बाद जब गउतम बोध-ग्यान पा के राजगिरिह लवटल रहलन तऽ बिंबीसार उनकर भारी आदर-सतकार कइलन। राजगिरिह पुराने जुग ले रिखी-मुनी, ग्यानी साधुसंत आ तपसिन का वास का कारन परमपवित्तर मानल जात रहे। महाभारत का चरचा का मोताबिक एहिजा बहुत पुराना समय में गउतमरिखी कऽ आसरम रहे। वाल्मीकि रामायन आ महाभारत दूनो से पता चलत बा कि एहिजो विशवामीतर रिखी बराबर आवत-जात रहलन। राजगिरिह कऽ कवन-कवन जगहा रिखिन का तप से पवित्तर हो गइल रहलन, आ भगवान बउधदेव का पहिले एहिजा केतना तपेसरी रहि चुकल रहलन, एकर लमहर चिट्ठा 'मज्झिम-निकाय' (३, २, ६;) का 'इसिगिलि-सुत्तन्त' में मिलत बा। पहिले कहल जा चुकल बा कि मगध एकहुकुमी राज रहे वज्जिसंघ परजामत वाला पंचाइती राज। बाकी पंचायतीराज वज्जिसंघ चारो ओर ले एकहुकुमी राज्यन से घेराइल रहे। ओकर दशा बत्तिस दांतन का बीच में जीभि नियर रहलि। ओह समय एकहुकुमी राजशासन कऽ पूरा बढंती रहे। ओहू सभन में मगध कऽ एकहुकुमी राज तागति आ सरधा दूनो कऽ जोग जुटला से अपना गौरव का आखिरी चोटी पर रहे। अइसन गौरव कि कुछ समय बाद ई वैशाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के तऽ हड़पिये लिहलसि, साथे साथ परसेनजीत आ उनका लड़िका विडडूभ का बाद सवँसे कोशलो के हथिया लिहलसि। बाकी सिद्धारथ गउतम का समय में विहार कऽ ई दूनो राज (वैशाली आ मगध) छतिरी-कुल कऽ रहलन।

वैशाली का कुलसे सिद्धारथ का कुल कऽ संबंध तऽ अच्छा रहबे कइल, मगध का राजा विम्बीसार का सरधा सहज-दयालुता वाली नेति-बेवहार कऽ पूरा शोर रहै। एहिजा एक बाति अउरी विचारे जोग बा, जवन कि एकहुकुमी शासन नियर पंचाइती-शासन का अगुवन ओ जनता में ना रहे। परजामत वाला पंचायती शासन का अगुवन आ जनता कऽ बुद्धि काट-छांट वाली हो गइलि रहे। बुद्धि सरधा के एकदमे धकिया के किनारे कइ देले रहे। पंचाइती राज बड़े-बड़े तपसिन कऽ खिल्ली उड़ावसु आ बाभनन के तऽ ऊ पूरा बहरियाइये देले रहलन। एकर सबूत हमके 'अम्बट्ठ-सुत्त' में मिलत बा, जे कि 'दीघनिकाय' कऽ एगो अंग हऽ। एह सुत्त में अम्बट्ठ पंचाइती शासन का रीति-नेम के माने वाला बउधदेव का शाकिय-कुल पर बाभनन कऽ निरादर कइला कऽ दोस लगवले रहे। अपना एही काट-छांट का आदति आ पंचाइती सुभाव का कारन वैशाली कऽ लोग पुराना विनयधरन कऽ विरोध कइलक आ बउधदेव का वचनन कऽ अनादर कइलन। एकर नतीजा ई सामने आइल कि, वैशाली में दुसरकी संगीति (धारमिक महासभा) भइलि आ बउध-धरम में दरार परि गइल।

समाज कऽ धारमिक झुकाव—ई बाति पहिले कहलि बा कि वैदिक जुग में चाहे 'बाभन-गरंथन' का समय में आ ओकरा बाद रामायण-महाभारत का समय तक में एह पुरुबी भाग पर बाभन विचारकन कऽ दबदबा कायम ना हो सकल रहे। एकर असल परधान कारन रहे कि बाभन पंडित आ अगुवा एह भाग के हरदम हीन बता के एने का ओर आइलो पाप समुझत रहलन। एह भाग में धरम, ग्यान आ सबतुक आचार (संस्कृति) कऽ जेतना कुछ परचार भइल रहे, ओकर अधिका जश छतिरी रिखी-ग्यानिन के दीहल उचित होई। गिरिव्रज कऽ गउतम, सिद्धासरम कऽ विशवामीतर, जे राजरिखी ले बरम्ह-रिखी होखल रहलन, मिथिला कऽ जनक, अंग कऽ अधिरथ, गया कऽ 'अमूरतरय-गय',[१]—करीब-करीब सभे छतिरी राजा आ ग्यानी रहलन। जे बाभन रिखी अइलन, ऊहो छतिरिन का असर से बाँचि ना सकलन। ऊ कवनो ना कवनो

---

१. 'तस्यां गिरिवर: पुण्यो गयो राजर्षि सत् कृत:।

—महाभारत वन पर्व, अध्याय २८, श्लोक ८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरह छतिरिन का समरथाइ में अझुराइ गइलन। करुख (करुष) में दीर-घतमा नावँ कऽ रिखी 'बलि' राजा का मेहरि 'सुदेशना' में अंग-बंग-कलिंग, पुंडर, आ सुह्म नावँ का पाँच छतिरी पूतन के पैदा कइलन। विभांडक रिखी कऽ लड़िका रिखी शिरिंगी, जे मेहरारू जाति देख ले तक ना रहलन, आ तप में लीन होके वनचर कऽ जीवन बितावत रहलन; अंग कऽ राजा रोमपाद अपना पोसपूती शांता के उनका तप से परभावित होके दीहल चहलन। ऊ एह कारज खातिर अनेकन नाँचि गाना में निपुन पतुरियन के भेजि के उनके फँसावे में सफल भइलन। शिरिंगी कऽ शांता से बियाह हो गइल।

बाकी महाभारत का भयंकर लड़ाई का बाद देश में अइसन उलटफेर भइल—तहलका मँचल कि आन्हीं का झोंका से मानुस-दल भूसा नियर कहीं कऽ कहीं उधिया गइल। एह बिपति का समय में पवित्तर-अपवित्तर सभे जगहा सभका खातिर बरावर हो गइलन। जेके जहाँ शरन मिलल, बसि गइल। ईहे कारन रहे कि विकरम का पहिले छठवीं सइ बरखी में बाभन-धरम आपन पंजा फइलावे लागल। एनियो जग्यहूम-करमकांड-विधिन कऽ अँजोर फइले लागल। एहू भाग में बाभन कले-कले विद्या आ धन दूनों छेतर में आपन कबजा जमावे लगलन। बाकी तऽ, महा-भारत कऽ भारी भयंकर लड़ाई मानुस-समाज भर का नेति-वेवहार, आचार-विचार का दरजा के वहुत नीचे गिरा देले रहे। धन आ जियका खातिर कवनो जाति कवनो पेशा करे में भटकति ना रहे। जाति-पाँति का मोताबिक पेशा अपनावे का डहरि के लोग ठोकरिया देले रहे। अइसन गिरावट आइल रहे कि लोग चोरी, डाँका, राहजनी, जूआ वोगयरह से धन जमा करे लागल रहे। भूत-परेत, जादूटोना में लोगन कऽ विशवास जमि गइल रहल। मेंहरारू बेंचात-किनात रहलीं स। वे-बिचारी काम बढ़ि गइल रहे। बउध-पोथिन में अनेक जगहा एकर चरचा मिलत बा। खासकर जातक-कहनिन में त एकर भरपूर चरचा बा। पुरुबी-भाग में बाभन जब जग्यन कऽ काम शुरू कइलन तऽ हिंसा-मारकाट (जीव-बध) कऽ जोर बढ़ि गइल, जे कि महाभारत का लड़ाई का फल रूप में सुभाविक रहे। बाभन-धरम का दवदबा बिसतार में एगो बहुत बड़ भेद रहल कि बाभन खाली ग्यान आ तप अरजि के अपनहीं सुगति कऽ भागी ना बनत रहलन, बलुक अपना विधि-नेम-करम-धरम से जनतो के सुगति कऽ भागी बनावत रहलन, जेकर असर समूचा समाज पर जल्दी परत रहे। ऊ लोग धन कमा के खुद दान करे आ दान करे कऽ रुचि जगावे। एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरे विद्या आ धन संपति कऽ दान लेके आ देके—दूनो तरह से बाभनवाद कऽ विसतार करे आ तुरंत समाज पर जादू नियर छा जाय। एह सभ किसिम से मन कऽ झुकाव देश का पुरुबी भाग के बढ़त रहे, जेकरा से छतिरिन का बढंती पर बडा भारी असर परे आ धक्का लागे वाला रहे, जे के वैशाली कुल कऽ वरधमान महावीर आ शाकिय-कुल कऽ सिद्धारथ गउतम समुझि गइल रहलन।

सिद्धारथ गउतम का समय में, देश का एह पुरुबी भाग में, बाभनन कऽ जोर बढ़त रहे, एकर सबूत हमके बउध-धरम गरंथन से मिलत बा। ई बाभन अब बहुत बड़-बड़ धनवान आ विदमान हो गइल रहलन। ओह समय में इनका पंडिताई आ मरजादा कऽ धाक एही से समुझल जा सकेला कि खुद महापुरुस बउधदेवो का अपना धरम परचार खातिर इनकर मदति लेवे के परल। जदपि कि बउधदेव बाभन आ बाभन-धरम कऽ विरोधी रहलन, तबो बउध-धरम का बढंती में बाभने अगहर मदतिगार बनलन, जिनका में सारिपुत्त महामोग्गलान, महाकास्सप, रेवत, मोगलिपूततिस्स, नागसेन, नागारजुन, अस्सुघोस, असंग-वसबंधु, बउधघोस वोगयरह परमुख रहलन। खास कइके शुरू में तऽ मगहे कऽ बाभन अगहर भइलन आ उनकर दरजा एह धरम में बहुत ऊँच रहे। सारिपुत्त, महाकास्सप, महामोग्गलान, मोगलिपूततिस्स समाज कऽ मानिंद अगुआ रहलन आ एहू समाज में पहुँचि के सुरेमने मानल गइलन। कस्सप भाइन कऽ जे अगिनिहोतर गया में चलत रहे, ऊ एक किसिम कऽ जगिये कारज रहे, जेकरा में अंग-मगह कऽ धनीमानी लोग बहँगी पर हवन आ भोजन-समगिरिही लेके पहुँचत रहे।[1] मगह में 'खाणुमत' नावँ कऽ बाभनन कऽ एगो मशहूर गावँ रहे, जहाँ 'कूटदंत' नावँ कऽ बाभन जग्य करावत रहे। ऊ राजा बिंबीसार से बराबर मदति पावे, आ उनसे हुकुम पाइके ऊ ओह इलाका कऽ मालिक हो गइल रहे। जवना समय बउधदेव खाणुमत गावँ में गइल रहलन, कूटदंत का जग्य में वलि खातिर, १०० बैल, ७०० बाछा, ७०० बाछी, ७०० बकरी, ७०० भेंड़ि जग्य-खंभन में बान्हल रहली।[2] 'सुत्तनिपात' का 'कसि-भारदुवाज-सुत्त' में लिखल बा कि भगवान बउधदेव टहरत-रमत जब दक्खिनी मगह का 'एकनाला' गावँ में गइल रहलन, तब ओहिजा किरिखी भारदुवाज नावँ कऽ बाभन कुवाँरिन कऽ एगो बहुत बड़ उतसो मनावत

१. महावग्गो—१, ३, १, १५।
२. दीघनिकाय—१, ५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। ऊ खुद ५०० हरन से खेती करे।[१] मगहे का 'महातीरथ' नावँ का गावँ में 'पिप्पली' नावं कऽ बाभन रहे, जेकरा खजाना में मोहरन के ६० चहबच्चा रहलन। ई १४ बड़े-बड़े गावँन कऽ मालिक रहे। एकरा गिरहस्ती कऽ खेत बारह जोजन में फइलल रहलन। एह धनी बाभन का नहाये का बेर जवन सुगंधित चूरन देंहि में लगावल जासु, ओसे बहरी कऽ नाली भरि जासु। ई खुद बरम्हविद्दा आ बाभन-धरम-गरंथन कऽ धुरंधर विदमान रहें। ईहे पिप्पली पाछे चलि के बउधदेव का परधान चेलन में महा-कास्सप का नावँ से मशहूर भइल। बिंबीसारे का राज में अंगदेश का 'आपण' नावँ का बाजारि में हमके के कोंणिय जटिल कऽ कथा मिलति बा, जे भारी बाभनभगत रहल। ओकरा किहें 'सेल' नावँ कऽ बाभन रहे, जे ३०० विदारथी लेके वेद, निघंटु, कलप, निरुक्त, इतिहास, काव्य, वेयाकरण, लोकायत-शासतर वोगयरह कऽ शिच्छा दे। बाभनन का दबदबा आ मरजादा कऽ एहू ले बड़ परमान हमके मिलत बा कि चंपा के जीति के, ओहिजा अपना ओर ले अधिकार देके 'सोणदंड' बाभन के, बिंबीसार शासन का परबंध खातिर वइठा देले रहलन। ऊ जग्य-करम आ पढ़ाई-लिखाई का जरिये बाभनवाद कऽ जोर से परचार करत रहे।

दान देबे कऽ परंपरा ने वैदिक जुग से चलि आवत रहे, ऊ भगवान बउधदेवो का समय में खूब चालू रहे। अंगदेश कऽ राजा करण दान कऽ मोल मरजादा बहुत बढ़ा देले रहलन, आ तेयाग के आखिरी चोटी पर पहुँचा चुकल रहलन, जेकर महिमा अंग आ मगह में बनल रहल। मगध कऽ बिंबीसार खुदे दानी रहलन, ऊ बाभन, जटाधारी साधु, संन्यासी भा अउरी साधुसंतन के खूब दान देके आदर-सरधा जोग बनल रहलन। ओह समय देश का भारी-भारी शहरन में बड़े-बड़े धनकुबेर सेठ रहलन, जे कि दान में राजालोगन से बाजी लगावसु। राजा का हरदम चिन्ता बनल रहे कि केहू सेठ हमरा ले बेशी दान देके जश न पा ले। अइसने दानिन में मगह कऽ सुमन, चित्तर, विशाख, सिगाल; वैशाली कऽ उगरगिरिहपति; अंग कऽ शोणकोटिविंश; आ भद्दिया (भागलपुर जिला) कऽ मेंढक सेठ रहलन। बउध-धरम का बढंती आ परचार में एह सेठन का दान कऽ बहुत बड़ महिमा आ हाथ रहे। भगवान

---

१. एकं समयं भगवा मगधेसु विहरति दक्खिणा गिरिस्मिं एकनालायं ब्राह्मणग्रामे। तेन खो पन समयेन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स पन्चमत्तानि नंगल सतानि पयुत्तानि होन्ति वप्पकाले।—सुत्तनिपात (कसि भारद्वाजसुत्त—४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधदेव का समय कऽ सबसे बड़ दानी 'अनाथपिंडक' (सुदत्त) सेठ रहल। ऊ राजगिरिह का सेठ कऽ बहनोई रहे।[१] मगध का एह धनी-मानिन का दाने से अब बाभनदल बाभन धरम के मजबूत बनावे पर लागल रहे, जेकरा करते जग्य वोगयरह करमकांडन कऽ चलान एहू भाग में हो गइल रहे।

भगवान बउधदेव जदपि कि रुपया-पइसा लिहला कऽ बरजनेम कइ देले रहलन, तबो तऽ बउधसंघ के दान देवे कऽ नेम रखलहीं रहलन। भगवान बउधदेव संघ कऽ महिमा-मरजादा कायम कइके बाभनन के दीहल जायेवाला दान के अपना ओर मोरलन आ भगतन खातिर कहलन कि भगत-सेवक लोग भिक्खु खातिर विहार, कोठा महल, गूफा, परिवेण, कप्पिय कुटी; चंकम, चंकमशाला, फुलवारी, आराम, पोखरी वोगयरह बनवावसु।[२]

सिद्धारथ गउतम एक ओर जहाँ मगध का बाभन-छतिरिन का ग्यान, विद्या आ दान का मरजादा कऽ जानकार रहलन, ओहिजे दूसरा ओर ऊ मगध का वे पढ़ल-लिखल आ गरीब जनता का इच्छा-खेयाल के समुझत रहलन। अपना अग्यान आ बड़े आदमिन का सतसंग का कमी का करते मगध कऽ गरीब जनता अपना आचार-विचारन का (सांसकिरतिक) सवतुक भूखि के, भूत-प्रेतन का पूजा आ उतसो में, उनका खातिर सरधा कऽ फूल चढ़ा के मेटावति रहे। ई गरीब लोग एही करमठ-कांडन का जरिये अपना उद्धार कऽ डहरि साफ आ सुघर चिक्कन करत रहल, जेके कि अपना के बउधदेव गरीबनो का मन में अपनइती कऽ भाव जगवलन आ बउध-धरम के सभसाधारनो खातिर सहज-सुगम बना दिहलन। ईश्वर का विदमानता (होखला) के ना मानेवाला बउधदेवजी भूत-परेत जच्छ वोगयरह के जे होखला के मनलन, ऊ लोगन का भावना के धियान में राखिये के मनले होइहँन, ई निहचित बा।

ऊपर वाली सभ बातन का अलावे बिहार परदेश का दइबी-फुलवारी-जंगल झरना, नदी आ हरियरी कऽ विचित्तर शोभा कम मनमोहिनी ना रहे आ एहिजा कऽ तपोभूमि हिरदय के अनंद देवे वाली रहे। पुराना समय में विशवामीतर कऽ तपोभूमि एहिजे रहलि। महाभारत का मोताबिक गउतम रिखी कऽ तपोभूमि गिरिव्रज (राजगिरिह) रहे। शिरिंगी रिखी अंगदेश का जंगलन में तप करत रहलन। 'हरष-चरित' में महाकवि बाणभट्ट सोनभद्र

---

१. चुल्लवग्ग—६, ३, १।
२. महावग्गो—(वस्सूपनायिकक्खन्धको)—१, २, ३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का पुरुबी किनार पर चवनासरम कऽ चरचा कइले बाड़न। गया में राज-रिखी 'गय' का जग्यन कऽ बड़ाई सुनले जाता, जहाँ जुधिसठिर आके चतुर-मास जग्य कइले रहलन। एह सभ बातन का अलावें मगह कऽ मनभावन पहाड़ी भाग, निरमल जल वाली नदी, गहगह कमल फूलन से भरल ताल, चित्त के बरबस खींचि लेवे वाली फुलवारी, नदी किनार कऽ सोहावन रेतीला मैदान कम सुख शांति देवे वाला ना रहलन। 'सुंसुमार-गिरि' पर विहार करत भगवान बउधदेव अवंती का राजा चंडपरदोत का पूत 'बोधि राज कुमार' से उरुवेला-परदेश का तपजोग सुघर सजीली धरती कऽ बड़ाई करत कहले रहलन[1]—"हे राजकुमार! 'का अच्छा बा' कऽ खोज करत-करत हम उरुवेला का सेनानी गावँ पहुँचलीं। ओहिजा हम सुघर धरती, मोहक वनखंड, सुच्छ बहति नदी, साफ धपकत······मजे में बसल, चारों ओर नगद गोचर गावँ देखलीं। हे राजकुमार! तब हमरा जनाइल कि—ई भूइँ सजीली बा······परधान इच्छुक कुलपूत खातिर इहे जगहा जथाजोग बा।" कहे कऽ असल निचोड़ ई बा कि बउधदेव का पहिलेवाला विहार का एह छेतर में आचार-विचार, धरम-करम का मामिला में छतिरिन कऽ परधानता रहे, जे कि शाकिय-कुल-सपूत सिद्धारथ का मन में पूरा-पूरा जंचि गइल।

मगध बाभन-धरम पंडितन से पहिलहीं ठोकरावल हीन जगहा रहल जहाँ बउधदेव कऽ धरम-विचार आसानी से फूलि-फरि सकत रहे।

ओह समय में एहिजा अनेकन रिखी, ग्यानी, शरमण-मुनि, संन्यासी आ अउरी-अउरी संत-सुधारक संघ मौजूद रहलन जे दानी राजन का दान से मदति पाके अपना धरम-कारज में लीन रहलन। बिहार कऽ धारमिक विचार-धारा अनेक मतन में बँटि के दूर-दूर तक फइलि गइलि रहे आ बड़े-बड़े राज-वंश इनके मानेवाला हो गइल रहलन। जदपि एहिजा का दूसर-दूसर मत वाला धरम सुधारकन कऽ करांतिकारी विचार बाभन-धरम पर भारी चोट करत रहलन, तबो बाभन धरम जोर पकड़ते जात रहे। एतनो पर इनकरा विचारन से वरत, उपवास, तप आ उखाड़-पखाड़ वाला धरम कऽ डहरि तऽ जरूरे साफ होति रहे। एकरा अलावें परजा-मतवाला पञ्चाइती आ एकहुकुमी दूनो तरह कऽ राज-शासन बिहार में रहलन। मगध कऽ बिंबीसार बहुत परतापी आ बलवान होत जात रहे, जेकर पल्ला पकड़ल धरम-विसतार खातिर लाभ

१. मज्झिमनिकाय (बोधिराजकुमार सुत्तन्त)—२, ४, ५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाला होइत। समाज में धरम का ओर पूरा झुकाव रहे। लोग धरम-कारज में गाढ़ रुचि राखत रहलन। दान देबे का ओर रुचि रुझान मगध में अंगराज 'करण' का समये से सज से आसन जमवले रहे। दूसर बाति कि बाभन-धरम ओह समय छतिरिन का बढंती का छेतर में आपन दखल दबदबा जमवले जात रहे, जे के उखारि फेंकल बउधदेव खातिर जरूरी रहे। धरम-संबंधी करम कांडन में धरम धुरंधर बेतुवा लोगन का बेवहार से हिंसा—मतलब कि जीव-बध कऽ हद हो गइल रहे आ विधि-नेम अइसन खरचीला हो चलल रहे कि धनीमानी सेठ आ राजा-जमींदारन के छोड़ि के साधारन गरीब जनता कऽ गुजर ना रहे।

अइसना समय एगो अइसन तेयागी महापुरुष कऽ जरूरति रहे जे अपना सहज धरम विचार के फइलावे, जवन कि जनता का सुभाव का मोताबिक होखे। एह सब बातन के सोचि बिचारि राजकुवँर सिद्धारथ, नेह नाता के ठोकर मारि आतम-ग्यान खातिर एह ओर बदम उठवलन।

जवना तरह से ओह समय, बिहार परदेश आ मगध का राजधानी राज-गिरिह में सिद्धारथ गउतम का आवे में आचार-बिचारनवाली चाहे राजनेतिक सामाजिक दशा भीतरी कारन का रूप में काम करति रहे, ओही तरे गया-छेतर में जाये कऽ बिशेस कारन ई रहे कि ओह इलाका कऽ धरती अपना पवित्तरता आ महिमा खातिर मशहूर रहलि। सिद्धारथ गउतम का आवे तक गया-खंड कऽ एक-एक इंच धरती जग्य-वेदिन आ हवन-कुंडन से पवित्तर हो चुकलि रहे।

एह छेतर कऽ अचछयबट, महानदी (मोहना) बरम्हसर, धरमारन्न, मतंग-आसरम, धेनुतीरथ, गिद्धबट, उदयगिरि, बरम्ह जोनि-परबत, फलगू नदी वोगयरह अइसन जगहा बाड़न कि जिनकर महिमा करीब-करीब सभे पुरानन में गावलि बा। गया का पुन्नि कऽ महिमा जानिये के जुधिसठिर अपना भाइन सहित एहिजा अइलन। पाण्डव लोग जब गया में आइल तऽ गयावासी 'शमठ' बाभन उनके 'अमूरत य-गय' नावँ का राजरिखी कऽ कथा सुनवले रहलन। शमठ 'गय' का जग्य कऽ बड़ाई करत कहलन —"हे पुरुषोतम, गय का जग्य में अनाजन कऽ पहाड़ लागि गइल रहे, घीव कऽ सयकड़न कुंड बनि गइल रहलन, दही कऽ नदी बहि चलल रहली, आ किसिम-किसिम का बेंजनन कऽ तऽ बाढ़ि आ गइलि रहे। ओह समय में बाभनन के दान देबे का बेर वेद-मंतरन कऽ जे धुनि होति रहे, ऊ सरगलोक तक गूंजति रहे। ओह धुनि में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभे तरह के शब्द लीन हो गइल रहलन। जग्य में उचारल पुन्निमय शबदन से सवँसे धरती, सभ दिशा आ आसमान भरि गइल रहलन। हे राजन्! जइसे संसार भर का बालूकण, आसमान का तारा आ बादलन से चूवेवाला जलबूंदन के केहू गनि ना सके, ओही तरे 'गय' का जग्य में दीहल दच्छिना कऽ केहू गिनती ना बता सके.......

"सिकता वा तथा लोके तथा वा दिवि तारकाः।
यथा वा वर्षतो धाराः असंख्येयाः स्म केनचित्।
तथा गणयितुं शक्याः गय-यज्ञे च दक्षिणाः॥"
—महा०, वनपर्व, अध्या० ९५–२०।

एतने नाहीं, ओह जग्य का सुजश पर कहाउति बनि गइलि बा कि—
'गयस्य यज्ञे के त्वद्य प्राणिनो भोक्तुमीप्सवः।'

अरथात् संसार कऽ कवन अइसन परानी बँचल बा, जे भोजन कइल चाहत बा, यानी केहू अइसन ना रहल, जे भोजन कइ के अघा ना गइल होखे। हे राजन्! एतनो पर जग्य से बाँचल अनाज कऽ पचीस पहाड़ रहि गइलन—

'तत्रभोजनशिष्टस्य पर्वताः पञ्चविंशतिः।'
—तत्रैव, महा०, अ० ९५-२५।

महाभारत वन परब का अध्याय ९५ में एकर पूरा बरनन पढ़ल जा सकत बा। गया कऽ महिमा जानिये के जुधिसठिर महराज अपना भाइन सहित एहिजा चारि महीना रहि के चातुरमास जग्य कइले रहलन। गया-छेतर में सनातन धरमराज निवास करेलन आ ओहिजा सभे पवित्तर नदी परगट होली। एही से खुद सिद्धारथो जब बोधि-बिरिछ का नीचे 'बजरासन' पर बइठलन, त ऊहो कहले रहलन—

"महा सत्तो इदं सब्बबुद्धानं अविजहितं अचलट्ठानं किलेस पञ्जरविद्धं सनट्ठानन्ति अत्वा।......इमं पल्लकं भिन्दिस्सामीति।"

अरथात्—"सभे बउधन (ग्यानिन) से अपनावल ई जगहा महा सतो· गुनी हऽ, इहे दुख-ठटरी-बिमोचन (छुटकारा) असथान हऽ। अइसन हम मानत बानीं। ग्यान के बिना पवले एह आसन के ना छोड़बि।"

देखे में आवत बा कि सिद्धारथो का समय में एह छेतर में उरूवेल कास्सप, नदी कास्सप, गया कास्सप—तीनि-तीनि अगिनि-होतरी जग्य-कारज में अइसन लीन रहलन कि उनकर सुजस सवँसे अंग आ मगध तक फइलल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। खुद सिद्धारथो कऽ दादा एह पवित्तर धरती पर तीरथ करे आइल रहलन। उनका ई सभ बाति जरूरे मालुम होई। एह सभे बातिन के जानिये के ऊ गया का ओर डेग बढ़वले रहलन।

अब सिद्धारथ घूमत-भरमत गया जिला का 'कुरकिहार' नावँ का जगहा से होत उरुबेला पहुँचलन। उरुवेला का पँजरे 'सेनानी' नावँ कऽ गावँ रहे। भिक्खु सिद्धारथ के ई जगहि अपना तप आ समाधि खातिर बहुत नीमन जँचल। एह जगहि का दइवी सुघराई आ पवित्तरता कऽ बखान बउधदेव अपना मुँह से कइले बाड़न। ऊ कहत बाड़न—ई जगहा अनेकन रंग-बिरंगा बिरिछ आ फूलन से गहगहात सोहत रहे। निरंजना नदी कऽ निरमल धार धीरे-धीरे बहत रहे। नदी का दूनो किनारे सुच्छ चमचमात वालू कऽ भारी रेतीला मैदान रहे। ओहिजा मंद-मंद झुरुकेवाली हवा चित्त के खुश करेवाली रहलि। मैदान टहरे-घूमे लायक आ आनंददायी रहे। भिच्छाटन खातिर चारो ओर सुबहिता कऽ गावँ रहलन।"[१]

भिक्खु सिद्धारथ अपना तप खातिर एही जगहि के चुनलन। बिहार परदेश का एह पवित्तर जगहि में 'मोहना' आ 'निरंजना' नावँ का नदियन का संगम पर, नदी का पूरुब, मुंडेशरी नावँ कऽ एगो छोट पहाड़ी बा। एहिजे सिद्धारथ कई बरिस तक कठिन आ घोर तप कइलन।

उरुवेला में पहुँचि के छव बरिसन तक सिद्धारथ एह किसिम कऽ कठिन तप कइलन कि उनकर देंहि गलि गइलि। सभे इनिरी थाकि के सुस्त हो गइली सऽ। 'मज्झिमनिकाय' का 'सिंहनादसुत्तन्त' में भगवान बउधदेव मुंडेसरी पहाड़ी का तप का बारे में सुरेमन चेला सारिपुत्त से कहले रहलन— "हम ओह कठिन तप में एह किसिम से लीन भइलीं कि देंहि कऽ सभ लूगा-कपड़ा उतारि फेंकलीं। हम लँगटे रहे लगलीं। संसारी आचार-विचार सभ छोड़ि दिहलीं। केहू कऽ नेवँता ना मंजूर करीं। एक घर से सात घर तक घूमि-घूमि, खाली एक-एक गरास माँगि लेइँ आ ओही पर जीवन कऽ निबाह करीं। पाछे चलि के एहू के छोड़ि दिहलीं आ साग, सावाँ-तेनी, खाये लगलीं। बाद में एहू के छोड़लीं आ जरल अनाज, राह पर फेंकल चमड़ा, गाइ कऽ गोवर, लेंड़ीं वोगयरह हमार आहार हो गइल। पटुवा, मिरिगछाला, टाट आ आदिमी का बार कऽ बनल कमरा हम बहतर का रूप में काम में ले आइँ। हम दाढ़ी आ मोंछि का बारन के हाथन से नोंचि देइँ। ठेहुना का

१. अरिय परियेसन सुत्तन्त (मज्झिम निकाय, १, ३, ६)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल पर बइठि के तप करीं आ काँटन कऽ बिछवना बनाके सूतीं। ईहे कुल्हि हमरा तप कऽ ढंग रहे। हे सारिपुत्त ! हमार दशा अइसन हो गइलि रहे कि हम उठि बइठि ना सकीं, उठे कऽ कोशिश कइला पर तिले-तिले गिरि परीं। हमार दिशा पेशाब बिल्कुले बंद हो गइल रहे। तबो तऽ एह सभ कठिन तपन से कवनो लाभ ना भइल।" भिक्खु सिद्धारथ ग्यान कऽ भूखाइले रहि गइलन।

× × ×

अंत में उनका गौर-गुनावन से ई भान भइल कि एह तप से कुछ ना भेंटाइल। ग्यान कऽ भूखि शांत ना हो सकलि। एके छोड़ले ठीक बा। देंहि रही तबे कुछ बोध होई, मुकुती कऽ सुख-शांति भेंटाई। एह तरे तप छोड़ला का बाद उनका अपना लरिकाईं का परिच्छा कइल धियान कऽ खियाल आइल। बाकी तऽ ऊ सोचलन कि भूखि-पियासि से बेकल मन निहचित आ थिर ना रहि सके; फेरु धियान कइसे होई? ई कुल्हि सोचि के ऊ निराहार रहल छोड़लन आ छव बरिस का कठिन तप कऽ अंत भइल, जवना पर कि उनका साथ कऽ पाँच बरम्हचारी मुनि पण्डित उनके तप से गिरल जानि संग छोड़ि दिहलन; आ ओहिजा से तप करे खातिर रिसिपत्तन का मिरिगदाव में चलि गइलन। आगे चलि के ऊहे लोग बउधदेव कऽ पहिला तेयागी चेला— पंचवग्गी भिक्खु बनल।

सिद्धारथ धियान का अभ्यास में तत्पर होके ग्यान-जोति पावे खातिर जतन करे लगलन। बाद का बउध परम्परा का अनुसार धियान में लागल बोधिसत्त के 'मार' (कामदेव) आ उनका फउदि से भिड़े के परल। पुरान पाली-बचनन में मार कऽ चरचा जरूरे मिलति बा बाकी बोध-ग्यान कऽ दइवी जोति पावे का सिलसिलेवार बरनन में 'मार' का विघिन-उपदरो कऽ कहीं साफ जिकिर नइखे। कुछ विदमानन कऽ राइ बा कि ई अंश पाछे कऽ गढ़ल-जोरल हऽ। बाकी अउरी विदमान मरधा का एह कमी कऽ विरोध कइले बाड़न। पालि साहित्त में 'मार' के कहीं मउवति आ कतहीं काम भा सांसारिक लालच का रूप में समुझल गइल बा।

ई विचार कऽ खानि बा कि एक तरह से आलार-कालाम आ उदरक रामपुत्तो बउधदेव के धियान कऽ सिच्छा देले रहलन। असल में अधियातमिक-साधन कऽ सुपुन-से निसाना (लक्ष्य) का विचारे मे बा, जदपि कि एगो अइसन दशा आवेले कि ओकरा बाद विचार कऽ गति थकि जाले। धियान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ असल मरम हऽ कि निशाना का ओर चित्त के बार-बार लगावल जब तक ले कि चित्त खुद ओकरा ओर हरदम बहे न लागे। कवनो विसय पर चित्त के बार-बार लगावे के बउधलोग 'वितर्क' कहे ला, आ ओह विषय पर चित्त का हरदम बहाव के 'विचार'। अइसन धियान खातिर समेटाइल चित्त का शांत होखे का सिलसिला में, पहिले मौन का साथ-साथ चित्त का जड़ता आ चंचलता का ततकाल शांति का कारन सवतुक सुख आ सुख कऽ लगाव-सटाव, जेके बउधलोग 'पिरीति' कहले बा, पैदा होलन। ई पहिला धियान कऽ दशा हऽ, बाकी कले-कले एक का बाद दूसर 'वितर्क', पिरीति आ सुख का रोकावट से दूसर, तीसर आ चउथ धियान कऽ दशा मिले ली। साथे-साथे शांत भइला से चित्त कऽ सुभाविक शकती खिलि उठे ले आ धियान का असल निशान का मोताबिक ग्यान आ विभो रूप आठ सिद्धिन का चमतकार कऽ हाजिरी लागे ले।

जब सिद्धारथ गउतम तप भंग कइके गौर-गुनावन में लीन रहे लगलन आ मधुकरी-विरती से आपन जीवन निबाहे लगलन। ओही समय सेनापति गावँ का धनी किसान कऽ बेटी सुजाता आपन मनवती उतारे खातिर खीरि बनवलसि। सुजाता गावँ-देवता का रूप में, अपना गावँ का पुराना बर-बिरिछ के मनवती भखले रहलि कि—'बरबाबा! जो हमरा पहिला गरभ से बेटा होई, तऽ हम तोहरा के एक लाख का खरच से एगो खास किसिम के खीरि तइयार कराके चढ़ाइबि।'[१]

एह भखवटी का मोताबिक ओह घरी तक सुजाता कऽ मनोरथ पूरा हो गइल रहे। ऊ अपना पुरनाहुति का हवन-कारज खातिर—"पहिले हजार गाइन के जेठी मधुवन में चरवा के उन्हन कऽ दूध दूसरि पाँच सइ गाइन के पियवलसि। फेरु, उनकर दूध अढ़ाई सइ गाइन के, एह किसिम से एगो कऽ दूध एगो के पियावत, सोरह गाइन कऽ दूध आठ गाइन के पियवलसि, एह तरे दूध कऽ गाढ़ापन, मिठाई आ बल बढ़ावे खातिर ओके छीर रूप में बदललसि। ऊ बइशाख पुरनवाँसी के अनगुताहें बलि-हूम करे का इच्छा से, झल-फलाहे उठि के ओह आठ गइयन के दुहवलसि। बछरू गाइन का थानन में मुँह ना लगवलन सऽ। थानन किहें नया बरतन धरते छीर-धार अपने आप निकले लागलि। ओह अचरज के देखि, सुजाता अपने हाथ से दूध के नया बरतन में

१. "सच्चे समजातिकं कुलघरं गन्त्वा पठमगब्भे पुत्तं लभिस्सामि अनुसंवच्छरं ते सत-सहस्स परिच्चागेन बलिकम्मं करिस्सामीति"—जातकट्ठ-कथा, ५४ पृ० ५१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डालि, अपने आगि बारि खीरि पकावे शुरू कइलसि। खीरि पाके का समय ओकरा में ले बुलबुला उठि के दक्खिन ओर फइलसु। एगो बुलबुला बहरी ना गिरे।[१]"

एह तरे सुजाता जवना दिन खीरि तइयार कइलसि ओह दिन वैशाखी पुरनवांसी रहे। ओह दिन बड़ा तड़के भिक्खु सिद्धारथ ओही बर का फेंड़ तर समाधि खातिर जा बइठलन। सुजाता बलि चढ़ावे का पहिले अपना दासी 'पुरना' के बरदेवता का जरि तर नियरा पास सफाई करे का विचार से भेजलसि। पुरना जब ओहिजा आइलि, तऽ बर का जरि तर भिक्खु के धियान में बइठल लीन देखि के अचरज में परि गइलि। ऊ समुझलसि कि हमरा मलकिन से मिलेवाली बलि के लेवे खातिर बरदेवता आपरूपी परगट हो बइठल बाड़न। दासी कऽ बाति सुनि के सुजाता जल्दी-जल्दी सोने का थारी में खीरि भरि के सोहागिन-कुल-दुलहिन का भेख में सखिन का साथ बर देवता किहें आइलि आ देवता का आगे खीरि कऽ थारी धइके भोजन खातिर विनती करे लागलि। भिक्खु सिद्धारथ समाधि से अपना मन के हटा के ओकरा विनती का मोताबिक खीरि कऽ थारी लिहलन। थारी लिहला का बाद ऊ निरंजना नदी का किनार पर चलि गइलन आ ओहिजा पूरुब मुँह होके ओनचास कवर खीरि खइला का बाद सोना का थारी के निरंजना का धारा में फेंकि दिहलन। कहल बा कि एह खीरि के पावते सिद्धारथ का एगो विचित्तर तेज, बल आ फुरती आ गइलि।

सिद्धारथ सुजाता कऽ खीरि विकरम संवत् ले ६४५ बरिस पहिले वैशाखी पुरनवांसी का दिन पहिला बेरा में पवले रहलन। तपसी सिद्धारथ सेनापति गावँ से चलि के उरुवेला में पहुँचलन आ सोसतिक बाभन से आठ अवांसी कुश दान ले के समाधि जोग जगहा खोजत ओह दिन साँझि का बेरा बोधि-बिरिछ का नीचे (पीपर-बिरिछ तर) गइलन। ऊ ओह जगहा के उचित समुझि कुश कऽ आसनी बिछा बइठि गइलन। जइसन कि पहिले कहल बा कि आसन पर बइठे का बेरा ऊ परतिग्या कइलन कि जबले आतम ग्यान ना पा लेबि तबले एह आसन से उठबि नाहीं। एही जगहा के बउध-धरम-गरंथन में 'वजरासन' (वज्रासन) कहल बा।

बोधि-बिरिछ पीपरतर सिद्धारथ जब आसन जमा के समाधि में बइठलन त उनका देंहि से मार का लोक के उजियार करेवाला तेज-पुंज निकले लागल

१. जातक-निदान कथा—(अनुवादक भदन्त आनंद कौशल्यायन), पृष्ठ—८९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर चमचमात किरिन 'मार' के छूवे लगली सऽ। मार उनका जोति से घबड़ा गइलन। ऊ तुरंते अपना सेनापतिन के बोलवलन। मार का सुमिरन करते भयंकर-भयंकर रूप वाला जच्छ, राछस; पिचास, सरप वोगयरह आ जुटलन। मार कऽ हुकुम भइल कि गउतम के हरा के उनकर समाधि भंग कइ दऽ जा। थोरे भर बाद आपन भारी सेना ले के मार खुद ओहिजा पहुँचि गइलन। फल भइल कि गउतम का साथ मार-सेना कऽ घोर लड़ाई शुरू हो गइलि। मारदेव कऽ सेनापति हाड़, पत्थल आ तरह-तरह कऽ हथियार सिद्धारथ पर फेंके लगलन, बाकी समाधि में बइठल ऊ तनिको टस से मस ना भइलन। ओह सेनापति लोग कऽ फेंकल चलावल कुल्हि हथियार अंत में बेकार साबित भइल। मार कऽ उतजोग-उधातम कवनो काम ना कइलसि। लड़ाई कऽ दाव-पैंतरा बेकार देखि, मार सोरह-बरसी परम सुंदरी परिन के सुमिरि के बोलवलनि कि ऊ लोग गउतम के अपना नाँचि-गाना से रिझा के समाधि भंग करावसु। बाकी तऽ उनकर इहो तिकड़म काम ना दिहलसि। आखिर मार हारि के सिद्धारथ गउतम का चरनन में माँथ झुका माफी मंगलन आ बिदा भइलन। तबे ले भगवान बउधदेव कऽ एगो नावँ 'मारजित' परि गइल।

असल में मार कऽ लड़ाई निशाना भा विचार कऽ रूपक हऽ। एकर मतलब ह कि भगवान बउधदेव के काम-वासना, भय, किसिम किसिम कऽ टिशुना ओह घरी सतावल चहली; बाकी ओह सभन पर ऊ विजय पवलन—अपना मंशा से तनिको डिगि ना सकलन।

मार-विजय का बाद सिद्धारथ गउतम एही जगहा पर, राति का तीनि पहरन में से पहिल पहर में अपना पुरुब जनमन कऽ जानकारी कइलन, दूसरा में दइवी-नयन (दिव्य-चक्षु) पवलन आ आखिरी में 'प्रतीत्य समुत्पाद'—कारज-कारन संबन्धित सहारा (अपेक्षा) पर पैदाइश कऽ विचार वाला गूढ़ ग्यान-जोति पवलन। कारज-कारन कऽ ई अनमोल नेमसूत बउधदेव कऽ आपन खोज हऽ। पह फाटे का बेरा उनका पूरा आतम-ग्यान कऽ जोति परतछ भइलि। अब ऊ बउध-बुद्ध-(ग्यानी) कहाये लगलन। आतम-ग्यान कऽ जोति पा के भगवान कहलनः—

"कलेशमय जनम बारंबार लेवे के परल। हम घर-बार ठाढ़ करे वाला का खोज में संसार में बेकार भटकल फिरलीं। बाकी घर रचवइया अब हम तोहके देखि लिहलीं। अब तूँ फेरु घर ना बना सकऽ। तोहार सब कड़ी टूटि गइली; घर कऽ बँड़ेरी ढहि गइलि। चित्त का सुगति कऽ लाभ भइल; टिशुना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ नाश देखि लिहलीं।" आतमग्यान का बाद सात हपता तक बउधदेव जी किसिम-किसिम का दूसरा-दूसरा फेंड़न तर बइठि के मुकुती कऽ आनन्द लेत रहलन। बउधदेव का मन में संशय भइल कि बहुत कलेश से हम जवना तरक-दलेल से ऊपर वाला मेंही परमारथ-ग्यान कऽ बोध कइलीं; ओके संसारी सुख का चाह, पिरीति-बैर आ मोह का पँचड़ा में अझुराइल वहात लोगन के कइसे समुझा सकबि, का उनका में धरम-परचार कऽ जतन-उतजोग बेकार ना होई ? परम्परा का मोताबिक बउधदेव का भाव के समझिके निहचल शांत: राति में बरम्हा कऽ आकाशबानी भइलि कि:—

"धरम का दया भरलि आंखिन से दुख-सागर में बूड़त-छपिटात जनता के देखीं आ धरम कऽ उपदेश करीं, जाने समुझेवाला जरूरे होइहँन "

'विनय-पिटक' का 'महावग्गो' नावँ वाली पोथी का पहिले चरन में लिखल बा कि भगवान बउधदेव सात दिनन तक ओह बोधि-बिरिछ का नीचे महाग्यान पवला का बाद ओह मुकुती कऽ आनन्द लेत रहलन। आठवाँ दिन ओहिजा ले उठि के, बोधि-बिरिछ ले कुछ दूर, थोरे उत्तर दिशा के लिहले पूरुब दिशा में ठाढ़ होके सात दिनन तक बोधि-बिरिछ आ ओह (वज्रासन) बजरासन के देखत रहलन आ मुकुती का आनन्द में डूबल रहलन। भगवान जवना जगहा पर ठाढ़ होके बोधि-बिरिछ के देखत रहलन, ओकर नावँ 'अनिमेख चइत' आ बजरासन का बीच, पूरुब से पच्छिवँ के टहरत-टहरत मुकुती कऽ आनन्द लेवे में हपता बितवलन। एह से ओह जगहि कऽ नावँ 'रतन-चंकरम-चइत' परल। एही समय में मार हाजिर होके विनय कइलन कि भगवन् ! रउरा अब महाकाल के पा लेईं—एहलोक से चलीं। एकरा पर बउधदेव भगवान कहलन कि—नाहीं, आपन ग्यान अबहीं हमरा अपना चेलन के देवे के बा।' एतना सुनि मार उदास भइल लवटि गइलन। चउथा हपता में देवता लोग 'रतन-चंकरम-चइत' ले पच्छिवँ रतन घर बनवावल, जहाँ भगवान सात दिन बइठि के 'अभिधरम' पर विचार करत रहलन। ओही समय ले ऊ जगहा 'रतनघर-चइ' का नावँ से पुकारल जाये लागल।

एह किसिम से चारि हपता मुकुती का आनन्द के लेके, पाँचवाँ हपता में ओह 'अजपाल-वर' बिरिछतर फेरु मुकुती-आनन्द लेवे खातिर पहुँचलन— जहाँ सुजाता उनके खीरि खियवले रहे। एहिजा एक ही आसन पर बइठल रहि के बउधदेव मुकुती कऽ आनन्द लेत रहलन। पांचवाँ हपता बितला का बाद 'मुचलिंद' बिरिछ का नीचे गइलन आ ओहिजो बइठि के मुकुती कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आनन्द लिहलन। एही मुचलिंद का नीचे भगवान बउधदेव का भयंकर आन्हीं पानी कऽ सामना करे के परल, जहाँ एगो नागराज अपना फन के फइला के उनकर रइछा कइलन। नागराज ओहिजे एगो तलइया में बास करसु। छठवाँ हपता मुचलिंद बिरिछतर बिता के भगवान 'राजाथतन' बिरिछतर पहुँचि, ओहिजो सात दिनन तक मुकुती कऽ आनन्द लेत रहलन। एह तरह सात हपता सुगति का आनन्द में रमत ऊ बोधगया का (उरुवेलाका) इंच-इंच धरती के पवित्तर बना दिहलन।

अजपाल बिरिछ का नीचे बकरी पोसे चरावे वाला बकरिन का झुण्डन के राखसु-हिरावसु, एह से ओह बिरिछ कऽ नावँ अजपाल परल रहे। ई बोधि-बिरिछ ले पूरुब का ओर रहे।

उरुवेला कऽ एगो घटना अइसनि बा कि ओसे बिहार कऽ बिलच्छनता झलकति बा। भगवान बउधदेव जब अजपाल बिरिछतर बइठि के मुकुती कऽ आनन्द लेत रहलन, तब उनका मन में अइसन भाव उठल रहे कि—'बड़ा कलेश आ घोर तप का बाद जवना ग्यान के हम अरजलीं, ओकर आनन्द हम अकेलहीं काहें ना उठायीं ? उपदेश कऽ झंझटि काहें कपारे ढोईं ?' ठीक ओही घरी एगो बूढ़ बाभन बउधदेव जी का पास आइल आ जगत् का कयलान खातिर पावल ग्यान कऽ उपदेश करे के उनके सूझ-बूझ दिहलसि। ओही बाभन का सुझाव के मानि बउधदेव जी ग्यान-परचार कऽ संकलप लिहलन। बउध-धरम पोथिन में ओह बाभन के परगट रूप में बरम्हा कहल बा। बाकी अइ-सन कलपना बउध-धरमी भगतन कऽ ह; जेके बरम्हा बता के बउधदेव कऽ महिमा मरजादा बढ़ावलि बा। असल में तऽ ऊ बाभन उरुवेला-छेतर कऽ निवासी रहल होई; जेकरा जनम धरती कऽ जश बिहार के बा।

बाभन का बिनय का बाद भगवान पहिला उपदेश करे जोग आराद-कालाम आ उदरक रामपुत्त के समुझलन। बाकी ऊहे बाभन बतवलसि कि ऊ दूनो बिचारक संसार से बिदा हो गइलन। एकरा बाद भगवान बउधदेव अपना उरुवेला का ओह पाँच साथिन के शिच्छा दीहल चहलन, जे कि उनके तप से गिरल जानि साथ छोड़ि दिहलन आ तप खातिर रिसि-पत्तन (काशी) का मिरिगदाव' (मिरिगा-वन) में गइल रहलन। एह पाँचो कऽ नावँ 'महा-वग्गो' में एह किसिम से दीहल बा—कवडिन्न, बाप्प, भदरिक, महानाम आ सस्सुजित।

गौरव आ मरजादा कऽ बाति बा कि बिहार-परदेश का उरुवेला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाली पवित्तर धरती में ओह बोधि-विरिछ का नीचे, बिहार का किसान-बेटी कऽ खीरि खाके आ सोसतिक बाभन का आठ अवाँसी कुश पर आसन लगा; वैशाखी पुरनवासी का टहाटह अँजोरिया राति में मुनि सुरेमन बोध ग्यान पवलन। ओह राति के, सिद्धारथ गउतम का जनम-जनमांतर का टिशुना कऽ नाश हो गइल, उनका चित्त कऽ कुल्हिये मइलि एके झटका में धोवा के साफ हो गइलि आ ऊ बउधदेव का रूप में परम जोति सरूप नया जनम धारन कइलन। शाकिय-कुल सुरेमन सिद्धारथ गउतम कऽ जनम भले लुम्बिनी में भइल; बाकी धरमाचारज भगवान बउधदेव कऽ जनम तऽ 'बोधे गया' में भइल, जिनका दैवी-ग्यान कऽ विमल जोति आजो संसार के अपना अँजोर से जगमगा रहलि बा। धन्नि बा ऊ धरती, जहवाँ अइसन ग्यान-दीपक बरल आ जेकर जोति कवे बुताये वाली नइँखे।

रिसिपत्तन का ओर—तिरिपिटकन में 'सुत्तपिटक' का पाँचवाँ निकाय कऽ नावँ 'खुद्दक निकाय' ह। 'खुद्दक-निकाय' में पनरह पोथी बाड़ी, जिनका में ले एगो कऽ नावँ 'थेरी-गाथा' हऽ। 'थेरी-गाथा' में तिहत्तर भिक्खुनिन क उदगार बाड़न। एह भिक्खुनिन में 'चापा' नावँ कऽ एगो भिक्खुनी कऽ हालि मिलति बा। एकरा में बरनन कइल घटना का मोताबिक 'रिसिपत्तन' जाये का समय भगवान बउधदेव के राह में 'बंकहार' परदेश मिलल, जहाँ 'उपक' नावँ का एगो आजीवक साधु से उनका भेंट भइलि। 'उपक' भगवान बउधदेव के संन्यासी-भेख में देखि के पुछलसि—'तोहार गुरु के हऽ ? तूँ केकरा उपदेश में बिसवास राखे लऽ' ? बउधदेव जी सवाल कऽ तुरंते उत्तर दिहलन—'हमार गुरु केहू ना हऽ हम सभ-विजयी आ सरब-ग्यानी हईं।'

'ललित-विस्तर' गरंथ का १६ वाँ पाठ में लिखल बरनन से पता चलत बा कि 'बोधगया' ले 'रिसिपत्तन' जाये का बेर भगवान बउधदेव गया, नाहाल, बुददिरम, लोहित वस्तु, गंधपुर आ सारथिपुर होत वाराणसी गइलन। 'बिहार और बौद्ध धर्म' का लेखक हवलदार तिरपाठी जी का समुझ में ई जगहा बिहार-परदेश का गया आ शाहाबाद (अब भोजपुर-रोहितास) जिला में होइहँन। विदमान लोग का एकरा पर विचार करे के चाही। काहें से कि, सारनाथ (रिसिपत्तन) बिहार का पच्छिमी सिवाना ले थोरही दूर बा आ 'जातकट्ठकथा' के लिखल १८ जोजन में ले लगभग सोरह १६ जोजन कऽ राह बिहार का ऊपर कहल दूइ जिलने में परे लऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'महा वग्गो'[१] साफ लिखत वा कि 'उपक' से भगवान बउधदेव का, गया आ बोधगया का बीच में भेंट भइल रहें। बाकी एकरा में वंकहार कऽ चरचा नइँखे। 'थेरी गाथा' में 'उपक' से मिलेवाली घटना कऽ जिकिरि 'वंकहा'-परदेश का साथ कइलि बा। 'बौद्ध धर्म और विहार' का लेखक हवलदार तिरपाठी जी का समुझ का मोताबिक 'वंकहार' परदेश शाहाबाद (रोहितास) कऽ ऊ भाग हऽ, जे सोन नदी का किनारे आज 'वाँक' गावँ का नावँ से मशहूर बा। 'थेरी गाथा' का 'चापा' भिक्खुनी वाला उदगार में एगो शब्द—'तक्कारी' मिलत वा, जे हरियर तरकारी खातिर आइल बा। आजुवो शाहाबाद का ओह भाग में हरियर सबजी के 'तरकारिये' कइल जाला।

एकरा अलाँवे 'जातकट्ठ-कथा' का 'सन्तिके-निदान' में 'बुद्धघोस' एकर साफ जिकिरि कइले बाड़न कि भगवान बउधदेव असाढ़ सुदी चतुरदशी का अनगुतहें बोध गया ले चललन आ अठारह जोजन कऽ राह तय कइके पुनर-वाँसी का साँझि के रिसिपत्तन पहुँचलन। जेह दिन भोर में उनका 'उपक' से भेंट भइल, ओही दिन साँझि के रिसिपतन पहुँचलन। एसे साफ बा कि बोधगया से सारनाथ पहुँचे में उनके दूइ दिन लागल। अरथात् अठारह जोजन कऽ डहरि ऊ दूइ दिनन में पूरा कइलन। जो चतुरदशी का भोरे बोधगया से चललन, तऽ 'महावग्गो' का मोताबिक ओही दिन भोरे उनकर भेंट 'उपक' से बोधगया आ गया का बीच में होखल चाही आ ओही साँझि के पहुँचला कऽ मतलब बा कि चतुरदशी का साँझिये के ऊ पहुँचलन, जवन कि अठारह जोजन डहरि एक दिन में तय कइल असल में केयास में आवे लायक नइँखे। एह से साफ बा कि बुद्धघोस 'महावग्गो' आ 'थेरीगाथा' दूनों का एह अंश के पढ़ि के आ मजे में छानिन्बीनि के लिखले बाड़न। एह तरे बउधदेव पहिला दिन बोध-गया से सोन का पच्छिमी किनार पर कऽ डहरि तय कइलन आ दूसरा दिन ओहिजा ले सारनाथ पहुँचलन। एही दूसरा दिन का भोर में उनकर 'उपक' से भेंट भइलि होई, जे कि 'वंकहार' परदेश में होखलि रहे।

आज का खोजी विदमानन का विचार का मोताविक (जे में 'बौद्ध धर्म और विहार' कऽ लेखको बाड़न) भगवान बउधदेव का उरुवेला से चलि के वाराणसी (बनारस) पहुँचे में जेतना समय कऽ चरचा कइल बा ऊ बढाचढ़ा

---

१. बेनी माधव वरुवा अपना परसिद्धगरंथ—गया ऐन्ड बोधगया' में (पृ० ११६) पन्ना ११६ में एह जगह के रोहितास गढ़वत वले बाड़न, जे कि संदेह जोग बा। ई नाहाल के वसाला, वुन्दद्विर के, चुन्दद्वोला आ लोहितवस्तु के रोहित वस्तु लिखने बाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिखल बा। काहें से कि, भगवान बउधदेव बैशाखी पुरनवांसी के आतम ग्यान पवलन आ असाढ़ पुरनवासी के रिसिपत्तन-मिरिगदाव में धरम-चक्का घुमवलन। बीच का दूइ महीना में सात हपता तऽ उरुवेले में मुकुती कऽ आनंद लेत विचरत रहलन। बाकी एगारह दिनन में, 'बुद्धघोस' का मोताबिक दू दिन रिसिपत्तन पहुँचे में लागल, बाकी नवदिन ऊ कहाँ बितवलन, एह बारे में पाली-गरंथ मौन बाड़न। एह से बोधगया ले भगवान सात हपता बादे चललन आ दस दिन में वाराणसी (बनारस) पहुँचलन अउरी एगारहवाँ दिन ऊ धरम-चक्का घुमवलन।

भगवान बउधदेव रिसिपत्तन पहुँचि के अपना 'पंचवरगी' भिक्खुन के चारि आरज-सत्त आ आठ अंगनवाला धरम-मारग कऽ शिच्छा देके धरम का धँसल चक्का के कीच-पांक से बहरी निकालि चउरस सिजिल सड़कि पर डगरवलन। धरमरथ नया बल, नयी डहरि पाके तेजी से आगे बढ़ल।

एकरा बाद भगवान काशी का 'जश' नावँ का सेठ का बेटा, आ ओकरा चउवन साथी लोगन के सिच्छा देके भिक्खु बनवलन। मिरिगावन (मिरिग-दाव) में आपन पहिला चतुरमासा पूरा कइला का बाद, भगवान सभे साठि भिक्खुन के दूसरा-दूसरा परदेशन में धरम-परचार खातिर भेजलन। ओकरा बाद अपने बिहार-परदेश में गइलन। मालूम होता कि बिहार का दक्खिनी भाग का विदमान् रिसिन-तपसिन के देखत, उनसे भिड़े खातिर, अपना नव-सिख चेलन के भेजल ऊ उचित ना समुझलन आ एही से एह भाग के खुद अपना हाथ में लिहलन।

रिसिपत्तन से लवटे का बेर भगवान बउधदेव के उरुवेला का डहरि में 'कापासिय-बन' मिलल। ओहिजा तीस भला घरन कऽ धनी-मानी छतिरी अपना-अपना मेहरारुन का साथ बन में बिचरत रहलन। ओ में एगो छतिरी कुवँर अइसन रहल जेकरा आपन मेहरारू ना रहलि आ ऊ अपना मउज-मनवहलाव खातिर एगो वेशवा ले आइल रहे। ऊ वेशवा मोका पाइ पैंतरा चललि आ कुवँर के अन्हरचटकी खेलवलसि—उनकर भारी संपति लेके नव दू एगारह हो गइलि रहे। सभे छतिरी सरदार ओह घरी वन में ओही वेशवा के खोजत दोचित रहलन। खनदानी रईस छतिरी नवजवान जब बउधदेवजी के एगो फेंड़ का नीचे ओठँघल पवलन, तऽ उनसे भागलि वेशवा का बारे में पूछताछ कइलन। बउधदेव जब उनकर सभ कथा जानि लिहलन आ उनके दुखी देखलन, तऽ उनका दुख के दूर करे खातिर धरम कऽ सवतुक शिच्छा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहलन। 'जातक-कथा' से मालूम होता कि भगवान तीसो छतिरी राज-कुवँरन के ओहिजे अपना धरम में शामिल कइलन। छान-बीन से पता चलत बा कि 'कापासियवन' सहसरावँ का पास रहे आ आजो ओकरा नावँ कऽ इयाद 'कपसिया' गावँ का रूप में कायम बा। मालूम होता कि एही रईसन का बउध-धरम का शिच्छा लेवे का इयाद में अशोक सहसरावँ का पासवाली पहाड़ी पर आपन एगो छोट 'धरम-लेख' लिखवा के लाट खड़ा ठाढ़ कइले रहलन; जे कि आजो ओहिजा बा। एहिजा ऊ हजार भिक्खु संतन के रहे-ठहरे खातिर 'आराम' (मठ) बनववलन जवना से कि एकर नावँ सहसराम-सहसरावँ परल। कपसियो में बउध बिहार, असतूप आ पुराना धरम-मदिरन खँड़हर कऽ पुराना जगहा आज तक देखे में आवत बा।

कापासिय-वन का बाद भगवान उरुबेला पहुँचलन आ ओहिजा ले उरु-बेलाकास्सप का आसरम में। एह छेतर में उरुबेला कास्सप, नदी कास्सप, गया कास्सप तीन बड़ा नामी अगिनिहोतरी रहलन। तीनों मगध में जग्य कऽ मरजादा कायम करे में लागल रहलन। गया कास्सप गयाशीस परबत का पास फल्गू का किनारे रहसु। ओकरा ले कुछ दूर पर निरंजना आ मोहना नदी का संगम पर नदी कास्सप कऽ आसरम आ बोधगया का सामने निरंजना तीर पर उरुबेल कास्सप कऽ आसरम रहे। एह तीनों में उरुबेल समर आ नामी संत रहलन। उनका जग्य-मंडप में पहुँचिके बउधदेव 'नागराज' के विखहीन बनावेवाली घटना का जरिये आपन चमतकार देखवलन। एतने नाहीं ऊ 'उरुबेल' के अइसन पनरह गो चमतकार देखा के मोहित कइ लिहलन। एह कसर से तीनों कास्सप भाइन् के अपना धरम कऽ शिच्छा देके बउधदेव जी भारी बिजय पवलन। एह कास्सप भाइन कऽ सबसे मगध आ अंग में भारी दबदबा आ मान-मरजादा रहे। उरुबेल कास्सप का 'नागराज' वाली घटना के साँची का फाटक में खोदल देखावल बा।

भगवान बउधदेव का कउल-करार का मोताबिक राजा बिंबीसार से भेंट करे के रहे। अपना चेला मंडली का साथ कास्सप भाइन का चेला बनि गइला पर बउधदेव जी राजगिरिह का ओर चललन। पहिले गयाशीस पर आके ऊ 'आदित्त सुत्त' कऽ उपदेश कइलन[1]। ओहिजा ले राजगिरिह का पास 'जेठी-वन'[2] में ठहरलन। राजा बिंबीसार ओहिजा पहुँचि, बिनती का साथ भगवान कऽ चेला बनलन आ शिच्छा सुनलन।

---

१. आदित्त सुत्त (संजुत निकाय) ३४, १, ३, ६।
२. राजगिरिह का पास कऽ 'जेठियन' गाँव।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारिपुत्त आ महा मोग्गलान—ई पहिले कहल बा कि राजगिरिह में 'विछेपवादी' विचारधारा का विचारक 'संजय' कऽ आसरम रहे। ओह अपना आसरम में ऊ अढ़ाईसइ चेलन के अपना धरम संबंधी विचार कऽ शिच्छा देत रहलन। एही चेलन में सारिपुत्त आ मोग्गलानो रहलन। ई दूनो पढ़हीं का बेर कऽ संगी ना रहलन, बलुक लड़िकाइयें ले गाढ़ मीत रहलन। दूनों का परिवार में सात पीढ़िन ले, खायेपीये का साथ-साथ मिताई कऽ नाता चलि आवत रहे। दूनों में अइसन गहिरी दोस्ती रहे कि दूनो एगो दूसरा का घरे रहसु आ एगो दूसरा किहें खासु-पियसु। दूनों बराबर साथ ही खेलसु आ पढ़सु। एक बेर दूनों एक साथ पास का एगो गावँ में नाटक देखे गइलन। दूनों लड़िकन का नाटक देखला कऽ अइसन असर परल कि दूनो संन्यासी संत बनि गइलन। अब ऊ राजगिरिह जाके संजय का आसरम में विद्या-ग्यान अरजे लगलन। धरम-पोथिन के पढ़े-लिखे लगलन। ऊ अइसन एकमयमीत रहलन कि बउध-देवो महराज इनका नावंन कऽ साथहीं जोरि के सुमिरन करसु। कतहीं कवनो काम खातिर ऊ दूनों के साथ हीं भेजसु, जइसे कि भगवान बउधदेव का धरम-रूपी गाड़ी के खींचेवाला ई दूनो पहिया रहलन। संजय का आसरम में जदपि दूनों पढ़ल रहलन, बाकी तऽ उनका धरमविचारन का शिच्छा से ओइ लोग का बोध ना होखल रहे।

एक दिन राजगिरिह में घूमत सारिपुत्त का अस्सुजीत भिक्खु से भेंट भइल। बातचीत का सिलसिला में अस्सुजित से उनका बउधदेव का नया धरम-मत का बारे में कुछ जानकारी भइलि। ऊ ओही घरी अपना संगी महा मोग्गलान से ओह सुनल नयी विचारधारा का बारे में चरचा कइलन। बहुत छान-बीन आ गौरगुनावन का वाद दूनों संजय का आसरम के छोड़ि भगवान बउधदेव का दरबार में धरम-शिच्छा पा चेला होखे खातिर जा पहुँचलन। सारिपुत्त के भगवान बउधदेव से संन्यास कऽ शिच्छा मिललि आ भगवान का हुकुम से महामोग्गलान सारिपुत्त से भिक्खु भइलन।

भगवान बउधदेव का जीवने-समइया में दूनो मगहिया-बाभन आगे-चलि के बउद्ध-धरम कऽ दूइ बिरसपति हो गइलन। सारिपुत्त ग्यानिन में सुरेमन मानल गइलन आ महामोग्गलान सिद्धिन में सिरताज! ई बाति खुद भगवान शावत्थी (श्रावस्ती) का एगो धरम-सभा में कहले रहलन[१]। भगवान दूसरो

---

१. अंगुत्तर-निकाय, १, २, १-७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगहा कहले रहलन कि—'जवना छेतर में सारिपुत्त जालन ओने हमरा जाये कऽ कवनो जरूरति ना रहे।' एतने नाहीं, 'मज्झिमनिकाय'[१] में आइल बा कि जब 'सेल' नावँ कऽ बाभन बउधदेव से सवाल कइलसि कि—'रउरा जब अपना के धरम कऽ राजा कहत बानीं, आ सुनावत बानीं कि हम धरम कऽ चक्का चलावत बानीं, तब एह राजा कऽ सेनापति के हऽ?' सेल बाभन का एह सवाल का जवाब में बउधदेव ओहघरी कहले रहलन—'हमार सेनापति सारिपुत्त हउवँनि।' एही से सारिपुत्त कऽ एगो नावँ धरम-सेनापति रहे। ई बाति 'सुत्तोनिपात'[२] में मिलति बा। अंगुत्तरनिकाय में चरचा आइल बा कि भगवान बउधदेव संघ से कहले रहलन कि 'भिक्खु लोग, सारिपुत्त के छोड़ि के हम दूसरा केहू के नइँखी पावत; जे हमरा परमपद का बाद धरम के चलाई।' सोचीं तनिका कि कइसन रहल—मगह का धरती कऽ ऊ लच्छनमान सपूत, जेकरा बारे में भगवान बउधदेव अइसन कहले रहलन! बउध-धरम आ मगधदेश का एह महातेजवान् नछत्तर का महिमा का बारे में कुछ अउरी सुनीं। अपना परमपद कऽ समय नजदीक जानि के सारिपुत्त भगवान बउधदेव से अपना जनमभूमि पर जाके परमपद पावे कऽ हुकुम चहलन। ओह समय भगवान् संघ का साथ शावत्थी में रहलन। सारिपुत्त कऽ अंतिम समय नियरा गइल बा आ ऊ परमपद खातिर अपना जनम धरती पर जाइल चाहत बाड़न, ई सुनि के भगवान भरल गला से कहलन[३]—भिक्खु लोग! अपना जेठ भाई का पाछा चलऽ जा!' ओह घरी शावत्थी कऽ चारो सभा (भिक्खु-परिषद्, भिक्खुनी-परिषद, उपासक-परिषद्, उपासिका-परिषद्) सारिपुत्त का पाछे-पाछे चले लगली। सभे मरद-मेहरारू हाथन में माला लिहले, बार छितिरवले, दूनों हाथन से छाती पीटत, माँथ धुनत विलाप करत चललन—सभे कहत रहे—'हे असथविर! केकरा हाथन में शासता (गुरुदेव) के छोड़िके जात बाड़ऽ[४]?

सारिपुत्त अपना जनमधरती (पटना-जिला नालंदा का पास) सारिचक (बड़गावँनालक) गावँ में अपना महँतारी का गोदी में परमपद पवलन। परमपद का लाशि कऽ करमठ-कांड भइल; जरावल गइल, तब असथविर चुंद

---

१. मज्झिम-निकाय, २, ५, २

२. 'मयापवत्तितं चक्कं धम्म चक्कं अनुत्तरं सारिपुत्तो अनुक्तेति अनुजातो तथागतं॥'
—सुत्तनिपात, ३३, १०

३. संयुत्तनिकाय (अटठकथा), ४५, २, ३

४. संयुत्तनिकाय (अट्ठकथा), ४५, २, ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारिपुत्त का वँचल धातु के लेके शावत्थी पहुँचलन। चुन्द असथविर बउधदेव का चेलन में एगो मानिंद भिक्खु आ सारिपुत कऽ छोट भाई रहलन। जब चुन्द सारिपुत्त का धातुन के (हड्डिन) भगवान बउधदेव के देखवलन, तब भगवान आदर-सरधा का साथ अपना तरहथी पर ओह धातुन के लेके भिक्खुन के बोधदेत कहलन—"हे भिक्खु लोग ! सइ हजार कलप ले भी बेशी समय तक 'पारमिता' पूरन कइले भिक्खु कऽ ई धातु (हड्डियाँ) लउकत बाड़ी। जे हमरा धरमचक्का के पाछे ले घुमावेवाला तेयागी भिक्खु रहलन। देखऽ हे भिक्खुगन ! ओह महाग्यानी का धातु के, जे पाँच सइ जनमन तक सुख्र भोगन के छोड़ि के संन्यास लेत रहल हऽ। ओह परम तेयागी-इनिरीजीत परमपद पावेवाला सारिपुत्त कऽ वंदना करऽ जा।" भगवान जइसे-जइसे सारिपुत का विसय में कहत जात रहलन; भिक्खु आनंद अपना के ओहिजा सम्हारि ना सकत रहलन। 'आनंद' शोग मे बेकल हो, एक ओर बइठल लोर बहावत रहलन।[1]

धरम-सेनापति सारिपुत्त कऽ जनम नालंदा का पास आज का सारिचक गावँ में बाभन-कुल में भइल रहे। ओह घरी एह गावँ कऽ नावँ उपतिस्स भा नालक गावँ रहे। सारिपुत्त का नावँ पर पाछे ले एकर नावँ सारिचक परल होई। इनका बाप कऽ नावँ 'वंगन्त' आ महँतारी कऽ नावँ 'रूपसारि' रहे। बंगन्त आ रूपसारि का चारि लड़िका आ तीन लड़की रहली। सारिपुत्त सबले बड़ रहलन। इनका भिक्खु हो गइला पर सभे भाई-बहिनि बउध-धरम में संन्यास धारन कइके भिक्खु-भिक्खुनी बनि गइलन। सारिपुत्त बाभन-धरम आ विचारधारा (दर्शन) कऽ ओह समय कऽ बड़ा गहिरा पंडित रहलन। देवदत्त का उपद्रो के शांत करे दबावे खातिर, ओह समय बउधदेव जी का नजरि में दुइये आदिमी जँचलन—सारिपुत्त आ महामोग्गलान। धरम सेनापति सारिपुत्त, बउध-धरम-विचारधारा आ बाभन-धरमगरंथन अउरी ओह विचारधारा कऽ अगाध विदमान रहलन ई बाति पहिले कहलि बा। बाकी तऽ इनकर सभले बड़ विशेखता तऽ ई रहे कि बउध-संघ में अइसन उद्यमी, गुमानहीन, विनयी आ शीलवान दूसर केहू ना रहल। संघ में सभले ऊँच दरजा पवलो पर सारिपुत्त अपना हाथे आसरम में झाड़ू-बहारू करसु, आसरम का बहरी जमीनि पर सूति जासु। कातिक्का पुरनवाँसी के इनकर परमपद भइल रहे।

१. बुद्धचर्या, म० पं० राहुल सांकृत्यायन, पृ० ५१६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामोग्गलान (महामौद्गल्यायन)—भगवान बउधदेव कऽ दूसर पिरीव चेला रहलन। ईहो अपना मीत सारिपुत्त का साथ चउवालिस बरिस तक बउध-धरम आ संघ कऽ सवतुक सेवा कइलन। ईहो बहुत तेज बुद्धि कऽ दिमागी विदारथी रहलन। सारिपुत्त का अरहत बने में जहाँ एकइस दिन लागल रहे, ओहिजा ई साते दिन में अरहत पद पा गइल रहलन।

मोग्गलान कऽ जनम पटना जिला-नालंदा का पास कोलित नावँ का गावँ में भइल रहे। ईहो मगध कऽ बाभनपूत रहलन आ सारिपुत्ते नियर बाभन-धरम-गरंथन कऽ धाकड़ विदमान रहलन। बउध-संघ में सारिपुत्त का बाद इनकरे दरजा रहे। ई संघ का रिद्धि-सिद्धि पावेवाला सिद्धन में सबले सेसर रहलन ! महामोग्गलान कऽ मउवति जवना तरह भइलि ऊ एगो दरद भरलि घटना बाटे। सारिपुत्त का मउवति का ठीक पनरहवाँ दिने, अगहन का अमवसा के आधीरात का बेरा, राजगिरिह का एगो आसरम में उनका शूनी कुटी के घेरि के हतियारा लाठी-भालन से मारि के उनका माँथा के चूर-चूर कइ दिहलन आ लाशि के पास का एगो झाड़ी में फेंकि भागि गइलन ! ई नीच करम तिरथिक मत कऽ साधु, गुण्डन के एक हजार कारषापण मेहनताना देके करववले रहलन !

महाकास्सप—भगवान बउधदेव का जीवने समइया में बिहार परदेश आ मगध, बउध-संघ के जे एगो तीसर महापुरुस-मानुस-रतन देले रहे; उनकर नावँ महाकास्सप रहे। महाकास्सप तीनो वेद आ हिन्दू धरम का गूढ़ विचार-धारा कऽ बहुत गहिरा आ अगाध पंडित रहलन[1]। बउधदेव जी का परमपद जाये का पहिलहीं सारिपुत्त आ महामोग्गलान तऽ चलि बसल रहलन; बाकी तऽ महाकास्सप जी महराज जीयत रहलन। बउधदेव महराज का परमपद का बाद ईहे महापुरुस अपना तेजबल से बउध-धरम का झंडा के तनिको झुके ना दिहलन; बलुक धरम का झंडा के अइसन गाड़ि दिहलन कि जेकरा करते ई आज तक झुकल नाहीं—ऊँचे उठत गइल[2] ! बउधदेव जी का परमपद का बाद जो मगध कऽ ई बाभन-सपूत संघ में ना रहल होइतन, तऽ कहल ना जा सके कि बउध-धरम आ संघ कऽ का दशा होइति !

भगवान बउधदेव का परमपद का तीनि महीना का भीतरे महाकास्सप धरम के सिजिल सुबहित आ पोढ़-ठोस बनावे खातिर चुनल-चुनावल नामी

---

१. देखिये—थेरगाथा (अट्ठकथा-३०) और अंगुत्तर निकाय (अट्ठकथा)—१.१,४

२. महावंश, परिच्छेद ३, श्लोक ३८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५००, पाँच सइ जीवन-मुकुत भिक्खु संतन कऽ एगो धरमसभा, राजगिरिह में करवले रहलन, जवन कि पहिली 'संगीति' का नावँ से मशहूर बा। एह धरम-महासभा कऽ सभापति खुद महाकास्सपे बनावल गइल रहलन। एही महासभा में बउध-धरम कऽ मजबूत नेंव दियाइलि। बउधदेव जी का उपदेशन के जोरि-बटोरि साजि-सवाँरि के तिरिपिटक का रूप में तइयार कइल गइल।

महाकास्सप कऽ जनम पटना जिला का 'महातीरथ' नावँ का गावँ में भइल रहे।[१] सारिपुत्त-मोग्गलान नियर ईहो मगध का बाभन कुल कऽ जगमगात दीपक आ एह धरती कऽ नगीना रहलन। महाकास्सप कऽ बियाह बीस बरिस का उमिरि में भइल रहे। इनकर बियाह पच्छिवँदेश-मद्रदेश-साकला का राजा (कौशिक गोत्र) का बेटी भद्रा कापिलायनी से भइल रहे। भद्रा कापिलायनी कइसना धनी बाभन कऽ बेटी रहे एकर अंदाज एही से लागि सकत बा कि जब ऊ नइहर ले ससुरा आवे लागलि तऽ ओकर बाप दहेज में जवन धन-संपत्ति दिहलन ऊ पचपन हजार गाड़िन पर लादि के थाइल। महाकास्सप खुदो एगो धनी-मानी बाभन रहलन।

इनका देंहि में जवन सुगंधित अबटन भा चूरन नहाये का बेर लागे, ओके धोवला पर बाहर कऽ नाली भरि जाँ सऽ। इनका खजाना में तऽ ६० गो मोहरन कऽ चहबच्चा रहलन। इनकर खेत बारह जोजन में फइलल रहलन। आ इनका जमींदारी में लंका का अनुराधपुर नियर १४ बड़े-बड़े गावँ रहलन। इनका दुवारे हाथी-घोड़ा आ रथन कऽ झुंड लागल रहे। महाकास्सप इनकर बउध नावँ रहे। घर कऽ नावँ रहल 'पिप्पली माणवक'। इनका बाप कऽ नावँ 'कपिल' रहे। पटना जिला में बिहारशरीफ का नियरा सिलाव नावँ का गावँ का बाहर बहुपुत्तक बर-बिरिछ तर बउधदेव जी पिप्पली के धरम-शिच्छा दिहलन। महाकास्सप कऽ बउध-संघ में केतना भारी मान-मरजादा रहल, एकर अंदाज एही से लागि सकत बा कि, ई 'आनन्द' नियर विदमान आ भगवान बउधदेव का पासवरती के 'विनय' कऽ उपदेश कइले रहलन। इनकर परभाव जाने खातिर एतने काफी बा कि बउधदेव जी का परमपद का बाद सात दिन बीति गइल, तबो उनकर दाह-किरिया तब तक ना भइलि, जब तक महाकास्सप ओहिजा पहुँचि के उनकर दरशन ना कइ लिहलन।

भगवान बउधदेव का तपतेयाग आ महान् विचारन का चमतकार से सब-

१. देखिये, थेरगाथा (अट्ठकथा), ३० और संयुक्तनिकाय, (अट्ठकथा), १५।११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुक शिच्छा पा केतने अइसन महापंडित, विचारक आ जनता कऽ सेवा करवइया तेजपुरुस घरबार छोड़ि निकलि परलन आ संसारी वासना, धनसंपत्ति, भोग-टिशुना के लाते कचटि लोगन का कयलान में अपना अनमोल जीवन के के लगा-खपा दिहलन ।

अब आगे महापुरुस बउधदेव का ओह नया आ मोहक धरम-विचार-धारा पर विचार कइल जा रहल बा जे कबे बरमा-लंका से मद्धिएशिया, बफटीरिया पारथिया, एपीरस आ बलख-बोखारा, कूचा-काशगर-मंगोलिया-तिब्बत, कोरिया-जापान, सुमातरा (सुवरनदीप)-जावा, भा अउरी दूरदूर तक पहुँचि के करोड़न आदमिन कऽ भलाई कइलसि, उनके पढ़वलसि-लिखवलसि, आपन भासा, बोली-बानी दिहलसि; अपना कला-कारीगरी, साहित्त-ग्यान-निधि के उनका देश-गावँ-नगरन तक पहुँचवलसि । काहें बउध-धरम कऽ जादू अशोक का हिरदय के पिघिला दिहलसि—कइसे ऊ अपना खजाना के धरम-परचार आ जनता का हित खातिर खोलि दिहलन—कवन अइसन जादू चलल कि कास्सप मातंग, धरमरच्छ; धरमफल, संघबरमा, धरम-रतन, कुमारजीव, परमारथ, गुणवरमा, नरेन्दरजश नियर महापंडित धुन में पागल लगन का साथ पामीर के लाँघि, तकलामकान-गोबी के रउँदत चीन पहुँचलन; एतने नाहीं, बउध-धरम का विचारधारा में कवन अइसन चुम्बक रहे कि चीन भा बाहर का अउरी देशन से अपार कलेश उठा के फाहियान-हुवेनसांग आ इत-सिंग नियर लोग, ओही गोबी-तकलामकान का करेजा दहला देवे वाला दुख-कलेश के काटत, धरमभूमि भारत पहुँचि—तच्छशिला-नालन्दा-उदन्तपुरी कऽ खाक छानल; कुटी-गूफन में धुनी रमवले बउधभिक्खुन कऽ चरन पखारल—चरनोदक लिहल आ ग्यान-जोति पा अपना देशन के लवटल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधदेव कऽ धरम-विचार

शुरूवाला बउध-मत का आचार-बेवहार कऽ नमूना—हर एक विचार-मारग अपना भीतर अपना समय का रीति-ढंग—विधि-बेवहार का बहाव के धारन करे ला आ ओके परगट करे ला। एह से ओके ठीक-ठीक तवे समुझल जा सकत बा जब कि हम ओह विचार-नजरि के अपनायीं जवना से ऊ संसार कऽ अरथ करति आ ओकरा गूढ़ भेद पर जोति डालति बा, साथ हीं ओह सुभाविक दबाव आ पेरनो के समुझे कऽ जतन करीं जेकरा करते कहल विचार-रीति ठोस रूप में सामने आइलि। ओह चालू साहित्त का जरिये, जे कि पाछे ले लिखाइयो गइल, हम समय का ओह हालतन कऽ अनुमान सहजे में कइ सकत बानीं जेकरा अन्दर भगवान बउधदेव जनम लिहलन। ओह घरी भारत में एकछत्तर चक्करवरती राज ना रहे, बाकी खास-खास गणजातियन आ गोतरन कऽ शासक लोग रहे, जे आपन अलगा छोट-छोट राज बनावे का कोशिश में रहल। अनेकन किसिम का ठावीं भासा कऽ बेवहार होत रहे आ संसकीरित समान रूप से एगो पवित्तर भासा रहलि। वेदन के पहिल-हीं गूढ़ पवित्तर धरम-गरंथन का रूप में मरजादा मिलि चुकलि रहे। अइसन रीति-रेवाज आ सामाजिक नेम जिनके पाछे ले मनु-इसमिरती में धरम-नेमन कऽ जगहा दीहल गइल, ओह समय चालू रहलन जदपि कि उनका अन्दर ऊ कड़ाई ना रहे जे कि बाद में पइठि गइलि। मशहूर-छव-धरम-विचारन का मत-मंडली कऽ पूरा फइलाव आ बढंती ना भइल रहे; हालांकि ओह किसिम का अधपक्कू खेयाल कऽ भाव जेकरा करते ऊपर कहल धरम-मतन कऽ रचना आगे चलि के सरूप धारन कइ सकलि, ओह घरी काम करत रहे। नेति-धरम का जीवन में ढिल्लाई आ गइलि रहे; काहें से कि अधियातम-विद्या कऽ गूढ़-मेंही अझुराहटि आ परमारथी संवाद जनता का बल के बझवले रहलन।

ओह समय सवंसे आकाश एक दूसरा का विरोधी विचारन आ अधपक्कू खेयालन का भारी राशि से भरल पूरल रहे, जेके केहू मानल तऽ दूसर ओके माने कऽ विरोध कइल, अउरी जे बेकतिन का साथ बदलत रहे आ बेकतिगत आचार-बेवहार, भावना आ उनके रचे बनावे वालन का भीतरी इच्छन के परिछाँहीं भर रहे। ओह घरी कवनो अइसन माने जोग सवतुक सत्त ना रहे न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो जथारथ मत, जिनके एक मत होके सब लोग मंजूर कइ सके, बाकी हिरदय पर असर डाले वाला विचार आ भीतरी पेरना मिलति रहली सऽ। ओह समय में वैदिक परम्परा से एकदम बेपरवाह अनेक सुतंतर खेयाल जनम लिहलन। ओह समय में हमके निगंठ मिलत बाड़न, जे अपना के सब बाम्हनन से छूटल कहत रहलन; शरमण मिलत बाड़न—मतलब कि अइसन तपसी जे बाभनन ले दूसर रहलन, अऊरी जे संसार के छोड़िये दिहला में आतमा खातिर शांति लाभ मानसु; अइसनो रहलन जे अपना मन आ इनिरिन के काबू में राखे खातिर बहुत दिनन ले अनाज छोड़ि देसु, अइसनो कुछ रहलन जे आतमा-बरम्ह-जीव सम्बन्धी साधना खातिर दुनियाँ से विमुख होखे-छुटकारा पावे कऽ जतन कइले रहलन, एकरा अलावे, नैयायिक, उलटा-उटपटांग सोचा-वट वाला, भौतिकवादी जढ़परकिरती का मत के मनवइया, हर बात में सन्देह करे वाला संशयमती, सभे तरह के लोग। एह सभन का बाद अइसनो रहलन जे गुमान-गरूर का मारे अपना ले बढ़ि के ग्यानी केहू के ना समझसु। ई नया-नया ऊगत अधपक्कू खियालन का छितिर-बितिर-उलटापलटी कऽ जुग रहें जे कि अनुचित परमारथ-विघ्न आ अनिहचित बकवादन अउरी बेकार का कहा-सुनी बतक्कड़ी आ मुँहचोंथउवलि से भरल रहे।

परलोक-सम्बन्धी दिमागी उड़ानन का मेंही अंतर से भा लगातार पूछा-पेख—सवाल जवाब का खेयाली सुभाव से चाहे धरम-मतन का अझुराह वाद-विवादन का जरिये दलेल के वारीक बनवले, धोवले-मँजले आतमा के मुकुती ना मिलि सके। निरलय-निपटारा से हीन विचार भले आदमी का दिमाग पर कवनो बुरा असर न डाले; बाकी ओकरा नेति-धरम, आचार-बेवहार सम्बन्धी हित खातिर तऽ जरूरे हानि पहुँचावे वाला साबित होला। विचार-छेतर का उलटा-पलटी से नेति-धरम आ आचार-बेवहार का छेतर में छितिराहटि भा अलगाव आवेला। एही से बउधदेव परलोक-सासतर-सम्बन्धी बहसन के, जिनसे कवनो लाभ उनके ना बुझाइल, एकदम छोड़िये दीहल उचित समुझ-लन। बउध-धरम में आतमा, बरम्ह-जीव का बारे में भा परलोक सासतर वाला जवन मत-विचार हमके मिलत बा, ऊ असल 'धम्म' ना हऽ, बलुक ओमे पाछे ले जोरल-साटल ह, मतलब कि 'अभिधम्म'[1] हऽ। बउध-धरम अव-शिरूप से चित्त-विरती-ग्यान, उधेड़-बीन सासतर (तर्कशास्त्र) आ नेतिधरम-

१. 'अभि'—परे; 'धम्म'—भौतिक-विग्यान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सासतर कऽ मिलान हऽ। ओकरा में आतमा-जीव-बरम्ह का बारे में विचार करेवाला अधियातम-सासतर शामिल नइँखे।

जीव-बध वाला क्रूर जग्यन से, जिनका जरिये परमेसर कऽ पूजा कइल जाय, बउधदेव का हिरदय में भारी चोट पहुँचल। परमातमा में झूठ विशवास का करते नेति-धरम का जीवन के भारी हानि भइलि। बहुत-भले आदिमी भी एह झूठ विशवास का कारन कि दइबी हुकुम हऽ, बहुत-सा शैतान कऽ काम कइ बइठे ला। एह संसार में आचार-शासतर आ धरम के एक दूसरा का अंदर मिला दिहला से केतना बुराई भइलि—एकर अन्दाज लगावल कठिन नइँखे। धरम का नावँ पर अइसन अनेकन मत आदिमी का जीवन में घुसरि गइल रहलन आ एह किसिम से सवार हो चुकल रहलन कि धारमिक-जोर-दबाव का बांचलो-खुचल चिनगारी के बुता दिहल चाहत रहलन, ई हालति बउधदेव का मन में भारी कलेश पहुँचवलसि।

साधारन लोग अइसन करम-कांडन आ पूजा-अरचा में फँसल रहलन जिन-कर नेम अइसन आदिमी बनवले रहसु जे कि अपना अंध भगतन का दीहल भोजन पर जीयत रहलन आ जिनके बउधदेव—"ठगहारा आ नावँ मातर कऽ पवित्तर शबद उचारन कइके बिरती कमायेवाला निकम्मा, आलसी, सगुन बतावेवाला सगुनिहा, भूत-परेत झारेवाला ओझइत, हरदम बेशी ले बेशी ठगे-वाला का नावँ से पुकारत बाड़न।" देश भर में अइसना-उपरोहित-समाज कऽ धरम का छेतर में राज रहे, जे दइबी शकती कऽ अवेजी-अधिकारी होखे कऽ झूठा दावा करसु। बउधदेव का मन में अइसना सच्चा बाभन खातिर जे बरम्ह का सनेशिहा का रूप में कहि सकत रहे कि—"हमके सोना भा चानी कुछ ना चाही, न हम इनका से कुछ संसरग राखी ला," साच आदर कऽ भाव रहे।

धन-संपति का जरिये मुकुती पावे कऽ रीति मानुस-हिरदय का भीतरी तह का जरूरतन के हल ना कइ सके। साधारन लोगन का नजरन में निय-मित करमकांडन का पालन, भजन-कीरतन, तप आ पराछित, किसिम-किसिम का शुद्धि अउरी जीवन का सभ छेतरन में लागू होखे वाला बरजित हुकुमने में धरम रहि गइल रहे। बउधदेव अइसन सभ झूठा विशवासन के जे के साधारन जनता धारमिक नेमन कऽ अंग माने कऽ आदी हो गइलि रहे, बिलकुले खोंखड़ पवलन। ई देखि के कि आदमिन के मुरुख बनावल जाता, ऊ झूठ विशवासन आ छान-बीन आ बुद्धि-विचार से हीन समुझ का विरोध में अपना आवाज के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोरदार कइलन अउरी अपना चेलन के हुकुम दिहलन कि ऊ तुच्छ बातन कऽ शिकार होखे से दूर रहि के संसार का धरम संबंधी नेमन के पढ़सु-समझसु; उनका पर गौर करसु । बउधदेव देवतन का दइवी चमतकारन कऽ खंडन कइलन आ वेदन का माननीय मरजादा पर चोख टाँगी चलवलन ।

बउधदेव गुन-दोस-विचार आ जोति का जुग में—जब कि पुरान विशवासन कऽ तऽ जरि उखरि गइलि हो आ परमारथ विद्या संबंधी अधपक्कू खेयालो सपना में देखलि तसवीरन का समान लोप होत होखसु, जरूरी रूप से घुसरि जायेवाला दोसनों कऽ बहुत गंभीरता से विचार कइलन । आदमिन का आतमा में बेचैनी रहे आ ऊ नाश करेवाला मतभेदन से परेशान होके, पुरान विशवासन का उखरि गइले कवनो उत्तम विचारधारा का खोज में रहलन । ओह जुग का एही खोज कऽ परिछाँहीं हमके पुराना बउध-धरम में देखे के मिलति बा बउधदेव जी सचाई खातिर हिरदय में उठेवाला सुभाविक चाह का ओर इशारा कइलन आ कहलन कि उहे शिव आ सुन्दर हऽ !

किसिम-किसिम का धरम-मतन का एक ब एक गिरि परले आ तरह-तरह का रीति-नेमन का टूक-टूक हो गइले बउधदेव कऽ ई करतब रहे कि ऊ नया-रूप में आचार-बेवहार शासतर कऽ रचना एगो पोढ़ भीति का ऊपर करसु ।

जब विचार-सासतरन कऽ नेंव हिलि गइलि तऽ विचारकन कऽ धेयान चालि चलन संबंधी सिद्धांतन का ओर गइल । जो आचरन-सासतर कऽ रचना अधियातम-सासतर आ परमारथ-विद्या नियर बालू कऽ भहरायेवाली नेंव का आधार पर कइल जाई तऽ ओकर ठहरल अनिहचित बा । बउधदेव जी ओकर रचना जथारथता का पोढ़ चट्टान का सहारा पर कइल चाहत रहलन । पुराना बउध-धरम परमेसर का पूजा से आदमिन कऽ धेयान हटाके, मानुस-समाज का सेवा का ओर करे का अपना कोशिश में परतछवाद का समान बा । बउधदेव कऽ विशेस इच्छा संसार कऽ कवनो नया अरथ-बरनन करे का ओर एतना ना रहे, जेतना कि करतब-करम का पालन का ओर जनता का लगन के मोरे का ओर । एगो अइसना धरम-मत के चालू करे कऽ जश उनहीं के बा जे रूढ़ि-परथन, पुरोहितन का मालिकाना दबदबा, आ जग्य-उपनेति संबंधी बेकार का पँचड़न से फरक एकदम सुतंतर रहे आ जे हिरदय का भीतरी फेर-बदल आ आतम-सुधार पर बेशी जोर देत रहे ।

चालिचलन के निरदोस बनाके पुन्नि का कामन में लगवला से मुकुति-लाभ हो सकत बा । बउधदेव का अनुसार, सचाई का अग्याने का कारन से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसार में सभ तरह का दुखन कऽ सिरिहिटी भइलि बा। कठोर तप का आचरन संबंधी बड़ाई कऽ विरोध कइल, समाज में चालू धरम कऽ खंडन कइल, वैदिक रीति-रेवाज का मत के घिरिना का नजरि से देखल, संछेप में तत्तुग्यान का विचारधारा के धरम कऽ रूप दीहल ई एगो भारी साहस कऽ कारज बा जेकरा साहस कऽ हम सही-सही मोल ना कइ सकीं। पुराना बउध-मत का शिच्छन में हमके तीनि गो साफ विशेषता मिलति बाड़ी—एक तरह कऽ आचार-बेवहार सम्बन्धी ततपरता, परमारथ-विद्या-सम्बन्धी लगन कऽ अभाव आ अधियातम-सासतर-आतमा, जीव-बरह्म से नाता राखेवाला उड़ंकू अधपका खेयाल का ओर ले अरुचि भा ओकरा से बिमुखता।

बउधदेव जाँच-परताल, तौल-परख का बिचार के अपनवलन तऽ बाकी ओकर मरजादो बान्हि दीहल उचित समुझलन। उनकर विचार कऽ ढंग संदेहवाद, तिरसकारवाद (उपेक्षा) आ बोली-बानीं का ओह चंचलता का खेयालन का जे भौतिकवादी लोगन कऽ रहलि हऽ, बिलकुले उलटा रहे; तबो ऊ जुग का जोति के जोरि-बटोरि के ओकरा पर धेयान देत बाड़न आ परंपरा से चलि आवेवाला विशवासन का भीतर घुसरि के उनका मेंही गुन-दोस-विचार (आलोचना) के हमन का सामने राखत बाड़न।

चालू झूठा विशवास आ पाखंड का विरोध में जवन जवाबी विचार भा काम जनता में आपन जगहा बनावत रहलन ऊ बउधदेव का मन पर बहुत असर डललन। बउधदेव घटनन का ओह बहाव में तेजी ले आ दिहलन जे कि पहिलहीं ले आगे बढ़त चलि आवत रहे। ऊ अपना जुग का भावना के आपन निशाना बनवलन आ विचारवान पुरुसन का संदेह भरल, बे सिलसिला का भावन के बानीं दिहलन जे से कि ऊ परगट रूप में जनता का आगे आ सकसु। ऊ एके साथ सनेशिहा, अगाही के देखवइया, आ समय का आचार-बेवहार संबंधी झुकाव कऽ तसवीरि घींचेवाला कलाकार भा ओकर अरथ बतावे वाला सुधारक रहलन। एगो भवन के बना के खड़ा करे में अनेकन हाथ मदति करेलन बाकी ओकर जश ओही आदिमी के मिले ला जे ओके पूरा कइके निहचितता आ मजबूती देला। बउधदेव कऽ हाथ एही तरह का एगो महान गुनी कलाकार कऽ हाथ रहे जे अपना समय का भारत कऽ महानो ले महान विचारक रहल।

बउधदेव अपना कारज कऽ शिरीगनेश खाली· खंडन-मंडन वाली इच्छा के लेके शुरू ना कइलन, न त ऊ बाधा रोकावट का बरिजेवाला नतीजन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहुँचलन ! एगो सुतंतर वेलाग सत्त कऽ खोजी होखला का करते ऊ कवनो किसिम का पच्छपात के पहिले ले अपना मन का अंदर जगहा ना दिहलन। तवो एह अरथन में ऊ 'हेतुवादी' (उटपटांग तरक करेवाला) रहलन कि ऊ जथारथ सत्ता कऽ छान-बीन आ अनुभव, बिना कवनो विचित्तर ईशरी पेरना के मनले, कइल चाहत रहलन। एह बिसय में बउधदेव आज का विग्यानिक लोगन का साथ एकमत बाड़न, जिनका राइ में परकिरती का घटनन का वरनन में कवनो विचित्तर शक्ती का दखलदहानी के घुसारल ना चाही। ऊ तरक-दलेल आ परतच्छ जानकारी पर अधिका भरोसा कइलन अउरी अपना मत का ओर साधारन समाज के झुकावे खातिर खाली तरक-दलेल कऽ मदति लिहलन ! ऊ एगो अइसन धरम के थापित कइल चाहत रहलन जे 'शुद्ध दलेल का मरजादा-सिवान का भीतर' आ सके, आ एह किसिम से ऊ झूठ विशवास आ संशय-दोविधा वाला विचार, दूनों कऽ शोरि कबारि दिहलन ! ऊ कतहीं अपना के ईशरी-धरमदूत भा पैगंबर का दरजा में गिनावल ना चहलन। ऊ अपना चेलन का सामने अपना परिच्छित—जाँचल-समुझल ग्यान के राखत बाड़न जवना में से ऊ खुदे गुजरि के अइलन हँ, आ ओहू लोग के पेरना देत बाड़न कि ऊ सभ अपनो ओर ले उनका विचारन आ जवना नतीजा पर ऊ पहुँचल बाड़न उनका जथारथता कऽ ठोंकि-ठठा के जाँच कइलेसु। उनकर मत अफवाह भा उडंत खबरन का आधार पर ठाढ़ नइँखन बलुक एकर मतलब बा कि—"आवऽ आ देखऽ।"[1] बउधदेव आदमिन के मुकुती दियावे कऽ कारज नइँखन करत बलुक ओह डहरि कऽ उपदेश दे देत बाड़न जवना पर चलि के ऊ अपनहीं मुकुती पा सकत बाड़न, जइसे ऊ खुद आपन मुकुती पवलन। उनकर विचार कऽ ढंग मन का विरतिन के हिगरा के छान-बीन करे कऽ ठहरल। ऊ अपना आपके सभ तरह का अनुचित अधपक्कू खेयालन से अलगा राखे आ अनुभव का कच्चा सामगिरिही से रचना कारज पूरा करे कऽ जतन कइलन।

बउधदेव आ उपनिषद्—पुराना बउधमत अपना आप में एकदम असल निछक्का सिद्धान्त ना हऽ। भारतीय विचारधारा का बढंती में कवनो विचित्तर लीला भा असाधारन बतुस ना हऽ। बउधदेव अपना समय भा देश का धारमिक विचारन से पूरा रूप से नाता ना तोरि लिहलन। ऊ खुदे मानत-बाड़न कि—'आतम-शुद्धि का कोशिश का जरिये जवना धरम कऽ हम खोज

---

१. संयुत्त-निकाय, ३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइले बानीं ऊ एगो पुरानी डहरि हऽ, ऊ आरज-मारग हऽ, आ सनातन धरम हऽ।' बउधदेव कवनो नया-धरम-मारग कऽ थापना ना कइलन; बलुक पुराने नमूना खोजि निकललन जे कि धूरि गरदा से तोपा गइल रहे। अपना मन का सोचल-गढ़ल बिचारन के सुघर रूप देवे आ उनका बढंती खातिर बउधदेव का, खाली उपनिषदन से, वैदिक धरम का बहुदेवता वाला मत आ धरम का साथे कइल गइल सुलह समझौता के जे कि अनुचित रहलन, उनके निकालि देबे कऽ जरूरति रहे; अउरी अइसना सबले सुरेमन गूढ़ तत्व के जेकर बोध विचार कइला से ना हो सके आ आचार-बेवहार-सासतर खातिर जवन कि बेकार रहे, दूर हटा देवे के रहे; आ उपनिषदन का नेति-धरम संबंधी सभलोक हितमत पर अधिका बल देवे ले रहे! हम साहस का साथ कहि सकत बानीं कि बउध-मत उपनिषदन का विचार कऽ नयी सूझबूझ का मोताबिक दोहरवनी भर हऽ।

बउधदेव खुदो एह बाति से अपरिचित रहलन कि उनका मत आ उपनिषदन का मत में कवनो बेमेलपना बा। ऊ समुझत रहलन कि उपनिषदन आ उनका के माने वालन कऽ सनेह-समरथन उनके मिलल बाटे। बाभनन आ बउध-भिक्खुन के ऊ एके दरजा में राखत रहलन आ बउध-अरहतन (जीवन-मुकुत संत) साधुनो का संबंध में 'बाभन' शबद कऽ बेवहार बड़ा आदर-मान का साथ करसु। बउध-धरम कम से कम अपना शुरू का दशा में तऽ जरूरे हिन्दू-धरम कऽ एगो अंग भर रहे। बउध-धरम पुराना सनातन धरम का मंडले में बढ़ल आ संपन्न बनल[१]! उपनिषदन का उत्तम शिच्छा, सबँसे जीवन का एकता के बउधदेव मंजूर कइलन। दूनों का नजरि में जीवन एक किसिम कऽ महान् आ पुन्नि-जातरा हऽ जेकरा में हम नीचहूँ गिरि सकत बानीं आ ऊपरो चढ़ि सकत बानीं।

बउधदेव उपनिषदन का तत्तु-ग्यान संबंधी सिद्धान्तन के, जे ओह समय तक कुछ थोरे-सा चुनल लोगन तक बन्हन रहलन, साधारन जनता में पहुँचे आ फइले में मदति दिहलन। बउधदेव का धरम-परचार कऽ मंशा ई रहे कि उपनिषदन का आदरश मत के ओकरा उत्तम रूप में अपना के, ओके मानुस जाति का रोज-रोज का जरूरतन खातिर कामिल बना दीहल जाय।[२] ऐतिहासिक बउध-धरम से मतलब बा उपनिषदन कऽ साधारन जनता में परचार।

१. रीज डेविड्स—'बुद्धिज्म', पृ० ८५।
२. देखिये, होम्स, 'द क्रीड आफ बुद्ध'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधदेव का शिच्छा में जवन परधान दोस बा ऊ ईहे बा कि अपना नेतिनेमन का परचार का उतसाह में खाली सचाई का आधा हिस्सा के लेके ओके मर-जादा दिहलन आ एह रूप में परमान का साथ कथन कइलन कि जनुक ऊहे सचाई कऽ पूरा रूप होखे।

बउध-धरम आ सांखिय-मत (दर्शन)—कुछ अइसनो विचारक बाड़न जिनका राइ में बउध-धरम आ जैन-धरम दूनों कऽ आधार सांखिय-सिद्धान्त हऽ। बरनूफ का विचार में, बउध-धरम सिरिफ सांखिय-मतने के बेवहारिक रूप दिहलसि। बेबर का मोताबिक, ई असंभो नइँखे कि सांखिय-मत के गरंथ रचवइया आ बउधदेव एक ही आदमी होखसु, आ अपना एह खेयाल का समरथन में ऊ हमार धेयान एह घटना का ओर घींचत बाड़न कि बउधदेव कऽ जनम कपिलवस्तु में भइल रहे। दूनों का तत्तु-ग्यान संबंधी रीति ढंगन कऽ एक ही समान समझ बाटे कि जीवन दुखमय बा! विलसन लिखत बा कि परकिरती का नित्तता से संबंध राखे वाला कुछ विसय, पदारथन कऽ तत्तु आ अंत बोगयरह सांखिय आ बउध-धरम में समान बाड़न। जैकोबी आ गार्‌ब का मोताबिक, सांखिय कऽ दोइत ('द्वैत') आ तत्तुन कऽ गिनती संबंधी थाप बउध-धरम ले पुरान हउवे !

ई साच बा कि सिरिहिटी कऽ रचना संबंधी सांखिय मत कऽ मनगढंत खेयाल आ बउध-धरम का सोचावट में कुछ समानता बा[1]। बउध-धरम कऽ चारि आरज-सत्त सांखिय-सासतर का चारि सचाइन का माफिक बाड़न जइ-सन कि 'सांखिय-परवचन-भाष्य' में कहल बा—"(१) जवना से हमरा छुट्टी पावे के बा उ दुख ह; (२) दुख का विनाश क नावँ मुकुती ह, (३) परकिरती आ पुरुस का बीच ना भेद कइले से दुख पैदा होला जवना से परकिरती आ पुरुस कऽ संबंध बराबर बनल रहे ला; (४) मुकुती कऽ उपाइ सद् आ असद् संबंधी बूझ-विचार कऽ ग्याने ह।" कपिलमुनि (सांखिय मत रचवइया) भी बउधदेव नियर जग्य-उपनेति बोगयरह, विनती आ पूजा-आराधन-पुरा-चरणन के बरजित बतवले बाड़न। बउध लोग मानत बा कि कपिल मुनि, जे कि सांखिय-विचार-सासतर के रचेवाला रहलन, बउधदेव ले अनेक पीढ़ी पहिले जनम लेले रहलन अउरी ई कि बउधदेव का समय में सांखिय-विचार

---

१. अविद्या कऽ समानता 'प्रधान' से, संसकार कऽ बुद्धि से—विज्ञान कऽ अहंकार से, नाम रूप कऽ तन मातरन से, षडायतन क इनिरिन से बा (देखिये, कर्न, मैनुवल आफ बुद्धिज्म, पृष्ठ ४७-९···)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परचलित रहलन। दीघनिकाय का पहिले सुत्तन्त में, जहवाँ जीवन का वासठि तरह का मनगढंत खेयालन कऽ बरनन कइल बा, सांखिय-मत का समान मत मिलत बा।

बउधदेव सांखिय-विचार के भले न जानत होखसु, बाकी सांखिय-मत का शुरू कऽ विरतांत जरूर जानत होइहँन ! ई संसार पापमय हऽ आ परकिरती से अलगा हो गइले मुकुती हऽ, एही सिद्धान्त से बउधदेवो के सुझाव मिलल होई। आतमा का जुगुती का विसय में जवन सांखिय-विचार बा ऊहे बउधदेव का असकन्ध-संबंधी (शाखा, समुदाय) सिद्धान्त का जरि में रहल होई। बाकी एकरा में कवनो संदेह नइखे कि 'सांखिय-दरशन' बहुत नया समय कऽ रचना हऽ जेकरा में सइ बरखिन (शताब्दियों) कऽ कारज जोरल जुटावल बा।

आरज-सत्त—उत्तम सचाई। बउधदेव खुद संसार से विमुख होके शांति का खोज में घर से निकलल रहलन आ आतम-ग्यान का बाद शोकनदी का बाढ़ि में बहात जनता के देखि दया से पसिजि ऊ बोधि-ग्यान में पावल-धरम का परचार कऽ बोझ माँथ पर लेले रहलन। संसार का तीर ले परमपद का तीर तक ले जायेवाला उनकर धरम दया कऽ एगो बान्ह रहे। जीवन का ना पिंड छोड़ेवाला दुख का दरशन से उनकर धरम शुरू होला।

अपना धारमिक जीवन का गौरगुनावन आ जाँचल-बूझल ठोस जानकारी से बउधदेव का चारि उत्तम सचाइन का विसय में निहचय हो गइल—मतलब ई कि दुख बा, एकर कारन तैयार बा, एके दूर कइल जा सकत बा (निरोध); अउरी ई कि एकरा में सफलता पावे कऽ राहो बा।

पहिला आरजसत्त हऽ दुख कऽ आँकुशहीनता—मतलब कि मनमानी। जीवन दुखमय बा। "अब दुख का विसय में आरजसत्त ई हऽ—जीवन दुखदायी बा; निरबलता (छीनता) दुखदायी बा, रोग दुखदायी बा, मउवति दुखदायी बा अरुचिगर (अप्रिय) कऽ संजोग दुखदायी हऽ, पिरीव कऽ अलगाव (वियोग) दुखदायी हऽ, अउरी कवनो वली (विकट) इच्छा जवन पूरा ना होखे, ऊहो दुखदायी हऽ। संछेप में पाँचो समूह[1] रूप में, जे कि चाह आ लपिटइला से पैदा होलन, दुखदायी हउँवनि[2]।"

---

१. देहि, मन कऽ वेग, परतच्छ ग्यान, इच्छा आ तरक। (शरीर, मनोवेग, प्रत्यक्ष-ज्ञान एवं तर्क)

२. फाउन्डेशन आफ द किंग्डम आफ राइटसनेस, पृ० ५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचारधारा का सबसे इतिहास में दूसर केहू मानुस-जीवन का दुख कऽ एतना बेशी काला रूप में; अउरी न एतना गंभीर रूप में बरनन कइले बा, जेतना कि बउधदेव कइले बाड़न। विखाद, जेकर पहिलकी छाया उपनिषदन में पावल जाले, बउध-धरम में परधान जगहा ले लेत बा। हो सकेला तपेसरिन कऽ नमूना मतलब कि बिना कवनो दलेल के निरधनता के ऊँच जगहा दिहल, आतमतेयाग कऽ महानता आ तेयाग कऽ जोश बउधदेव का मन पर एक तरह से जादू नियर असर कइलसि। एह संसार से छुटकारा पावे खातिर साधारण लोगन का इच्छा के जगावे का विचार से ऊ संसार का करिया पच्छ के कुछ बेशी बढ़ा के जनता का सामने रखलन। बउधदेव आखिर में कहत बाड़न कि मानुसजनम दुख हऽ, अपना दम-अधिकार का रइछा खातिर रगड़ कइल दुखदायी हऽ, आ भागि कऽ उतार-चढ़ाव डेरवावन[1] ठहरलन। 'धम्मपद' में अइसन कहल बा—"न त आसमान में, न समुन्दर का पेट में, आ न पहाड़ का गुफा-कन्दरन में—संसार में कहीं अइसन जगहा ना मिली जहाँ मउवति का हमला से बचि के रहल जा सके।" बड़ से बड़ आचरन-वीर सुजनो आ कला कऽ भारी से भारी रचनो एक न एक दिन जरूरे मउवति कऽ गरास बनी। हमन कऽ सपना, हमन कऽ आशा, हमन कऽ भय आ हमनीं कऽ इच्छा सभे भुलवा दीहल जइँहनि जइसे कि कबहीं रहली न होखसु। महान कलप बीतत जइँहन, आ कबे ना खतम होखेवाली पीढ़ी जल्दी से गुजरि जइँहनि।

---

१. (बुद्ध ने कहा है) बउधदेव कहले बाड़न—"परानिन कऽ संसार रूपी महाजातरा अनादिकाल से चलि रहलि बा। अइसना कवनो ओतन (उद्गमस्थल) कऽ पता नइँखे जहाँ से चलि के परानी अग्यान का भूलभुलइया में फँसिके आ अपना दम (अस्तित्व) का टिशुना का बान्हनन में बन्हा के एने ओने भटकत फिरत बाड़न। हे भिक्खु लोग! बतावऽ कि चारि समुन्दर में जवन जल बा ऊ अधिका बा कि तोहरा आँसुवन कऽ जल अधिका बा जिनके तोहनी अपना एह लमहर जातरा में एने ओने भटके में बहवले बाड़ऽ, अउरी एह खातिर बहवले बाड़ कि जवन तोहके हिस्सा में मिलल बा ओकरा से तोहरा घिरिना बा आ जवन तोहरा पिरीव बा ऊ तोहरा हिस्सा में ना आइल? मँहतारी कऽ मउवति, भाई कऽ मउवति, संबंधिन कऽ हानि, एह सभ कऽ तोहन जुगन ले जानकारी करत आ रहल बाड़ऽ, अउरी जब जुगन से तोहन का इनकर (तजरबा) परतच्छ ग्यान कइले बाड़ऽ अउरियो आँसू तोहन बहवले बाड़ऽ, एह जातरा में एने ओने भटकत, कलेश सहत आ रोवत-कलपत तोहन जे आँसू बहवले बाड़ऽ, अउरी एह कारन से बहवले बाड़ऽ कि जवन तोहके हिस्सा में मिलल बा, ओकरा से तोहरा घिरिना बा अउरी जवन तोहरा पिरीव बा ऊ तोहरा हिस्सा में ना आइल, तोहन लोग कऽ ई आँसू चारों महासागरन का जल से अधिका बाड़न।"—संयुत निकाय, ओल्डन वर्ग, 'बुद्ध', पृष्ठ २१६-२१७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मउवति का सगरे, धरती का सभ कोना में, सभे लोकन में पहुँचेवाली तागति कऽ केहू सामना ना कइ सके। मउवति जीवन कऽ नेम हऽ।

सभ इच्छापुरती का साथ दुख लागल बा। मानुस का सुभाव में जवन दुख बा आ जेकरा संगे अनादि काल से इच्छा लागलि बा, अउरी जे पहिलहीं ले एतना अभाव पैदा कइ देता कि एकरा ले पहिले कि आदिमी ओकरा के पूरा करे कऽ बल पा सके, हमन के ई सोचे-विचारे के लाचार करत बा कि जीवन एगो शराप बा।

ई साच बा कि बउध-धरम जीवन के वेदना आ कलेशन का अन्त ना होखेवाली परम्परा का रूप में जानत बा बाकी ऊ आचार-वेवहार वाला हुकुम-दबाव का मुकुती देवे वाली तागति में भी विशवास राखत बा, अउरी ओकरा विशवास बा कि मानुस का सरूप के पूरनता तक पहुँचावल जा सकत बा। बउधदेव जीवन का विरथापना—वेकारता कऽ उपदेश नइँखन देत, अउरी न ओकरा विनाशे कऽ उपदेश देत बाड़न, खाली एह खातिर कि मउवति जरूरी बा। उनकर सिद्धान्त निराशा कऽ सिद्धान्त ना हऽ। ऊ हमके बुराई का विरोध में विदरोह करे कऽ हुकुम देत बाड़न आ एगो निरमल जीवन पावे कऽ जोरदार ललकार दे ताड़न, जे कि अरहत कऽ दशा हऽ।

दुख कऽ कारन का हऽ, एह दूसरा सवाल कऽ जवाब देवे खातिर बउधमत का, मन का विरती के हिगरा के समुझे बुझे वाली विद्या (मनो वैज्ञानिक-विश्लेषण) आ अधियातम-विद्या सम्बन्धी दिमागी सूझ-खेलावन कऽ सहारा लेवे के परल। "दुख का आदि कारन का विसय में आरज सत्त ई बा : जथा-रथ रूप में सबले बली टिशुने हऽ जेकरा करते बारंबार जनम होला आ ओही का साथ इनिरीसुख आवेलन जिनके जहाँ तहाँ ले पूरा कइल जाला—मतलब कि इनिरिन के तिरपित करे खातिर जोरदार लालसा भा सुखसम्पति खातिर घोर लालसे दुख कऽ कारन बा।"[1]

उपनिषद् दुख का कारन का ओर इशारा कइले बाड़न, उनका मोताबिक जे नित्त (स्थायी) सनातन हऽ ऊ आनन्दमय हऽ आ छनभंगुर (अनित्त-अस्थायी) दुखदायी हऽ, 'यो वै भूमा तदमृतम्, अन्यदार्त्तम्।' नित्त आ ना बदलहीं वाला साच भा जथारथ, सुतंतर आ सुखमय हऽ, बाकी ई संसार जे जनम, बुढ़ापा आ मउवति से जुटल-मिलल ठहरल दुख का आधीन बा। अना-

१. फाउन्डेशन आफ द किंग्डम आफ राइटसनेस, पृ० ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तम (जड़) में जथारथ ना मिलि सके, काहें से कि अनातम पैदाइश आ रोग का आधीन बा। नित्त के जनम आ रोग ना बेयापि सके।

चूँकि सभ वतुस छनिक बाड़ी एही से दुख बा। पैदा भइला का साथ ही सभे बतुस लोप हो जाली। कारन-कारज-भावे कऽ नेम सभ सत्ता के नथले बा; जे कि हरदम परगट होखे, पैदा होखे आ गुजरि जाये का दशा में बा।

दुख अइसन चीज बा जे छनभंगुरता से जुटल-सटल बा। इच्छे दुख के जनमावेली, काहें से कि हम अइसने चीज कऽ इच्छा करत बानीं जे छनिक, बदले वाला आ नाशवान हऽ! चाहल चीज कऽ छनभंगुरते निराशा आ शोग-संताप कऽ कारन हऽ! सभ सुखो छनभंगुर हऽ। बउध-मत कऽ असल जरि कऽ थापना मतलब कि जीवन दुख हऽ, पुरानि परथा-परम्परा का रूप में उप-निषदन से लिहलि बा।

पदारथन का छनिकता आ हरदम छितिराये का गति भा कार आ चीजन में फेरवदल से परभावित होके बउधदेव फेरवदल का मेंही आ गूढ़ विचार-धारा (दर्शन) के परमान का साथ समुझवलन। उ पदारथन के, आतमन के, मूल (स्वयंभू) जीवन के तथा अउरी दूसर-दूसर सभ पदारथन के शक्तिन, गतिन, विकार (परिणामों) आ जुगुतिन (प्रक्रिया) का रूप में बदलत बाड़न आ एह किसिम से जथारथ-सत्ता का चलायमान विचार के कबूलत बाड़न। जीवन रूपान्तर (परिणति) कऽ—बीया से आँकुर निकले नियर, परगटे आ लोप होखेवाली परम्परा का अलावे अउरी कुछ ना[१] हऽ। ई बदली रूपान्तर कऽ एक किसिम कऽ बहाव हऽ! इनिरिन का पहुँच आ विग्यान—चेतना भा मन का पहुँच वाला संसार छन-छन में बदलि रहल बा। ई एक किसिम कऽ जनम आ मउवति कऽ एगो हरदम चालू रहेवाला चक्का हऽ। रूपान्तर का हरदम चालू बहाव के, जेके संसार कहल जाला, देखावे खातिर बउधदेव जी हमन का सामने अगिनि[२] का सम्बन्ध में एगो संवाद पेश करत बाड़न।[३]

---

१. पातु भावो उप्पादो।

२. तुलना कीजिये, हेराक्लिटस, "यह संसार अनादिकाल से एक जीवित अग्नि ज्वाला के समान है।" बुद्ध एवं हेराक्लिटस दोनों ही आध्यात्मिक शास्त्र के 'परिणति' के सिद्धान्त को दर्शाने के लिये अग्नि का उपयोग करते हैं, जो तत्वों में सबसे अधिक परिणामशील एवं चंचल है।

३. महावग्ग, १।१२१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सदा से संसार का वाद संसार लहरि का रूप में आगे बढ़ि रहल बाड़न,
सिरिहिटी से लेके परलय काल तक,
जइसे एगो नदी का ऊपर पानी कऽ बुलबुला,
उठत, चमकत, फूटत आ लोप हो जा ताड़न।"[1]

जदपि आगि कऽ लपट परगट रूप में बेबदलल––मतलब कि एक मालूम होति बा, बाकी हरएक छन में ऊ एगो दूसर लपट हऽ, ऊहे ना हऽ। नदी का धारा अपना बहाव में एक समान धार के थिर राखति मालूम होति बा, जदपि हर छन नया जल चलि आ रहल होला। जे कुछ दिखाई देला ऊ हरदम बदली भा रचना कऽ कारज भर हउवे—ईहे बउध-धरम कऽ असली सचाई हऽ। परमसत्ता एह संसार में केहुवे कऽ संपति ना हऽ। "ई हो नइँखे सकत कि जे पैदा भईल ओके मउवति न मिले[2]।" "जेकर आदि शुरू बा ओकर बिनाशो अटल बा[3]।" जे पैदा भइल बा ओकर मउवति जरूरी बा आ एकरा में कवनो फेर-बदल ना हो सके। एमें भेद खाली मियाद का मातरा में हो सकेला।

रूपांतर जथारथ शकती कऽ असल तत्तु भा रचना-समगिरिही हऽ। एह संसार में न तऽ कुछ थिरताइये हऽ आ न एक चीज कऽ मिलि के दूसर चीज का रूप में होखले। ई खाली शकती कऽ चलाव भर हऽ। बे बिघिन बाधा कऽ फेरबदल हमन का चेतनामय जीवन कऽ सरूप हऽ। चेतन जगत् हमन का मन कऽ परिछाहीं भर हऽ। हरेक अकेलि घटना सिकरी कऽ एगो कड़ी आ बढंती कऽ एगो छनिक रूप हऽ, आ किसिम-किसिम का सिकरिन भा लरि के मिलि के एगो सबँस कऽ रचना होले जेकरा के 'धरम-धातु' भा आतमा वाला संसार कहल जाला। चीजन का जथारथता कऽ ग्यान भइला पर हमरा ई मालूम होई कि हरदम होत रहेवाला फेरबदल से पैदा अलग-अलग पदारथन के नित्त आ ठीक भा जथारथ मानल केतना अनुचित आ बुद्धिहीनता बा। जीवन खुद कवनो बतुस ना हऽ अउरी न कवनो बतुस का खास दशा कऽ नावँ हऽ, बलुक एगो लगातार चालि भा फेर-बदल कऽ नावँ हऽ। ईहे बीज रूप में फरांसीसी-विचारक बरगसाँ कऽ विचार हऽ।

पदारथन कऽ एकरूपता खाली रचना-कारज का हरदमे होत रहला कऽ दूसर नावँ हऽ। बचना, लइका, जवान, अधेड़ भा वूढ़—सभ एके हऽ। हजार

---

१. शेली, 'हेलास'।
२. अभिधर्मकोश व्याख्या।
३. महावग्ग, १।२३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरिस पुराना बर कऽ फेंड़ अपना बीया सहित ऊहे एक गाँछ हऽ जेकर ओही बीया में ले वढंती आ बिसतार भइल बा। ई लगातारी भा परंपरा कऽ सिल-सिलेवारिये हऽ जेकरा करते एगो वेरोक एकरूपता मालूम होति बा।

ई संसार अनेक घटनन से मिलि के बनल बा, जे कि हरदम बदलत रहे ली, हरेक घटना साँसि का साथ नया सिरा से बने ले आ दूसरे छन में विनशि जाले, अउरी तुरंते दूसर घटना-समूह उनकर जगहा ले लेला। एह तेजी से आगे-पाछे चले वाला सिलसिला का फलसरूप देखवइया धोखा में आके विश-वास करे लागे ला कि संसार कऽ सत्ता थिर बा—जइसे कि एगो सुच्छ छड़ी जब चारों ओर घुमावल जाले तऽ एगो पूरा चक्कर-नियर बनल मालूम होला। एगो कामचलाऊ परंपरा का कारन हमन का नेकती के नावँ आ रूप देवे के परे ला। नावँ आ रूप कऽ एकरूपता एह बाति कऽ सबूत नइखे कि उनका भीतरी जथारथतो में एकरूपता बा। बउधदेवो का नजरि में उपनिषदने का समान सबँसे संसार कारनने का नेम से बन्हाइल बा। जइसे उपनिषदन कऽ कहनाम बा कि चीजन कऽ आपन दशा, जवना रूप में ऊ लउकति बाड़ी, कुछ ना हऽ, बलुक ऊ कारनन का लरि कऽ उपज हई, जेकर न आदि बा न अंत, ओइसहीं बउधदेव कऽ कहनाम बा कि चीज हालतन कऽ उपज हई। उपनिष-दनों का पुराना बउध-मत नियर एह विसय में मत साफ बा कि एह हमेशा गति फेरबदल आ अनादि रचनाकारज में आदिमी खातिर थिर आराम-चैन कऽ कवनो जगहि नइखे।

पाली भासा में संसार का इंतिजाम के नेम कऽ नावँ दिहल बा, भा एके लगातार गति कऽ तरीको कहि सकीला। बुद्धघोस का समय लें (ईसा का पाँच सइ बरखी बाद) पहिले आ पिटकन का संगरह का बाद पाँच तरह कऽ दूसर-दूसर इंतिजाम-विधि बनावल गइली, जिनकर नावँ सिलसिला से एह तरह कऽ बा—कम्मनेम भा काम आ ओकर फल कऽ इंतिजाम, उतुनेम मतलब कि भौतिक (पंच भूतनवाला) आ निरजीव भा जढ़ कऽ इंतिजाम, बीजनेम भा गाँछ-बिरिछ कऽ इंतिजाम, इनिरिन-संबंधी इंतिजाम, चित्तनेम मतलब कि चेतना मय जीवन कऽ इंतिजाम, धम्मनेम भा आदरश कऽ इंतिजाम मतलब कि आदरश नमूना पैदा करे कऽ इंतिजाम। ई कम्मनेम हऽ जे ई आवाज उठावत बा कि अच्छा आ बुरा करमन कऽ फल सिलसिला से उचित आ अनुचित होला।

बउध-धरम आ उपनिषदन में जवन असली मतभेद मालूम होता ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधियातम-साहतर—आतमा-जीव-बरम्ह संबंधी धरमपोथिन का कहनाम का मोताविक एगो अइसन बिना विकार भा फेरबदल आ निहचित सत्ता का विसय में बा जे आदमियों कऽ जथारथ आतमा हऽ। हमन का एहिजा ई निरलय करे के बा कि एह दुनियाँ कऽ रचना शुन्न भा असत् से भइलि बा अउरी ई कि अंत में शुन्ने में मिलि शुन्न हो जाई। ई साच बा कि बउधदेव का जीवन का बहाव में आ एह संसार का चक्का में जथारथ सत्ता कऽ कवनो नाभि चाहे थिरता कऽ कवनो सिद्धान्त ना लउकल, बाकी एसे ई नतीजा ना निकाले के चाही कि संसार में शक्तिन का हलचल का अलावें अउरी कुछ जथारथ सत् हइये ना हऽ। ओजनी सवाल ओह एक आदि कारन का विसय में बा जे शुरू में एह चक्का के चालू करत बा ! के जोर दीहल ? जो मन एगो बहाव हऽ आ भौतिक संसार दूसर बहाव हऽ, तऽ संपूरन रूप कवनो अइसनो सत्ता बा कि नाहीं जवना में ई दूनो जुटल होखसु ?

बउधदेव खाली घटनने के मानत बाड़न। चीज बदलेली। संसार में सत् कुछ ना हऽ बलुक बस किरियमान्—जवन कइल जा रहल बा ! अइसना दशा में सभले ऊपर जथारथसत्ता फेरबदल कऽ नेम हऽ, अउरी ऊ कारन-कारज कऽ नेम हऽ। बउधदेव अंतिम कारन आ अचानकता (दैवजोगिता) का बारे में मौन बाड़न ! वेपरवाह परमसत्त का विसय में बउधदेव कऽ मौन धारन ई इशारा करत बा कि उनका मत में नित्त तत्तु घटनन का बरनन खातिर मिलल (उपलब्ध) नइँखे। आपन परतच्छ जानकारिये सब कुछ बा, जेकर हमनीं का ग्यान होला आ किनारे रहेवाला सुतंतर सत्ता (तटस्थ) ओह अनुभव ले वहरी कऽ विसय हऽ। अइसन बिसय के, जे हरदम हमनीं के चक्कर में डाले, पावे खातिर जतन कइल बेकार बा आ ओकरा खातिर आपन समय बरबाद कइल ठीक नइँखे।

संसार कऽ सब साच घटना मन का भावन कऽ लरि भर हई। हमन का नइँखीं जानत कि ऊ चीज जिनकर बरनन हमनका विचारन का जरिये होता, बाड़ीं कि नाहीं। संसार कऽ चक्कर करम का शकती कऽ फल हऽ आ अग्यान का कारन बा।

बउधदेव उपनिषदन का विचारकन का समान एह आधारवाला जगते तक अपना धेयान कऽ हद रखलन, एही से सभ भूमि आ सवँसे बरहमांड में फइलल सभकर आतमरूप सत्ता कऽ जे हरेक मानुस हिरदय में धड़कन पैदा करति बा आ जे संसार कऽ नाभि हऽ, थापना ना कइलन ! खाली एही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर कि ऊ ग्यान का पहुँच ले बाहर बा; हम बेपरवाह सत्ता कऽ खंडन ना कइ सकीं।

बउधदेव चालू जगत कऽ कवनो साफ बरनन हमन का सामने नइँखन रखले। एमें संदेह नइँखे कि तरह तरह कऽ सुझाव जहाँ तहाँ दीहल बाडन आ बाद का बउध-मतन कऽ मंडली उनकर एकतरफा अरथ लगवले बा।

बउधदेव विचार कइलन कि बाहरी सत्ता का कठिन सवाल के हल कइल उनकर काम ना हऽ। उनका खातिर एतने कहि दीहल काफी रहे कि चालू का धार का बीच में आदिमी अपना के असहाय पावत बा, जवना धार के न ऊ रोकि सकत बा न जेकरा के नेमे में बान्हि के राखि सकत बा; अउरी ई कि जबतक ओकरा अपना भीतर जीवन कऽ टिशुना बनल रही, ऊ संसार का अथाह अन्हारमय गहिराइन का भीतर एने ले ओने झटका खात रही, अउरी ई कि एह अशांत संसार में शांति पावे कऽ कवनो उमेदि नइँखे। "ओह आदमिन खातिर जे जरति आगि का बीच में फँसल होखसु, आगि का बिसय के लेके कलह करे कऽ मोका ना रहे बलुक ओकरा में ले निकले बचे कऽ सवाल उनका सामने होला।"

उपनिषद् जोर देके कहत बाड़न कि आदिमी कऽ जथारथ आतमा देहि भा मन संबंधी जीवन से अलगा बा तबो मानसिक आ पंचभूतन भा परकिरती का गुणन का संजोग से जीवातमा कऽ रचना होले। हरेक आदिमी दूसरा हर वतुस नियर मिलल भा जुटल पदारथ हऽ। बउधलोग एके सुधार छाप—(भा इनरिन कऽ विसयन का पकड़ से मन में परल असर) कहे ला, जे कि एगो संगठन हऽ। आदिमी पाँच-असकंधन से मिलि के बनल एगो जुटल पदारथ मालूम होता। असकंध (स्कंध) कऽ मतलब समूह हऽ, इनकर खंडन कबहीं नइँखे हो सकत। आतमा पांच असकंधन कऽ गरोह हऽ। असकंधन कऽ नावँ बाड़न—रूप, वेदना, संग्या, संसकार आ विग्यान। उपनिषदन में बरनन कइल नावँ रूप का आधारे पर असकंध (पाँच का समूह) कऽ रचना रचलि बा।

बउधदेव हमन के साफ-साफ ई बतावत बाड़न—कवन-कवन चीज आतमा ना हऽ, बाकी आतमा का हउवे एकर विचार रूप में बरनन एकदम नइखन करत। बाकी बउधदेव का बारे में ई सोचल कि बउधदेव आतमा के नइँखन मानत, एगो झूठ समझ भा विचार बा। बउधदेव एह सचाई पर ज़ोर देत बाड़न कि जब हम घटनन का पहिल फढ़ में एगो थिर आतमा का बारे में कहत बानीं तऽ हमन अपना सोच-विचार से ऊपर उठत बानीं। उपनिषदन का साथ एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अधियातम-साहतर—आतमा-जीव-बरम्ह संबंधी धरमपोथिन का कहनाम का मोताबिक एगो अइसन बिना विकार भा फेरबदल आ निहचित सत्ता का विसय में बा जे आदमियों कऽ जथारथ आतमा हऽ। हमन का एहिजा ई निरलय करे के बा कि एह दुनियाँ कऽ रचना शुन्न भा असत् से भइलि बा अउरी ई कि अंत में शुन्ने में मिलि शुन्न हो जाई। ई साच बा कि बउधदेव का जीवन का वहाव में आ एह संसार का चक्का में जथारथ सत्ता कऽ कवनो नाभि चाहे थिरता कऽ कवनो सिद्धान्त ना लउकल, बाकी एसे ई नतीजा ना निकाले के चाही कि संसार में शक्तिन का हलचल का अलावें अउरी कुछ जथारथ सत् हइये ना हऽ। ओजनी सवाल ओह एक आदि कारन का विसय में बा जे शुरू में एह चक्का के चालू करत बा ! के जोर दीहल ? जो मन एगो बहाव हऽ आ भौतिक संसार दूसर बहाव हऽ, तऽ संपूरन रूप कवनो अइसनो सत्ता बा कि नाहीं जवना में ई दूनो जुटल होखसु ?

बउधदेव खाली घटनने के मानत बाड़न। चीज बदलेली। संसार में सत् कुछ ना हऽ बलुक बस किरियमान्—जवन कइल जा रहल बा ! अइसना दशा में सभले ऊपर जथारथसत्ता फेरबदल कऽ नेम हऽ, अउरी ऊ कारन-कारज कऽ नेम हऽ। बउधदेव अंतिम कारन आ अचानकता (दैवजोगिता) का बारे में मौन बाड़न ! बेपरवाह परमसत्त का विसय में बउधदेव कऽ मौन धारन ई इशारा करत बा कि उनका मत में नित्त तत्तु घटनन का बरनन खातिर मिलल (उपलब्ध) नइँखे। आपन परतच्छ जानकारिये सब कुछ बा, जेकर हमनीं का ग्यान होला आ किनारे रहेवाला सुतंतर सत्ता (तटस्थ) ओह अनुभव ले बहरी कऽ बिसय हऽ। अइसन बिसय के, जे हरदम हमनीं के चक्कर में डाले, पावे खातिर जतन कइल बेकार बा आ ओकरा खातिर आपन समय बरबाद कइल ठीक नइँखे।

संसार कऽ सब साच घटना मन का भावन कऽ लरि भर हई। हमन का नइँखीं जानत कि ऊ चीज जिनकर बरनन हमनका विचारन का जरिये होता, बाड़ीं कि नाहीं। संसार कऽ चक्कर करम का शकती कऽ फल हऽ आ अग्यान का कारन बा।

बउधदेव उपनिषदन का विचारकन का समान एह आधारवाला जगते तक अपना धेयान कऽ हद रखलन, एही से सभ भूमि आ सबँसे बरहमांड में फइलल सभकर आतमरूप सत्ता कऽ जे हरेक मानुस हिरदय में धड़कन पैदा करति बा आ जे संसार कऽ नाभि हऽ, थापना ना कइलन ! खाली एही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर कि ऊ ग्यान का पहुँच ले बाहर बा; हम बेपरवाह सत्ता कऽ खंडन ना कइ सकीं।

बउधदेव चालू जगत कऽ कवनो साफ बरनन हमन का सामने नइँखन रखले। एमें संदेह नइँखे कि तरह तरह कऽ सुझाव जहाँ तहाँ दीहल बाड़न आ बाद का बउध-मतन कऽ मंडली उनकर एकतरफा अरथ लगवले बा।

बउधदेव विचार कइलन कि बाहरी सत्ता का कठिन सवाल के हल कइल उनकर काम ना हऽ। उनका खातिर एतने कहि दीहल काफी रहे कि चालू का धार का बीच में आदिमी अपना के असहाय पावत बा, जवना धार के न ऊ रोकि सकत बा न जेकरा के नेमे में बान्हि के राखि सकत बा; अउरी ई कि जबतक ओकरा अपना भीतर जीवन कऽ टिशुना बनल रही, ऊ संसार का अथाह अन्हारमय गहिराइन का भीतर एने ले ओने झटका खात रही, अउरी ई कि एह अशांत संसार में शांति पावे कऽ कवनो उमेदि नइँखे। "ओह आदमिन खातिर जे जरति आगि का बीच में फँसल होखसु, आगि का बिसय के लेके कलह करे कऽ मोका ना रहे बलुक ओकरा में ले निकले बचे कऽ सवाल उनका सामने होला।"

उपनिषद् जोर देके कहत बाड़न कि आदिमी कऽ जथारथ आतमा देहि भा मन संबंधी जीवन से अलगा बा तवो मानसिक आ पंचभूतन भा परकिरती का गुणन का संजोग से जीवातमा कऽ रचना होले। हरेक आदिमी दूसरा हर वतुस नियर मिलल भा जुटल पदारथ हऽ। बउधलोग एके सुधार छाप—(भा इनरिन कऽ विसयन का पकड़ से मन में परल असर) कहे ला, जे कि एगो संगठन हऽ। आदिमी पाँच-असकंधन से मिलि के बनल एगो जुटल पदारथ मालूम होता। असकंध (स्कंध) कऽ मतलब समूह हऽ, इनकर खंडन कबहीं नइँखे हो सकत। आतमा पांच असकंधन कऽ गरोह हऽ। असकंधन कऽ नावँ बाड़न—रूप, वेदना, संग्या, संसकार आ विग्यान। उपनिषदन में बरनन कइल नावँ रूप का आधारे पर असकंध (पाँच का समूह) कऽ रचना रचलि बा।

बउधदेव हमन के साफ-साफ ई बतावत बाड़न—कवन-कवन चीज आतमा ना हऽ, बाकी आतमा का हउवे एकर विचार रूप में बरनन एकदम नइखन करत। बाकी बउधदेव का बारे में ई सोचल कि बउधदेव आतमा के नइँखन मानत, एगो झूठ समझ भा विचार बा। बउधदेव एह सचाई पर ज़ोर देत बाड़न कि जब हम घटनन का पहिल फढ़ में एगो थिर आतमा का बारे में कहत बानीं तऽ हमन अपना सोच-विचार से ऊपर उठत बानीं। उपनिषदन का साथ एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बिसय पर एकमत होखलो पर कि जनम, रोग आ दुख पूरन संसार आतमा कऽ जथारथ जगहा ना हऽ, बउधदेव ओह आतमा का बारे में बिलकुले चुप बाड़न। ऊ एकरा सत्ता के न मानत बाड़न न एकर खंडन करत बाड़न। काहें से कि जब तक हमन का नीरस कठदलेलि कऽ मदति लेले रहबि; हमन जीवातमा का असल सत्ता के साबित ना कइ सकीं। उपनिषद् आतमा का एक परदा का बाद दूसरा परदा के दूर करत अंत में सभ वसतुन का थाला-भूइँ तक पहुँचत बाड़न। एह जुगुती का अंत में ऊ सगरे सभलोकन में फइलल आतमा कऽ बोध पावत बाड़न जे कि एह सभई शांत बसतुन में ले एकहू ना हऽ, जदपि कि ओह सभन कऽ थाला भूइँ हऽ। बउधदेवो कऽ असल में ईहे मत हऽ, जदपि निहचित रूप से ऊ एके कहत नइँखन।

गूढ़ता से भरलि आतमा ओरियाये कऽ नावँ नइँखे लेति। काहें से कि बिना एकरा के मनले परतच्छ ग्यान आ इयाद दूनो असंभो हो जइँहन। एकरा अलावें हम परतच्छ ग्यान कऽ सही-सही साफ कथन नइँखी कइ सकत; अउरी न ईहे जानि सकत बानीं कि चेतना में लगातारी बा। अगर जो मन खाली पलि पहिछला अनुभवने कऽ नावँ हऽ तऽ परतच्छ ग्यान करे वाला केहू अलगा ना रही। एगो अनुभव दूसरा अनुभव कऽ ग्यान नइँखे कइ सकत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-धरम कऽ डहँगी-भेद

बउध-धरम कऽ दूइ परधान डहँगी बाड़ीं—(१) हीनयान (२) महायान। एह नावँन के महायानी लोग धइल। अपना के तऽ उत्तम बता के लोग अपना मारग के महान मानि लिहल आ पुराना मत मनवइयन के हीनयान का नावँ से पुकारल। हीनयान से मतलब पाली तिरपिटकन का आधार पर नेमिक धरम, जेकर परचार आजकल लंका, श्याम, बरमा वोगयरह भारत का दक्खिनी देशन में बा। ई लोग अपना के थेरवादी कहे ला आ इहे नावँ पुरानो हऽ। महायानिन कऽ दबदवा चीन, जापान, मंगोलिया, कोरिया, तिब्बत वोगयरह भारत का उतरी देशन में बा। हीनयान अपना के समय का माफिक ना बना सकल। एही से ऊ पछड़ल रहल। महायान अपना के देशकाल आ समय का माफिक बना के आगे बढ़ि गइल। महायान पर बाभन धरम का विचारन कऽ असर परल बा, खास कइके भगवद्गीता का करमजोग कऽ।

अँजोर-बढंती-विसतार एह संसार कऽ परधान नेम हऽ। पैदा भईला का बाद कवनो चीज वे बढ़ले ना रहे। आँकुर बढ़ि के गाँछ-बिरिछ कऽ रूप धारन करे ला। कली फूल का रूप में खिलि के देखनिहारन कऽ मनबहलाव करे ली। धरम एह नेम कऽ विरोध ना हो सके। नई हालतन में, जरूरी समगिरिही का बल पर, धरम का बढ़त-फइलन देरी ना लागे, धरम कऽ बीया अँखुवा के पनफत-पनफत हराभरा पल्लवन वाला हो जाले। बउध-धरम कऽ बढंती-बिसतार भइल आ बड़ा चुहिलगर—रोचक ढंग कऽ भईल।

विकरम संवत् ले ४२६ वरिस पहिले भगवान बउधदेव कऽ परमपद भइल, तब धरम का असल विचारन का निरलय खातिर उनका परधान चेलन का मदति से मगध का राजधानी राजगिरिह में पहिला धरम-सम्मेलन भइल। एमें सुत्त आ विनय पिटक कऽ रूप निहचित कइके उनके लिखाइल। असल में ओह घरी महाकास्सप बउध-संघ कऽ मानिंद अगुवा रहलन। उनकरे देखरेख में चुनल-चुनावल पाँचसइ जीवन-मुकुत बउध संत, जे कि धरम-जगत् कऽ भारी विदमान रहलन, राजगिरिह का सुघर सप्तपरनी गूफा में बटुरइलन ! महीनन गौर-गुनावन आ बतकूचन होत रहल। आखिर में कूट-छाँट, फटकला-बनवला का बाद बउधदेव का सभ शिच्छा-बचनन के जोरि-बटोरि सरियावल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लिखल गइल। नेति-धरम, आचार-बेवहार आ तत्तुग्यान संबंधी गूढ़ विचारन वाला उपदेशन के अलगा-अलगा तीनि जगहा जमा कइल गइल। ई तीनों, तीनि बस्ता भा तीनि सनूखि का अँदाजन भइलन। एही से इनके तिरिपिटक कहाइल। तीनों कऽ नावँ धराइल, सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक।

बाकी सइ बरिस कऽ समय बीतत-बीतत भीतरे-भीतर सुनुगत विरोध कऽ धूवाँ आखिर आपन रंग देखवलसि। आचार-बेवहार का कड़ा नियम-शासन के लेके एगो बरियार विरोधी दल खड़ा हो गइल। एह विरोध कऽ झंडा खड़ा करेवाला वज्जिदेश कऽ भिक्खु रहलन जे वज्जिपुत्तक कहल जालन। इनहीं का विरोध के शांत करे खातिर वैशाली में बउध भिक्खुन कऽ दूसरा महा सम्मेलन ३२६ वि० पू० में भइल रहे। बाकी पुरान विनय नेमन का कट्टर पच्छपाती भिक्खुन के सामने वैशाली वालन कऽ एको ना चलल। एह दुरदशा में भिक्खु लोग वैशाली से हटि के कवशांबी में दशहजार भिक्खुन का संघ का साथे आपन धरम-सम्मेलन फरका कइल। ओही दिन बउध-संघ में दूइ परधान भेद खड़ा हो गइल—असथविरवादी (स्थविरवादी) आ महासांधिक !

विनय में कवनो किसिम कऽ फेर-बदल ना मानेवाला कट्टरपंथी भिक्खु असथविरवादी (थेरवादी) कहइलन ! विनय में समय का फेर बदल का साथ फेरबदल करवइया सुधारक भिक्खुन कऽ जमाति वेशी भइले महासंघ का कारन—महासांघिक कहाइलि।

तीसरा महामेला अशोक का समय में पाटलिपुत्त का अशोकारामविहार में मोगलिपुत्ततिस्स के सभापति बना के विकरम संवत् ले पहिले तीसरी सइ-वरखी में भइल। अशोक का समय ले पहिलहीं बउध-धरम में १८ गो दूसर-दूसर मत खड़ा हो गइल रहलन। ई तीसरा महासम्मेलन बउध-धरम का इतिहास में वहुत मोल मरजादा वाला मानल गइल; काहें से कि एही तिसरकी 'संगीति' भा महासम्मेलन का नेम का मोताबिक महाराज अशोक बउध-धरम का परचार-पसार खातिर भारत ले बाहरो का देशन में बउध-भिक्खुन के धरमदूत बनाके भेजलन। एही समय ले बउध-धरम संसार-धरम कऽ पदवी पावे खातिर आगे डेग बढ़वलसि !

चउथा महासम्मेलन (संगीति) कुशानवंशी राजा कनीसक का समय में कशमीर का कुंडलबन विहार में भइल। आचारज वसुमित्त एकर सभापति आ अस्सुघोस उप सभापति बनलन। सभ भिक्खु एक ही धरम मत कऽ रहलन अउरी ऊ मत रहे 'सरवास्तिवाद'। तिरिपिटकन पर संसकीरित में भारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टीका (अरथ) लिखाइलि। जेकि 'महाविभासा' का नावँ से मशहूर बा। तीनि लाख असलोकन कऽ ई विभासा टीका ताँमा का पत्तन पर टाँकि के पत्थल का सनूखिन में धराइलि कि धरम विचार मजे में सुबहित आ टिकाऊ रहिहन। दुख कऽ बाति बा कि आज ले ओह बउध-बिहार कऽ पता ना लागल जवना में विभासा टीका वाली पत्थल कऽ सनूखि धरइली। हो सकेला कि कबे धरती माता दया करसु आ धरमी संतन का धइल ओह ग्यान-थाती के हमन के दे देसु। कनीसक कऽ शासन (१३५–१५८ वि० सं०) बउध-धरम आ साहित्त का इतिहास में एगो जुग का बदली कऽ सनेश देत बा। ई महायान बउध-धरम का उदय के देखलसि। पारस, अस्सुघोस आ वसुमित्त वोगयरह का नेंव दीहल साहित्त संबंधी कारज कऽ शिरीगनेश एही समय भइल। पाली का जगहा संसकीरित कऽ मरजादा एही जुग में थापित भइल। कला का छेतर में मशहूर गांधार-कला कऽ जनम आ बढंती एही समय होखल अउरी बउधदेव आ बोधिसत्तन कऽ मूरति बने लगली। कनीसक का राज समय में आ उनका जतन पुरूसारथ से पहिली बेरि बउध-धरम कऽ सफलता का साथ मद्धि एशिया में परचार आ पसार भइल। मद्धि एशिया ले लेके भारत का मद्धि देश तक फइलल कनीसक का भारी राज में धरम-परचार कऽ कारज हरदम चलत रहल, जेकर नतीजा भइल कि साच अरथन में एशिया का एगो मिलल जुलल आचार-विचार (संसकिरती) कऽ जनम भइल जे कि जीवन का ऊँच से ऊँच उद्देशन पर टिकलि रहे। जेकरा खातिर बउध-धरम खड़ा भइल रहल !

सबले अनमोल आ भारी सेवा जवन ई भारती-सीथियन राजा बउध-धरम खातिर कइलसि ऊ ओकरा जरिये बउध-महासम्मेंलन (संगीति) कऽ बुलावल रहे। कल्हण का 'राजतरंगिणी' का मोताबिक कनीसक अनेकन बउध-विहार आ चइत बनववलसि। ऊ कनिसकपुर नावँ कऽ एगो नगर बसवलसि, जे के आज का काशमीर का कनिसपुर नावँ का जगहि से मिलावल गइल बा। कनीसक अपना नावँ पर एगो भारी असतूपो बनववले रहे। एह असतूप का पच्छिवँ ऊ एगो बड़ बिहार बनववलसि जे के 'कनीसक महाविहार' कहल गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तत्तुग्यान-संबंधी विसतार-बढ़ंती

बउध-धरम आ विचारधारा का इतिहास पर जो हम उड़ती नजरि दउ-रायीं, तऽ हमके अनेकन जानेजोग सचाइन कऽ परिचय मिले ला।

विकरम ले पहिले छठवीं सइ बरखी से लेके वि० प० तीसरी सइबरखी तक असथविरवाद (थेरवाद) कऽ परधानता मिलति बा ! महाराज अशोक का समय बउध-धरम के पूरी तरह से राज-सहायता मिललि। राजा एके आपन निजी धरम ना बनवलन, बलुक एके संसार भर कऽ धरम बनावे कऽ लगातार कोशिस आ मेहनति कइलन ! एह कारज में अशोक के भरपूर मदतो मिललि। अशोक थेरेवाद के अपनवलन आ ओही के बउधदेव कऽ पूजा आदर जोग विचार मानि के फइलइब्रो कइलन। विकरम का शुरू समय तक इहे हालति रहे। विकरम का दूसरी सइबरखी में कुशाननरेश कनीसक का समय हालति बद-ललि। असथविरवाद का जगहा पर सरवास्तिवाद आदरजोग विचार का रूप में मनाइल आ फइले लागल। चउथी संगीति का बेर सरवास्तिवाद देश भर में फइलि जाता। कनीसक एके मनलन आ उत्तरी देशन में एही कऽ परचारक भेजि के एकर विसतार कइलन। चीन देश में ई सरवास्तिवाद एही घरी गइल। इयाद राखे कऽ बाति बा कि चीने देश का भासा में वैभासिकन कऽ बहुत लंबा-चौड़ा साहित्त आजुवो जोगा के राखल बा ! असल में ई संसकीरित में रहे, बाकी अनादर भइला से असल संसकीरितरूप कऽ लोप हो गइल !

पाँचवियो सइवरखी में चनरगुपुत विक्रमादित्त आ कुमारगुपुत का राज में, सरवास्तिवाद खूब जोर पकड़लसि ! बसुबंधु आ असथूलभद्दर नियर विद-मान आचारज अपना पंडिताई भरल गरंथन से एकरा में जीवनी-शक्ति फूँकि दिहलन। कुछ दिन ई मत जरूर चमकत रहल, बाकी ई चमक वुतायेवाला दीपक का अंतिम जोति नियर मालूम भइल।

विकरम का तीसरी सइवरखी से बउध-धरम का तत्तुग्यान सम्बन्धी जगत में हमन के नयी फुरती कऽ लच्छन लउकत बाड़न। सरवास्तिवाद का एक किनार ले हटि के हमन सरब शूनताई वाला विचार का दूसरा किनारा जा पहुँचत बानीं आ ई रवानगी कऽ डहरि सौतरांतिक लोग पता लगा के चालू कइल। एह जुग में हमन के दूइ हलचल मचवइया करांतीकारी आचारजन कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरशन होता—(१) आचारज कुमारलात कऽ, जे बाहरी अरथ का दम के परतच्छ इनिरिन से जानल जायेवाला ना मानि के कयास से जनायेवाला सिद्ध कइलन। (२) आचारज नागारजुन कऽ, जे शून्न का मत-विचार के दलेल आ पोढ़ परमानन का बल पर थिर कइलन। कुमारलात सौतरांतिक मत कऽ जनमदाता हउँवनि तऽ नागारजुन माद्धमिक-मत (शून्नवाद) कऽ धुरंधर परचारक ! कुमारलात कऽ मत भारतीय बउधन कऽ धियान विशेखरूप से ना खींचि सकल, बाकी इनकर एकजाना चेला चीन देश में एगो नया मत कऽ जनम दिहलन। एह चेला कऽ नावँ रहे हरिवरमा आ मत कऽ नावँ रहे 'सत्त-सिद्धि-मत'। हरिवरमा का 'सत्त-सिद्धि-शासतर' नावँ का गरंथ कऽ चीनी उलथा (कुमारजीव कऽ रचल ४६० वि० सं०) एह धरम-मत कऽ असल गरंथ हऽ ! एह से कुमारलात का करांतीकारी होखे में कवनो संदेह नइखे। नागारजुन कऽ जश तऽ तत्तुग्यान का दुनियाँ में एक तरह से बिना पटतर बे तुलना वाला बा।

विकरम का पाँचवीं सइवरखी में बउध-विचारधारा सरब-शून्नता का एकान्तवाद से हटि के फेरू पाछे का ओर जाति बा, बाकी बीच में टिकि के विग्याने के बस एगो दम मानि लेति बा। विग्यानवाद का उदय कऽ ईहे जुग हऽ। एह विचार कऽ जनम तऽ दिहलन मैतरेयनाथ, बाकी ओके तरक-दलेल से पोढ़ बनवलन आचारज असंग आ बसुबंधु। बसुबंधुवे कऽ चेला आचारज दिङ्नाग रहलन जे कि 'परमाण-समुच्चय' नियर पोढ़ गरंथ लिखि के 'बउध-नेयाय' कऽ नेंव जँतलन जेकरा के धरमकिरती अपना 'परमाणवारतिक' से सजीला बना के नेयाय-मंदिर का ऊपर कलशा धई दिहलन। गुपुत-वंशी राजा लोग कऽ जुग खाली बाभने-साहित्त का बढंती कऽ जुग ना हऽ, बलुक बउध-तत्तुग्यान का भारी आ चउमुखी उन्नति कऽ सोनहुला जुग हऽ।

पाँचवी सइवरखी से लेके आठवीं सइवरखी तक शून्निवाद आ विग्यानवाद कऽ तरक्की समानरूप से होति रहलि, बाकी शून्निवाद का मत का, समान लोगन का सहजबोध लायक आ पिरीव ना रहला से विग्यानवाद आपन अधिका बढंती-विसतार कइ लिहलसि। हरखबरधन का समय हमन के नालंदा विसविद्यालय में विग्यानवाद कऽ उन्नति होत मिलत बा। धरमकिरती हरखे-जुग कऽ अनमोल विभो रहलन। धरमपाल नालन्दा बिहार का लम्बरदार का पद पर रहि के शुन्निवाद आ विग्यानवाद दूनो मतन का परचार-कारज में लागल रहलन। विकरम का आठवीं सइवरखी में नालन्दे के हमनी बउध-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तत्तुग्यान का नाभि का रूप में पावत बानीं। एहिजे का धरमाचारजन का पास हम चीनी भिक्खुन के धरम-शिच्छा लेबे खातिर आवत पावत बानीं। तिब्बत में बउध-धरम कऽ पइठ एही समय में भइल। नालंदे कऽ बूढ़ महापंडित शांत-रच्छित बउध-धरम के तिब्बत पहुँचवलन। पदुमसंभव एहिजे कऽ लाल रहलन जे भोट देश में तथागत का एह सवतुक धरम के बढ़वलन आ जनता में पहुँचवलन। वजरयान का नामी ८४ सिद्धन कऽ उदय एही चारि सइ बरिसन में भइल। एह तरे कुछ बाभनन का सतवले आ कुछ अपना सहज नेति धरम; विमल उपदेश अउरी लोक-कयलान का सनेश का करते बउध-धरम भारत का बाहर फइलल, पुरुबी देशन पर आपन हुकूमति जमा लिहलसि आ आज ई संसार भर में सबले अधिका गिनती वाला मानुसन कऽ धरम बाटे।

आरज सत्त (उत्तम सचाई)

करतब्र-सासतर का विचार से बउधदेब चारि सचाइन कऽ पता लगवले बाड़न। एही सचाइन का जथाऽरथ ग्यान का करते उनके आतमग्यान (संबोधि) मिलल। एह सचाइन कऽ नावँ आरजसत्त हऽ मतलब कि ऊ सचाई जिनके आरजे (अरहत) लोग मजे में जानि सकेला। सचाइन कऽ संख्या अनन्त बा, बाकी बहुत अधिका मोल मरजाद होखला से ई सत्त सभले उत्तम मानल जालन।

आरजसत्त चारि

(१) दुखम्—एह संसार कऽ जीवन दुख से पूरन बा।

(२) समुदयः—एह दुख कऽ कारन हाजिर बाटे।

(३) निरोधः—एह दुख से जथारथ में छुटकारा होला।

(४) निरोधगामिनी प्रतिपद—दुखन का नाश कऽ जथारथ उपाइ बाड़ी जिनकर मदति लिहला से जीव संसार में हाजिर दुख कऽ जरि से आ हरदम खातिर अन्त कइ सकेला।

कहल जाला कि भगवान बउधदेव एह सचाइन के खोजि निकललन, बाकी तऽ इतिहासिक नजरि से एह जथारथतन कऽ पता बहुत पहिलहीं भारतीय अधियातमिक पण्डित लोग लगा लेले रहे।

महरसी पतञ्जलि साफ कहले बाड़न—'दुखमेव सवं विवेकिनः' (योगसूत्र, २।१५)। विचारवान पुरुषका नजरि में ई सवँसे संसारे दुख हऽ। बउधदेवो कऽ ईहे बिचार रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसर आरजसत्त ह—दुख समुदय। समुदाय कऽ मतलब ह—कारन। एह से दूसरि सचाई हऽ दुख कऽ कारन। बिना कारन कऽ कारज ना पैदा होखे। कारज कारन कऽ नेम अखण्ड आ अविनाशी ठहरल। जब दुख कारज हऽ तब ओकर कारनो जरूरे होई। बउधदेव का शबदन में[1]—

दुख कऽ असली कारन टिशुना हऽ जे बारंबार परानिन के पैदा करे ले। ऊ बिसयन का पिरीति से सनाइलि बा आ ओह बिसयन कऽ सवागत सराहना करेवाली हऽ! ई टिशुना तीनि किसिम कऽ होले। (१) काम टिशुना, (२) भव टिशुना, (३) विभव टिशुना।

दुख का जनम कऽ कारन हऽ टिशुना—पियासि— विसयन कऽ पियासि। अगर जो विसयन के पावे कऽ पियासि हमरा हिरदय में न होखे, तऽ हमके न एह संसार में आवे के परी न दुख भोगे के। टिशुने सब से बड़ बान्हन हऽ जे हमन के संसार आ संसार का जीवन से बन्हले बा।

'धीर विदमान पुरुष लोहा, लकड़ी आ रसरी का बान्हन के पोढ़ ना मानसु। असली बरियार बान्हन तऽ ह—रसगर पदारथ में लीन भइल भा मणि, कुण्डल, जोड़ू-जाँता, पूत-पलिवार में इच्छा कऽ होखल[2]। धम्मपद कऽ ई कहल बिल्कुले ठीक बा। मकरी जइसे अपनहीं जाल बीनेले आ अपनहीं ओकरे में बन्हाइलि रहेले। संसार का जीवन कऽ दशा ठीक अइसने बा[3]। ऊ लोग टिशुना से नाना किसिम का बिसयन में पिरीति लगावेला आ एही पिरीत का बान्हन में, जे उनकरे पैदा कइल हउँवनि अपना के बान्हि के दिन-राति कलेश उठावेला।

(१) काम-टिशुना—जवन टिशुना नाना किसिम का विसयन कऽ चाह करे ले।

(२) भव-टिशुना—एह संसार के बनवले रहेवाली टिशुना। यह संसार का टिकाव क कारन हमहीं हई। हमार टिशुने एह संसार के पैदा कइले बा। संसार का रहले पर हमार सुख-वासना सिद्ध होले। एहीसे एह संसार कऽ टिशुनो एक किसिम कऽ टिशुने हऽ।

---

१. मज्झिम निकाय, महाहत्थि पदोपमसुत।

२. "न तं दळं बन्धनमाहुधीरा, यदायसं दारुजं पब्बजं च।
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेसु, पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा।"—धम्मपद, ३४५ गाथा

३. ये रागरत्तानुपतंति सोतं, सयंकतं मक्कटका व जालं।—धम्मपद, गाथा ३४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(३) विभव-टिशुना—'विभव' कऽ मतलब हऽ उच्छेद, संसार का नाश कऽ इच्छा ओइसहीं दुख उपजावे ले, जइसे ओकर नित्त होखे कऽ इच्छा।

ईहे इच्छा (टिशुना) दुनियाँ का सभ बलवा आ कलह-विरोध कऽ महतारी हऽ। एकरे करते राजा से राजा लड़ेला, छतिरी से छतिरी लड़ेला; बाभन से बाभन लड़ेला, माई पूत से लड़ेला, पूत मँहतारी से लड़ेला। सब पाप करमन कऽ आदि कारन ईहे टिशुना हऽ। टिशुने का जरि से ई संसार बा। टिशुने दुख कऽ कारन हऽ। एही क विनाश कइल हरेक परानी कऽ करतब हऽ।

दुख-निरोध—तीसरा आरज सत्त कऽ नावँ दुख-निरोध हऽ। 'निरोध' शबद कऽ माने नाश भा तेयाग हऽ। ई सचाई बतावे ले कि दुख कऽ नाश होला। दुख कऽ दम बाटे ई बताइये के बउधदेव का शिच्छा कऽ अन्त नइँखे होत, बलुक उनकर उपदेश हऽ कि एह दुख कऽ अन्तो बा।

बउध-धरम कऽ बड़ विशेषता हऽ कि कारज कारन का अटूट सम्बन्ध के मंजूर कइल। जगत् का घटनन में सगरे ई सम्बन्ध घुलल-मिलल बा। अइसन कवनो घटना नइखे जेकरा भीतर ई नेम जागत न होखे।

दुख निरोधे कऽ समाज कऽ दीहल सोहासुत नावँ 'निरवान' हऽ। टिशुना कऽ नाश कइ दिहला से एही जीवन में, जियते समय में, पुरुस ओह दशा के पहुँचि जाला जेकरा के 'निरबान' का नावँ से पुकारल जाला। निरबाने के दूसरा शबदन में मुकुती कहाला।

दुख-निरोधगामिनी-प्रतिपद्—अब आठ डहँगियन वाला धरम-विरिछ का ठंढी छाया में पहुँचि के एकरा सुख के देखीं समझीं।

'प्रतिपद्' कऽ माने हऽ—डहरि, राह। इहे चउथा आरजसत्त हऽ जे दुखनिरोध—दुख का अंत तक पहुँचावे वाला डहरि हऽ। आठ अंगन वाला धरम में 'सम्यक' शबद कऽ चरचा बहुत बा; एकर माने भइल—"ठीक, सब-तुक, सिजिल, जथारथ'। एह डहरि कऽ नावँ हऽ 'आठ-अंगी-डहरि (अष्टांगिक मार्ग) आठ अंग ई बाड़न—"सम्यक दृष्टि (ठीक नजरि), सम्यक-संकल्प (ठीक संकलप), सम्यक् वचन (ठीक बोली, वचन), कर्मान्त (ठीक करम); सम्यक् आजीविका (ठीक जियका), सम्यक् व्यायाम (ठीक जतन-उतजोग), सम्यक् स्मृति (ठीक इयाद), सम्यक् समाधि (ठीक ध्यान, समाधि)।" अब विचार करे के बा कि एह 'ठीक' कऽ कसौटी का बा। कवना दशा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचन ठीक (सम्यक्) कहाला। कवनो वतुस में अधिका लवलीनता भा ओकरा से बहुत वैराग-उदासी बनल, दूनो अनुचित बा। परतोख खातिर अधिका भोजन कइलो दुखदायी हऽ आ बिलकुले ना भोजन कइलो दुखदायी हऽ! एही से सचाई दूनो अंतन का बीचे में रहे ले। एह सोहासुत बीच (मध्य) के अधिका मरजादा दिहले का कारन बउधदेव जी कऽ राह 'मध्यम प्रतिपदा' मद्धिमराह (बीच कऽ डहरि) कहाला। बउध लोग ओके धरम-भासा में 'मज्झिमनिकाय' कहले बा।

बउधदेव का शबदन में 'मज्झिमनिकाय' (मध्यमप्रतिपदा) कऽ विचार अइसन बा कि—"द्वे भिक्ख वे अन्ता पव्वज्जितेन न सेवितब्बा। कतमे द्वे ? यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो गम्मो पोथुज्जनिको अनरियो अनत्थसंहितो। यो चायं अत्तकिलमथानुयोगो दुक्खो अनरियो अनत्थसंहितो। एते खो भिक्खवे उभे अन्ते अनुपगम्य मज्झिसा पटिपदा तथागतेन अभिसंबुद्धा चक्खुकरणी जाणकरणी उपसमाय अभिञ्जाय सम्बोधाय निब्बाणं संवत्तति।" एकर मतलब कि—(हे भिक्खुगन, संसार के छोड़िके मुकुती का राह पर चले वाला जीव का (संन्यस्त बेकतिका) चाही कि दूनो अंतन कऽ सेवन न करे। कवन दूइ अंत ? एगो अंत हऽ—चाहल वतुसन में भोग का इच्छा से हरदम लागल रहल। ई विसय का पाछा लागल हीन, मूढ़ताई, अधियातमिक भाव से फरका ले जायेवाला, अनुचित आ अनरथ पैदा करेवाला हऽ। दूसर अंत हऽ देहिं के कलेश दीहल। ईहो दुख, अजथारथता आ अनरथ पैदा करेवाला हऽ। एह दूनो अंतन कऽ सेवन करेवाला आदिमी भवजाल से कबहीं आपन उद्धार ना कइ सके। ओकरा उद्धार कऽ डहरि एह दूनो अंतन के छोड़ि के बीच कऽ राह धइल हऽ।

एह बिचिली राह का बारीकी के परगट कइल बउधदेव का जीवन कऽ अंतिम मरम कऽ बति ठहरल! गउतम अपना जीवन का कसौटी पर दूनो अंतन के कसिके देखलन कि ऊ सार से हीन बाड़ी—अंतिम शांति देबे में बिलकुले दुरबल—अजोग। संन्यासी न त बिसयन का एकांगी चाह में लपिटाइल होखे आ न देहि कऽ सासति-फजिहति करे—ओके कलेश पहुँचावे में लागल, बलुक उत्तम आचरन (शील), समाधि (लगातार सवतुक धियान) आ ग्यान के हासिल करे में चित्त के लगा के बेजोड़ शांति कऽ लाभ करे। एह किसिम से 'मद्धिम-मारग' बउधदेव का साच निजी बोध पर ठहरल बा।

मज्झिमनिकाय—'मध्यम प्रतिपदा'—बिचिली डहरि आठ अंगनवाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हऽ। नजरि भा दीठि कहीं—एहू कऽ दूइ अंत बाड़न—एगो हऽ सनातन दीठि आ दूसरी हऽ उखाड़-पखाड़-नाश कऽ दीठि। जवन आदिमी देहि ले दूसर; अविकारी, नित्त आतमा कऽ सत्ता (दम) मानेलन ऊ सनातन दीठि राखेलन। जे आदिमी देंहि के आतमा से एकमय मानि के देहि का विनाश का साथ आतमो कऽ विनाश बतावेलन ऊ 'उच्छेद-दीठि'—नाश का निगाह में रमेलन। दूनो नजरि एक तरफा भइला से हानि पहुँचावे वाली बाड़ी! सम्यक् दृष्टि—ठीक दीठि—जथारथ नजरि तऽ दूनो का बीच कऽ नजरि हऽ। दुख के नित्त मानि के ओकरा पर विजय करे से भागेवाला आलसी आदमी ओही तरे निंदा जोग बा, जइसे आतमघात कइके दुख कऽ अंत माने वाला कादर आदिमी निंदा जोग मनाला। असली डहरि दुख का जरि-कारन टिशुना के मजे में जानि-समुझि के ओकर नाश कइल हऽ! टिशुना कऽ उदय अविद्या का कारन होला। अविद्ये सभ दुखन कऽ महँतारी हऽ। ओह अविद्या चाहे अग्यान कऽ विद्या का बल से नाश कइले से परम शांति मिले ले। भगवान् बउधदेवो 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' का उपनिषद्-विचारधारा कऽ मनवइया रहलन। बाकी तऽ ई ग्यान कोरा बकवाद ना होखे के चाही। खाली शबदी-ग्यान से शांति कऽ उदय ना होखे। ग्यान के शुद्ध चालि चलन का डहरि का सहारा से पुहुट करे के चाही।

आचरन रूप में बदलल ग्याने साच ग्यान हऽ। जेह ग्यानी कऽ जीवन चालि चलन का पोढ़ भीति का बल पर ठाढ़ नइँखे, ऊ केतनो शेखी बघारे, अधियातम-डहरि पर अबे लइका बा जे अपना के धोखा देता आ संसारो के धोखा में डालत बा।

१. सम्यक दृष्टि—'दृष्टि' कऽ माने ग्यान हऽ। 'जथारथ-ग्यान'—शुभ कारज खातिर ग्यान कऽ भीति जरूरी होले। आचार आ विचार कऽ एक दूसरा से गाढ़ संबंध होला। विचार का भीति पर आचार (चालिचलन) ठाढ़ होला। एही से एह आचरन का राह में 'सम्यक दृष्टि'—ठीक दीठि (उचित नजरि) पहिला अंग मानलि बा।

देहज, आ मानसिक—मन संबंधी करम अउरी वचन वाला—दूइ किसिम कऽ होला। 'कुशल'—'अकुशल'—भला आ बुरा। एह दूनो के मजे में जानले ठीक दीठि कहाले। अकुशल कऽ जरि हऽ लालच, दोस, आ मोह। एकरा उलटा कुशल कऽ जरि हऽ—लालच ना; दोस ना आ मोह ना। एह करमन कऽ जथारथ ग्यान राखल जरूरी हऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. सम्यक संकल्प—ठीक निहचय। ठीक ग्यान भइल पर ठीक निहचय होला। निहचय कवना बातिन कऽ ? इच्छारहित होखे कऽ, वैर-विरोध-चिढ़-दुशमनी ना करे कऽ, आ अहिंसा—केहू परानी के कवनो तरह से दुख ना पहुचावे कऽ निहचय, जथारथ निहचय हऽ। इच्छे सभ दुखन के उपजावे वाली हऽ। एही से हरेक आदमी का एह बातन कऽ पक्का निहचय करे के चाही कि ऊ विसयन कऽ चाह ना करी; परानिन से वैर-विरोध ना करी आ केहू जीव कऽ वध ना करी, ओके कवनो किसिम से तकलीफ ना पहुँचायी।

३. सम्यक वचन—ठीक वचन—(जथारथ-भाखन)। झूठ, चुगुली, कठोर वचन, आ बकवाद—एह सभन के छोड़ल जरूरी बा। साँच से बढ़ि के दूसर धरम नइँखे। जवना वचनन से दूसरा का हिरदय के चोट पहुँचे, दूसरन कऽ निंदा होखे, बकवाद हो, उनके कवहीं ना कहे के चाही। वैर कऽ शांति कठोर बचनन से ना होले, बलुक विनय, शील आ अवैर से होले।[1]

४. सम्यक कर्मान्त—ठीक करम—हिन्दू धरम का समाने बउध-धरम में करम का विचारधारा के अधिका मरजादा दीहल बा। आदिमी का सुगति आ दुरगति कऽ कारन ओकर करमे होला। करमे का कारन जीव एक लोक में सुख-दुख भोगेला आ नरक-सरग कऽ भागी बने ला। पाँच करमन कऽ नेह नेम का साथ पालन जरूरी बा। इनहीं के पंचशील कहल बा। पंचशील ई हउँवनि—अहिंसा, सत्त, चोरी ना कइल, बरम्हचरज (बीज-धातु कऽ रच्छा) शराब वोगयरह नशइला पदारथन से बचल। इनकर पालन तऽ सभके करे खातिर कहल बा। इनके सभई का मानल चाही। एह सवतुक राह से बरकि के भागेवाला आपन जरि अपनहीं खोदे ला।[2] आतम-विजय अपना मन आ इनिरिन पर विजय पावले आदिमी का अनंतशांति कऽ आखिरी उपाइ हऽ। आतम-दमन—इनिरिन के विसयन का ओर जाये से रोकल—एह करमन का नेम कऽ पालन चाहे ला। आतमे आपन नाथ-सामी हऽ। अपना के छोड़ि के

---

१. 'नहि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ॥—धम्मपद–८।१

२. 'यो पाणमति पातेति मुसावादं च भासति।
लोके अदिन्नं आदियति परदारं च गच्छति ॥
सुरामेरयपानं च यो नरो अनुयुञ्जति।
इधेवमेसो लोकस्मिंमूलं खनति अत्तनो ॥—धम्मपद, १८–१२।१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आपन दूसर केहू सामी ना हऽ। अपना के वश में कइ लिहले पर जीव दुलभ परमपद पावे ला।[१]

५. सम्यक-आजीव—ठीक जियका। झूठ परपंची जियका छोड़ि के, साच सवतुक जियका से देहि कऽ पालल पोसल। बिना जियका के जीवन कायम राखल असंभव बा। मानुस भर (सभे) का देहि रइछा खातिर कवनो ना कवनो जियका-विरती अपनावहीं के परेला, बाकी तऽ ऊ जियका अइसन होखे के चाही कि जवना से दूसरा परानिन के न तऽ कवनो कलेश पहुँचे, आ न उनके मारे काटे कऽ मोका आवे। समाज वेकतिन का समूह से बनेला। आदिमी एक दूसरा का कयलान का भावना से जोर पा के आपन जियका अरजे में लागे तऽ समाज कऽ असली मंगल होला।

६. सम्यक् व्यायाम—ठीक कोशिश। जथारथ उतजोग। शुभ करमन के करे कऽ विचार ले आवे खातिर कोशिश करत रहे के चाही। इनिरिन पर संजम, खराब भावन के रोके आ अच्छा भावन के पैदा करे कऽ जतन, उपजल, अच्छा भावन के कायम राखे कऽ कोशिश—इहे सम्यक् व्यायाम—ठीक कोशिश हउवनि। बिना जतन-उतजोग कइले शुभ भावना दूर भागत जाली आ खराव भावना आसन जमावे लागेली। एह से ई उतजोग जरूरी होला।

७. सम्यक् स्मृति—ठीक इयाद (सुरता)। एह अंग कऽ भरपूर बरनन 'दीघ-निकाय' का महासतिपट्ठान सुत्त (२।९) में कइल बा। काय, वेदना, चित्त आ धरम का असल सरूप के जानल अउरी ओंकर सुरता (इयाद) राखल जरूरी होला। काय—मलमूँत, बार आ नोंहँ वोगयरह पदारथन कऽ मिलान भर हऽ। देहि के एह रूपन में देखेवाला आदिमी 'काये-कायानुपश्यी' (काया में काया भेद के देखे वाला) कहल जाला ! काया आ वेदना कऽ जइसन सरूप वा ओकर सुरता हरदम रखला से उनका में लगन पैदा ना होखे। चित्त उदासी बनिके बैराग का ओर आगे बढ़ेला आ सगरे बट्टुरि के एक जगहा ठहरे कऽ जोगिता पा ले ला।

८. सम्यक् समाधि—आरजसत्तन कऽ मजे में देखभाल कइला से साफ मालूम होता कि बउधदेव कऽ राह उपनिषदन का बतवला डहरि से दूसर नइँखे। उपनिषदन कऽ मत हऽ—'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' (बिना ग्यान के

---

१. अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परोसिया।
अत्तनो व सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं ॥—धम्मपद, १२।४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकती ना मिले)। बउधदेवो कऽ इहे विचार रहे। बाकी ग्यान का उदय खातिर देहि कऽ शुद्धि बहुत जरूरी होले। एही से बउधदेव जी शील, संजम नेम आ समाधि का जरिये धीरे-धीरे, सिलसिला से देहिशुद्धि आ चित्तशुद्धि पर अधिका जोर देले बाड़न। काहें से कि शुद्ध ग्यान तब तक पैदा ना हो सके, जबले ओके धारन करे कऽ जोगिता देहि में पैदा न हो जाय।

बउध-धरम कऽ तीनि गो मरजाद जोग तत्व बाड़न—शील, समाधि, प्रग्या (उत्तम ग्यान)। आठ अंगन वाली राह कऽ निशानी तीनो हउँवनि। शील कऽ असल मतलब सवतुक कारजन से बा। बउधदेव कऽ दूनो तरह कऽ चेला रहलन—घरबार तेयागी संन्यासी-भिक्खु आ गिरहस्त।

शील-समाधि कऽ फल होला—ग्यान कऽ उदय। भवजाल का जरि में अविद्या (अग्यान) बइठलि बा। जब ले उत्तम ग्यान (प्रग्या) कऽ उदय ना होखे तबले अग्यान का अन्हार (अविद्या) कऽ नाश ना होखे। साधना करेवाला कऽ परधान निशाना बोध-ग्यान के पावले होला। प्रग्या (उत्तम-ग्यान) तीनि तरह कऽ होला—[१] शुरूतमयी (श्रुतमयी) सिद्ध (आप्त) परमानन से पैदा भइल निहचय, [२] चिन्तामयी—गौर-गुनावन से जुगुती से पैदा भइल निहचय। [३] भावनामयी—समाधि से उपजल जथारथ (सवतुक) निहचय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बउधदेव कऽ तत्तुग्यान संबंधी विचार

बउधदेव रहन-सहन (चालिचलन) का राह कऽ शिक्षा देवहीं में अपना के हरदम लवलीन रखलन। अधियातमिक—आतमा, जीव, बरम्ह संबंधी असलियतन कऽ न तऽ ऊ खुद छानबीन कइलन न अपना चेलने सेवकन के एह बातन के खोजे खातिर बढ़ावा दिहलन भा उनकर होशिला बढ़वलन। बाकी तऽ उनका उपदेशन कऽ ठोस तत्तु-ग्यान वाली पोढ़ भीति नेंव का रूप में सिजिल बा, जवना पर ऊ ठाढ़ रहि के अढ़ाई हजार बरिसन से मानुस-समाज कऽ पुरहर कयलान करत आ रहल बाड़न।

प्रतीत्य समुत्पाद—हेतु-फल-परंपरा, कारन-कारज नेम। बउध-तत्तुग्यान कऽ ईहे आधार-आसन हऽ। प्रतीत्य—(प्र + इ गतौ + ल्यप्) कवनो बतुस का मिलला पर दोसर बतुस कऽ पैदाइश[1]। बउधदेव एतने कहलन—'अस्मिन् सति इदं भवति—एह चीज का होखला पर ई चीज होले। मतलब कि संसार का चीजन भा घटनन में सगरे ई कारज-कारन-नेम जागल सजग जनाता। एगो बतुस का रहला पर दूसर बतुस पैदा होले। बसुत कऽ पैदाइश बिना कवनो कारन कऽ ना होखे। कारज-कारन कऽ ई अनमोल नेम बउधदेव कऽ अपनी निजी खोज हऽ।

अविद्या—पहिला जनम कऽ ऊ दशा जेकरा में अग्यान, मोह आ लालच का वश में होके परानी (जीव) कलेश में बन्हाइल रहेला।

संस्कार—पहिला जनम कऽ ऊ दशा जेकरा में अविद्या (अग्यान-अन्हार) का कारन जीव (परानी) भला भा बुरा करम करे ला[2]।

अविद्या से संसकार—अविद्या से संसकार भा छापन कऽ जनम होला। छाप (संसकार) से चेतना कऽ जनम होला, चेतना (मन) के नावँ-रूप कऽ सिरिहिटी होले, नावँ-रूप से छव इनिरिन—आँखि, कान, नाकि, जीभि,

---

१. 'प्रतीत्य शब्दो ल्यवन्त: प्राप्तावपेक्षायां वर्तते। यदि प्रादुर्भावे इति सम्पाद शब्द: प्रादुर्भावेऽर्थे वर्तते। ततश्च हेतुप्रत्यय सापेक्षो भावानामुत्पाद: प्रतीत्यसमुत्पादार्थ:।

२. संस्कार के अर्थ में बड़ा मतभेद है। निकायों के अनुसार ऊपर का अर्थ है, परंतु चन्द्रकीर्ति ने इससे द्रोह, मोह तथा राग का अर्थ किया है। (माध्य० वृत्ति, पृ० ५६३) गोविन्दानन्द ने शांकरभाष्य टीका में इसी अर्थ को ग्रहण किया है (२।२।१९)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तचा, आ मन। एकरा लटका से मन में छव विसयन कऽ जनम होला, छव से संसरग (लगाव, संबंध) पैदा होला, संसरग से वेदना, वेदना से टिशुना; टिशुना से लगाव-लटका-लवलीनता पैदा होले। लवलीनता से होखल भा कारज कऽ जारी (क्रियमाणता) आ होखला से जनम, जनम से बुढ़ापा आ मउवति, शोग, रोवाई, दुख-विखाद अउरी निराशा वोगयरह पैदा होलन। एह किसिम से एह सभ दुख-गरोह कऽ कारन (निदान) बा। आगे चलि के अविद्या का विनाश से, जे से मतलब वासना कऽ बिलकुले लोप हऽ, संसकारन कऽ नाश होला, संसकारन का विनाश से चेतना कऽ नाश होला, चेतना का नाश से नावँ आ रूप कऽ नाश ह्रोला, नावँ रूप का विनसि गइले, छव बिसयन कऽ नाश होला, छव बिसयन का नाश से लगाव कऽ नाश होला, लगाव का नाश से वेदना कऽ नाश होला (मतलव कि सुख-दुख का भावन कऽ नाश होला), वेदना का नाश से टिशुना कंऽ नाश होला, टिशुना का नाश मे लव-लीनता (आसक्ति) कऽ नाश होला लवलीनता का नाश से होखला भा कारज का जारी रहला कऽ नाश होला, फारज का नाश से जनम कऽ नाश होला आ जनम का नाश से बुढ़ापा, मउवति, शोग, विलाप, दुख, विखाद, आ निराशा सभकर नाश हो जाला। एह तरह से एह सभ दुख-गरोह कऽ (से) छुटकारा बा।

एह लरि कऽ पहिली कड़ी अविद्या—मतलब कि अग्यान हऽ। हम (अहं) कऽ झूठ भाव बेकती कऽ असली आधार हऽ। ई करम कऽ साथी भा घींचेवाला आ ओकर जनमदातो हऽ। बेकती कऽ सुतंतर दम (व्यक्तित्व) अविद्या आ करम कऽ उपज हऽ, जइसे अगिनि कऽ लवरि आगि कऽ एगो चिनगारियो हऽ आ ओके बढ़ावेवाला ईन्हनो। अविद्या का परदा का करते जीवन कऽ सरूप, जे कि दुखमय हऽ, छिपल रहेला।

जे जथारथ ना हऽ ओके जथारथ समुझल अग्यान चाहे अविद्या हऽ आ एही से जीवन खातिर मोह उपजेला। ई हमन के जीवन धारन करे आ संसार का सुख कऽ भोग करे खातिर उकसावेला। जीवन का लालसा के बउधदेव जी नीच, मुरुखपना से भरल, नेति संबंधी बान्हन आ दिमागी पागलपन में सबले बढ़ि के बतवले बाड़न। अगर जो आदिमी का एह सांसारिक दुखन से छुट्टी पावे के बा तऽ झूठ इच्छा के जरि-शोरि सहित खतम करे के परी आ जीयत रहे का उमंग के दबावे के परी। पुराना बउध-धरम का मत में अग्याने गरूर भा हमिता (अहंभाव) कऽ कारन हऽ। एही का कारन एगो बेकती का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई खेयाल होखे लागेला कि ऊ बाकी सभ संसार से फरका बा जेकर संसार का बिधि-बेवहार भा इंतिजाम से कवनो नाता नइँखे। हमन अपना छोटमोंट जीवन में लवलीन रहीला, एकरा के हरदम बनवले रहे खातिर जीवजान से कोशिश करीला आ अंततक एके घसीटले चली ला, जइसे कि बनरी अपना मूवल बचना के मोह-ममतावश अंत तक घिसियवले चले ले जवले कि ओकर लाशि सरि के टूक-टूक छितिराइ ना जाय ! वेकती कऽ जीवन एगो पाप हऽ आ इच्छा ओकर बाहरी परगट रूप हऽ ! आदिमी दुखी एही से बा कि ऊ जीवन धारन कइले बा। कुल्हिये दुख कऽ जनम जीवन धारन कइल हऽ। अग्यान कऽ तागति एतना भारी बा कि आखिरी दुख का (अत्यन्त दुख) रहलो पर लोग जीवन में लगन (चाह) राखत पावल जालन ? लरि (शृङ्खला) कऽ दूसरि कड़ी संसकार (छाप) हऽ। संसकार शवद जवना धातु से बनल बा ओकर माने हऽ सजावल भा सिलसिला में राखल। ई पदारथो के बतावेवाला हऽ आ रचनो का तरीका के ! ई एहू बिसय के बतावेला कि कवना किसिम से सभई बतुस जे बनावल जाली, रचना कारजे में आपन दम राखेली आ सवँसे सत् चालू कारज हउँवनि। संसकार के परगट करेवाला शबद हउँवनि मिलावट-सटाव (संश्लेषण) चाहे हितकर कइल (अनुकूलीकरण)। करमो का भावे में संसकार शब्द कऽ बेवहार होला,—करम शुभ भा अशुभ—शुभ करमन खातिर आदर-पूजा भा इनाम मिले ला आ अशुभ करमन खातिर सजाइ, चाहे एह जनम में चाहे अगिला जनम में।

कारन-कारज संबंधी बान्हन में तीसरा बिसय हऽ चेतना, जेकरा से नावँ आ रूप पैदा होलन मउवति में जब कि दूसर तत्तु जइसे देंहि, विचार आ परतच्छ बोध सभ लोप हो जालन, विग्यान भा चेतना तबहूँ थिर रहेले अउरी ईहे पुराना आ नया जीवन के जोड़ेवाली कड़ी हऽ। एकर पूरा रूप से लोप (लिपाव) तबे होला जब हमन मुकुती (निर्वाण) पा जाईला। ई चेतने अइसन बिचवान हऽ जे पुराना परानी कऽ मउवति हो गइला पर नया परानी का जीवन कऽ असल तत्तु बनेले। ई असल तत्तु गरभ में ओह पदारथ के खोजि-लेला जवना से नया परानी कऽ जनम होला। अगर जो चेतना के उचित समान ना मिले तऽ ई खिलि ना सके।

(संवेदना) सुख-दुख का बोध से टिशुना मतलब कि विकट चाह पैदा होले जवना से हमन का एक जनम से दूसरा जनम में जाये के परेला ! ईहे जीवन आ दुख कऽ बलवान कारन हऽ; हमनी का जनम लेवे कऽ जोरदार टिशुना रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही से हमन ई जीवन धारन कइले बानीं ! हमनका सुख कऽ इच्छा करत बानीं एही से हमन के दुखो मिलत बा।

टिशुना का छय कऽ नावें मुकुती हऽ आ चीजन खातिर लवलीनता भा विकट चाह बान्हन हऽ। एह चपटला का खतम भइले पर आतमा पापमय जीवन से छुटकारा पा सके ले।

जीवन का साथ चपटले से 'भव' कऽ रचना होला। भव से जनम होला; जनम से बुढ़ापा आ मउवति, पीरा, विलाप, दुख-चिन्ता आ निराशा पैदा होले।

"आसरा जोहेवाला खातिर राति लमहर होले,
थाकल राही खातिर राह लमहर होले—
जे सचाई का जोति के ना देखे ओकरा खातिर वारंवार,
जनम-मरन का लरि कऽ पीरा वहुत लमहरि होले।"

ऊपर बउध-धरम कऽ एगो कहाउति दीहलि बा। एह संसार में हमनीं कऽ मानुस-जीवन एगो अनजान देश कऽ जातरा हऽ जेकरा समय के केहू जथारथ ग्यानी पुरुस कवहीं अधिका बढ़ावल ना चाही। बउधदेव हमन के भीतरी कलह-बखेड़ा में ले, जे मानुस जीवन कऽ एगो विलच्छन निशान हऽ, निकले कऽ राह बतावत बाड़न। बउधदेव का उपदेशन कऽ निशाना दुख से छुटकारा पावल हऽ। नेति-धरम (आचार-विचार) का जीवन कऽ मंशा एह विस्तारवाला ऐवी जीवन से बचि निकलल हऽ। परमपद (निरवान) तऽ सबले ऊँचा निशाना हऽ आ चालिचलन कऽ अइसन सभ विधि-नेम जे हमन के निहचित रूप से मुकुती का ओर ले जा ताड़न चाहे फेरु जनम लेवे का लटका कऽ नाश कर ताड़न, शुभ हउवँनि आ एकरा उलटा सभ काम पाप हऽ। करम खतम तब होलन जब कि पदारथन का जरिये सुख कऽ अनुभव कइल खतम होला। एह सुखका अनुभव कऽ अंत तब होला जब आदिमी जीवन का छनभंगुरता के पहचानि ले ला। हमन का आतमा का मिलावट के भंग करे कऽ कोशिश करे के चाही जेसे कि नई आतमन कऽ आगे रचना ना हो सके। "अइसन आदिमी जे तप से दूबर-पातर होके आपन बल गवाँ देले बा ऊ सचाई कऽ मदति ना पाइ सके। दू तरह कऽ अंतिम सिवान बाड़न, आ दूनों कऽ पाछ धइल जीवन-जातरा में लागल आदिमी का छोड़ि देवे के चाही, मतलब कि एक ओर बराबर वासना आ इनिरिन का सुख भोगन में लपिटाइल रहल, अउरी दूसरा ओर अपना देंहि के साँसति-फजिहति में डालि कलेश देवे में लीन रहल जे कि दुखदायी हऽ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीचता हऽ आ कवनो काम कऽ ना ठहरल।" तथागत एह दूनों का बीच एगो मद्धिम राह-बिचिली डहरि खोजि निकलले बाड़न। ई अइसन डहरि वा जे आँखि खोलि देति बा आ भला-बुरा के समुझे कऽ बुद्धि देति बा, चाहे जे शांति, ऊँच से ऊँच ग्यान के पावे खातिर भीतरी दीठि आ अंत में मुकुती (निरवान) का ओर हमन के ले जाति बा। असल में आठ ताग वाली आरज-राह इहे हऽ। एह आठ ताग का डहरि में बउध-धरम का बतावल नेति-धरम का जीवन कऽ निचोड़ भरल बा।

बउधदेव ओह समय का चालू रीति-रेवाज भा परथा का विरोध में परतछ रूप से लड़ाई ना छेड़लन, बाकी ओकरा में चालिचलन (नेति-शील) का नेमन कऽ पइठ कराके ओह परथन कऽ शोरि कवारे कऽ जतन कइलन।

बउध-धरम मंशा का पवित्तरता आ जीवन में विनयशीलता पर विशेस बल देता। जथारथ करम (सम्यक् कर्म) से जथारथ जीवन (सम्यक् जीवन) बनेला, जेकरा में झूठ, ठगी, धोखा दीहल आ चालाँकी के कवनो जगहा नइँखे।

जथारथ उतजोग-पराकरम (सम्यक् पुरुषार्थ) का ग्यान का बिना जोति ना मिलि सके, आ खाली एही से हमन का खीसि, डाह-जलन, घमंड आ बिसयन का लवलीनता कऽ नाश कइ सकीला। एहिजा तकले कि धारमिक गरूरो आचार-वेवहार का उन्नति में बाधा पहुँचावेला। असल में (सम्यक् पुरुषार्थ) जथारथ उतजोग वासनन के वश में राखल हऽ, जे से कि खराब बिचारन कऽ उदय न होखे। बुरा करम के भीतर आवे से रोकल आ दिमागी संजम आ चित्त का धीरता से सुकरम के पोढ़ कइले एकर मतलब बा। धरम मन का ऊपर निभर बा आ ग्यान धरम का वेवहार पर[१]।

बउध-धरम में पाँच-असकंधन (गिरोहन) का ऊपर ठहरल ग्यान कलपना के संवेदना का नावँ से पुकारल बा। मानुस मन का सबले ऊँच चालू कारज-धारे के प्रग्या कहल बा। आ धारमिक नजरि से एकर बहुते मोल मरजाद बा। बेसंदेह पाली धरम-शाहतर में आ विशुद्धिमग्ग में प्रग्यो के असकंधने (स्कंधों) का दरजा में ले आवे कऽ कोशिश कइल बा। सुत्तपिटक में एके विग्यान का साथ जोरल बा। अभिधम्म में एके संसकारन का भीतर राखल बा। कथा-वत्थु एकरा संबंध में एगो विरोधी-मत कऽ खंडन कइले बा, जे प्रग्या के एक

१. 'चित्ताधीनो धर्मो धर्माधीनो बोधिः।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरह, दइवीनयन (दिव्य चक्षु) कहि के एके रूप-असकंध का भीतर रखले बा। बुद्धघोस का समय में संग्या, विग्यान आ प्रग्या का जरिये आदिमी का भीतरी-दीठि का सहज आ टेढ़ अझुराह रूपन कऽ बोध होत रहे। ई सबका ले अधिका उचित ढंग कऽ कहनाम बा।

असकंध समुझल-बूझल (आनुभविक) विचार के झलकावेलन आ वेकती का ओह ग्यान का ऊपर जोर देलन जबकि ऊ अपना एगो दूसर दम में विसवास करत बा। बाकी जब वेकतिगत सरूप पूरन संसार का साथ एकता में बदलि जाला, परीच्छा कइल ग्यान कऽ जगहि प्रग्या लेले। बिना सुधरल जीव विग्यान के बढ़ावेला जबकि धरम-संसकार से संपन्न जीव प्रग्या के उन्नत करेलन। इनिरी-बोध से जथारथ भीतरी दीठि का दिशा में सिलसिलेवार आ धीरे-धीरे उन्नति होले। दूनों आपस में अलग आ एक दूसरा से सुतंतर नइँखन, लेकिन प्रग्या पहिले कहल विग्याने कऽ विसतार हऽ। प्रग्या बढ़ति-बढ़ति अन्त में बोधि, मतलब कि ग्यान का जोति, का रूप में बदलि जाले।

इनिरिन के दबवला से ना बलुक उनका सिखवन से, जवना से कि ऊ सचाई कऽ बोध कइ सकसु, मन सजसे सुधरे ला। पहिले कऽ दशा भीतरीदीठि कऽ आ प्रग्या कऽ हऽ, जेकर फल शांत-सरूप आ समाधि हऽ। ऊँचा से ऊँचा (चिन्तन) गुनावन कऽ नावँ धेयान हऽ; आ बउध-धरम में पराथना-पूजा कऽ जगहि ई धियाने ले लेले बा! धेयान एक किसिम से मन के सब मौजूद चीजन का साथ समता में ले आवे, कऽ सदई कोशिश हऽ। ई हमिता का भाव के दूर करे खातिर एगो मजबूत निहचय से पूरन पुरुसारथ हऽ, जवना से सत्तमय जीवन में मानुस अपना के लीन कइ सके।

निरवान (परमपद मुकुती)—निरवान शबद कऽ माने हऽ बुताइल आ ठंढा होखल। बुतइला से लोप भइला कऽ ईशारा बा। ठंढा भइला कऽ मतलब हऽ एकदम शुन्निभाव नाहीं बलुक खाली गरमी भरलि वासना कऽ विनशल। काम वासना, घिरिना आ अग्यान का नाशे कऽ नावँ निरवान आ मुकुति हऽ! "महातमा बउधदेव जी अंतिम मुकुती कऽ मतलब ई बतवले बाड़न कि ई चेतना का दोसरहित हालतन का बहाव का अलावें अउरी कुछ ना हऽ।"

हमरा अइसन मालूम होता कि केतने पुरान बउध धरमी आचारजन का मत में 'निरवान' कऽ माने बा सचाई कऽ पूरनता, अनंत परमसुख (कैवल्य) मतलब कि सांसारिक सुखन आ दुखन से बहुत ऊँचा पद कऽ परम-आनंद। मोच्छमूलर (मैक्समूलर) आ चिल्ड़रस निरवान-विसय कऽ (मुकुतीवाला)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेतना जगहा बाड़न सभकर सजसे खोज कइला का बाद एह नतीजा पर पहुँचत बाड़न कि—"एकहू जगहि अइसन नइखे पावल जात जवना में ई अरथ निकालल जा सके कि निरवान माने शून्नि-दशा भा अभावरूप दशा हऽ।" निरवान आतमा कऽ नित्त अवस्था हऽ; काहें से कि ई संसकार ना हऽ, अउरी न अइसने चीजन का जुटाव से बनल बा जे तिनदिनहा होखसु। ई हरदम रहे ला, खाली एकरा परगट होखे का ढंगन में फेर-बदल होला।

उपनिषदने का विचारकन का समान बउधदेवो निरवान पवले (मुकुत) पुरुसन का दशा का बारे में कवनो किसिम का खास समुझ के जगहा देवे के मना कइले बाड़न। बउधदेव का एगो टिकाऊ तत्तु से पकड़ा के (बाधित) मानहीं के परल—" हे चेला लोग, कवनो सत्ता बा जे अजनमा हऽ, पैदा ना कइल जा सके, बनावलि ना गइलि, न खिचड़ी रूप हऽ। हे चेले, जो एह किसीम कऽ कवनो अजनमा सत्ता ना होइति तऽ जे जनम लेले बा ओकरा छुटकारा कऽ कवनो राहो ना हो सकत रहे[१]।"

जो आतमा के खाली देंहि, मन आ गुन अउरी करमने कऽ खिचड़ी मानि लिहल जाय, तऽ जब सभे विनसि जालन तब अइसन कवनो सत्ता ना बाँची जेकरा कि मुकुत होखे के बा। हमन अपना इच्छन कऽ नाश कइ देईला, अपना करमन के भसम कइ देई ला, आ एह किसीम से हरदम खातिर लोप हो जाई ला! एह किसीम मे मुकुती शून्नरूप रहि जाई! बाकी 'निरवान' कऽ जीवन काल का बाधा से रहित जीवन हऽ आ एही से बउधदेव का एगो अकाल पुरुस भा आतमा का दम के मानहीं के परी।

ईश्वर का बारे में बउधदेव कऽ विचार—बउधदेव का समय में जवन धरम चलता रहे ओकरा मोताबिक आदमिन आ देवतन में लेन-देन कऽ रीति सभले ऊपर रहलि। उपनिषद कऽ बतावल बरम्ह तऽ ऊँच आ सेसर रहबे कइल, बाकी साथे-साथ अनगिनित देवता; आसमान कऽ गरह-तारा, नछत्तर आ पदारथी-तत्तु (भौतिक-तत्व), बिरिछ, पशु, परवत आ नदिनो के मानिता दीहल रहे। वे रोक-बान्हन वाला मनगढंत छूट का बल पर शायद संसार कऽ कवनो पदारथ देवतापन का खेयाली उड़ान से ना बाँचल, एहिजा तक ले कि एहू के काफी ना समुझि के ओही गिनती में विकट रूप वाला दानव, छाहीं रूप परेत आ केतने गढंत निशानों उनका साथ जोड़ि दीहल गइलन! एमे संदेह नइखे कि जहाँ तक विचार का छेत्र कऽ संबन्ध रहे, उपनिषद् एह सभन के

१. उदान, ८:३ आ इतिवुत्तक, ४३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छितिर-बितिर कइ दिहलन, बाकी करम-कांडन में तबहूँ इनकर दबदबा बनल रहे ! एह किसिम से अइसना आदमिन कऽ कमी ना रहे जे देवतन के सांसारिक सिरजनहार आ सबसे बरम्हांड कऽ शासन करता हाकिम बना डलन आ उनके एतना तक तागति दे दिहलन कि ऊ मानुस का भागियो के अच्छा-बुरा बना सकत रहलन ।

बउधदेव का अनुभव भइल कि देवतन का एह किसिम का भय के दूर करे; आ अगाही का कलेश-पीड़न के; चाहे मानुस-सुभाव का गिरल चालि-चलन के, जेकर झुकाव चापलूसी आ विनती से देवतन का मरजी के खरीदि लेबे का ओर रहे, हटा देबे कऽ बस एगो उपाय इहे हो सकत रहे कि सभ देवतने का खेयाल के हरदम खातिर खतम कइ दीहल जाय ।'आदि कारन' कऽ भाव हमन का अपना चालिचलन का बढंती आ सुधार में मदतिगार नइँखे हो सकत । एकरा से काहिलपना आ गैर जिम्मेवारी रूपी दुरगुनन के बढ़ावा मिले ला !

जो भगवान कऽ दया सबले बलवानि बा; जो एकरा बल पर एगो पापी छन भर में महातमा बनि सकत बा, तब सुभावन हमन के धारमिक जीवन आ चालि-बेवहार का सुधार का ओर ले विमुख रहे कऽ लालच घेरे ला । चालि-चलन कऽ बनावलो ओह दशा में बिलकुले बेकार साबित होई ।

बउधदेव ऊपर कहल चालू मत कऽ विरोध कइलन आ डुग्गी पीटि के कहलन कि पुन्नि आ सुख भा पाप आ दुख सुभावन एक दूसरा से जोराइल बाड़न ! तत्तुग्यान सम्बन्धी खेयाली उड़ान कऽ अनिहचित सरूप तऽ एक ओर बा जवना का करते अनेक तरह कऽ रचना रचे कऽ लालच आदिमी का सामने रहे ला, दूसरा ओर जतन-पुरुसारथ कऽ भरोसा जे जनता का मन में बइठल रहे आ जेकरा करते ऊ अपना पवरुख-उतजोग का ऊपर निभर ना रहि के सभ जिम्मेवारी देवतन पर छोड़ले रहे । अइसना दशा में बउधदेव इहे उचित समुझलन कि अपना शिच्छा के एही संसार का सिवान का भीतर राखल अधिका मोनासिब होई । एही विग्यानिक रीति कऽ सहारा लिहला पर न तऽ बिजली का घटना में कवनो देवता कऽ हाथ लउकत बा न अकाशे में कहीं देवदूतन कऽ पता मिलत बा । एह किसिम से घटनन कऽ परकिरती-सम्बन्धी अरथ लगवला से धारमिक भरम-धोखा दूर हो गइलन ।

करम का नेम-तरीका का मोताबिक हमन का रियाइत भा छूट, मन कऽ मौज आ सुछंदता सम्बन्धी सभ उड़ंछू विचारन के तिलांजलि दे दीहल जरूरी बा ! एह करम का विधि-नेम का सामने ईशर कऽ विभो आ दइब कऽ परभाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभे फीका परि जा ताड़न। करम का पेरना (दबाव) बिना कपार कऽ एगो बारो टूटि के ना गिरि सके। एह से एगो अइसना ईशर कऽ होखल ना होखल बराबर बा जे न तऽ अपना के करम का विधि-नेम का मोताबिक वना सकत बा आ न ओके बदलि सकत बा; न करम के पइदे कइ सकत बा न ओकरा में फेर-बदल कइ सकत बा।

ईशर का सत्ता (दम) का समरथन में जे बहुत पुराना समय से चलि-आवत तरक-दलेलि दियात रहे; पुराना बउध-धरमी ओह सभन कऽ खंडन कइलन। ई परमान कि जइसे एगो घड़ी अपना बनावेवाला घड़ीसाज कऽ इशारा करति बा एही तरे ई संसार एकरा बनावेवाला ईशर कऽ इशारा करत बा, उनका खराब मालूम होता। हमन का कवनो चेतन कारन (परमेसर) के माने कऽ जरूरति नइँखे। जइसे कि एगो बीया बढ़ि के आँकुर बनि जाले आ अंकुर गाँछ-बिरिछ का डाढ़ि का रूप में बदलि जाला, एही तरे बिना कवनो विचारशकती-संपन्न कारन भा बिना कवनो दइबी शासक के (जनम) सिरि-हिटी हो सकति बा !

करम कऽ इशारा—एह औजार का समान (यंत्रवत्) संसार कऽ दुखमय बोधे एकरा से छूटे कऽ एगो तेज चाह पैदा करेला। ई निराशा पैदा करेवाला विचार तबले जरूरी रूप से बनल रही, जबले कि पहिले कहल जथारथता कायम रहिहन। अधियातमिक-नासतिकता (ईशर, परलोक वोगयरह के ना माने कऽ बुद्धि) का अपना विचार का कारन बउधदेव उपनिषदन का विचार पर जोर ना दे सकत रहलन। उपनिषदन का मत में तऽ संसार एक तरह कऽ दइवी रचना हऽ जेके मानुस का आतमा का उन्नति खातिर बनावल बा। करम कऽ जरूरति आ आतमा कऽ जथारथता एकही सचाई के परगट करे कऽ दूइ गो दूसरि-दूसरि डहरि हऽ। उपनिषदन कऽ साफ शिच्छा, जेके माने से बउधदेव कहीं मना नइँखन कइले, बउधदेव का मत में पूरनता ले आवे खातिर जरूरी बा। उपनिषद आ बउध-धरम दूनो का मोताबिक, आदिमी का भागिये में बेचैन रहल, सनकी सुभाव भइल आ दुखी रहल हऽ। बाकी ई दुखे सब कुछ ना हऽ। उपनिषदन कऽ दलेल बा कि संसार का झुठाई कऽ झलक, चित्त कऽ डवाँडोलपना; एकर दुखे का रूप में अंतिम किनारा धइल आतमा का दम कऽ गवाह बाड़न। विरोध चीजन का भीतरी तह में बा, काहें से कि संसार अधियातमिक हऽ।

ई निहचिते बा कि बउधदेव जगत् के मंशा भा निशानाहीन आ दलेल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहित नइखन मानत। करम कऽ हुकुम आ शासन आदिमी के पवित्तर बनावे खातिर आ दवाई का रूप में बा। संसार हरदम ले नेयाव का लगन सरधा आ जथारथता का शासन में रहत आइल, अबहियों बा, आगहूँ रही।

उपनिषदन का ऊगे ले पहिले उनका पीठि का ओर वाली जगहि में जवन अधियातम-विद्या रहे, खाली ऊहे अइसन अधियातम विद्या रहे जे कि बउधदेव का आचार-वेवहार सम्बन्धी शासन कऽ उचित आधार बनि सकति रहे। बउध धरम खाली ओह विचारधारा का आन्दोलन कऽ एगो बादवाला रूप हऽ; जेकर पहिला रूप उपनिषद रहली। "उपनिषदन कऽ बहुत-सा गुनल-मँथल विचार बे संदेह शुद्ध बउध-धरम कऽ विचार हउँवनि भा ओके एह रूप में कहल अधिका जथारथ होई कि अनेक विसयन में बउध-धरम ठीक-ठीक रूप में ओही मतन के कारज कऽ रूप दिहलसि जवन उपनिषदन में सबूत का साथ बतावल रहलन[1]।" बउधदेव खुद अपना के कवनो नया मत भा विधिनेम कऽ थापक ना समझि के खाली पुरान डहरि कऽ फेरु से उद्धार करेवाला समुझत रहलन, अउरी ऊ डहरि उपनिषदन कऽ डहरि रहे। उपनिषदन का अनमोल शिच्छा आ सबँसे जीवन का एकता के बउधदेव मनलन। दूनो का नजरि में जीवन एक तरह कऽ मरजादावाली पुन्नि-जातरा हऽ जेकरा में नीचहूँ गिरि सकत बानीं भा ऊपरो चढ़ि सकत बानीं। दूनों मानत बाड़न कि निरकेवल सुतंतर परमसत्ता कऽ बोध बुद्धि से ना हो सके। बउधदेव कऽ दीहल परमसत्ता कऽ हालि कि ऊ न तऽ शुन्न हऽ, न अशुन्न, न दूनों, न दूनों से बिलकुल दूसरे; हमन के उपनिषदन का एही तरह का अनेक बचनन के इयाद करावत बा। बउध-धरम में आतमा, संसार आ एही तरह का दूसर सवालन का बूझ-विचार में हमके उपनिषदने का संदेहरहित कथन का शबदन कऽ बेवहार मिलत बा; जइसे कि नावँ-रूप, करम-विपाक, अविद्या, उपादान, अरहत, शरमण, बउध, निरवान, परकिरती, आतमा, निविरती वोगयरह! बउध-धरम उपनिषदन का तत्तुग्यान संबंधी मत कऽ, जे ओह समय तक कुछ थोरे भर चुनल लोगन तक पहुँचि सकल रहलन, जनता में परचार-पसार करे में मदति दिहलसि।

बउध-धरम का परचार कऽ मंशा ई रहे कि उपनिषदन का नमूना विचार धारा के ओकरा उत्तम रूप में मानि के, ओके मानुस जाति का दिन-दिन का जरूरतन खातिर मशरफ कऽ बना दीहल जाय[2] इतिहासिक बउध-धरम से मतलब बा कि उपनिषद कऽ जन साधारन में परचार। एह किसिम से बउध-धरम

---

१. मैक्समूलर—'सैक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट', खंड १५; भूमिका, पृष्ठ ३७।
२. देखीं होम्स, 'द क्रीड आफ बुद्ध'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना पाछे एगो अइसन तरका (उत्तराधिकार) छोड़लसि जे आज तक जीयत बा। एह तरह कऽ समान जनता का हित-लायक महान् फेर बदल हिन्दू जाति का इतिहास में बराबर होत रहल बा। ओह समय में जब कि महान रिखी-मुनियन कऽ खजाना रूप गरंथ कुछ लोगन कऽ निजी संपति बनि गइल रहलन, तब महान् वैश्नव-संत रामानुजाचारज ओह गूढ़ धरमपोथिन कऽ अछूत समुझल जाये वाली जातियनों में परचार कइलन। हम कहे खातिर कहि सकत बानीं कि बाभन धरम कऽ अपना असली मतन में लवटि आवे कऽ नावँ बउध-धरम हऽ।

महान् विचारक डा० राधाकृष्णन का शबदन में बउधदेव कवनो अइसन करांतिकारी ना रहलन कि उपनिषद का मत का बदलारूप में नयी लहरि चला के जश आ सफलता पवलन; बलुक उनकर मंशा एगो सुधारक का रूप में उपनिषद का चालू ढाँचा में फेर-बदल कइके ओकरा में बतावल गइल सचाइन के, जे कि भुलवा दीहल रहली, फेरू से परधानता में ले आइल रहे।

एगो अइसना देश में जहाँ हजारन बरिस ले अधिका समय तक पुरानन कऽ फइलावल आ थापित कइल धरम एगो चालू धरम का रूप में रहल होखे, बउध-धरम के ओकर जरि खोंखड़ करे में सफलता मिलि गइलि आ एतने नाहीं बलुक लगभग दू सइ बरिसन में ऊ भारत कऽ राजधरम हो गइल। इसलाम आ ईसाई धरम नियर परचारक धरमनों के संसार का कवनो भाग में अइसन विचित्तर सफलता ना मिललि! ईहो ना कहल जा सके कि बउधदेव जनता का जोश आ मन का पच्छपातन के भड़कावे में मदति कइलन। ऊ आतमा का पापमोचन खातिर कवनो अइसन ससता नुसखो ना बतवलन आ न मुकुती के लिलाम का बोली पर चढ़वलन।

बउध-तत्तुग्यान के धरम का रूप में सफलता मिले कऽ कारन रूप तीनि रतन बाड़न (१) बउधदेव (२) धरम आ (३) संघ। मानवता कऽ मीत, चमकीला इनिरीजीत वीर बउधदेव कऽ आपन अपूरब चालि-वेवहार नेति सुभाव आ सबँसे जीवन, आदमिन का सुभाव पर विचित्तर असर डाले।

एह धरम-थापक का चालि-वेवहार का विसय में भारी विदमान बार्थ लिखले बाड़न, "हमन का अपना आगा ओह सराहे जोग मूरति के सुघर सुच्छ रूप में राखे के चाही···जे शांत आ मधुर तेज-ताप-परताप कऽ, वोगयरह जीवन खातिर गाढ़ नेह कऽ आ दुखी परानिन खातिर दया कऽ पूरा नेति-धरम संबंधी सुतंतरता कऽ आ हर किसिम का पच्छपात से एकदम दूर सुभाव कऽ परगट उदाहरण बा[१]।"

१. द रिलिजन्स आफ इंडिया, पृ० ११८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ऊ कबहियों कयलानकारी बानीं उचित-अनुचित का विचारवाली भासा का बिना ना बोलल जनलन । ऊ संसार कऽ जोति-खंभ रहलन।" अगर जो अइसन दइवी पुरुस का हिरदय कऽ विशालता आ चालि-बेवहार संबंधी (नैतिक) बड़ाई आ उत्तमता जनता का खेयाल के अपना ओर ना घिंचितन तऽ जरूरे अचरज कऽ विसय होइत। मानुससमाज भर का भाईचारा कऽ विचार जातिपाँति का जुलुमो अनेति के ढील कइ दिहलसि। संघरूपी मंडली आ एकर शील-विनय संबंधी शिच्छा हुकुम बहुत का गिनती में जनता के अपना ओर खिंचलसि। बउध भिक्खु लोग, अपना थाप के नियर सचाई का परचार खातिर सब कुछ तेयागि दीहल।

एगो अइसना समय में जब कि खून से सनाइल जग्यन कऽ पूरा परचार रहल आ उनके उचित मानल जात रहे, सिरिहिटी भर खातिर दया कऽ शिच्छा बड़ असर पैदा कइलसि। रीति-बान्हन कऽ विरोध बउधदेव का मत के जनता से अपनावल जाये में अधिका मदति दिहलसि! बउधदेव का उपदेशन कऽ विचित्तर मरजादा उनका एह बचनन से जाँचल जा सकति बा, "एह संसार में घिरिना से घिरिना शांत ना होखे, घिरिना प्रेम से शांत होले।" कवनो आदिमी लड़ाई में एक हजार आदिमी पर विजय पाइ सकत बा, बाकी जे अपना पर विजय करे ला ऊहे असल विजयी हऽ।" "आदिमी का चाही कि ऊ दया का बल से खीसि पर विजय पावे आ पुन्नि से पाप पर।" "जनम से नाहीं बलुक चालि-बेवहार का जरिये आदिमी नीच भा बाभन होला।" "अपना शुभ करमन के छिपा के राखीं आ अपना पाप करमन के जे के रउरा कइले बानीं उनके दुनियाँ का आगा मंजूर करीं।" "अइसन कवन आदिमी बा जे पापी पुरुस खातिर ओकरा पाप मंजूर कइला पर टेढ़ बचनन कऽ बेवहार करी—कटइला पर निमक छिरिके कऽ कारज करी?" बउधदेव का समान, केहू दूसर कबहियों हमन का कानन में एह किसिम का गंभीर बानीं का जरिये कयलानकारी चालिचलन का आदर मान के ना गुँजावल। बउध-धरम के एतना नीमन सफलता एह से मिलिल कि ई प्रेम कऽ धरम रहे। ई अइसना सभ चुप्पा ताकतनि के, जे पुरानी परथा आ रीति रेवाजन से भरल धरम का विरोध में कारज करत रहली, बानी दिहलसि, ई गरीबन, नीच-दरजा का पिछड़ल लोगन आ अइसनो लोगन के जिनके तरफा (उत्तराधिकार) में कुछ ना मिलल रहे, आपन सनेश सुनवलसि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-धरम कऽ अनेक मत आ मंडली

बउधदेव का जिनिगिये में उनका चेलन में मतभेद कऽ लच्छन लउके लागल[1] रहे, जदपि कि उनका तप-तेयाग आ परभाव का कारन दबल रहल। बउधदेव का मरला का बाद ऊ जोर पकड़लसि। हीनयान-मत वालन कऽ विसवास हऽ कि थेरवाद आ तीनि पिटक एकही हउँवनि। जइसन कि ऊ एह समय लंका में पावल जालन आ जिनके राजगिरिह का पहिली धरम-महासभा (संगीति) में जोरि-बटोरि जमा कइल रहे। पहिली महासभा में बहुत विरोध भइलो पर तपसी जीवन का कड़ाइन के नरम करे कऽ कोशिश कइल गइल आ नेमन के नरम बनावेवाला कुछ फेरबदल कइल गइलन। पहिली सभा का करीब सइ वरिस बाद वैशाली में एगो दूसरि सभा भइलि। ई सभा विनय-पिटक का आगम भाग आ जुगुती भाग पर विचार कइलसि, जवना में संघ का नेमन आ एह विसय पर बहस भइलि कि कुछ छूट देवे के चाही कि नाहीं। बहुत लड़तम-झगड़तम असथविर लोग[2] छूट देवे का सवाल के गलत साबित करे में सफल भइल। आगे बढ़ेवाला नई सूझ-बूझ वाला दल में भा महासांघिकन में; जिनकर हारि भइलि, अइसना लोगन कऽ गिनती वेशी रहलि जे कि उनकर समरथन कइलन।

बउधदेव का परमपद का अढ़ाई सइ बरिसन का बाद जब मोरिय महाराजा अशोक बउध-धरम के मनलन तब बउध-मत कऽ बहुत जोर से विसतार भइल। जवन बउध-मत बउधदेव का मरला का बाद करीब तीनि सौ बरिसन तक हिन्दू धरम कऽ खाली एगो शाखा भर रहे, अब अशोक का जतन-पुरुसारथ से संसार-धरम (विश्व-धर्म) का रूप में बदलि गइल।

पाटलिपुत्र का तीसरी संगीति (धरम-सभा) का बाद बउध-मत तेजी से बढ़ल। ऊ काशमीर आ लंका में पइठल आ कले-कले नेपाल, तिब्बत, चीन जापान अउरी मंगोलियों में फइलि गइल। बउध-संघ का बढ़त मान-मरजाद का कारन संदेह में भरमलो भटकल अनेकन लोग एने घिचाइ के एकरा में पइठलन। तिसरी धरमसभा (संगीति) पाटलिपुत्त[3] में मोगलिपुत्ततिस्स का

१. देवदत्त का कोशिशन पर धियान देईं।
२. पाली थेर।
३. ३०९ बरिस वि० पू० में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुखियागिरी में भइलि जेकर मंशा मतन (सिद्धान्तों) के शोधल आ शुद्ध बनावल रहे। भारत कऽ नया शासक जइसे जवन, शक, छत्तरप, सातवाहन, पहलव आ कुशान वोगयरह, जिनका में ले कई विदेशी रहलन, बउध-धरम के जल्दी मानि लिहलन ! जदपि कि ओहू समय बाभन-धरम कऽ मानेवाला कट्टर लोग दक्खिन आ पच्छिवँ में मौजूद रहलन, तवहूँ अधिकांश जनता बउध-धरम माने वाली रहे। गुपुतवंशी राजन का समय (करीब ३७६ वि० सं०) में बाभन-धरम कऽ फेरु उदय भइल। शिव आ विशनू कऽ धारमिक पूजा चालू हो गइलि। बउधन का परमुख पराकिरित (पालि) पर संसकिरित कऽ कबजा हो गइल। धीरे-धीरे बउध-धरम बाभन धरम कऽ नकल कइके बउधदेवो के एगो देवता का रूप में मानि लिहलसि। बउधदेव कऽ मूरति थापित भइली, एगो देंहधारी सत्ता खातिर भगती कऽ उदय आ बढ़ंती भइलि आ कनीसक कऽ समधी नागारजुन एह तरह का बउध-धरम के एगो नया रूप दिहलन, जेकर नावँ महायान परल, जदपि एह समय ले पहिलहूँ ई आपन रूप बनावत रहल। महायान-मत ओह आन्दोलन कऽ हद रहे जेकरा करते महासांघिकन का थेरवाद छोड़े के लचार होखे के परल रहे। पुराना बउध-धरम कऽ घटती, महायान-मत कऽ बढंती आ बाभनधरम कऽ फेरु उदय ई सभ एकही समय में भइल। महायान-मत-मंडली कनीसक का समय में जुटल धरम-सभा का बनावल धरम-नेमन के माने ले। असली मत (मौलिक-सिद्धान्त) के बहुत बढ़ा दिहल गइल, ओ में नयी बाति जोड़इली आ चालू जादूटोना अउरी झूठ विसवासो ओकरा में काफी मातरा में जोरि दीहल गइलन। महायान-मत (सम्प्रदाय) बउध-विचारधारा (सिद्धान्त) के गूढ़, परमारथी आ सरधामय रूप में बढ़ावत रहे। लंका आ बरमा में हीनयान कऽ परधानता बा आ नेपाल अउरी चीन में महायान कऽ परधानता।

हीनयान बउध-मत का मोताबिक सभ पदारथ छनभंगुर (अनित्य) हउँवनि। थिर कहाये वाली वतुसन—जइसे देश आ निरवान कऽ कहीं दम (अस्तित्व) नइँखे। ई खाली नकाररूप भावन कऽ नावँ हउँवनि। सभ रचना छनिक बतुस हऽ जिनके धरम कहल जाला। सोचे वाला केहू अलगा नाहीं हऽ, खाली विचारे हऽ बोध करे वाला केहू नाहीं हऽ, खाली अनुभवे (संवेदनायें) हउँवनि। एह जीवन कऽ निशाना निरवान (मुकुती) पावले भा चेतना कऽ ठहराव हऽ। सभ चेतना कवनो बतुस कऽ बोध (अनुभव-संवेदना) हऽ आ एही से बान्हन कऽ कारन हऽ। हीनयान में निरवान का बाद का बाँचल रहेला, एह विसय का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो खेयाल के जगहा नइँखे। आतमा आ संसार दूनो झूठा हउँवनि। परम-पद चाहेवाला का केहू से प्रेम ना करे के चाही। तेज वैराग आ कठिन तप अरहत बने खातिर जरूरी बाड़न। अरहत कऽ माने वैदिक-मत का मोताबिक जीवन-मुकुत होला। हीनयानी जथारथवादी हउँवनि।

असल में बउध-तत्तुग्यान कऽ चारि गो परमुख धारा बाड़ी—(१) वैभा-सिक (२) सौत्तांतिक (३) जोगाचार-विग्यानवाद (४) माद्धमिक-शुन्निवाद। ई दल आ पाँति कऽ बँटवारा 'सत्ता' (दम) का अनमोल सवाल के लेके कइल बा। जगत् में बाहरी बतुस कऽ खंडन नइँखे कइल जा सकत। जवना चीजन के लेके हमार जीवन बा उनकर सचाई खुदे साफ परगट बा। एह किसिम से बाहरी-अरथ के परतछ रूप से साच माने वाला बउधन कऽ पहिली मत-मंडली हऽ जे वैभासिक कहाले। एकरा आगे कुछ विचारक अउरी आगे बढ़त बाड़न। ओह दूसरा दल कऽ कहनाम ई बा कि बाहरी चीजन कऽ हमन का परतछ ग्यान ना होखे। जब सभ चीज छनिक बाड़ी तऽ कवनो चीज कऽ परतछ ग्यान संभव नइँखे। एह से बाहरी अरथ कऽ दम (अस्तित्व) तऽ अंदाजी केयास (अनुमान) पर बाटे। ई बउधन कऽ दूसर दल हऽ जे के सौत्तांतिक (सौत्रांतिक) कहल जाला।

तीसरा मत बाहरी-अरथ (बाह्यार्थ) कऽ दम (सत्ता) मानते नइँखे। एह दल कऽ मत हऽ कि बाहरी पदारथन (द्रव्यों) वाला संसार झूठा हऽ। बस एगो चित्ते कऽ सत्ता भर बा जेकरा तरह-तरह का छाया के हमनी जगत् का नावँ से पुकारी ला। चउथा मत कऽ कहनाम बा कि जइसे बाहरी रूप कऽ कवनो दम (अस्तित्व) नइँखे तइसे विग्यानो असत् हऽ। शुन्ने परमारथ हऽ। जगत् कऽ सत्ता बेवहारिक हऽ। शुन्न कऽ सत्ता (दम) परमारथिक हऽ। एह मत के मानेवाला शुन्नवादी भा माद्धमिक कहाला। एह चारो मत-मंडली में वैभासिक कऽ सम्बन्ध हीनयान से बा आ बाकी तीनि कऽ महायान से। ई तीनों सत्ता (दम) का विसय में दूसर-दूसर मत रखलो पर महायान का सहजमत के मानेलन। निरवान का मरजादा वाला भारी विसय पर एह मतन कऽ विशेखता एह तरह से देखावल जा सके ले—

वैभासिक भा पुरान मत—संसार साच; निरवान साच।
माद्धमिक—संसार झूठ; निरवान झूठ।
सौत्तांतिक—संसार साच; निरवान झूठ।
योगाचार—संसार झूठ; निरवान साच।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महायान कऽ उदय आ बढंती हीनयान का बदला में विरोधी भावना कऽ फल रहे। हीनयानी भिक्खुन का कठिन तपसाधना से लोग विमुख होखे लागल। अशोक से कनीसक का समय तक जवन भाव छिपे-छिपे काम करत रहलन ऊ महायान का रूप में परगट हो गइलन।

हीनयान एगो बरन-विहीन (जाति-रहित) धरम हऽ जे विचार का रूप में तऽ ईशर कऽ खंडन करत बा बाकी कारजरूप में बउधदेव का पूजा कऽ हुकुम दे देता। ई सरग आ नरक का उडंछू खेयालो के मानत बा। हीनयान में हिरदय आ ओकरा भावन खातिर जगहा ना रहे; न प्रेम आ भगती कऽ आदर रहे। महायानी लोग कऽ कहनाम बा कि बउधदेव का असली शिच्छा के ऊहे लोग जानल-चीन्हल। महायान-मत में प्रेम आ भगती कऽ जगहा बनावे कऽ जतन भइल। एमें सन्देह नइँखे कि बउध-धरम का एह फेर-बदल में दूसरा धरमन से आइल मनवइयन कऽ काफ़ी हाथ रहल। ई लोग बउधदेव का शिच्छा में कुछ बाहरी अंश मिला के जनता खातिर रुचिकर बना दीहल। ई लोग बउधदेव के भगवान बना दीहल। उनके 'धरम-काय' कऽ नावँ दीहल गइल। धरम कऽ मूरति रूपे भगवान बउधदेव हउँवनि। महायान में अरहत का बदला बोधिसत्त (बोधिसत्व) कऽ नमूना राखल गइल। हिन्दू धरम का अवतारन नियर संसार का कयलान खातिर 'धरम-काय' बोधिसत्त परगटेलन। बउधदेव संसार में साधना करे ना आवसु बलुक दुखी लोगन कऽ प्रेमे उनका अवतार कऽ कारन हऽ। 'जब तक संसार कऽ दुख से छुटकारा ना होई तबले हम आपन परमपद ना मंजूर करबि'; ई बोधिसत्तु कऽ परतिग्या हऽ। एह तरे बउध-धरम हिन्दू धरम कऽ रोचक रूप धारन कइके उन्नति कइलसि। आ फेर करीब-करीब हिन्दू धरम का समान भइला से आपन खास खिंचाव खो दिहलसि। एने बाभन लोग बउधदेव के आपन अवतार मानि लिहल, ओने महायानी हिन्दू धरम कऽ विरोध कइल छोड़ि के राम-किशुन का पूजा के जायज मानि लिहलन।

मानुस का जीवन में जीवन से विराग आ असंतोखे सब कुछ ना हऽ। जथारथ तपसी जीवन संसार का दुख से एकदम विमुख ना होखे, बलुक ऊ जीवन का हल्ला-गूहृ से भरल हलचलो में मौन भाव से एगो नाभ (केन्द्र) तइयार करत रहेला। हमन का एतना भर धरम-परायन होखल उचित बा कि खाली एकांतवासी कुटिये आ शांत दशा भा जगहा (वातावरण) में नाहीं, बलुक संसार का हलचल का बीचो हमन अपना आतमा के वश में राखि सकीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हीनयान बढ़ि के अवतारवाद का उडंकू खेयाल (कल्पना) के जनम दिहलसि जेकर आधार चालू वहुदेवतावाद रहे। देवतन कऽ कलपना खाली एह मंशा से कइल गइलि कि धियान आतमा के वश में राखे कऽ जरूरी सीढ़ी हऽ। इतिहासिक पुरुष बउध देव के दइबी महिमा वाला मानल गइल। एतने नाहीं कले-कले उनके देवता कऽ रूप दे दिआइल। जथारथ में बउधदेव खाली एगो धरम-परचारक आ सचाई के देखेवाला रहलन। ऊ न त दइवी हउँवनि न विचित्तर (अमानुसी)। ऊ दूसरा साधुसंतन से एह अंश में दूसर बाड़न कि अउरियो लोग आतम-ग्यान (वोधि) के पावल जब कि बउधदेव खाली मुकुती-संबंधी सचाई कऽ खोजे भर ना कइलन बलुक संसार भर का कयलान खातिर ओके डुग्गी पीटि के कहलन। सनातन हीनयान-मत में बउधदेव खाली एगो अदिमिये रहलन, दूसरा आदमिन का समान। भेद खाली एतने रहल कि उनका में अउरी सभ से बढ़ि के बिलच्छन बुद्धि कऽ चमक (प्रतिभा) आ भीतरी पेरनो-शक्ती अधिका रहे। बउधदेव कऽ पूजा उनका शुभ-सुमिरन कऽ एगो विधि रहे।

अशोक का समय से लेके कनीसक का समय तक जवना विचारन कऽ बढंती आ बिसतार भइल आ जे ओकरा बाद परगट रूप में सामने अइलन उनहीं से महायान बउध-धरम कऽ रचना भइलि। एगो अरुचिकर आ प्रेम-हीन तत्तु-विग्यान; जे धारमिक शिच्छन से बिलकुल रहित हो, अधिक समय तक जनता के उतसाह आ खुशी कऽ पेरना नइँखे दे सकत। हीनयान बउध-मत मानुस-का आतमा का, कवनो वेशी ऊँच सत्ता का खोज में रहे वाला सुभाव का ओर ले एकदम मुँह मोरि के धरम-पच्छ खातिर अनियाव कइलसि।

आचार-बेवहार कऽ (नैतिक) जीवन में संसार से एकदम वेलाग हो के विहारन में जा बइठे कऽ सुभाव, आ जीवन का सभ बेवहारन अउरी सुखन कऽ बिगड़ल ढंग से दमन; चाहे सुभाविक जीवन कऽ बिलकुल विनाश मानुस-सुभाव खातिर असंतोख पैदा करेवाला साबित भइल। आदिमी जवना संसार से भागि निकले कऽ कोशिश करत बा, ओकरा साथे जकड़ि के बन्हाइल बा। अगर अचेतन जड़ का गुलामी से मुकुत भइला कऽ मतलब आतमा कऽ बिलकुले लोप होखल हऽ त मउवते हमार निशाना (लक्ष्य) हउवे। बउधदेव कऽ मतलब अनातम पर विजय पावल रहे न कि ओकर विनाश कइल।

महायान मत के मानेवालन कऽ कहनाम बा कि बउधदेव कबहीं तप करे कऽ परचार ना कइलन। मुकुती पवलो पर ऊ संसार का ओर ले आपन आँखि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंद ना कइ लेसु बलुक ओके अइसन जोति देसु जेसे कि ऊ अपना निशाने (लक्ष्य) पहुँचि सके। हीनयान कऽ रोकावट वाला (निषेधात्मक) नकारी-तत्तुग्यान एगो चालू आ सभका माने का जोग धरम ना बनि सकत रहे जब बउध-धरम सभ देश आ सभ समाज का भेदरहित धरम कऽ रूप धारन कइ लिहलसि आ सभलोग ओके अपना लिहल तऽ हीनयान से काम ना चलि सकत रहे। एगो अइसन धरम कऽ माँग भइल जे हीनयान ले अधिका ऊँचा दिल आ रुचिवाला हो आ कम से कम तेयाग कऽ नमूना जनता का सामने राखि सके।

"हीनयान माने छोटनाइ आ महायान कऽ मतलब बड़नाइ (भा संसार-सागर के पार करे कऽ साधन)। महायान सभ जीवन खातिर आ सभ लोगन में सरधा, प्रेम आ ग्यान का जरिये परमपद पावे कऽ निहचित वेवहारिक विचार सामने पेश करत बा। जबकि हीनयान कुछ थोरे सा समरथी आदिमियने खातिर हऽ, जिनका कवनो बाहरी धारमिक सहायता भा पूजा का तिरपिती कऽ (अघाये कऽ) जरूरति नइँखे; ऊ चंचल जीवन रूपी सागर के पार कइके दूसरा किनारे निरवान (मुकती) तक पहुँचे खातिर एगो नाइ जुगावत बा। हीनयान निरगुन बरम्ह का ओह उपासना (पूजा-ध्यान) करवइयन का अनजानी डहरि नियर बहुत कठिन बा; जबकि महायान कऽ बोझ हल्लुक बा आ मानुस खातिर एह विसय कऽ नेम (विधान) नइँखे करत कि ऊ तुरंते संसार आ ओकरा साथ ही मानुस भर का साथ सभ तरह का संबंधन कऽ तेयाग कइ दे।

हीनयान ग्यान का संचे (जमा) पर जोर देता आ निजी (व्यक्तिगत) मुकुती के निशाना राखत बा आ निरवान (मुकुती) का गूढ़ भेद के निहचित रूप में परगट करे-बढ़ावे कऽ मनाही करत बा; महायान ओतने बलुक ओह ले कहीं अधिका जोर प्रेम का ऊपर देता, आ हरेक चेतगर नावँधारी परानी खातिर परमपद (मोक्ष) का इहिट (उद्देश्य) कऽ जुगुती करत बा साथ हीं निरवान का अंदर बस एक हीं अइसन जथारथ शकती (सत्ता) के देखत बा जे कि शुन्न हऽ; एह अरथन में ई हमन का बोध-ग्यान (आनुभविक, परीक्षित) का सभ तरह का मरजादन से छुट्टा बा[१]।" एकर मतलब कि मन आ बुद्धि का पहुँच ले बहरी बा[२]।

---

१. कुमारस्वामी, 'बुद्ध ऐन्ड द गास्पैल आफ बुद्धिज्म, पन्ना २२६-२२७।

२. 'नैषा तर्केण मतिरापनेया, भा "नायमात्मा प्रवचनेन···न मेधया···बहुना श्रुतेन।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ एक ओर हीनयान आतमा के छनिक तत्तुन कऽ मिलावट समुझत बा; ओहिजा महायान कऽ मत बा कि ई तत्तुवो जथारथ ना हऽ। एकरा मतलब इ ना हऽ कि कुछऊ जथारथ ना हऽ। एगो अधियातमिक आधार मानि लिहल बा। एह जथारथता के सत्ता-सासतर का नजरि से 'भूततथता' भा सत्ता (शक्ति, दम) कऽ सत्त नांवँ दीहल बा। धारमिक नजरि से एके 'धरम-काय' कहाई। ई सभका ले ऊँचा तत्तु हऽ जे सभ विरोधन में मेल (समन्वय) करावत बा। एही के निरवानो कहल जाला। काहें से कि ई छितिर-वितिर हिरदय के बड़ी तागति देला। ई वोधि भा प्रग्या (अपरोच्छ ग्यान-जथारथ-ग्यान) हउवे। ई संसार का गति-विधि के चलावेला आ सब कुछ के रूप देला। 'तथता' कऽ माने हऽ 'तथा' (जइसन बतुस होखे ओही तरह कऽ दशा) कऽ भाव।

संसार का सभ धरमन कऽ नित्त टिकाऊ (स्थायी) धरम तथते हऽ। 'तथता' कऽ माने हऽ अविकारी तत्तु; मतलब कि ऊ पदारथ जवना में कवनो किसिम कऽ विकार ना पैदा होखे। तथता कऽ इहो माने हऽ कि सुख-दुख का खेयाल (कल्पना) से विलकुले मुकुत दशा, जेके पवला पर भगवान बउधदेव तथागत का नावँ से मशहूर भइलन।

महायान कऽ अधियातम विद्या सरूप में अदुवइतवादी (अद्वैतवादी, वेदांती) हऽ। संसार कऽ सभ पदारथ एक ही जथारथ सत्ता कऽ रूप हउँवनि। एह जथारथ सत्ता (शकती) का सरूप कऽ न भाषा वरनन कइ सकेले न एकर टीके-टीपनी कइल जा सके ले।

परमसत्ता बिना कवनो सहारा कऽ सुतंतर हऽ, सरूप आ पदवी से दूर हऽ, ई अपना आप में सत्त हऽ आ सभकर आदि सोत हऽ। देखाई परे वाला जगत छाया भर हऽ, असल ना हऽ। एकर तुलना एगो सपना का साथे कइल बा; जदपि कि ई विना जरूरति कऽ ना हऽ। महायानी बउध लोग संसार कऽ पटतर माया से देला जे मिरिगटिशुना हऽ। बिजुली का चमक का समान हऽ, आ फेन नियर बेतत्तु (सार) कऽ बतुस हऽ।

जहाँ तक महायान कऽ संबंध बा, एकरा आ भगवतगीता का धरम का बीच कवनो भेद नइँखे मालूम होत। धरमकाय कऽ परमारथविद्या संबंधी विचार भा सत्ता मातर (मात्र) कऽ ऊँचा आधार गीता का बरम्ह से मिलत बा जवना तरह से किरशुन (कृष्ण) अपना के सबका ले बड़े बतावत बाड़न ओही तरे बउधदेवो के सबले सेसर ईशर बना दियाइल। ऊ एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधारन देवता ना हउँवनि, वलुक 'देवातिदेव' देवतन में ईशर[१] हउँवनि। ऊ सभ बोधिसत्तन कऽ सिरजनहार[२] हउवँनि। महायान में निरवान पर बल ना दीहल गइल; बोधि-सम्पन्न (जयारथ ग्यान सम्पन्न) संत कऽ पदवी पावे का ऊपर जोर दीहल वा। निरवान आतमा कऽ मुकुती हऽ। निरवान कऽ अरथ हऽ फेरु जनम लिहला का बान्हन से बरी होखल[३]; जीवन का लरि के काटि-गिरावल[४], इच्छा, डाह आ अग्यान के जरि सहित नाश कई दीहल[५]; भा एगो माया-रहित (निरुपाधिक) परानी[६]।

वउध हो जाये कऽ मतलब सत्तरूप में अनन्त का साथ एकता कायम कइल हऽ। अस्सुघोस पूरन-दशा कऽ एह तरह से बरनन करत बाड़न—"ई आकाश कऽ शुन्नता आ ऐनक का चमक का समान हऽ आ ओह दशा में ई साच हऽ, जथारथ आ महान हऽ। ई सभ चीजन के खतम होखे तक पहुँचावे ला आ पूरन वनावे ला। ई नाशवानता का पदवी से छूटल बा। एकरा भीतर जीवन कऽ हरेक पच्छ आ संसार कऽ हरेक काम कऽ परिछाहीं झलके ले। एकरा में ले न त कुछ बाहर जाला, न एमें कुछ पइठेला, न कुछ विनशेला अउरी न शुन्न होला। ई एगो अमर आतमा हऽ, एके अपवित्तर करेवाला कवनो रूप एके खराब ना कइ सकसु, ई बुद्धि कऽ असली सत्त-तत्तु हऽ।" असंग का मोताबिक निरवान संसार का महान् आतमा का साथ संजोग हऽ।

---

१. सद्धर्म पुण्डरीक, ७।३१।

२. वही, अध्याय २४।

३. पुनर्जन्मनिवृत्ति, अश्वघोष द्वारा रचित 'बुद्धचरित', १५।३०।

४. नागार्जुन।

५. रत्नकूट सूत्र।

६. वज्रछेदिका। बोधिचर्यावतार इसे संसार एवं अहंकार का त्याग कहता है। रत्न मेघ ने इस परिभाषा को स्वीकार किया है। प्रज्ञापारमिता के मत में निर्वाण सत्स्वरूप का प्रगाढ़ एवं अगाध रूप है। चन्द्रकीर्ति निर्वाण को शून्यता के समान, अथवा एक ऐसा ज्ञान मानता है जो भ्रांति को नष्ट कर देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शून्नवाद आ ओकर मतलब

शुन्न शबद कऽ बहुत तरह कऽ अरथ समुझल जालन। कुछ लोगन खातिर एकर अरथ अभावरूप हऽ आ दूसरन खातिर एगो थिर, इनरिन का पहुँच ले बाहर आ अकथ तत्तु, जे सभ चीजन का भीतर बा। पहिला अरथ बोध वाला संसार खातिर साच हऽ आ दूसरा अधियातमिक जथारथता खातिर। शुन्नता एगो भाव से जाने जोग तत्तु हऽ। "शुन्नता ओकरे समान अरथ बतावे वाला (पर्यायवाची) हऽ जेकर कवनो कारन ना हऽ, जे विचार, समझ (बुद्धि, प्रत्यय, प्रमाण) आ भाव से बाहर बा, ऊ जेकर जनम ना होखे, जे पैदा ना भइल अउरी जेकर कवनो नाप नइँखे[1]।"

परमारथ जथारथता का बारे में हम कुछ ना कहि सकीं। सचाई के पावे खातिर हमरा ओह सभ पदविन के एक ओर हटा देवे के चाही जिनकर मेल सत्त का साथे ना हो सके। परमारथ न त सत्तावाला (हस्तीवाला) हऽ, न अभावरूप आ न दूनो तरह कऽ हऽ मतलब कि सतसरूप आ असतसरूपो नाहीं, अउरी न असत् आ सत् दूनों से अलग हऽ[2]। माद्धमिकन का नजरि में तरक (दलेल) आ बानी कऽ वेवहार खाली हदवाला जगत खातिर हो सकत बा। हदवाला भाग-बखरा आ पाँति-गरोह कऽ वेवहार अनन्त का विसय में कइल एही किसिम कऽ एगो कोशिश होई जइसे कि सूरुज का गरमी के हम साधारन थरमामीटर से नापे कऽ कोशिश करीं। हमरा विचार से शुन्न कुछ नाहीं हऽ।

नागारजुन कऽ कहनाम बा कि ई जगत् मायावी (मायिक) हऽ। सपना में लउके वाला पदारथन का दम का समान जगत् का सभे पदारथन कऽ दम (सत्ता) मनगढंत (काल्पनिक) हऽ। जागल आ सपना में कवनो फरक नइँखे। जागलो पर हम सपना देखत बानीं। जेके हम ठोस जगत का नावँ से पुकारत बानीं ओकरा विलगा के विचार कइला पर कवनो तत्तु बाकी ना रहे। खाली वेवहार खातिर जगत् कऽ दम (सत्ता) माने लायक हऽ। संसार बस वेवहारि के रूप से साच हऽ, परमारथिक रूप से नाहीं।

---

१. अष्ट साहस्रिका प्रज्ञापारमिता, अध्याय १८।

२. "अस्ति-नास्ति-उभय-अनुभय इति चतुष्कोटि विनिर्मुक्तं शून्यत्वम्"

—माधव, सर्वदर्शनसंग्रह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारनवाद—जगत् कारज-कारन का नेम पर चलत बा आ विचारकन अउरी विग्यानिकन का एकरा सत्ता (दम) में पक्का विशवास बा। बाकी नागारजुन कऽ ठीक जांच-परताल (समीक्षा) एह उड़ान कऽ खंडन करति बा। कारज-कारन कऽ सुतंतर रचना (कल्पना) हम ना कइ सकीं। कवनो पदारथ कारन के छोड़ि के ना रहि सके अउरी न कारने कारज से अलगा कबहीं देखाई परे ला। कारज कऽ बिना कारन कऽ दम (सत्ता) ना मानल जा सके अउरी न कारन कऽ बिना कारज कऽ सता मंजूर कइलि जा सकेले। कारज-कारन कऽ खेयाल (कल्पना) एक दूसरा का सहारे (सापेक्षिक) पर टिकल बा। एही से झूठ आ बे बुनियाद (निराधार) हऽ।

जगत् का पदारथन कऽ विशेखता हऽ कि ऊ कवनो कारन से पैदा होलन। अइसना दशा में उनके सुतंतर दम वाला कइसे मानल जा सकेला? जवना कारनन का ऊपर कवनो पदारथ कऽ टिकाव (स्थिति) निरभर बा, उनका हटते ऊ विनशि जाला। अइसना कठिन हालति में जगत् का चीजन के परिछाहीं-समान मानले सही-सवतुक (न्याय-संगत[1]) बा।

माद्धमिकान का मत में सत्त दूइ तरह कऽ होला—(१) सांविरतिक सत्त (अविद्या से पैदा बेवहारिक सत्त), (२) परमारथिक सत्त (बोध-ग्यान—प्रग्या से उपजल सत्त)। आचारज नागारजुन का मत में तथागत एह दूनो सचाइन के निशान बनाइये के धरम कऽ उपदेश कइले बाड़न—कुछ उपदेशन में बेवहारिक सत्त कऽ बरनन बा आ कवनो शिच्छन में परमारथिक सत्त कऽ। एह से माद्धमिकन कऽ ई दूइ किसिम कऽ सत्त कऽ मत (सिद्धान्त) नया ना होके भगवान बउधदेव का उपदेशन पर टिकल बा[2]।

सांविरतिक सत्त ऊ हऽ जे संवृति से उपजल होखे। संविरती (संवृत्ति) शबद कऽ अरथ तीन तरह से कइल बा—

१. संविरती शबद कऽ माने ह 'अविद्या' जे सत्त बतुस का ऊपर परदा

---

१. "हेतुत: संभवो येषां तदभावान्न सन्ति ते।
कथं नाम ते स्पष्टं प्रतिबिम्ब समा मता:॥"
यह आचार्य नागार्जुन का ही वचन है जो मा० वृत्ति पृ० ४१३ तथा बोधि० पंजिका पृ० ५८३ में उद्धृत है।

२. 'दे सत्ये समुपाश्रित्य बुद्धानां धर्मदेशना।
लोक संवृति सत्यं च सत्यं च परमार्थत:॥'
(माध्यमिक वृति ४९२, बोधिचर्या, ३६१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डालि देले। एकर अविद्या, मोह आ उलट-पलट कऽ अउरी (विपर्यास) समान अरथ बतावे वाला शबद हउँवनि सऽ।

२. संविरति कऽ अरथ हऽ कारन-विचार (हेतु-प्रत्यय) का जरिये उपजल चीज कऽ रूप ('प्रतीत्य समुत्पन्नं वस्तुरूपं संवृतिरुच्यते; पृ० ३५२)। सत्त पदारथ अपना दम (सत्ता) खातिर कवनो कारन से पैदा ना होखे। एह से कारन से पैदा होखेवाली चीज सांविरतिक (मायिक) कहल जाई।

३. 'सविरती' (संवृत्ति) से ओह निशानन भा शबदन से मतलब बा जे कि साधारन तरह से आदमिन का जरिये काम में आवेलन आ परतच्छ का ऊपर टिकल रहेलन[1]।

संविरती कऽ दूइ किसिम :—सांविरतिक (माय से उपजल) सत्त कऽ अरथ भइल अविद्या भा मोह से पैदा कइल मनगढंत सत्त जेके अद्वैत वेदान्त में 'बेवहारिक सत्त' कहल जाला। ई सत्त दू किसिम कऽ होला—(१) लोक संविरती आ (२) अलोक-संविरती। 'लोक-संविरती' ऊ हउवे जेके साधारन जनसमाज साच कहिके मानेला जइसे घइला, बसतर वोगयरह पदारथ। अलोक-संविरती—एकरा उलटा होले जे के कुछ आदमिये (जइसे कवँरुवा कऽ रोगी) जानि-पाइ सकेलन सभई नाहीं; जइसे शंख कऽ पीयर रंग।

परमारथ-सत्त मौनरूप हऽ। बउधदेव का जरिये ओकर उपदेश ओह तत्तु कऽ होला जे कि शबदन से कहल जाय। परम तत्तु न तऽ बानी (वाक्) कऽ विसय हऽ अउरी न तऽ चित्त इनिरी का सोचे विचारे कऽ। बानी आ मन—दूनों ओह तत्तु तक पहुँचि ना सकसु। एह से परमारथ शबदन से परगट ना कइल जा सके[2]। अपने आतमा से ओकर बोध कइल जाला। जब बानी ओह तत्तु तक पहुँचि ना सके, तब ओकर उपदेश कवना तरह से दिया सकत बा? उपदेश शबदन से होला। एसे शबदन से अलग तत्तु उपदेशो से अलगा[3] बा।

माद्धमिकन कऽ ई पच्छ (पहलू) हीनयानिन का नजरि में बहुत निंदा जोग बा। दोस कऽ बीया ई बा कि जब परमारथ शबदन से कहे लायक नइँखे

---

१. "प्रत्यक्षमपिरुप दि प्रसिद्धया न प्रमाणतः।
अशुच्यादिषु शुच्यादि प्रसिद्धिरिव सा मृषा॥"—बोधिचर्या०, ९, ६

२. निवृत्ति अभिधातव्यं निवृत्ते चित्त गोचरे।
अनुत्पन्ना निरुद्धा हि निर्वाणमिव धर्मता॥—माध्यमिक का०, १८।७

३. बुद्धैर्नात्मा न चानात्मा कश्चिदित्यपि देशितम्।—१८।६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरी बेवहार सत्त जादू का चलता-फिरता रूपन नियर भरम भर हऽ तब असकन्ध, आयतन (पइठे क दुवारि) वोगयरह तत्तुन कऽ उपदेश देवे के गुन-कारी कइसे सावित कइल जा सकत बा ? एह ताना कऽ जवाब नागारजुन का शबदन में ई हऽ[1]—

"व्यवहारमनाश्रित्य परमार्थो न देश्यते ।
परमार्थमनागम्य निर्वाणं नाधिगम्यते ।।"

मतलब ई बा कि बेवहार कऽ मदति लिहलऽ बिना निरवान (मोक्ष) ना मिलि सके । एह तत्तुभरल (सारगर्भित) कहनाम कऽ माने ई हऽ कि साधारन आदमिन कऽ बुद्धि बेवहार में एतना अधिका लपिटाइलि बा कि उनके परमा-रथ कऽ उपदेश सांसारिक बसतुन का नजरिये से दियाइ सकत वा । जवना इशारन से उनका जिनिगीभर ले जानपहचान बा, ओही इशारन (संकेतन) का भासा में परमारथ के ऊ समुझि सकत बाड़न । एह से बेवहार के बिलकुले कामिल जानीं ।

शुन्न कऽ अरथ—माद्धमिक लोग एही परमारथ सत्त के शुन्न का नावँ से पुकारे ला । एही से एह आचारजन कऽ मत शुन्नवाद का नावँ से मशहूर बा । हीनयानी आचारज आ बाभन जैन विदमान् 'शुन्न' शब्द कऽ अरथ सभ जगहा कुल 'सत्ता कऽ मनाही' (निषेध) भा 'अभावे' कइले बाड़न । एकर कारन लोगन का बेवहार में चालू एकर मशहूर अरथ बा, बाकी माद्धमिक आचार-जन का असली (मौलिक) गरंथन का विचार कइला से एकर 'नाहीं' (नास्ति) आ 'अभाव' रूप अरथ सिद्ध नइँखे होत ।

कवनो पदारथ का सरूप-निरलय में चारिये दरजन से काम लिया सकेला—बाटे (अस्ति-विद्यमान है), नइँखे (नास्ति-विद्यमान नइँखे), बाटे-नइँखे (तदुभयं—अस्ति एवं नास्ति एक साथ), दूनों में कवनो नाहीं (नोभयं—न च अस्ति, न च नास्ति), एह दरजन (कोटियों) कऽ संबंध सांसारिक पदारथन से वा, बाकी परमारथ मन-वानी का पहुँच ले बहरी वा एह से ओकर कथन नइँखे हो सकत । परमारथ चारो दरजन (कोटियों) से मुकुत बा—

"न सन् ना सन् न सदसन्न चाप्यनुभयात्मकम् ।
चतुष्कोटि विनिर्मुक्तं तत्त्वं माध्यमिका विदुः[2] ।।"

---

१. माध्यमिक कारिका—२४।१० । एह शलोक के प्रग्याकरमति बोधिचर्या० का पंजिका में (पृ० ३६५) उठा के रखले बाड़न ।

२. माध्यमिक कारिका, १।७; सर्वसिद्धान्तसंग्रह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई शुन्ने सभले सेसर अपरोच्छ तत्तु हऽ। एह तरे माद्धमिक आचारज 'शुन्न-अदुवइत'वाद कऽ समरथक हउँवनि। ई सवँसे नानारूप परपंच एही शुन्ने कऽ 'भरम' ('विवर्त') हऽ। परम तत्तुवे कऽ सत्ता (दम) सभ तरह से माने जोग बा, बाकी ओकर सरूप एतना अकथ आ ना जाने जोग (अज्ञेय) ठहरल कि ओकरा विसय में हम कवनो तरह कऽ शबदी बरनन नइँखी कइ सकत।

आचारज नागारजुन एगो विकट दलेलिहा (तार्किक) का रूप में हमन का सामने आवत बाड़न जिनकरा बहुत बड़ आ विसतार से खंडन करे वाली जुगुतिन का आगा सभ जगत अपना बहुरूपा विशालता (भव्यता) का साथ छितिर-वितिर होके एगो मनगढंत विचार (कल्पना) का भीतर पइठि जाता। नागारजुन कऽ तरीका खंडनवाला आ अभावरूप जरूर बा; बाकी एह जगत का जरि में मौजूद कवनो परमारथ का दम (सत्ता) कऽ ऊ कबहीं मनाही नइँखन करत। जइसे 'वृहदारण्यक-शुरती' बरम्ह कऽ बरनन 'नेतिनेति आदेश:'[१] कहि के करति बा, ओही तरे नागारजुन अपना परमारथ-गुणगान (स्तव) में एह परम तत्तु कऽ समान बरनन कइले बाड़न। माद्धमिक कारिका का पहिली-कारिका में ऊ तत्तु आठ मनाहिन (निषेधों) से शुन्न (विरहित) बतावल बा[२]। नागारजुन नासतिक ना रहलन। ऊ पूरा आसतिक रहलन। उनकर 'शुन्नो' परमारथ सत् तत्तु हऽ—मनाही-रोकावट वाली बतुस (निषेधात्मक) नाहीं।

शुन्न आ बरम्ह——शून्न तत्तु का विचार से साफ मालूम होता कि शून्न परमतत्तु हउवे आ ऊ ऊहे वतुस हऽ जेकरा खातिर अदुवइत-वेदांती (अद्वैत-वेदांती) 'बरम्ह' शबद कऽ बेवहार कइले बाड़न। बउधदेव अदुवइतवादी रहलन। उनका नावँ में एगो मशहूर नावँ हऽ 'अद्वयवादी'। दूनों में अंतर खाली एतने बा कि शून्नवादी ओके मनाहीवाला (निषेधात्मक) शबदन का जरिये परगट करत-बतावत बाड़न, ओहिजा अदुवइतवादी ओके दमवाला (सत्तात्मक) शबदन से बतावत-जनावत बाड़न। असल में परमतत्तु एह दूनों सहारावाला (सापेक्षिक) उड़ानन (कल्पनाओं) ले बहुते ऊपर ऊँचा कोटि कऽ पदारथ हऽ।

---

१. वृहदारण्यक उप०।

२. 'अनिरोधमनुत्पादमनुच्छेदमशाश्वतम्।'
अनेकार्थमनानार्थकमनागमम निर्गमम॥—माध्य० का०, १।१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-धरम आ हिन्दू धरम

जगत् का पैदा होखे का विसय में छान्दोग्य उपनिषद् कऽ कहनाम बा— 'कुछ लोग कहे ला कि शुरू में असते रहल। ऊ एगो रहल, ओकरा नियर दूसर ना रहल। ओही असत् से सत् पैदा भइल[1]।' एह असत् से सत् का पैदा होखे का मन-गढंत बातिन (कल्पना) पर बउधलोग पैदा होखे का पहिले हर एक बतुस के असत् मनले बा ! नचिकेता जगत् का पदारथन का विसय में कहले बाड़न कि[2] मिरितलोक कऽ पदारथ काल्हियो ले टिकेवाला नइँखन, ई इनिरिन का तेज के हरि के पुरान आ जरजर बना देलन, सवँसे जिनिगियो आदिमिन के (भोगखातिर) थोरहीं बा, संसार में जाति (वर्ण), प्रेम आ आनंद का नाशवान (अनित्य) रूप कऽ धेयान राखेवाला आदिमी लंबा जीवन से कवहीं प्रेम ना लगा सके—ई कहनाम बउधदेव का—'सभदुखमय', 'सभनाशवान' ('सर्वं दुखम्'—'सर्वमनित्यम्') विचारन कऽ बीया मालूम होता। भिक्खु बनि के विराग (निवृत्ति-मुक्ति) कऽ जीवन त्रितावल उपनिषद-डहरि कऽ परधान मंशा रहे। 'वृहदारण्यक' का मोताबिक मुकुती चहवइया पुरुस पूत, धन आ जश तीनों इच्छन के छोड़ि मधुकरी माँगिके आपन जीवन वितावे ला। एही मत कऽ साजल-सुधारल सेसर रूप बउधभिक्खु आ जैन जतिन (यतियों) का विधि-वेवहारन में लउकत बा। बउधदेव का तेयाग-विराग-डहरि (निवृत्ति मार्ग) कऽ बिचारे (कल्पना) वैदिक हऽ। करम-मत (सिद्धांत) बउध-धरम का आचार-शासतर कऽ नेंववाला पत्थल हऽ। परानी अपना कइल भला भा वुरा करमन कऽ फल जरूरे भोगेला। करम कऽ मत एतना जगता आ असरवाला बा कि संसार कऽ कवनो मानुस (व्यक्ति) एकरा असर से ना बाँचि सके। ई मत उपनिषदन में खास तरह से वतावल-समुझावल बा। बउध-धरम में एकर जवन विलच्छनता (विशिष्टता) लउकति बा, ऊ उपनिषदने का आधार पर वा। एह किसिम से बउध-धरम में असत् कऽ मनगढंत उड़ान, छनिकता, भिच्छा-वरत

---

१. 'तद्ध एक एवाहुर सदेवेदमग्र आसीत। एकमेवाद्वितीयम्। तस्मादसतः सज्जायते।'
—छान्दोग्य ६।२।१

२. 'श्वोभावामर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः। अपि सर्वं जीवितमल्पमेव। अभिध्यायन् वर्णरहित प्रमोदान् अतिदीर्घे जीविते को रमेत्'।—कठ० १।१।२६,२८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारन करेवाला भिक्खुन कऽ चालि-वेवहार (चर्या), करम कऽ मत—ई कुल्हि सिद्धान्त उपनिषदने के जरि मानि के अपनावल बाड़न ।

शाकिय मुनि का उपदेशन पर सांखिय-मत कऽ कम असर नइँखे लउकत, एमें अचरज करे कऽ कवनो जगहि नइँखे । उपनिषदने का बीज के अपना के बाद का समय में (कालान्तर में) सांखिय मत कऽ उदय भइल । सांखिय-मत बउधदेव ले पुरान हऽ, एकरा खातिर इतिहासिक सबूतन कऽ कमी नइँखे । अस्सुघोस का 'बुद्धचरित' का १२वाँ सरग में गौतम आ आराड़कालाम नावँ का आचारज का भेंट कऽ वरनन कइल बा । जानेवाला खोजी बनि के (जिज्ञासु) गौतम, अराड़ का पास गइलन । तब अराड़ मुनि जवना सचाइन के विसतार से बतवले बाड़न (१२वाँ सर्ग—१७ से ८२ तक का श्लोक) ऊ सांखिय-मत का माफिक बाड़ी । अपरतच्छ—मन-बानीं से बहरी (अव्यक्त) आ परतच्छ-परगट कऽ अलगा सरूप, पाँच पोरनवाली (पञ्चपर्वा) अविद्या (माया-परकिरती) कऽ किसिम आ रूप-लच्छन, मुकुती कऽ दिमागी उड़ान (कल्पना)—सब कुछ सांखिय-मत का पच्छ में (अनुकूल) बा । बाकी तऽ गउतम, अराड़ का मत के अधूरा मानि के अपनवलन नाहीं । एकर माने भइल कि उनका अराड़ का मत में कमी लउकलि । तबो ओह विचारन का असर से उनके एकदम शुन्न ना मानल जा सके । कम से कम एतना तऽ मानहीं के परी कि अस्सुघोस नियर पुराना बउध-आचारज का राइ में सांखिय-मत गउतम ले पुरान ठहरल ।

तत्तु-ग्यान (दर्शन) का विचार से दूनों मतन में बहुत समानता बाटे—

१. दुख का सत्ता (दम) पर दूनो जोर देत बाड़न[१] । संसार में अधियातमिक (आतमा-जीव बरम्ह संबंधी), देहि-संबंधी (आधिभौतिक), आ दइवी—एह तीनों दुखन कऽ दम (सत्ता) एतना जथारथ बा कि एकर बोध हरएक आदिमी का पग-पग पर होला । बउध-धरम में आरज-सत्तन (उत्तम सचाइन) कऽ पहिला सत्त ईहे हऽ ।

२. वैदिक करमकांड के दूनों साधारन (गौण) मानत बाड़न ।

३. ईशर का सत्ता (दम) पर दूनों का अविसवास बा (अनास्था) ।

४. दूनों जगत के बदलेवाला (परिणामशील) मानेलन । परकिरती हरदम बदलेवाली हऽ । ऊ जड़ होखलो पर जगत् कऽ सुभाविक रूप-बदली खुद करे ले ।

---

१. 'दुखत्रयाभिघातात् जिज्ञासा तदपघातकेहेतौ' ।—सां० का० १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही से ऊ सुतंतर ठहरलि—केहू का सहारा पर ना रहे। बउधदेवो रूप-बदली (परिणामशीलता) कऽ ई मत मानत बाड़न। बाकी तऽ एगो भेद बा। सांखिय-मत चेतन-शकती (चित्-शक्ति)— मतलब कि पुरुस के परिणामी—बदलेवाला नइँखे मानत। पुरुस एकरस रहेला। ओकरा में फेरबदल ना होखे[1]। बाकी बउध-धरम में पुरुस कऽ रचना (कल्पना) ना मनइले ओकरा ना बदले भा एकरस (अपरिणामी) रहे कऽ सवाले नइँखे उठत।

५. अहिंसा के जैन आ बउध-धरम का परधान मत माने कऽ चालि-नियर हो गइलि बा। बाकी असल में एकर जनम सांखिय-मत वालन से भइल बा।

६. आरज-सत्त—उत्तम सचाइयो का बारे में दूनो मतन में बहुत समानता बा। दुख, दुख-कारन, दुख कऽ अंत आ अंत करे कऽ उपाइ—(दुख दुख-समुदय, दुखनिरोध तथा निरोधगामिनी प्रतिपद्) कऽ निशानी सांखिय मत में 'सांखिय-प्रवचन-भाष्य' का मोताबिक एह किसिम कऽ बाड़ी—१. जवना से हमरा अपना के छोड़ावे के बा ऊ दुख हऽ; २. दुख कऽ कारन परकिरती-पुरुस सुभावन अलगा भइलो पर आपुस में मिलल जनालन; ३. मुकुती भइला से दुख कऽ अंत हो जाला; ४. मुकुती कऽ जुगुती बुद्धि से उपजल ग्यान (विवेकजन्य ज्ञान)—परकिरती-पुरुस कऽ एक दूसरा मे अलगा होखे कऽ ग्यान हऽ। दूनों में एह तरह कऽ समानता बा तऽ विरोधो (विषमता) कम नइँखे। एह समता के देखि के बहुत विदमान बउध-धरम के सांखिय-मत कऽ रिनी (ऋणी) बतावेलन। एतना तऽ हम निहचित रूप से कहि सकत बानीं कि ई मत छठवीं सइवरखी विकरम ले पहिले जरूर हाजिर (विद्यमान) रहलन ! एह से ओह जुग में पैदा होखेवाला धरम कऽ एह मतन से परभावित भइल कवनो अचरज कऽ बाति नइँखे !

एह से बउध-धरम के उपनिषद-राह ले एकदम दूसर मानल उचित नइँखे जनात। उपनिषदन में जवना ग्यान-डहरि के सबूत का साथ समुझावल बा, ओही कऽ एक-अलंगी बढंती-विसतार (विकास) बउध-धरम में लउकत बा। बउध-धरम परमारथ के—जगत् का जरि में एगो चारो ओर फइलल महिमा-वाला सत्ता के मानत बा, ओकरा खातिर ऊ नकारेवाला (निषेधात्मक) शबदन कऽ बेवहार करत बा, एतने फरक बा। परम तत्तु का जाँच-परताल (विवेचन)

---

१. "त्रिगुणमविवेकि विषय: सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥"— सांख्य-कारिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ दूइ धारा बाड़ी—सत् धारा आ असत् धारा। सत् धारा बाभन-धरम में बा आ असत् धारा बउध-धरम में बा। जथारथ में परमारथ शबदन से अकथ बा (अनिर्वचनीय)। एह भाव के ठीक-ठीक तुलसीदास जी कऽ नीचेवाली चउपाई बतावति बा—

"सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जाय बखानी ॥"

हमार शबद एतना कमजोर बाड़न सऽ कि ओकर कथन कवो नइँखन कइ सकत। शबदो तऽ मायावाला (मायिक) ठहरलन। एह से ऊ ओही कऽ बरनन कइ सकेलन जे कि एह मायावी जगत् कऽ बिसय होखे। माया से शून्न परम तत्तु कऽ बरनन शबदन में हो नइँखे सकत। उपनिषदन का नेति-नेति उपदेश कऽ इहे सरसता आ सुभाविकता हऽ। बउधदेव का मौन हो गइला कऽ इहे मतलब हऽ।

आचारज अस्सुघोस आ वेदांत——बउधदेव का परमपद का बाद हीनयानी लोग बउधदेव का वचनन के उलटा समुझि के आतमा के छनिक विग्यान कऽ धारा (संतान) आ जगत के परमाणुन कऽ समूह भर बना दीहल। अपना के सरवास्तिवादी, मतलब कि 'सभकर सत्ता मानेवाला'—कहनिहार हीनयानी दीठि आ दिखाई परेवाला दूनों कऽ खंड-खंड कइके दूनों का सत्ता के चउपट कइ दिहलन। ईशर का जगहा पर बउधदेव के बइठा के भगवान बउधदेव का नहँ, बार, हाड़, दाँत वोगयरह पर विहार आ असतूप अउरी मंदिरन कऽ इमारति खड़ा होखे लागलि। आचारज अस्सुघोस ई कुल्हि दोस देखलन आ हीनयान कऽ खंडन कइके महायान कऽ समरथन कइलन।

अस्सुघोस जानत रहलन कि भगवान बउधदेव का तत्तुग्यान कऽ असल आधार उपनिषद बाड़न जेके हीनयानी भूलि गइल बाड़न। अस्सुघोस जथारथता कऽ विचार कइके बउध-तत्तुग्यान कऽ उपनिषद का जोति में कथन कइलन। उनकर 'तथता' जेके भूत तथता, तथागत गरभ, धरमकाय, धरमधातु, आलय-विग्यान, बोधि आ प्रग्यो कहल जाला, उपनिषद का आतम-तत्तु भा बरम्ह तत्तु से दूसर ना हऽ।

परतीत समुत्पाद (प्रतीत्य समुत्पाद) कारज-कारन संबंध भा सापेच्छवाद भरोसा-आसरा-सहारा वाला मत——बुद्धि कऽ लमहरचाकर राज ठहरल जे कि अविद्या कऽ गढ़ल रचल हऽ। ई वेवहारिक सत्ता हऽ, आ परमारथ से अछूता ठहरल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्सुघोस कऽ अविद्या आ वेदांत कऽ अविद्या भा माया एके हऽ। अस्सु-घोस कऽ बेवहारिक आ परमारथिक दीठि-विंदु वेदांते कऽ हउँवनि। एह सभ कऽ निचोड़ साफ बा कि अस्सुघोस पर उपनिषद आ वेदांत मत कऽ केतना गाढ़ छाप बा, समुंदर आ लहरन कऽ, माटी आ घइला वोगयरह कऽ परतोख, नावँरूपमय जगत का परमारथी सत्ता (दम) कऽ खंडन आ ओकरा बेवहारी सत्ता कऽ बखान, तत्तु के निरमल ग्यानसरूप आ मनबानीं का बखान से दूर मानल, बुद्धि के अलम्मवाली (सापेक्ष) आ संदेह-बुद्धि (सविकल्प) के अविद्या का कारन भासित होखेवाला निरमल ग्यान मानल; जगत के उपाधिवाली तथता (सोपाधि तथता) मतलब कि ईशर भा सगुन (सरूपी) बरम्ह कऽ 'लीला' मानल, आ विसयी जीव आ विसय जगत के जथारथ-दीठि से 'निरु-पाधि तथता'—मतलब कि निरगुन बरम्ह मानल वोगयरह मत उपनिषदमत तऽ हइये हउँवनि !

उपनिषद हरदम आतमा के परमारथ सत् भा परम तत्तु मानत रहलनि हँऽ। ईहे परमबरम्ह हऽ। ईहे निरमल विग्यान हऽ। ईहे सच्चिदानन्द हऽ। भगवान बउधदेव एह तत्तु के मनलन आ एकरा 'प्रग्या' भा 'बोधि' भा ग्यान कहलन। आतम-मिलन आतम-ग्यान (आतम-साक्षात्कार) भइले का कारन, राज कुवँर सिद्धारथ भगवान बउधदेव—'सम्यक–सम्बुद्ध' कहलन। बाकी दुख बा कि भगवान बउधदेव एह बोधि के 'आतमा' कऽ नावँ ना देके उलटे 'आतमा' शब्द के हमितावाला (अहंकारी) जीव का सिकुरल (संकुचित) माने में समुझलन अउरी सहजे में ओकर खण्डन कइ दिहलन। शायद ऊ अपना मत के नया आ सुतंतर रूप देवे खातिर अइसन कहले होखसु। उपनिषद में जाग-वलिक मुनि कऽ मशहूर कथन बा कि मरद-मेहरि-पूत वोगयरह सभ पदारथ अपना-अपना कारन से पिवरीव ना होखसु, बलुक 'आतमा' का कारने से पिरीव होलन। शायद भगवान बउधदेव आतमा के ममता आ हमिता (अहंकार) का कारन खाली जीवातमा मानि ले ले होखसु। ऊ हरदम आतमा कऽ माने अविद्या से पैदा संसार का पँचड़ा में बन्हाइल जीवे समुझत रहलन। एही से ऊ ओके मुरुखन कऽ मनगढंत विचार (कल्पना) कहत रहलन। (१) दीघ-निकाय में भगवान बउधदेव आतम-प्रेम के ओह मुरुख-प्रेमी का प्रेम का समान बतवले बाड़न जे शहरि का सभले सुघ्घर मेहरारू से प्रेम करत होखे बाकी अपना खेयाली (कल्पित) प्रेमिका कऽ हालति, निवास, रूप, रंग, उमिरि, उँचाई, जाति, धरम वोगयरह का विसय में कुछ ना जानत होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान बउधदेव से लेके कमलशील तक करीव सभ बउध 'आतमा' कS अरथ हमिता वाला (अहंकारी) जीवे समुझत रहलन आ एही से सहज रूप में ओकर खंडन करत रहलन। जीव के ऊ 'आतमा', 'पुद्गल', 'सत्व' आ 'सत्काय' वोगयरह नावँन से पुकारत रहलन। हीनयान तS आतमा के छनिक विग्यानन का अलावें दूसर कुछ ना मनलसि। नागसेन राजा मिलिंद से कहलसि—जइसे 'रथ' 'डंटा-धूरा-पहिया वोगयरह कS गरोह भर' हS आ एकरा सिवाय अउरी कुछ ना हS, ओही तरे 'आतमा' भी छनिक विग्यानन कS गरोह भर हS अउरी एकरा अलावें दूसर 'कुछ' नाहीं हS। महायानो आतमा के अविद्या (अग्यान) से पैदा हमता-ममता-मय जीवे मनलसि। ई ना त पाँच-असकंध से दूसर हS आ न एकमय। जीव आ जगत वेवहारिक हउवनि। जीव का हमिता (अहंकार) आ हमार (ममकार) कS छय भइला पर संसार कS चकोह खतम हो जाला, अइसन नागारजुन कS मत हS। (१) आरजदेव का मोताविक पहिले पाप करमन से वँचल चाही, फेर आतमा के झूठ समझे के चाही आ अन्त में सवँसे धरमन के झूठ जानि लेवे के चाही। (२) चनरकिरती आतमा के सभ कलेशन, दुखन, पापन आ अनरथन कS जरि मानेलन। (३) शांतिदेव केरा का थंभ नियर आतमा के बेसार कS वतावेलन। जइसे केरा भा पियाजु क बोकला उतारत रहला पर कुछऊ ना वचे, एही तरे आतमो कS विचार कइला पर कुछ ना बाँचे। (४) असंग का मोताविक सभ कलेश आतमा का कारन बा आ आतमा खुद अनादि अविद्या का कारन वा। विचार कइला पर न तS आतमा 'दरवे' सिद्ध होति वा न 'जानहींवाला' (ज्ञाता)। (५) बसवंधुओ बिसयी आ विसय दूनों के जथारथ में झूठ मानत वाड़न। (६) धरमकिरती का मोताबिक कलेश आ राग (मोह-आसक्ति) वोगयरह के पैदा करे वाली आतमे हS। (७) शांतरच्छित साफ कहत बाड़न कि जब निरमल (विशुद्ध, सत्य) विग्यान अविद्या का कारन हम-हमार-मय हो जाला तव ओके 'आतमा' कहल जाला। एकर सत्ता (दम, प्रभुता, हस्ती) वेवहारिक हS। परमारथिक विचार से ई कुछ ना हS।

बाकी तS ई जानि लिहल जरूरी वा कि निरमल आतमा कS, जे निरमल विग्यान सरूप हS, सत्ता वउध-दरशन (तत्तु-ग्यान) के हरदम कवनो न कवनो रूप में मंजूर (मान्य) वा। भगवान वउधदेव खुद तत्तु के प्रग्या भा बोधि कहत बाड़न, अस्सुघोस ओके 'आलय-विग्यान' भा 'तथागत गरभ' कहत बाड़न; महायान सुत्त ओके परपंचशुन्न अकथ (अनभिलाप्य) आ अपना निजी बोध जोग तत्तु कहत बाड़न; असंग आ वसुवंधु ओके विग्यान भर कहत वाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह किसिम से हम देखत बानीं कि बउध-तत्तुग्यान (दर्शन) करीब-करीब 'आतमा' शबद के वेदांत का जीव, बुद्धि, चित्त भा अन्तःकरण (विवेक, मन) का माने में लेता आ 'चित्त', 'विग्यान', विग्यपती, प्रग्या, अउरी 'बोधि' शबदन के वेदान्त का आतमा, बरम्ह, संवित् आ चित्त का माने में लेता। अकसरहाँ वेदांतिन कऽ 'आतमा' बउधन कऽ 'चित्त' आ वेदांतिन कऽ 'चित्त' बउधन कऽ 'आतमा' बनि जाता।

बउध आ वेदांत तत्तु ग्याने ना सभ भारतीय तत्तुग्यान (दर्शनों) कऽ महँतारी भगवती शुरती (वेद) हई। छठवीं सइबरखी वि० पू० में (जनम ५०५ वि० पू०) भगवान बउधदेव कवनो अपूरब नया तत्तुग्यान कऽ थापना ना कइलन। वैदिक करमकांड कऽ मारकाट-हतिया (हिंसा) आ जाति बाम्हन कऽ जुलुम-पखंड उनके रुचिगर ना लागल। बाभनन का कुरीति आ निंदा जोग आचरन-बेवहार से उनका घिरिना रहे, बाभनन से नाहीं। बउधदेव बाभनन खातिर सरधा आ आदरवाला शबदन कऽ बेवहार कइलन। करम से बाभन होला जाति से नाहीं जे कि पापन कऽ नाश कइ चुकल बा, जे अविद्या (अग्यान-अन्हार) के दूर कइ देले बा अउरी जे ग्यान का जोति से चमकि रहल हो, ओके बउधदेव बाभन कहत बाड़न। बउधदेव परतीत समुत्पाद चक्कर कऽ पहिली कड़ी आ संसार कऽ महँतारी अविद्या के दुख कऽ असली कारन मानत बाड़न। एही से हम-हमार कऽ जनम (प्रादुर्भाव) होला छनिक सांसारिक पदारथन का लालच के छोड़ि के निरमल ग्यान से अविद्या के खतम कइ आतमग्यान (संबोधि, बुद्धत्व) पा लिहल जीवन कऽ परधान मंशा हऽ।

बउधदेव का वचनन में कवनो अइसन बाति ना रहे जे शुरती-मत (वेद का सिद्धान्त) का उलटा होइति। बाकी बउधदेव का परमपद का बाद हीनयानी लोग बउध-वचनन के उलटा समुझि के उनका पर अपना मनगढंत-मतन कऽ महल खड़ा कइ लिहल। बाद में कुछ विचारक बउध एह निहचय पर पहुँचलन कि हीनयान कऽ विरोध बउधदेव का बचनन में नइखे, बलुक हीनयानिन कऽ मनगढंत हऽ। बहुत अधिकारी विदमानन कऽ विचार बा कि बउध आ वेदान्त तत्तु-ग्यानन (दर्शनों) के दूइ उलटा तत्तुग्यान समुझलन भारी भूल बा। दूनों एक ही विचारधारा का बढंती कऽ दूसर-दूसर रूप हउँवनि। बउउ आ वेदांत तत्तुग्यानन कऽ महँतारी शुरती (वेद) हऽ। दूनो एही महँतारी कऽ दूध पियले बाड़न; दूनो एक ही नाभ-विचार वाला छाता का छाहँ में पला-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पोशा के बड़ भइल बाड़न; दूनो एक ही मत के पाले बढ़ावे वाला रहल बाड़न। मानुस-सभ्यता (भलमनसाहत) का उदय का साथ-साथ मंतर तंतर कऽ उदय होला।

एह से ऊ ओतने पुरान हऽ जेतना कि मानुस आचार-विचार (संस्कृति)। एह भारी आ लमहर-चाकर संसार में जगत-शासक कऽ विचित्तर शकती चालू बाड़ी। अलग-अलग देवता ओही कऽ निशानी बाड़न। जगन का बेवहार में एह शकतिन कऽ परोजन किसिम-किसिम से बा। एहीं देवतन का दया खातिर मंतर कऽ बेवहार होला। आदिमी हरदम ले कवनो सहज राह का खोज में बा कि ओके अपना कारज में सिद्धि मिले। मंतर-तंतर अइसने सहज राह ठहरल। मंतर-तंतर का पढ़े-गुने आ पढ़ावे-सिखावे का ओर भारत का विदमानन कऽ धेयान बहुत पुराना समय ले रहल बा। ई विसय एकदम गूढ़ ठहरल।

बउध-धरम में मंतर-तंतर कऽ उदय कब भइल? ई एगो कठिन अझुरा ठहरल! तिरिपिटकन के पढ़ला-गुनला से पता चलत बा कि तथागत का असल शिच्छो में मंतर-तंतर कऽ बीया मिलित रहे। बउधदेव का खुद सिद्धिन में पूरा विश्वास रहे आ एही सिलसिला में ऊ चारि 'इद्धिपाद'[1] (सिद्धिपद)— 'छन्द' (इच्छा), 'वीर्यं' (जतन), चित्त (विचार) अउरी विमंसा (परीच्छा) कऽ कथन कइले बाड़न जे विचित्तर सिद्धिन के पैदा करे में समरथ रहलन। तत्तु-संगरह (तत्व संग्रह) में शांतरच्छित साफ कहले बाड़न[2] कि बउध-धरम परलोक का कयलान में जेतना मदतिगार बा ओतने सांसारिक कयल्लानो में बा। एही से बउधदेव खुदे मंतर धारणी वोगयरह तंतर संबंधी विसयन कऽ शिच्छा देले बाड़न जेसे एही लोक में प्रग्या, निरोगिता वोगयरह चीजन के पावल जा सकत[3] बा।

'विनयपिटक' का दूइ कथन में विचित्तर सिद्धिन के देखवला कऽ रोचक-बरनन बा। राजगिरिह कऽ एगो सेठ चंदन कऽ बनल एगो भिच्छा करे वाला बरतन बहुते ऊँचाई पर कवनो बाँस का माँथ पर बान्हि दिहलन। अनेकन

---

१. दीघ निकाय, पृ० १९६. (हिंदी अनु०)।

२. 'मतोऽभ्युदय निष्पत्तिर्यतो निःश्रेयसस्य च।'
संधर्म उच्यते तादृक् सर्वैरेव विचक्षणैः ॥—तं० सं०, श्लोक ३४८६

३. तदुक्तमंत्र योगादि नियमाद् विधिवत् कृतात्।
प्रज्ञारोग्य विमुत्वादि दृष्ट धर्मोऽपि जायते ॥—तं० स० श्लोक ३४८७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिरथंकर अइलन, बाकी ओके उतारे में समरथ ना भइलन। तब भरदुवाज अपना जोगसिद्धि का बल पर आकाश में ऊपर उठि गइलन आ ओके लेके ऊपरे ऊपर राजगिरिह कऽ तीनि बेरि परदच्छिना कइलन। जनता का अचरज कऽ ठेकाना ना रहल, बाकी बउधदेव का एगो तुच्छ काठ खातिर एतना शक्ती कऽ बेवहार एकदम अनुचित जनाइल आ ऊ भरदुवाज कऽ एही का करते फजिहत कइलन अउरी काठवाला बरतन का बेवहार के पाप ठहरवलन। एह से निचोड़ इहे निकलत बा कि तंतर-मंतर, जोग आ सिद्धि वोगयरह कऽ शिच्छा खुद बउधदेव से पैदा भइलि रहे। ऊ पहिले बीया रूप में रहे, बाद में ओकर बढंती भइलि।

तांतरिक बउध-धरम में बाद का बउध-धरम कऽ मंतरयान, बज्जरयान आ सहजयान नियर रूप शामिल बाड़न। बउध-धरम कऽ जोगाचार-मत जोग संबंधी एगो अइसन साधना के जनम दिहलसि जवना में मंतरन, धारणिन आ मंडलन कऽ चलान हो गइल। एह किसिम कऽ साधना गुपुत ढंग कऽ होति रहे आ गुरूचेला का परंपरा से एक पीढ़ी ले दूसरा पीढ़ी तक चलति जाति रहलि।

गुपुतमत वाला बउध-धरम का एह शाखा से संबंध रखनिहार बाद कऽ एगो तरक्कीवाला रूप अउरी रहे जेके 'वज्जरयान' कहल गइल। एकर अधिका परचार निचिला दरजा का लोगन में रहे। भारत का पुरुबी भाग में एह मत कऽ काफी ज़ोर रहे। विक्रमशीला तांतरिक विद्या कऽ भारी नाभि (केन्द्र) रहे, जहाँ से ई धीरे-धीरे बंगाल, आसाम आ उड़ीसा तक फइलि गइलि। एह मत का बिगड़ल करमन का विरोध में समुझदार आदिमी बगावत कइलन आ इनहीं का चलते अधिकांश रूप में भारत में बउध-धरम कऽ पतन भइल।

तांतरिक बउध-धरम शैव-धरम कऽ एगो शाखे हऽ, ई कहल उनहीं खातिर संभव बा जे तांतरिक साहित्त कऽ असली ग्यान ना राखसु। बउधन कऽ तंतर-साहित्त जे तिब्वती भाषा में उत्तम ढंग से रच्छित बा, अबहीं तक ग्यान का खोजिन का नजरि में पूरी तरह से नइँखे आइल। हिन्दू तंतरन कऽ बउध-तंतरन से मिलान कइला पर ई साफ हो जाता कि दूनों का विधि-बेवहार आ मंशने (उद्देश्यों) में फरक नइँखे, बलुक बउध-तंतर हिन्दू तंतरन ले इतिहासिक नजरि से पुरान आ असल जरि वाला ठहरलन !

अपना महाकाव्य 'बउधायन' में आखिरी तीनि सरगन में बउध-धरम का परचार पसार कऽ कथा लिखे में बहुत जगहन पर चइत, असतूप, गूफा, विहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ मंदिर-मूरति आरामन कऽ चरचा भइलि बा, एह से बउध-कला कारीगरी कऽ बहुत संछेप झलक देखावत बानीं।

भगवान बउधदेव कऽ चेला सेवक विशेख कइके बेवपारी वरग कऽ रहलन, एहसे ऊ भारी असतूप आ चइत बनववलन, जइसे कि साँची आ भरहुत मद्धि भारत में, अमरावती आ नागारजुन कोंडा दक्खिन भारत में अउरी कारले आ भज पच्छिमी भारत में। भिक्खु-भिक्खुनी संघ कऽ रचना भगवान बउधदेव का अपार दया कऽ फल रहे। ई भिक्खु आ भिक्खुनी बहुता देश में परजटन (चारिकायें) करत रहसु। जइसे-जइसे इनकर जमाति बढ़ति गइलि, गिरहस्त सेवक लोग (उपासक); जिनका में अशोक अगुवा रहलन, उनका खातिर चइत (चैत्य), असतूप आ विहारन के बनवावल शुरू कइलन। अनेकन गुफा-मंदिर शांत आ बहुत सुघर-मनमोहक पराकिरतिक वायुमंडल में बनवावल गइलन जइसे कि बम्बई राज का भीतर कारले, कान्हेरी आ भज में अउरी दक्खिन में अजंता में। चित्तर-कला आ मूरति-कला कऽ बेवहार भगवान तथा-गत का आदर-महिमा आ उनका जीवन का मान-मोल के देखावे खातिर कइल गइल आ एही मंशा से जातक आ अउरी दूसर कहनी कला-रचना का रूप में उरेहल गइली।

तीसरी सइवरखी विकरम का पहिले से तीसरी सइवरखी विकरम का बाद तक का समय में बउध-कला आ संसकिरती (संस्कृति-आचार विचार) कऽ अचरज में डाले वाली बढंती भइलि। अनेक चइत आ असतूप एह जुग में बनावल गइलन जिनका में बउधदेव का पहिल जनम कथनों (कहानियों) के उरेहल गइल। बउध-कला के धरम से बढ़ावा (प्रेरणा) मिलल। बउध-विहारन कऽ मूरति-कला सम्बन्धी-संपत्ति (समृद्धि) ई देखावति बा कि धरम कऽ माने करमकांडे भा मत (सिद्धान्त) नाहीं हऽ, बल्कि ऊ एगो हिपल अधियात्मिक गुन हऽ जे कवनो ना कवनो किसिम से आपन कलावाला सरूप झलकावेला। भारत का उत्तर पच्छिवँ में यूनान आ रोम का असर से एगो मिलल-जुलल कला कऽ बढंती भइलि आ एगो पूरा सुघर लच्छनन वाली बउध-कला कऽ फइलाव (विवृत्ति) गांधार नावँ से कइल गइल।

बउधकला में असतूप—बउधन खातिर पूजा कऽ सबले ऊँच चीज तीनि रतन मतलब कि बउधदेव, धरम आ संघ हउँवनि। इनका अलावें हरेक बउधदेव आ अरहतन का धातुन पर बनावल असमारको (इयादगार) बाड़न। एह धातुन के हम तीनि दरजन में बाँटि सकी ला, (१) शारीरिक (२) उद्दे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक आ (३) पारिभोगिक। परंपरा का मोतातिक बउधदेव कऽ सबले पुरान 'धातु' ऊ बार रहलन जे सेवक तपस्सु आ मल्लिक के दीहल रहलन आ जिनका पर ऊ लोग अपना देश उड़ीसा में एगो 'चइत' बनववले रहे।

परधान शारीरिक धातु ऊ मानल जालन जे मुवला का बाद जरवला से बाँचेलन। जब भगवान बउधदेव कऽ महामुकुती (महापरिनिर्वाण) मल्लन का देश में हो गइलि तऽ राजगिरिह कऽ अजातशतुरु, वैशाली कऽ लिच्छवी, कपिलवस्तु कऽ शाकिय, अल्लकप्प कऽ बुलि, पावा कऽ मल्ल, कुशीनगर कऽ मल्ल, रामगावँ कऽ कोलिय आ बेठदीप कऽ एगो बाभन, ई सभई लोग भगवान का धातु के आठ भाग में बाँटि लिहल आ उनका पर सिलसिलेवार राजगिरिह, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लकप्प, पावा, कुशीनगर, रामगावँ आ बेठदीप में असतूप बनववलन। इनका अलावे पिप्पलिवन कऽ मोरिय आ द्रोण नावँ कऽ एगो बाभनो भगवान का धातु का कुछ भागन पर असतूप बनवलन। एकरा अलावें भगवान का तीनि दाँत धातुनों कऽ चरचा बा, जवना में ले एगो कऽ पूजा सरग में होले, एगो कऽ गंधार देश में आ एगो कलिंग देश में नागन से पुजात बा। भगवान का एगो धातु के कलिंग का राजधानी दंतपुर में ले गइलो कऽ कथा बा।

'चइत' (चैत्य) शब्द कऽ मूल रचना 'चिता' से भइलि बा। चिता से बाँचल (अवशिष्ट) कवनो चीज पर जवन असमारक (इयादगार) खड़ा कइल जाय, ऊ चइत कहाला। एह तरह कऽ इयादगार (असमारक) बउधदेव ले पहिलहूँ का समय में खड़ा कइल जात रहलन। विशेख माने में 'चइत' से मतलब एगो चउतरा (थूहा) से होला, जवना में कवनो महापुरुष कऽ हाड़ कऽ टुकड़ी, राखि, दाँत भा वार नियर कवनो चीज राखलि होखे। एह तरे ऊ एगो पूजा कऽ जगहा भी होला। असतूपो कऽ अरथ थूहा (चउतरा) होला, भा समानरूप से जवन कवनो चीज उठावलि जाय, भा थापित कइलि जाय, ऊ असतूप कहाले।

असतूप के कवे-कत्रे दगोबो समुझि लिहल जाला, बाकी असल में दगोबा असतूप कऽ ऊ एगो भाग होला जहाँ असमारक राखल जालन! भगवान बउधदेव जहवाँ काशी का पास धरम का चक्का के घुमवले (धर्मचक्रप्रवर्त्तन) रहलन आ जहवाँ ५०० हरेक बउधदेव लोग निरवान पवले रहे, ओहिजा दूइ असतूपन कऽ थापना कइल गइल रहे।

सबले पुरान असतूपन कऽ नमूना साँची आ भरहुत हउवनि। इनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधार गोलाकार भा वरगाकार बाड़न आ इनका चारों ओर कहीं पत्थल कऽ मेढ़ी (वेष्टनी) बाड़ी अउरी कतहीं नइँखी भी । इंटा कऽ बनल बहुत पुराना असतूप पिपरहवा कऽ हउवे जे नेपाल का सिवाना पर बा । हो सकेला कि एकर रचना ५०७ वि० प० का लगभग भइल होखे !

साँची कऽ असतूप बउधकला में आपन उत्तम जगहा राखत बा । कहल जाला कि तीसरी सइवरखी वि० प० अशोक एकर रचना करवले रहलन । एक सइ बरिस बाद एकरा में कुछ बढंती कइल गइल । एकर पत्थल वाली मगजी (वेष्टनी) एही तरह का बढंती में हई । साँची कऽ असतूप सुमेरू परबत कऽ सरूप झलकावत (अभिव्यक्त) बा आ ओकरा हरेक भाग का झलक कऽ आपन माने बा ।'

पहिले साँची का असतूप में एक ही छतरी रहे, बाकी बाद में उनकर गिनती बढ़ा दियाइलि जवना से ओकर आकार एगो महल नियर हो गइल आ गुंबज कऽ लम्बाई बढ़ि गइलि । जावा का बोरोबुदूर आ बरमा का मिंगयुन असतूपन कऽ साँची का असतूप से तुलना (मिलान) कइला पर ई बाति साफ हो जाति बा कि असतूप-रचना-कला तरक्की करत ओह दशा में पहुँचलि जब असतूप सीढ़िन का समान अनेक भागनवाला महल का आकार कऽ बनावल जाये लगलन । लंका (सिंहल) का पोलोन्नरूवा नावँ का जगहि में बनल महल (परासाद) एकर परतोख बा ।

मूरति-कला आ कसकुट वाली मूरति—पत्थल आ कसकुट कऽ बनल मूरति भारत में खाली कला कऽ वतुस नाहीं, बलुक धारमिक पूजा कऽ आधारो मानल जात रहली हऽ । आज उनकर मोल-मान पुरातत्तुवो आ मूरति-विद्या का नजरि से हो गइल बा, तबो उनकर आदर-मरजाद उनका सुघराई का कारने बा । तीसरी सइवरखी वि० प० भारतीय मूरति कला अनेकन बड़ाई आ महातम वाला रूप पवलसि ।

सारनाथ कऽ सिंघ-खंभ-मँथेला आ रामपुरवा कऽ पत्थल वाला बैल अपना तेज-परताप आ उरेह-रचना का कारन मोरिय-जुग का मूरति-कला कऽ उत्तम रचना मानल जालन । एकरा अलावें परखम आ पटना में मिलल जच्छ आ दीदारगंज (तीसरी सइवरखी वि० प०) में पावल जच्छिनी कऽ मूरति अपना आकार आ रूप का कारन बहुते बड़ाई आ गौरव वाली बाड़ी, जदपि कि उनकर अधियातमिक-दीदार (अभिव्यक्ति) ओतना विमल नइँखे । दूसरी सइवरखी वि० प० भारतीय-कला (हुनर) का इतिहास में एगो करमठता आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जतन-जुगुति कऽ जुग शुरू भइल। बउध-धरम का महिमा का करते एह जुग में साँची, भरहुत, अमरावती आ नागारजुन कोंडा का गुनरूप-संपन्न मूरति-कारी कऽ जनम भइल। अमरावती आ ओकरा परोस में भगवान बउधदेव कऽ कुछ कसकुट कऽ बनल मूरति मिलल बाड़ी, जिनकर समय दूसरी सइव-रखी विकरम ले पहिले कऽ ना हो सके। दूसरी सइवरखी का बाद धातु कऽ बनलि बउधदेव. कऽ मूरति लोग-समाज में काफी पिरीव भइली आ बहुत संखिया (गिनती) में मिलत बाड़ी।

पहिली सइवरखी विकरमी में मूरति कला कऽ एगो जगता आ बहुत फल देवइया मत-मंडली मथुरा में चालू भइलि जेकर पूरा बढंती गुपुत-जुग (चउथी-पाँचवीं सइवरखी वि०) में भइल। गुपुत जुग सबँसे भारतीय कला कऽ सोन-हुला जुग मानल जाला। मथुरा, सारनाथ आ विहार कऽ बउध-मूरति एह पूरा जुग का नमूनन कऽ परतिनिधि-सरूप बाड़ी। गुपुत-जुग कऽ कसकुट वाली मूरति पत्थल का मुरतिने का समान कलापूरन बाड़ी, जइसे सुलतान-गंज (पाचवीं सइवरखी वि०) में पावल बउधदेव कऽ मूरति (जे आज वरमिंघम-आर्ट गेलरी में बा)। पालवंश कऽ धातु-मूरति (नउवीं सइवरखी ले बारहवीं सइवरखी तक) अपना रूप-सफाई, शोभा आ अधियातमिक झलक का सम्पति खातिर मशहूर बाड़ी। नालंदा कऽ असर बउध-कला का विचारो से बहुते महान रहल बा। जावा, सुमातरा, नेपाल आ बरमा तक ऊ कला-रचनन का जरिये बउध-आचार-विचार (संस्कृति) कऽ सनेश भेजले बा।

चित्तर-कला—जातक आ दूसरा बउध-साहित्त में तसबीरि-कला-(चित्र-कला) संबंधी अनेक कहनाम मिलत बाड़न। बउधकला कऽ सभले पुरान बंचल नमूना हमके अजन्ता कऽ चइत-भवन मिलत बाड़न, जिनकर समय दूसरी सइ-वरखी वि० प० हऽ। गुपुत-जुग (पाँचवीं-छठवीं सइवरखी वि०) में बउध-तस-वीरिकला कऽ बढंती भइलि। एह जुग कऽ सभले उत्तम परतोख बाघ (मद्धि भारत) आ अजंता में मिलत बाड़न। इनका में बउधदेव का जीवन संबंधी अनेक जातक कहानिन संबंधी तसवीरि मिलति बाड़ी, जे अपना शांत, विराग-मय असर आ कोमलता अउरी भाव-गम्भीरता खातिर मशहूर बाड़ी।

बउध-कला कऽ एशिया पर एतना अधिक असर परल बा कि ओकर केहू दूसरा से मिलान नइँखे कइल जा सकत। बउध-कला कऽ भारत आ एशिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में बाधा रहित बढंती पढ़े-गुने कऽ एगो सुघर विसय बा। भारत कऽ सभले पुराना इतिहासिक असमारक बउधे-धरम संबंधी बाड़न आ हरदम राजवंश का लोगन का देखरेख से जवन असमारक बनावल गइलन, ऊ धारमिक सरधावान पुरुसने खातिर नाहीं बलुक संसार का सभ कला-पारखिनों खातिर आदर कऽ बतुस बाड़न। कुशान-काल का मुरतिन में एगो जोरदार रूप में गंधार असर लउकत बा। मानुसरूप में भगवान बउधदेव कऽ सबले पुरानी मूरति गंधारे कला कऽ बाड़ी। बामियान में (अफगानिस्तान) पहिली गंधार-कला का आधार पर दूइ गो बहुत अजदहा (विशाल) बउधदेव कऽ मूरति बनावल गइली जिनकर समय तीसरी-चउथी सइवरखी वि० हऽ। एह १७५ फुट आ १२० फुट ऊँच दूइ बउध-मुरतिन के हुवेनसांग अपना डहरि में देखले रहलन। एगो पहाड़ी के काटि के ई मूरति बनाइल रहली स, जिनका चारो ओर कऽ करीव एक मील कऽ जगहा बउध-विहारन आ चइतन (चैत्य) से घेराइल रहे।

नेपाल आ तिब्बत में बउध-धरम नालंदा से गइल रहे; एही से पालवंशी कला कऽ एह दूनो देशन का कला पर बहुत बेशी असर परल बा। बउधकला कऽ कुछ अचरज में डालेवाला असमारक लंका में मिलत बाड़न। बड़ी अनमोल बउधदेव कऽ मूरति अनुराधपुर में देखे के मिलति बा।

जावा में शैलेन्दर का जुग में, मतलब कि आठवीं सइवरखी से लेके दशवीं सइवरखी वि० तक, बउध-कला कऽ सब ले अधिका बढंती-विसतार भइल। चंडी मेनदुत का मंदिर में बउधदेव भगवान बोधिसत्वन से घेराइल उरेहल बाड़न। जावा कऽ ई एगो सुघर कला-रचना हऽ। बोरोबुदूर असतूप का पास भगवान बउधदेव का जीवन आ दूसरा-दूसरा जातकन से तसवीरि उरेहलि बाड़ी सऽ; जे कि अपना कला-कारीगरी वाली सुघराई खातिर मशहूर बाड़ी। बोरोबुदूर कऽ असतूप विचित्तर सुघराई कऽ असमारक हऽ आ ओकर रचना शिरीचक्कर (श्री चक्र) का नमूना पर सरवतोभद्दर ढब पर भइलि बा। एह असतूप कऽ महान बोधकारी महत्व बा, काहें से कि एकरा में सुमेरू परबत का रचना का साथ करम का शुभाशुभ फलनों कऽ मूरतिवार उरेह कइल बा। जहाज कऽ तऽ मूरति-बन्हल झाँकी एतना सुघर कतहीं कइले नइँखे। जावा का सिंगसारी नावँ का जगहा में प्रग्या पारमिता कऽ एगो मूरति मिललि बा जवन बारहवीं आ तेरहवी सइवरखी वि० कऽ हउवे। एह देवी कऽ ई मूरति संसार कऽ करीबन सभले उत्तम मूरति हऽ। धातुन कऽ बनलि बउधदेव क कई गो मूरति जावा में पावल बाड़ी, जिनका में एगो पदुमपाणि बोधिसत्त कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चानी कऽ मूरति भी बा, जे जकारता का जादू-घर (संग्रहालय) में राखलि बा।

बउध-धरम आ संसकिरती—संसकिरती (आचार-विचार) कऽ तीनि-कारज बाड़न। पहिला ई कि संसकिरती शिच्छा आ नेम-हुकुम का जरिये आदिमी का चालिचलन-बेवहार, बुद्धि-विचार अउरी सुघराई का बोध-संबंधी बढंती के पूरा करे ले। दूसरा ई कि ऊ ललित कला, मानुस-सासतर आ विग्यान का शीली-पच्छ (उदार पक्ष) में पूरा रुचि पैदा करे ले आ उनका बढंती में मदति देले। तीसरा संसकिरती कऽ कारज ई हऽ कि सभन का फल सरूप उ मानुस-सुभाव कऽ सुधार करे ले आ ओके जोति देले।

एह तीनों अरथन में बउध-धरम कऽ संसकिरती (शुद्धि, सजावट, सभ्यता, आचार विचार) से गाढ़ा संबंध बा। हम पहिले देखि चुकल बानीं कि बउध-धरम कऽ अरथ निरवान कऽ साधन बा, जवना में शील, समाधि आ प्रग्या (विवेकवती बुद्धि) शामिल बाड़ी। संसकिरती के हम इनका में ले समाधि-भावना (धेयान) में समवा सकत बानीं, काहें से कि समाधि-भावना का समान कला आ विग्यानो आदिमी का चेतना के शोधि-माँजि के ओके सिजिल (संस्कारी) बनावे आ एगो ऊँचा दरजा पर ओके ले जाये वाला ठहरलन ! एह किसिम से संसकिरती निरवान कऽ एगो साधन बनि जाले। काहें से कि विग्यान का मोकाबिला ललित-कलन में आदिमी का हिरदय के छूवे आ ओकरा पर असर डाले कऽ अधिका तागति होले; एह से ऊ अपना कोमलतामय असर का अधिकता का कारन आदिमी का चेतना के अधिका ऊँच सतह पर ले जा सकेली आ ओकर वेशी सुधार अउरी सफाई कइ सकेली। इहे कारन बा कि गणित आ रसायन-शासतर का मोकाबिला तसवीरि-कला, संगीत आ कविता का साथ बउध-धरम का बेशी गाढ़ संबंध रहल बा !

कला कऽ दूइ रूप बाड़न, धारमिक आ सांसारिक। धारमिक-कला में खेयाल का साथ आदिमी का चेतना के बेशी ऊँच सतह पर ले जाये कऽ कोशिश कइल जाला। परतोख का रूप में बउधदेव का मूरति के लेईं। एगो कला रचना का रूप में एकरा खाली सुघराई-बोध वाली शकती का कारन आदिमी कऽ मन एगो वेशी ऊँच दशा में चलि जाला, बउध-कला में तसवीरि कला, मूरति-कला, संगीत आ कविता के एगो अधियातमिक परंपराय में भीतर ले बान्हि दिहल गइल बा आ उनकर बेवहार खाली धरम-परचार का साधनरूप में नाहीं बलुक धेयान का सहारा का रूप में कइल गइल बा। इहे कारन बा कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-कला आदिमा का मनोविरती (सुधि, बुद्धि, चेतना) के ऊपर उठावे-वाला ऊ सब ले बड़ उपाय बा जेके आदिमी पैदा कइले बा। महायान, आतम-ग्यान (बोधि) पावे का पूरक साधनन का रूप में, धरम का साथ बेशी ले बेशी कलन आ विग्यानन कऽ एकता कइले बा। असल में हीनयान आ महायान दूनों बहुत मातरा में सांसारिक आ धारमिक-कला के जनम देले बाड़न। संक्षेप में डा० राधाकृष्णन का शबदन में, बउध-धरम भारत का संसकिरती पर आपन टिकाऊ निशान छोड़ि गइल बा। सब ओर एकर असर लउकत बा। हिन्दू-धरम एकरा नीति-सासतर का सभ ले उत्तम अंश के अपना में मिला ले ले बा। जीवन का ओर एगो आदर, पशुन खातिर दया, जवाबदेही कऽ भाव आ अधिका ऊँचा दरजा का जीवन खातिर जतन, ई सभ बाति एगो नया वेग का साथ भारतीय दिमाग के जनावल बाड़ी। बउधे-परभावन के ई पुन्नि (श्रेय) मिलल बा कि उनका कारन बाभन-परंपरा कऽ धरम-साधना अपना ओह अंशन के छोड़ि देले बाड़ी जे मानवता आ सवतुक बुद्धि-विचार का माफिक ना रहलन।

भारतीय आ चीनी धरमदूत—पुरुबी हानवंश का महराजा मिङ्-ती का समय बउध-धरम कऽ पहिला पइठ चीन में १२१ वि० का लगभग भइल। राजा अपना शासन का सातवाँ बरिसे एगो अचरज वाला सपना देखलन। सपना में उनके एगो सुवरनमय पुरुस कऽ दरशन भइल, जेकरा कंठ का चारों ओर आसपास चमकत सूरुज नियर जोति-मंडल रहे। दरबारिन में ले एगो अनुभवी आदिमी बतवलसि कि ई पच्छिवँ का रिसी महापुरुस बउधदेव कऽ रूप रहल हऽ जे चाउ-वंश का समय में हो गइल बाड़न। राजा पर सपना कऽ एतना भारी असर परल कि ऊ सेनापति तसाई-यिन, विदमान वैद चिंग-चिंग, वांग-तसुन वोगयरह कुल मिला के १८ आदमिन का राजदूत मंडल-धरम-गरंथन आ भिक्खुन के ले आवे खातिर भारत भेजलन। दूइ बरिस बाद मद्ध एशिया का यूएह-ची देश में एह मंडली का दूइ बउध भिक्खुन से भेंट भइल। ई संत कस्सप मातंग आ धरमरतन रहलन। ई दूत मंडली बउधदेव कऽ मूरति, आ अनेकन संसकिरित-गरंथ, जिनका में ६० लाख ले अधिका शब्द रहलन, पव-लसि। ओकरा बाद मंडली एह धरमपोथिन आ दूनो भिक्खुन के १२१ वि० में उज्जर घोड़न पर बइठा के लोयाङ् ले गइलि। राजा से भेंट आ आदर-सतकार का बाद भिक्खुन हो-लु मठ में रहे लगलन। बाद में कस्सप मातंग 'बयालिस-सुत्तन' (द्वाचत्वारिंशत सूत्र) कऽ चीनी भासा में उलथा कइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्सप मातंग मद्धि भारत (उत्तर परदेश-विहार) कऽ बाभन कुल दीपक रहलन आ हीनयान-साहित्त कऽ पारंगत विदमान रहलन। एह जुग में दूइ अउरी भारतीय भिक्खुन महाबल (चू-त ली) आ तन् कुओ (धरमफल) चीन पहुँचल रहलन।

एंत किसिम से भारतीय संतन का टोली कऽ जवन इतिहासिक धरम-जातरा एह जुग में शुरू भइलि ऊ हजारन बरिस तक चलति रहे आ दूसर-दूसर राजवंशन का जुग में अपना धरम-परचार का पवित्तर कारज के करति गइलि। एकर बहुत शुभ आ लाभ देवे वाला फल भइल कि चीन आ भारत बउध-संसकिरती का मधुर कोमल संबंध-सूत में सज से बन्हा के एक दूसरा का नियरा पहुँचत गइलन। हानवंश बउध-धरमी रहे। एह समय में सभ दिशा में चीन कऽ भारी तरक्की भइलि। एही घरी चीन में बउध-धरम कऽ नेंव पोढ़ भइलि। उत्तरी कियांग-सी का सू-चाऊ में एही शुभ समय में कई तल्लन वाला बउध-असतूप बनल। हान-वंश का बाद शू, वेई आ ऊ, तीनि राजवंशन कऽ शासन भइल।

चीन में बउध-मठन आ मुरतिन कऽ रचना अंतिम समयी हानवंश कऽ राज-समय मानल जाला। तीनि राजवंशन का समय में चीन में भारते से अनेक भिक्खुन ना गइलन, बलुक बउध-धरम पोथिन का खोज में चीनियो लोग भारत पहुँचल। चु-शिह-हिंग पहिला चीनी रहल, जे ३१७ वि० में चीन ले खोतन गइल, जहवाँ ऊ एगो प्रग्यासुत्त कऽ नकल कइलसि, जवना में ९० भाग बाड़न। आ जे चीन में पंचविंशति साहसतरिक-प्रग्यापारमितासुत्त का नावँ से मशहूर बा। एही समय से भारतीय भिक्खु विघिन चीन पहुँचलन। ई धम्म-पद कऽ चीनी भासा में उलथा कइलन। एकरा बाद पुरुबी आ पच्छिमी छिन वंशन का राजकाल में बउध-संसकिरती कऽ चीन में भारी तरक्की भइलि। एह १५५ बरिसन का समय में बहुत धरमपोथिन कऽ संसकीरित से चीनी में उलथा भइल। कुछ परधान उलथाकरवइया नीचे लिखल भिक्खु रहलन।

	समय	पावल पोथी	
धरमरच्छ	(३४१-३७० वि०)	९२	पच्छिमी छिन्
धरमरतन	(४३८ वि०से ४५२ वि०)	२९	पुरुबी छिन्
गौतम-संघ देव	(४४८-४५५ वि०)	३	,, ,,
कालोदक	(४४९-)	१	,, ,,
बउध-भद्दर	(४५५-४७८)	७	,, ,,
विमलाच्छ	(४६३ वि०)	१	,, ,,
जीवमित्तर	(४५४ वि० से ४७५ वि०)	२	,, ,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरा बाद कुमारबोधि, संघभूति, धरमप्रिय आ धरमनंदी, गौतम संघ देव, धरमजश, पुन्नितर, कुमारजीव, बउधजश वोगयरह विदमान भिक्खुन का धरम जातरा कऽ समय-समय से पारी आइलि जे अपना जुग में बड़ी लगन आ मेहनति का साथ चीन में भारतीय संसकिरती कऽ दीपक जला के लोगन के अँजोर पहुँचवलन। एह संतन में बउधजश आ कुमारजीव कऽ दरजा बहुत ऊँचा बा। बउधजश काशमीर का बाभन-कुल में पैदा होके बाभन आ बउध-धरम-पोथिन के सज से पढ़ला गुनला का बाद बउध भिक्खु बनल रहलन। ऊ कुमारजीव कऽ गुरु रहलन। उनके इतिहास लेखक भारी विद्मान आ विरागी पुरुस बतवले बाड़न।

कुमारजीव भारतीय भिक्खुन कऽ सुरेमन चउधुर मानल बाड़न। उनके विंचित्तर तेजपरताप वाला जानीं। चीन में भारतीय धरमपोथिन का उलथा करवइयन में उनका मोलमान कऽ शायदे केहू होखे! ऊ ४५८ वि० में छाङ्-अन पहुँचल रहलन। पहुँचला पर महाराज तुरंते उनके ऊ-वो-शी (राजगुरू) बनवलन। कुमारजीव कऽ बारल सोनहुला-संसकिरती-दीपक आजो चीन में आपन दऽवी जोति फइला के कायम बा। कुमारजीव चीनी भासा कऽ भारी पंडित रहलन। उनकर उलथा कारज आज का खोजी पंडितन खातिर एगो ललकार बा। ऊ १०६ भारतीय धरम गरंथन कऽ संसकिरति ले चीनी भासा में उलथा कइलन। उनका देखरेख में हजारन विदमान एह उलथा का कारज में लागल रहलन। महाप्रग्या-पारमिता-सुत्त का उलथा करे में पाँच सइ लिखवइया (लिपिक) आ सद्धरम-पुंडरीक सुत्त अउरी बरम्ह-परि पिरिच्छा सुत्त का उलथा करे में दूइ हजार भिक्खु आ विमलकीरतिनिरदेश-सुत्त का उलथा में १२०० थानी (स्थानीय) बउधलोग उनकर मदति करत रहे।

चीन ले भारत आवेवाला चीनी बउध-भिक्खुन में फाहियान सिरताज रहलन। फाहियान (फा-शीन) जेतना कलेश उठाके गोबी आ तकलामकान वाला भारी मरुभूमिन के साहस अउरी सरधा लगन का पोढ़ रथ पर सवार हो पार करत, महानद सिंधु के लाँघि, बउधदेव का पुन्नि जनमधरती का दरशन आ विनयपिटकवाली धरमपोथिन का खोज में भारत अइलन, ओकर कथा रोवाँ खड़ा करेवाली बा। बाकी एहू ले कठिन कलेश उठा के पामीर का माँथ पर तथागत कऽ धरम पताका फहरावत आ मद्धि एशिया का मरुथलन के रउँदत भारतीय भिक्खु कस्सप मातंग, धरमफल, संघवरमा, धरमरच्छ, संघदेव, धरमरतन, कुमारजीव, गुणवरमा, गुणभद्दर, धरममित्त, परमारथ. गौतम-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रग्यारुचि, नरेन्दरजश, जिनगुपुत, दिवाकर, शिच्छानंद, वोधिरुचि, अमोघ-वज्जर, धरमदेव, दानपाल वोगयरह चीन पहुँचल रहलन आ ओहिजा भगवान बउधदेव का कयलानकारी धरम कऽ परचार पसार कइलन। एही तरे दुरगम पहाड़न-जंगलन के लांघत जिनमित्त, दानशील, शांतरच्छित, कमलशील, दीपंकर शिरीग्यान, गयाधर, शाकिय शिरीभद्दर वोगयरह तिब्बत पहुँचि भोटभाइन के भगवान बउधदेव कऽ मधुर धरम-सनेश सुनवलन। ई भारतीय संतन का तप-तेयाग आ बुद्धि-विवेक कऽ कठिन परीच्छा रहे जवना में ऊ सफल भइलन। हुँऽ धरम-कारज में ऊ जइसे कठिनाइन से लोहा लेके मानवता कऽ सेवा कइलन आ अपना तेयाग-बलिदानन से भारत माई का मुँह में चन्दन लगवलन ओकर पूरा बेवरा ना छोड़ि गइलन, इहे रहि-रहि के हिरदय के सालत बा। का लोयांङ, छाङ-अन, नानकिङ आलाशा का आसपास छितिराइल उनकर हाड़ हमन का भीतर कवनो भाव नइँखन जगावत ?

बउधायन में सभ कथा जगहि आ मोका से गावलि बा। काव्य में चारों धरम-संगीतियन (धरम-महासम्मेलनन) आ धरमदूतन का बाहिरी देशन में पहुँचि के धरम-पुरुसारथ कइला कऽ झाँकी देखावल बा। एह सिलसिला में महाराज अशोक का समय में होखेवाली तीसरी संगीति का समय पाटलिपुत्त का अशोकाराम विहार में मोगल्लिपुतनिस्स का मुखियागिरी में देश-विदेशन में धरमदूत भेजे कऽ जवन अनमोल इतिहासिक निहचय भइल ओके दइवी, आ जुग बदलेवाला मानल जाई। एही समय महेन्दर आ संघमित्ता का कठिन तेयाग अउरी शोण उत्तर का साहस संकलप से देश ले बाहर जा के धरम-परचार करे कऽ जवन शुभकारज शुरू भइल ओह ग्यान-जग्य कऽ अगिनि कवहीं बुताइलि नाहीं। समय-समय पर भारतीय भिक्खु जग्य-कुंड में अपना तप-पुरुसारथ कऽ आहुति डालते गइलन। सोलहवीं सइवरखी तक अखंडरूप से ई जग्य लंका-बरमा, जावा, सुवरनदीप, बाली-बोरनियो, जापान-कोरिया-मंगोलिया, तिब्बत वोगयरह देशन में चलत रहल। 'बउधायन' का अंतिम तीनि सरगन में बउध-भिक्खुन का धरम-जग्य का मंशा से देश-विदेशन कऽ साहसिक महाजातरा कइला कऽ विचित्तर कथा पहिले-पहिल काव्यमाला का रूप में टूटल-फूटल शब्दफूलन से गाँथि के रउरासभ का आगा राखलि बा। एही से भूमिका में एकर चरचा जरूरी रहल हऽ। असल में भगवान तथागत कऽ सभ कारजे अचरज में डाले वाला बा। करुणासर बउधदेव तप-तेयाग कऽ साच्छात सरूप, धरम-ग्यान कऽ जगमगात मूरति आ दुख का आँचि में झउँसात मानुस-समाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सवतुक आचार-बेवहार, शील-विनय, नेति-धरम कऽ मधुर सनेशरूपी अमिरित पियावे वाला दइवी धरमदूत रहलन। उनका लोक-लीला कऽ कहनी अधकपटे रहि जाइति, अगर जो उनका धरमदूत भिक्खु संतन का धरम-जातरा आ अनमोल शिच्छन कऽ संछेपो गीति ना गवाइति।

× × × ×

बउधदेव का सफलता कऽ परधान रूप से एह धरम कऽ तीनि रतने कारन रहल; (१) बउधदेव (२) संघ आ (३) धरम। एह धरम में बउधदेव कऽ शील, सुभाव, आचार-बेवहार अइसन रहे जे अनयासे दुनियाँ का लोगन के खींचि ले। बउधदेव कऽ जीवन साचो बड़ा विलच्छन आ दइवी रहे। उनका तेज-परताप का चटक जोति से पुराना पाधिनों का मन कऽ मइलि धोवा जाति रहे। विचित्तर तेयाग बउधदेव का जीवन कऽ महान गुन विशेख रहे। राजकुल में पैदा भइलो पर ई अपना राजपद के ठोकर मरलन। राजमहल का मखमली गद्दन के छोड़ि ई वेल तर कऽ मारल बबूर तर—जंगल आ पहाड़ी गूफा-कंदरन कऽ कलेशमय जीवन मंजूर कइलन। ई अपना देहि के सुखा के काँट कइ दिहलन बाकी धन आ सुख कऽ चाहना कइलन। साचो जब कपिलवस्तु कऽ ई राजकुवँर अपना चढ़ती जवानी में राज, घर आ घरनी से नाता तोरि आ विराग अउरी तप से नाता जोरि के, आपन खप्पर लिहले, संसार के शांति अहिंसा आ दया कऽ उपदेश देत घूमत होईं, ओह समय कऽ बानक आ दृश्य देखे जोग होत होई। तेयाग आ तप, इनरिन कऽ दमन (विजय), शांति (शमन) आ अहिंसा कऽ एकट्ठे संजोग असल में बउधदेव का जीवन के छोड़ि अंते मिलल कठिन बा।

बउधदेव का चरित्तर कऽ दूसर विशेसता आतमा-संजम रहे। इतिहास कऽ विदारथी जानते बाड़न कि बउधदेव अपना नई जवानी में घर छोड़ले रहलन। उनकर धरमसंगिनी जशोधरा परम सुंदरी नारी रहली। तबो बउधदेव अपना काम वासना के कचटि के संगिनी के छोड़िये दिहलन आ बकिये जीवन के आतम-दमन आ संजम में बितवलन। जब ऊ तप करत रहलन तऽ कामदेव (मार) अनेकन परिन (अप्सराओं) आ बहुत सुघर जुवतिन के लेके उनका पर धावा कइलन बाकी उनका बिरागी हिरदय में तनिको बेकार ना पैदा भइल आ ऊ अटल परतिग्या वाला होके अपना आसन से तनिको डिगलन नाहीं।

तथागत का आचरन कऽ तीसरी विशेसता परोपकार-विरती रहे। बउधदेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कऽ हिरदय मानुस-प्रेम से पुरहर भरल रहे। आदमिन का तरह तरह का दुखन के देखि के उनकर हिरदय टूक-टूक हो जाय, ऊ दूसरन का दुखन से खुद दुखी रहसु। मानुस का दुखन कऽ नाश कइले ऊ अपना जीवन कऽ सबसे ऊँचा निशाना बनवले रहलन। मानुस का दुखन के दूर करे कऽ दवाई पावहीं खातिर ऊ बहुत बरिसन तक जंगलन में भटकत रहलन। आ अन्त में ओके पाइये के चैन कऽ साँसि लिहलन। बउधदेव कऽ सवँसे जीवन परोपकार कऽ निशान (प्रतीक) हऽ दूसरन का सेवा कऽ नगद परतोख आ लोगन का कयलान कऽ जगमगात सबूत। बउधदेव बहुत ऊँचा दिल कऽ रहलन। उनका विचित्तर गुन आ भाव का सामने दुशमनों मीत बनि जासु। देवदत्त उनका से बहुत डाह राखसु; बाकी ऊहो उनकर मीत बनि गइलन। बउधदेव सभके समान नजरि से देखसु। इहे कारन रहे कि उनका किहें राजा अजातशतुरुवो आवसु आ साधारन गिरल लोगो। एही से ऊ वैशाली में अम्बपालियो कऽ नेंवता मंजूर कइले रहलन। बउधदेव पाप से घिरिना करसु बाकी पापी के पियार भरल नजरि से देखसु। बउधदेव का चरित का महानता के भारतीये लोग नाहीं, विदेशियो खुला कंठ से मंजूर कइले बाड़न।

× × ×

महापुरुस बउधदेव का जीवन पर महाकाव्य कऽ रचना सहज नइँखे। ओहू में उनका सवँसे जीवन कऽ सही सवतुक तसवीरि खींचल केहू कलमि आ दिमाग का धनी कऽ महान कारज ठहरल। हमरा नियर मामूली पढ़ल-लिखल आ तप-संजम ले दूर, बोध-ग्यान में बिलकुले कोरा आदिमी का मान कऽ ई कारज ना रहल हऽ। हमार एकरा में हाथ डालल हिमालय का उठावे आ समुंदर के मँथि के अमिरित निकाले कऽ हँसी जोग जतन बा। बाकी करीं का ? सुभाव से लाचार हो गइलीं। बउधदेव कऽ विलच्छन तप-तेयाग, परोपकार-सेवा हमके बरबस खींचि के एह कारज में लगा दिहलसि। अब जब कारज शुरू कइ दिहलीं तऽ छोड़ीं कइसे ? करतब का कुरूछेतर में डेग बढ़ा दिहला पर पाछे ताकल मउवति का समान समुझि सुरसति के सुमिरत आ गीता का गायक कऽ धेयान करत हम अपना निशाना का ओर बढ़ते गइलीं। भगवान जोगछेम निबाहेवाला ठहरलन। ऊ आखिर में हमरो के किनारे पहुँचवलन।

सभ ले भारी कठिनाई भासा का सवाल के लेके रहलि। हमार परतिग्या रहे कि हम जनता का भासा में जनता का हित खातिर लिखबि। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' कऽ दइवी बानी हमरा कानन में हरदम गूँजति रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी बीर आ बली पुरुसारथी जनता कऽ जातीय भासा ठहरलि। भोज-पुरिये भासा का सिवान में, चनरगुपुत मोरिय वंश सुरेमन राजा भइल, जे भोजपुरिने का मदति से सहकल जवन-सेनापति सेलूकस कऽ कान पकड़ि के देश ले बहरी कइलन। भोजपुरिया वीर जवान उनकर मोंछि उखारिये के दम लिह-लन। भोजपुरिये भाइन का तेयाग-लगन, सेवा-पुरुसारथ आ शुभ आचार-विचारन से हर जुग में मरजादा का मोंका पर भारत कऽ माँथा ऊँच रहल। जब-जब देश पर संकट आइल, ममता-मोह, भरम-आलस से दूर रहि एहिजा कऽ वीर सपूत ताल ठोंकि ठाढ़ हो गइलन आ माँथ देके मरजादा कऽ रच्छा कइलन, शान-सीवँ कऽ झंडा कबहीं झुके ना दिहलन। भोजपुरी एह देश का (खास तरह से विहार आ पुरुबी उत्तर परदेश) सतरह जिलन में बसे वाली कर-मठ जनता कऽ महँतारी-भासा ठहरलि। सात करोड़ लोग एके बोले ला। आरा (भोजपुर-रोहतास), बलिया, गाजीपुर, चंपारन, सारन, आजमगढ़, गोरखपुर, बस्ती, देउरिया, आधा राँची, सवँसे पलामू, कुछ मिरजापुर आ काशी एकरा भीतर ई बोलल-समुझल जाले। ई पलटू, धरमदास, दरिया आ कबीर नियर फक्कड़ संत कविन आ सिद्धन कऽ भासा हऽ। भोजपुरी देश ले बाहरो मारीशश, फीजी, अण्डमन वोगयरह देश में परधानरूप से बोलल-समुझल जाले। खास-करि के ओहिजा कऽ हिन्दी भोजपुरिये ठहरलि। ई बाति मारिशश का दूसरा विश्व हिन्दी साहित्त-सम्मेलन में सिद्ध हो चुकलि बा। फेरु हमरा मन में हीनता कऽ भाव काहें आवे कि हम एकरा में अपना भावन के ना परगट करीं? हमार बहुत सरोकारी पंडित विदमान मोका मोका से कहलन कि अइसना गरंथ कऽ रचना हिंदी में होखे के चाहत रहल हऽ, बाकी ऊ अपना दबी जबान से हमरा पर कवनो असर ना डालि सकलन। हमरा कुछ कठिनाई जरूर भइलि, काहें से कि बउध-तत्तुग्यान (दर्शन), कला, संसकिरती (आचार-विचार), धरम-परचार आ साहित्त का छेतरन में ओकरा देन का बारे में कलमि चलावल सहज काम ना रहल हऽ। बाकी हम भटकलीं नाहीं, हिम्मति कऽ कलेवा झोरिया के भगवान बउधदेव का जनम से निरवान तक कऽ कथा गवलीं ओकरा-बादो राजगिरिह का सपतपरनी गूफा में अरहतन का साथ गौरगुनावन कइली वैशाली का धरम-संगीति में पहुँचलीं, अशोकारामविहार में मोगलिपूततिस्स, महेन्दर, संघमित्ता, थेरी आ साठि हजार भिक्खुन कऽ दरशन कइके कवशांबी कऽ दौड़ लगवलीं। एतने नाहीं, बरमा-लंका, जावा-चीन-कोरिया जापान तक टहरि घूमि अइलीं। एने पामीर का माँथ पर चढ़ि के ओह पार मद्धि एशिया, बलख-बुखारा, खोतन, काशगर पहुँचीं। तुनहुवांग का पुस्तकालय कऽ दरशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइलीं आ मंगोलिया का सहस बउधदेव गुफा-विहार में पहुँचि धुनी कलाकारन के साथ नववलीं। मोका से छोट बड़ दूनों रथन पर सवार कवे बायोन आ अंकोरवाट-अंकोरथोम गइलीं, तऽ कवहीं चंडीकलशन, चंडीमेनदुत आ बोरो वुदुर कऽ झांकी लेत, सुवरनभूमि में दीपङ्कर आ धरमपाल से भेंट करत, लाशा जाके ग्यानप्रभ, बोधिप्रभ, दीपंकर-कमलशील से कुछ सुनलीं-समुझलीं। आखिर में भगवान बउधदेव, काशीपति विश्वनाथ, सुरसती माता आ गुरू महराज सामी हंसानंद सुरसती जी सहित सभ संतन के माँथ नवाइ कलमि धइ रहल बानीं। सुजन-समाज हमरा कमी-कमजोरी आ गलती के माफ करी।

हम १९४२–४३ ई० (२००० वि०) से भोजपुरी में कलमि चलावत आवत बानी। १९४८ ई० में हमार भोजपुरी कहनिन कऽ पोथी–'जेहल कऽ सनदि' छपि के सामने आइलि। १९५० में भोजपुरी में हपतवारी 'कृषक' बगसर से निकललीं। ओह में सँवारकी (संपादकीय) टिपनी, लेख-कविता लिखत गइलीं। एकरा वाद काशी का 'भोजपुरी-कहानियाँ' पतिरिका में हमार भोजपुरी उपनेयास––'जिनिगी कऽ टेढ़ राह' करीब साढ़े तीनि वरिस तक सिलसिला से छपत रहल।

हम भोजपुरी में रचना करे खातिर पहिला रिनी अपना मीत भिक्खु नागारजुन जी कऽ बानीं, जेकरा इशारा आ जोर पर हम एने झुकलीं। हमके दूसरी भारी पेरना आ मदति अपना साहित्तिक मीत भोजपुरी के निराला विदमान डा० उदयनारायन तिवारी से मिललि। तिवारी जी कऽ हिरदय गंगा का निरमल धारा नियर हमरा के शील, विनय आ सरधा-भगती से भरल साधना का ओर लगन से लागे कऽ बढ़ावा दिहलसि। एह 'बउधायन' महा-काव्य का रचना खातिर सभ ले वेशी मदति हमके अपना ऊँचा दिलवाला साहसी मीत पाण्डेय नरवदेशर सहाय जी से मिललि जे कि अपना 'अँजोर' में 'बउध-लीला' का रूप में लगातार आठ-नव वरिसन तक एकरा पहिला रूप के छापि के अँजोरा सभके देखा दिहलन।

पं० गणेश चउवे जी लुंबिनी-कपिलवस्तु का पँजरा कऽ कगदही करेवाला शीली-विनयी भोजपुरी-सेवक हरदम हम से काशी पहुँचि के मिललन आ एह कारज में हमके बल-साहस दिहलन। चउवे जी पटना, आकाशबानी से भोज-पुरी काव्यन पर अपना बाति में 'बउध-लीला' के पुरहर मान मरजाद देके एकरा रचना में नयी जान फूँकि दिहलन।

गोबरधन पहाड़ के उठावे में गोकुल का सभ जनता कऽ प्रेम भरल पुरुसारथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम कइलसि । भगवान मुरलीधर का पुकार पर गोप लोग आपन लाठी-सोटा मूसर लेके दउरि परल, ठीक तइसहीं हमके एह शुभकारज में अपना करमठ चेला-सेवकन से कम सहयोग ना मिलल । इनका में डा० जोगीन्दरनाथ शरमा (वैद) कऽ सेवा आ सहायता भारी रहलि बा । राजनेतिक जीवन कऽ उथल-पुथल, भागदौड़ आ कठिन तपसाधना में लगातार लागल रहला से हमार शरीर रोग कऽ शिकार हो जरजर हो चलल रहे । ओके भगवान काशी विश्वनाथ कऽ दूत पं० बालकिशुन शरमा, वैद्य (बरहतिल, आजमगढ़) जे रामघाट वासी ठहरलन, अपना सेवा से ना सुधरले रहितन तऽ ई महाकाव्य ना रचाइल रहित । एह से हम उनहूँ कऽ भारी रिनी बानीं आ उनका अतुलसेवा के इयाद कइके उनके भगवान समुझि मांथ नवावत बानीं । एकरा अलावे सुरेन्दरनाथ शरमा, सुरेशराय शरमा वोगयरह लिखे-लिखवावे, पुस्तकालय से पोथी जुटावे में भारी मदति कइलन जवना से कि ई कारज पूरा भइल । एह ग्यान-जग्य का मंडप में पहुँचि के जे अपना ओर ले जइसन आहुति डालल ओके ओइसन पुन्नि होई ।

हमार जीवन बड़ा तूफान ववंडर आ भाग-दौड़ कऽ रहल बा । हम विदारथी जीवने ले देश का सांसकिरतिक-राजनेतिक इतिहास के पढ़ला आ गौर-गुनावन कइला से, चाहे समय का पुकार का करते राजनेति का ओर मुड़ि गइलीं । भारतीय विदमान विचारकन, इतिहास गढ़बइया वीरन आ अधियात-मिक दर्शियाँ का जगमगात जोतिरूप रिसि महरिसिन का सवतुक आचार-विचार तप-तेयाग, भाव-गुन कऽ हमरा पर कुछ असर परल । एकर फल भइल कि हम जीवन का कुरुछेतर मे साहस का रथ पर सवार देश का सुतंत-रता वाली लड़ाई में कूदि परला आ जुलुम-अनेति पाप-पाखंड से लड़त-भिड़त आगे बढ़त गइलीं । पुरुब-जनम का करम छाप से जवन सुभाव बनल रहे ओकरा करते हम अपना निशाना पर पहुँचे खातिर लगन से बराबर पुरुसारथ करत गइलीं । कठिनाइन से लोहा लिहलीं, भारी विपति सहलीं वाकी जुलुम कऽ विरोध कइली, जुलुमी के कबहीं माथ ना नववलीं । सचाई के उजागर करे में आग पर लात धइके चलेके परेला । काँट-कूश जंगल-पहाड़ से होके भालू हुँड़ार बाघ-सिंघन कऽ मोकाबिला करे के परेला । साच कऽ संग धरे में भारी आफत बा । नेति-धरम कऽ संगी केहू विरले बा; जालिम, पापी, पाखंडी, विस-वास घाती कऽ मीत हजारन लोग बा । अइसन मोका बहुत आइल कि अनेकन कठिनाइन से घेरा के साँसति-दुरगति सहलीं आ अकेले रहलीं वाकी कचकि-हेरा के मोवें-मरजाद कऽ झंडा कबे झूके ना दिहलीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे जनता कऽ सेवा कऽ बरत लिहल ओकरा तरूवारि का धार पर चले के परे ला। सेवाधरम सभले कठिन हऽ। जब हम राजनेति का छेतर में सेवा के वेवसाय कऽ रूप लेत देखलीं तऽ हमरा कुछ घिरिना जनाइलि। हम सेवा का सनदि के भँजावे का कारज में भारी चढ़ा-उपरी देखि घबड़इलीं। जदपि को सामी सहजानंद सुरसती आ महापंडित राहुल जी का साथे रहिके कुछ सिखलीं समुझलीं, कांगरेस आ किसान आंदोलन में भाग लिहलीं। हम जीवन में रूढ़ि आ अन्धविशवास कऽ समरथन कबे ना कइलीं। पद-मरजादा का लालच के लतिया के अन्त में शांति का विचार से साधु समाज में भरती होके गेरुवा धारन कइलीं कि संसकिरति का अधियातमिक गरंथन के सज से पढीं गुनीं। बाकी देवकुर गइले दूना दुख। साधु समाज गउलच्छनी हो गइल बा। एहिजा काहिलन-ठगन आ वासना का भुखाइल रँगुवा सियारन कऽ भारी मेला बा; नेति-धरम आ आतम-संजम, शील-सहनशीलता से कवनो सरोकार नइँखे। एहिजो हमरा अपना धरम रइछा खातिर लोहा लेवे के परल। सब कुछ देखि के मन का बोध भइल कि धधकत अंगारन से खेलले जीवन कऽ सोहाग आ सिंगार हऽ। लड़ाई का मैदान से भागल आ कठिनाइन से बचे कऽ कोशिश कइल कायरता हऽ, मउवति हऽ। जीवन में दुखले बढ़ि के मीत केहू ना हऽ। दुख सुधारे आ शिच्छा देवे खातिर आवेलन। पुरूसारथिन खातिर जीवन फूलन कऽ सेज ना हऽ।

संसार में कुछ उत्तम कारज कइल चाहीं तऽ माथे कफन बान्हि काँटकूश से भरल जंगल पहाड़न कऽ ठोकर खायीं। घाही होके किंकुरीं मति। छाती तानि आगे बढ़ीं आ भालू बाघ सिंहन कऽ मोकाबिला करीं। तब बहुत कठिन मेंहनति का बाद निरमल मानसरोवर कऽ दरशन होई। बस एही लगन से साधना में लागल रहीं आ मानसरोवर में डुबुकी मारि सुख शांति का अनमोल मोती के जोहीं। मानुस तन पवला कऽ असली माने मतलब ईहे हऽ।

× × ×

'बउधायन' महाकाव्य १९७२ ई० सावन का अँजोर में पूरा भइल। तब ले अनेकन जतन एकरा छपे आ प्रकाशित होखे खातिर कइल गइल। बाकी कवनो सफलता ना मिललि। बीच में देश का राजनेति में बहुत उलट-फेर भइल। एही सिलसिला में देश में जनता सरकार बनलि। बिहार कऽ सरकार विहार राज में पहिले से समाज का ओर ले मामूली रूप में बनल 'भोजपुरी-अकादमी' का रचना पर विचार कइके मानिता दिहलसि। १९७८ में हमार महाकाव्य जुलाई-अगस्त में भोजपुरी अकादमी का निदेशक पं० हवलदार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिपाठी के, ओह समय का वित्तमंत्री पं० कैलाशपति मिसिर जी का हाथे प्रकाशित करे खातिर सउँपल गइल। तबे पटना दउरत आ बहुतन कऽ दरबार करत हमार गोड़ खिया गइलन सऽ। अन्त में १९७९ का तीसरा पहर में भोजपुरी-अकादमी एकरा के प्रकाशित करे कऽ मंजूरी दिहलसि आ जोजना बना के निदेशक जी सरकार से 'अनुदान' कऽ मदति मंगलन। तब ले फेरु एक बरिस बीति गइल। जातिवाद दलबंदी आ निजी जलन का रोड़न-उढुकन से ठोकर खात हमार महाकाव्य भगवान तथागत के पुकारत पछतात अकादमी-आलमारी में परल बा।

हमरा अकादमी का विचारवान आ दयालू निदेशक पं० हवलदार त्रिपाठी जी पर पूरा भरोसा बा कि ऊ ग्रंथ का महत्व के समझि के ओके जल्दी प्रकाशित करिहन। २५ जनवरी १९८० के भोजपुरी अकादमी-आफिस में निदेशक आ ग्रंथकार का बीच बजापते एकरारनामा लिखाइल कि एह सरतन पर ग्रंथ प्रकाशित होई।

एकरारनामा का बेर त्रिपाठी जी 'बउधायन' का शोध-खोज भरल भारी मुखबंध (भूमिका) के लवटा दिहलन। हम ओकरा मोल-मरजाद के समुझि के भोजपुरी-साहित्य मंदिर-राजगुरु मठ शिवालाघाट, काशी का एगो अंग-भोजपुरी प्रकाशन मंडल का ओरले प्रकाशित करा रहल बानीं। ई 'बउधायन' महाकाव्य के समझे खातिर बहुत जरूरी रहल हऽ। एह पोथी कऽ नावँ 'बउधायन-बोध-दीपक' राखल गइल बा। भोजपुरी भासा आ साहित्त का महत्व के जथारथ रूप से समझेवाला प्रेमी पढ़वइया आ विदमान लोग एकरा पर विचार करी।

हम छत्तिस-सैंतिस बरिस पहिले ले भोजपुरी भासा में कलमि चलावत आवत बानीं। हमरा खुशी एह बाति कऽ बा कि अब हमार मेहनति सफल भइलि। भोजपुरी भासा के पद-मरजादा मिललि। बिहार सरकार ओके मनलसि, बिहार विश्वविद्यालय आ मगध विश्वविद्यालय भोजपुरी भाषा का पढ़ाई के मंजूरी दिहलन। जरूरति बा सभ भेदभाव भुलवा के सनमति आ सुमति से काम करे के।

अंत में आपन कथ पूरा करे का पहिले हम एगो महान आतमा, तेजवान पुरुष, विग्यान का विदमान आ अपना चेला प्राचारज विन्ध्याचल राय एम० एस० सी० गावँ मोरय, जिला रोहतास का भोजपुरी प्रेम आ सेवा के जरूर इयाद करबि। विन्ध्याचल राय हमार सेवक आ चेला रहलन हँऽ। ऊ हमके भोजपुरी में कलमि चलावे खातिर हरदम उकसवलन आ बढ़ावा दिहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार विश्व-विद्यालय में भोजपुरी के आदर मान दियावें में उनकर पुरहर सलाह आ मदति रहलि हऽ। दुख बा कि ऊ विलच्छन तेजवान आतमा, महेशप्रसाद सिंह, साइन्स कालेज के थापक-प्रिंसिपल (प्राचारज) विन्ध्याचल राय आपन जीवन-जातरा अचके खंडित कइ, हमन के धोखा दे पहिली जुलाई १९८० के चुप्पे वैकुंठधाम निकलि गइलन। महाकाव्य चाहे ओकरा मुखबंध—'बउधायन-बोध-दीपक' के ऊ ना देखि सकलन। हम उनका सेवा सहायता कऽ बहुत रिनी बानीं। एह से उनका वैकुंठवासी आतमा के इयाद कइके विनय करत बानीं कि अपना दइवी नयनन के खोलि के ऊ भोजपुरी भासा के एह रचनन के देखिहन आ इनका बढंती आ आदरमान खातिर अनजान जगहा से मौनरूप से आपन प्रेम-पाहुर पठइहँन।

एक बाति भुलाइले जाति रहलि हऽ! हम बहुत दिन ले एगो पुरान मूंह-फाटल झोरी रखले रहली हँऽ। ऊ साधुसंत का दरबार कऽ सहवनी झोरिये हमार जियका रहलि हऽ। हम ओही में ले आशीरवाद निकालि के अपना भगतन आ चेलन के बाँटत रहली हँऽ।

ऊ झोरी हमके परान ले प्रिय रहलि हऽ। हम ओके हरदम अपना काँखि का पँजरा लटकवले रहत रहलीं हँऽ।

'बउधायन' के प्रकाशन का डहरि पर दूर तक आगे पहुँचाये आ सफलता कऽ बिसवास दिलावे में जे सुरेमन बीर कऽ काम कइल, अपना ओह चेला के कुछ देवे खातिर जब हम देंहि परले चादरि उतारि झोरी परगट कइलीं तबले हमार ऊहे सरधाभगती में सेसर बाकी ढीठ चेला,—कृतपुरा के योगीराय-ओसियर पी० डवलू० डी०, हमार आशीरवाद कऽ झोरिये छीनि लिहलन। हम तऽ भकुहा हो गइलीं। अब करीं का? ऊ झोरिये तऽ थाती·पूंजी रहलि हऽ। बाद में बहुत शांति से विचार कइलीं तऽ मालूम भइल कि हमहीं भरम में बानीं। आशीरवाद—मांगल आ दीहल ना जाय। ऊ सरधा प्रेम आ सेवा से बरबस, बलाते ले लिहल जाला।

महाभारत एकर सबूत बा। द्रोणाचारज जी आ भीसम पितामह नियर सुधरमी लोग दुरजोधन का ओर ले लड़ि के आपन परान दीहल, बाकी आशीरवाद दीहल धरमराज जुधिहिठिर के। लड़ाई शुरू होखे का पहिले जब धरमराज, धरम-परंपरा का मोताबिक गुरुजनन—द्रोण, भीसम, कृप आ शल्य के पलगी करे गइलन तऽ ऊ लोग लड़े के हुकुम दीहल आ 'जय' खातिर शुभ-इच्छा परगट कइल। हम खाली द्रोण का शलोक के कहि के बाति खतम करबि—"ब्रवीम्येतत्क्लीववत्त्वां युद्धान्यत् किमिच्छसि। योत्स्येहं कौरवस्यार्थे तवाशास्योजयो मया॥" (भीष्म पर्व, अध्याय ४३, श्लोक ५७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकर असली मतलब बा कि—'...ईहे कारन बा कि आज हम तोहरा सामने दब्बू नियर बाति करत बानीं। लड़बि तऽ हम दुरजोधन का पच्छ में। बाकी विजय तोहरे चाहबि।'

अब 'बउधायन' प्रकाशन का डहरि में दयालू शिक्षा-कमिश्नर कऽ मंजूरी पाके भोजपुरी-अकादमी का सुधरमी निदेशक पं० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' आ उनका प्रेमी-नेमी मदतिगार भाइन का दया-दीठि का ओर आशा भाव से ताकि रहलि बा। भगवान तथागत सबके बल आ सुमति देसु कि भोजपुरी भासा-साहित्त आ बउध-धरम कऽ ई ग्यान-जग्य पूरन होखे।

एक बाति जवन कि बहुत जरूरी बा, छूटले जाति रहलि हऽ। हमरा हाल का खबरि से मालूम भइल हऽ कि बउधायन प्रेस में पहुँचि गइल आ भोजपुरी अकादमी का गुनी विदमान पंचन का दया से छपि रहल बा। जवना में बुझनइक आ सुधरमी निदेशक पं० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी कऽ विशेस हाथ बा।

बस हमार अरज एतने बा कि भोजपुरी दस करोड़ कऽ भासा हऽ। ई बोली से अब भासा कऽ सवतुक सरूप धारन करति बा। भोजपुरी बोलेवाला लोग कई छेतरन में बँटल बा। पूरुबी, पच्छिमी, दक्खिनी आ उत्तरी छेतर का अलावे बीच कऽ आदरश-छेतर—दक्खिनी बलिया, पुरुबी गाजीपुर आ भोज-पुर-रोहतास कऽ निचाट उत्तरी भाग। एह छेतरन का भासा-बोली में कुछ-कुछ अंतर बा। एकरूपता समय पाके सुभावन होई। शासन आ दबाव कऽ सोटा लेके बरियाई एकरूपता ले आवे कऽ कोसिस न होखे। भोजपुरी साहित्त-कारन कऽ परिवार बढ़ि रहल बा। ई तऽ बड़ा खुशी कऽ बानि बा, बाकी सनमति-सुमति बहुत जरूरी बा। हमन का बतिरखउअलि का फेर में मति परीं जा। बहुत उन्नति का बादो आज तक हिन्दी का सभ छेतरन का सरूप में पुरहर एकरूपता कऽ दावा ना कइल जा सके। मेरठ-दिल्ली, इलाहाबाद-बलिया आ पटना का हिन्दी लेखकन का रचना में कहाँ ओइसन सवतुक एक-रूपता बा?

एगो अउरी नई अझुराहटि ई बा कि हिन्दी-संसार से भोजपुरी का इलाका में पहुँचल लोग, मौलिक भोजपुरी शबदन के खोजे कऽ कोसिस आ पुरुसारथ छोड़ि के हिन्दी का पुराना परिचित रूप के, जेकर उनका भारी मोह-ममता बा, भोजपुरी भासा पर लादत देखल जात बाड़न। अरज-विनती इहे बा कि गाइ का शुद्ध दूध में पानी आ पाउडर मिला के चलावे कऽ काम न होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम 'कऽ' आ 'के' का मतभेद के वेकार समुझत बानीं। कहीं कवनो छेतर में 'कऽ' लिखल बोलल जाता तऽ कतहीं 'के' कऽ बेवहार होता। अबहीं दूनों रूप चले दीं सभें। दूनों सरूप ठीक बा।

दूसरि बाति कि नावँ कऽ भोजपुरीकरन तऽ गलती जरूर बा; बाकी भोजपुरी भासा में ओकर जवन असली (मौलिक) सतोगुनी सरूप सुभाविक ढंग में बनि गइल बा ओकर हिन्दी न बनावल जाय। 'बालकृष्ण' आ 'रामकृष्ण' कऽ सुभाविक रूप सैकड़न बरिस ले घँसा-रगरा के सालिकराम भगवान का चिक्कनि मूरति नियर 'बालकिशुन' आ 'रामकिशुन' बनि गइल बा तऽ एके नावँ के भोजपुरियावल ना कहल जा सके।

'बउधायन'—'वुद्धायन' नावँ लेके एही तरह के वेकार कऽ पँचडा खड़ा कइल जाता। हम डा० उदयनारायन तिवारी जी नियर सुरेमन भासा-सासतिरी आ ऊँचा विदमान कऽ विचार जनलीं, सवतुक सलाह लिहलीं तऽ ऊंहों का 'बउधायन' नावँ कऽ समरथन कइलीं। एकरा अलावे दूसर कारन ई बा कि 'वुद्धायन' से 'वुद्धदेव' (बउधदेव) जी का जीवन-कथा आ धरम-विचार भर कऽ बोध होता। 'बउधायन'—भगवान बउधदेव का कथा का अलावें—सवँसे बउध-संसकिरती आ बउध-धरम का नामी विदमानन, संत-समाज अउरी उनका धरम-विचारन कऽ रोचक कथा कहत—उनका भारी पुरुसारथ कऽ जथारथ तसबीरि खींचि के समाज का सामने धइ देले बा, जे अपना ढंग ढांचा में बेजोड़, बे पटतर कऽ बा। ई एक किसिम से बउध-धरम कऽ 'विश्व-कोश' बनि गइल बा। एही से एह नावँ कऽ खाप माने मतलब बा जवन एके बदलले चउपट हो जाई। एह से उचित इहे होई कि ग्रंथ रचवइया, कवि आ साहित्तकार के नागफाँस में न बान्हल जाय। प्रकाशक का उचित नइँखे कि ग्रन्थ रचवइया का रचना में अपना मन से कुछ फेरबदल करे। लोग का समुझी कि रचनिहार कऽ लिखल हऽ कि प्रकाशक अपना ओर से जोड़ले घटवले बाड़न। रचना का मूल सरूप कऽ रइछा होखे के चाही।

आखिरी अरज बा कि हम केहू विदमान आ भोजपुरी अकादमी का पंच भा अधिकारी पर कवनो दोस नइँखीं मढ़त। आरजू-मिनती का साथ आपन अरज-गरज, सभ विदमान लोग चाहे भोजपुरी जनता जनारदन का सामने राखत बानीं कि आगे भोजपुरी भासा-साहित्त का उन्नति का डहरि में कवनो अड़चन न आवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउधायन-बोध-दीपक

शुद्धि-पत्र

अशुद्धि	पन्ना	पांति	शुद्धि
बंकहा	५९	३	बंकहार
बोथगया	५९	१६	बोधगया
सस्सुजित	५७	२९	अस्सुजित
बफटीरिया	६७	६	बकटीरिया
देवेले	७४	१०	देवेके
खेलावन	७८	१८	खेयालन
का	८०	६	कऽ
के	८६	११	का
धई	८९	२०	धइ
भइल	९५	१	भइले
भईला	८४	१२	भइला
भईल़	८४	१८	भइल
अपनीं	९८	१५	आपनि
किसीम	१०४	१२	किसिम
पइदे	१०६	४	पैदे
तरफा	१०९	२९	तरका
समधी	१११	१२	समयी
दूसो	१२	२१	दूनो
लोगन	१३	१२	लोगन खातिर
सहले का	१४	२७	सहले आ
उतहास	१७	२५	उतसाह
हमरी	१८	१३	हमरो
बारे	२३	९	बारे में
एह फेरु संदेह	२३	१३	एह संदेह
सुतंतर गोतर	१९	२५	सुतंतर गोतर ना रहे ।
मती	२८	२७	मीत
फलन	३३	८	फूलल
समाज	३६	३०	समान
भाग के	४५	३	भाग में
मडलति	३४	३	मडवति
नइखे कि	३४	२६	नइखे मालूम कि
अउरी किनारे	३४	२९	अउरी उत्तरी किनारे
परम्परा ने	४६	१७	परम्परा जे
सम	३५	१४	सभ
ओ	४३	७	आ
कइलक	४३	१५	कइलन
आचार	४३	२४	आचार विचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection